"একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

৪র্থ ভাগ । শকাব্দাঃ ১৮০৩ ।
৪৫ সংখ্যা । আষাঢ়—পূর্ণিমা ।

পরমার্থ সার ।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর ।

ক্ষীরাদুদ্ধৃতমাজ্যং ক্ষিপ্তং যদ্বন্ন পূর্ব্ববত্তস্মিন্ ।
প্রকৃতিগুণেভ্যস্তদ্বৎ পৃথক কৃতস্ততশ্চেমাত্মা ॥৪৫॥

যেমন দুগ্ধ হইতে ঘৃত নিষ্কাশিত করিয়া, তাহাতে পুনর্নিক্ষেপ করিলেও উহা আর মিশ্রিত হয় না, তদ্রূপ চৈতন্য প্রাকৃতিক গুণসমূহ হইতে, একবার পৃথক হইতে পারিলে, আর তাহাতে লিপ্ত হয়েন না।

মুক্ত পুরুষ কোন কর্ম্মানুষ্ঠান করিলে, অথবা অন্তর্ব্বৈরাগ্যযুক্ত মহাত্মা বৈষয়িক ব্যাপারে প্রবৃত্ত হইলে, কোনরূপ ক্ষতি হয় না। প্রাকৃতিকী শক্তি ভেদ করিবার জন্য যত্নশীল হওয়াই সাধনার গূঢ় অভিপ্রায়। অণিমা, লঘিমাদি সিদ্ধি সমূহও প্রাকৃতিক নিয়মের অন্তর্নিবিষ্ট, সাধুগণ তাহাতেও বিমোহিত হইবেন না। তাঁহারা সমস্ত তুচ্ছ করিয়া, চিদাকাশের চৈতন্য চন্দ্রালোকের উজ্জ্বল কিরণে আনন্দানুভব করেন। প্রকৃতি তাঁহাদি-

"एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समन्नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥"

४र्थ भाग । शकाब्दा १८०२ ।
४५ संख्या । आषाढ़—पूर्णिमा ।

परमार्थ सार ।

(पूर्व्व प्रकाशितके आगे)

क्षीरादुद्धृतमाज्यं क्षिप्तं यद्वन्न पूर्व्ववत्तस्मिन् ।
प्रकृतिगुणेभ्यस्तद्वत् पृथक्कृतस्ततश्चात्मा ॥४५॥

जैसा दुधसे निकाला हुआ घृतको दुध में छोड़ देनेसे वह फिर दुधसे नहीं मिलता हैं उस रीति प्रकृतिके गुणोंसे अलग हुए, चैतन्य फिर जीवत्व नहीं प्राप्त होते हैं ।

यदि मुक्त पुरुष किसी कर्म्मके अनुष्ठान करें अथवा अन्तर्वैराग्ययुक्त महात्मा वैषयिक व्यापार में प्रवृत्त हों तो कुछ हानि नहीं । प्रकृति की शक्ति-जालको भेदनार्थ यत्न करणा ही साधनाका गूढ़ अभिप्राय है । अणिमा, लघिमा आदि सिद्धिसमूहको भी प्राकृतिक नियमोंके अधीन जानना ; साधुगण उन सबसे भी विमोहित न होते हैं । वे सबको तुच्छ मानकर चिदाकाशके चैतन्य चन्द्रा-लोकके उज्ज्वल किरणोंसे आनन्दानुभव किये करते हैं । प्रकृति उन्होंको और फिर मोहित

গকে আর মুগ্ধ করিতে পারেন না। যোগ বিদ্যা দ্বারা মন্থন করিলে, প্রকৃতি ও চৈতন্য পৃথক্‌ভূত হইয়া পড়েন।

গুণময়মায়াগহনং নির্দ্ধূয় যথা তমঃ সহস্রাংশুঃ।
বাহ্যাভ্যন্তরচারী সৈন্ধবঘনবস্তুবেৎ পুরুষঃ॥ ৪৬॥

যেমন সূর্য্য অন্ধকার রাশিকে বিনাশ করিয়া, সমস্ত বস্তুকে প্রকাশ করিয়া থাকেন, তদ্রূপ পুরুষ মায়ার গুণরাশিরূপ গহন বন বিনাশ করিয়া, বাহ্যাভ্যন্তরে বিচরণ করিয়া থাকেন এবং সৈন্ধব গিরির ন্যায় নিরন্তর নির্ম্মল ভাবে সুশোভিত হয়েন।

যদ্বদ্দেহাবয়বামৃদেব তস্যা বিকারজাতানি।
তদ্বৎস্থাবর জঙ্গমমদ্বৈতং দ্বৈতবদ্ভাতি॥ ৪৭॥

যেমন সমস্ত ঘটাদিরই দেহ, অবয়ব, একমাত্র মৃদ্বিকার হইলেও ভিন্ন ভিন্ন বলিয়া বোধ হয়, তদ্রূপ স্থাবর জঙ্গমাদি অদ্বৈত সত্ত্বা হইলেও, দ্বৈতবৎ প্রতীত হইয়া থাকে।

একস্মাৎ ক্ষেত্রজ্ঞাদ্বহ্ব্যঃ
ক্ষেত্রজ্ঞ জাতয়োজাতাঃ।
লোহগিলাদিব দহনাৎ
সমন্ততো বিস্ফুলিঙ্গগণাঃ॥ ৪৮॥

যেমন দ্রবীভূত লোহাগ্নি হইতে, অনেক স্ফুলিঙ্গ নির্গত হয়, তদ্রূপ একমাত্র ঈশ্বর ক্ষেত্রজ্ঞ হইতেই বিবিধ ক্ষেত্রজ্ঞ জাতীয় জীব উৎপন্ন হইয়া থাকে।

তে গুণসঙ্গমদোষা বদ্ধা ইব ধান্যজাতয়ঃ স্বতুষৈঃ।
জন্ম লভন্তে তাবদ্যাবন্ন জ্ঞানবহ্নিনা দগ্ধাঃ॥ ৪৯॥

যেমন ধান্য যবাদি যে পর্য্যন্ত তুষসংযুক্ত থাকে, সেই পর্য্যন্তই তাহা হইতে অঙ্কুরোৎপন্ন হয়, তুষ পৃথক করিয়া ফেলিলে, তাহার উৎপাদন শক্তি বিনষ্ট হয়, তদ্রূপ উক্ত ক্ষেত্রজ্ঞ জাতি গুণসঙ্গদোষে বদ্ধ হইয়া জন্ম মরণাদির অধীন হইয়া থাকে, জ্ঞানাগ্নি দ্বারা গুণক্রিয়া নষ্ট হইলেই, জীবের জন্ম মরণের ভয় বিদূরিত হইয়া যায়।

প্রকৃতি গুণময়ী প্রকৃতি সত্ত্বে গুণ নষ্ট হইবার আশা নাই। চৈতন্যের অত্যন্তানুভূতি হইলেই, অপসারণ শক্তি দ্বারা প্রকৃতি স্বতঃএব পুরুষ হইতে দূরে পলায়ন করে। যে প্রাকৃতিকী শক্তি জড়াভিমুখিনী, তদ্বিরোধে অথবা চৈতন্যাভিমুখাকর্ষণী পরমা শক্তির অভ্যাস করিলেই জীবের কামনা পূর্ণ হইতে পারিবে। ক্রমশঃ

नहीं कर सक्ति हैं। योगविद्या करके मन्थन करनेसे प्रकृति औ चैतन्य पृथक हो जाते हैं।

गुणमयमायागहनं निर्द्धूय यथा तमः सहस्रांशुः।
वाह्याभ्यन्तरचारी सैन्धवघनवद्भवेत् पुरुषः॥४६॥

सूर्य्य जैसा तमोराशिको विनाश करके समस्त वस्तुको प्रकाश किये करते हैं, उस रीति पुरुष भी मायाके गुणसमूहरूप गहनवनको नाशकर वाहर भीतर विचरते रहते हैं औ सैन्धव गिरिके समान सर्व्वदा निर्म्मल भावसे सुशोभित होते हैं।

यद्वद्देहावयवामृदेव तस्या विकारजातानि।
तद्वतस्थावरजङ्गममद्वैतं द्वैतवद्भाति॥ ४७॥

जैसा सब घटादिके देह अङ्ग मट्टीहीसे वनाहुआ है, किन्तु भिन्न भिन्न वोध होता है, तद्रूप स्थावर जङ्गम समस्त ही एक अद्वैत सत्वा है किन्तु द्वैतवत् भासित होता है।

एकस्मात् क्षेत्रज्ञाद्बह्व्यः
क्षेत्रज्ञजातयो जाताः।
लोहगिलादिव दहनात्
समन्ततो विस्फुलिङ्गगणाः॥ ४८॥

एकमात्र क्षेत्रज्ञ ईश्वरसे क्षेत्रज्ञ जातिके वहुधा जीव उत्पन्न होते हैं, जैसा कि गलाहुआ लोहेके अग्निसे अनेक चिनगारी निकलती है।

ते गुणसङ्गमदोषा वद्धा इव धान्यजातयः स्वतुषैः।
जन्मलभन्ते तावद्यावन्नज्ञान वह्निना दग्धाः॥४९॥

उक्त क्षेत्रज्ञ जाति गुणोंके सङ्गदोष करके तवतक वन्धेहुए जन्म मरणादिके अधीन होते हैं जवतक ज्ञानाग्निके द्वारा गुणकी क्रिया नष्ट न होती है। जैसा कि चाउर यवादि जवतक तुषसे वन्धे रहते हैं, तवतक जन्मते है, किन्तु तुष अलग होजानेपर उसकी उत्पादन शक्ति नष्ट हो जाती है।

प्रकृति गुणमयी है। जवतक प्रकृति विद्यमान रहेगी, तवतक गुणोका नाश होनेकी कोइ आशा नहीं। चैतन्य की अत्यन्तानुभूति होनेसे अपसारणी शक्ति करके जीवकी प्रकृति स्वतःएव पुरुषसे दूर भागती है। जो प्राकृतिकी शक्ति जड़ाभिमुखिनी है, उसके विरोधी अथवा चैतन्यका आकर्षण करनेवाली परमा शक्तिके अभ्यास करनेहीसे जीवकी कामना पूर्ण हो सकेगी।

(शेष आगे)

শ্মশানে মুমূর্ষু সাধকের বিক্রমপ্রকাশ।

কাল! তুমি আমার বহুদিনের পরিচিত। আমি যখন যেখানে গিয়াছি, যখন যে দেহ ধারণ করিয়াছি, যখন যাহা ভোগার্থ সংগ্রহ করিয়াছি, সর্ব্বত্রই তোমার পরাক্রম ও বিদ্যমানতা দেখিয়া ভীত ও অভিভূত হইয়া আসিয়াছি। তোমার কুটীল ভ্রূভঙ্গমাত্রেই ভুবন ভস্মীভূত হইয়া যায়, তোমার দারুণ দৃষ্টির তীব্র তেজে জগৎ শূন্যময় বোধ হয়, তোমার প্রলয়মূর্ত্তি দেখিলেই, শরীর শিহরিয়া উঠে। বুঝিয়াছি, তোমার শক্তি অপরাজেয় ও তোমার মহিমা বুদ্ধির অগম্য। কিন্তু কাল! আজ তোমায় দংষ্ট্রা নিস্পেষণ পূর্ব্বক আসিতে দেখিয়া, আমার হাস্যোদ্রেক হইতেছে, আজ তোমার বিকট বদন বিলোকনে আমার ভয়ের সঞ্চার হইতেছে না, আজ তোমার প্রলয়ঙ্কর হুঙ্কার মশক ধ্বনির ন্যায় তুচ্ছ বোধ হইতেছে। আত্মীয় স্বজন বন্ধু-বান্ধব সকলে আমাকে বিদায় দিয়াছে দেখিয়া, তুমি পুলকিত চিত্তে আমার প্রতি কটাক্ষ নিক্ষেপ করিতেছ। আত্মীয়গণের আর্ত্তনাদে তোমার পরাক্রম বৃদ্ধি হইয়া থাকে। আমার শরীর শীর্ণ, চক্ষু দৃষ্টিহীন, কর্ণ বধির, অঙ্গ শীতল ও শ্বাস রুদ্ধ হইল বলিয়া আমি অভিভূত হই নাই। পিতা, মাতা, পুত্র, দারা ও মিত্রগণ আমাকে পরিহার করিল বলিয়া, তুমি আমাকে নিঃসহায় ও নিরাশ্রয় মনে করিও না। আমি এবার কীট পতঙ্গের দেহে আসি নাই, এবার পশু পক্ষীর সামান্য শরীরে ক্রীড়া করি নাই; এবার মনুষ্য দেহ ধারণ করিয়া ছিলাম; মানবীয় শক্তি, মানবীয় ভাব, মানবীয় তেজে আমার শরীর গঠিত ও রক্ষিত হইয়াছিল। এবার সৎসমাগমের গুণে তোমার চতুর চক্রান্তের দর্প চূর্ণ করিবার মহামন্ত্র শিক্ষা করিয়াছি। বৈরাগ্য পিতৃস্থানীয় হইয়া আমাকে পালন করিয়াছেন, ক্ষমা মাতৃবৎ আমাকে সদাই রক্ষা করিয়াছেন, শান্তি আমার পরম সুখদায়িনী সহধর্ম্মিণী হইয়া, আমার সুখশয্যায় সেবন করিয়াছেন। সত্য সখা হইয়া, দয়া ভগ্নি হইয়া, শম দমাদি ভ্রাতৃগণ হইয়া, আমার আনন্দ বর্দ্ধন ও হিতসাধন করিয়াছেন; নিঃস্বার্থতার বসন পরিয়া, জ্ঞানামৃত ভোজন করিয়া আমি জীবনাতিপাত করিয়াছি। অহো কাল! এবার

श्मशानमें मुमुर्षु साधकका विक्रमप्रकाश।

काल! तु मेरे बहुत दिनके परिचित है। मैं जब जहां गया, जब जिस देहको धारण किया, सर्व्वत्र ही तेरे पराक्रम औ विद्यमानता देखकर भीत औ अभीभूत होता आया। तेरा कुटील भ्रूभङ्गमात्रहीसे भूवन भस्मीभूत हो जाता है, तेरी दारुण दृष्टिके तीव्र तेजसे जगत्को शून्यमय बोध होता है, तेरी प्रलय मूर्त्तिको देखते ही शरीर शिहर उठता है। मैं समझ लिया कि तेरी शक्ति अपराजेय औ तेरी महिमा बुद्धिकी अगम्य है। किन्तु हे काल! आज तुझे दंष्ट्रा निष्पेषण पूर्व्वक आगु आते देखकर मेरी हांसी आती है, आज तेरे विकट वदन विलोकनसे भय नही होता है, आज तेरा प्रलङ्कर हुङ्कार मशकके घुन् घुन् शब्दके समान तुच्छ वुझ पड़ता है। अपना, स्वजन, बन्धुबान्धव आदि सबकोइ मुझे विदाय दिये, यह देखकर तु पुलकित अन्तःकरणसे मेरे ओर कटाक्षपात करता है। आत्मसम्बन्धीयोंकी आर्त्तनादसे तेरा पराक्रम बढ़ता रहता है। मेरा शरीर शीर्ण, नेत्र दृष्टिरहित, कर्ण बधिर, अङ्ग शीतल औ जो श्वासबन्ध होगया, इससे मैं अभिभूत नहीं हुआ हु। पिता, माता, पुत्र, दारा, औ मित्रमण्डली मुझे परिहार किये, इससे तु मत मान् जो मैं निःसहाय औ निराश्रय हो गया। मैं इसबेर कीट वा पतङ्ग देह में नहीं आया, इसबेर पशु पक्षी आदि सामान्य देह में क्रीड़ा नहीं किया, इसबेर मैं मनुष्यदेहको धारण कियाथा। मानवीय शक्ति, मानवीय भाव, मानवीय तेजसे मेरे शरीर बनाया औ रक्षित हुआ था। इसबेर सत्सङ्गके प्रभावसे तेरे चतुर चक्रान्तके दर्प दलनार्थ महामन्त्र शिक्षा किया हु। पिताके समान वैराग्य मुझे प्रतिपालन किये, क्षमा मातारूप बनकर मुझे सदा ही रक्षा करी, शान्ति मेरी परम सुखदायिनी सहधर्मिनी बनकर मेरी सुखशय्या की सेवा में तत्पर रहि थी, सत्य सखा बनकर, दया भग्नि होकर, शम दमादि भाइयों बनकर मेरे आनन्द बढ़ाये औ हितसाधन किये, निःस्वार्थताका वस्त्र पहनके, ज्ञानामृत भोजन करके मैं जीवनातिपात किया।

তোমার প্রতিভা হানি করিবার জন্যই, এই মহাশ্মশানে আসিয়াছি। শত শত জীবকে তুমি এই স্থানে শাসন করিয়াছ বলিয়া, তোমার দর্পের, সীমা নাই; হা! তুমি অন্ধ, আজ তোমার তমসাচ্ছন্ন নয়নের সম্মুখে একটী অভিনব ব্যাপারের অভিনয় করিয়া জগৎকে আশাযুক্ত ও নির্ভয় করিয়া যাইব।

তুমি এই শ্মশানভূমিকে শব মণ্ডলীর আবাস স্থান ভাবিয়া আমাকেও মৃত মনে করিয়াছ। কাল! ইহা মৃতপূর্ণ শূন্য ভূমি নহে। ইহা কালের কাল স্বরূপ মহাকালের লীলাভূমি। তিনিই এখানকার একমাত্র অধীশ্বর। আমি তাঁহার প্রজা। তুমি আমাকে স্পর্শ করিতেও পারিবে না। শঙ্কর-রাজ্যে কৃতান্তের কিছুমাত্র অধিকার নাই। ঐ দেখ আমার কর্ণ তাঁহার নাম শ্রবণে পবিত্র হইয়াছে, জিহ্বা তাঁহার যশো মহিমা গানে ধন্য হইয়াছে, অস্থিমালার প্রত্যেক গ্রন্থিতে তাঁহার নাম অঙ্কিত রহিয়াছে; প্রাণ তাঁহার নিশ্বাসে প্রবেশ করিয়াছে, আত্মা তাঁহার জ্বলন্ত জ্যোতিতে আচ্ছন্ন হইয়া গিয়াছে, আমার চিতাভস্ম তাঁহার অঙ্গের ভূষণ হইয়াছে। ঐ দেখ তাঁহার উজ্জ্বল দীপ্তি শ্মসান ভূমিকে রক্ষা করিতেছে। এখানে তাঁহার ভয়ে মায়া প্রবেশ করিতে পায় না। ঐ দেখ অহংকারের উন্নত মস্তক চূর্ণ হইয়া পড়িয়া রহিয়াছে। ঐ দেখ, মমতা বিবসনা, দম্ভ হতচেতন ও কন্দর্প ভস্মীভূত হইয়াগিয়াছে। ঐ দেখ ক্রোধ ভীত, লোভমূর্চ্ছিত, ঘৃণা ছিন্নমস্তকা, অভিমান বিদলিত হইয়াছে। কাল! দেখ দেখ, তোমার কিঙ্করগণ শঙ্কর সদনে কি দুরবস্থাগ্রস্ত হইয়াছে। তোমার শাসন দণ্ড লইয়া তুমি অশিব রাজ্যে গমন কর, এখানে আর অপেক্ষা করিও না। ঐ দেখ, রুদ্রতেজ তোমার ধৃষ্টতা নিবারণার্থে বজ্রবেগে তোমার অঙ্গ আকর্ষণ করিতেছে। তুমি পলায়ন কর।

মানবগণ। অদ্য তোমাদের নিকট হইতে, সমস্ত জীবের নিকট হইতে বিদায় গ্রহণ করিলাম, কালের ভয় বিদূরিত হইল! মহাকালের মহাতেজে আমি নৃত্য করিতেছি। ঐ দেখ, কাল আমাকে স্পর্শ করিতে সাহস করিল না। সাবধান! কাল কিংকরগণের মোহন মন্ত্রে আত্মবিস্মৃত হইও না। দুই দিনের জন্য দেহ পাইয়া,

अहो काल! इसबेर तेरी प्रतिभा की हानि पहुंचानेके ही अर्थ इस महा श्मशान में आया हूं। तु इस स्थान में सकड़ो जीवोंको शासन किया, इससे तेरे दर्प की सीमा नही मिलती है। हा! तु अन्ध हो गया, आज तेरे तमसाच्छन्न आंखेंके साम्हने एक नवीन व्यापारके अभिनय करके सारे संसारको आशा युक्त औ निर्भय कर जाऊङ्गा।

तु इस श्मशान-भूमिको मृतकोंके निवासस्थान जानकर मुझे भी मृत मान लिया। हे काल! यह मृतकोंसे पूर्ण शून्य भूमि नहीं है। यह कालके कालस्वरूप महाकालकी लीला-भूमि है। वेही यहांके एकमात्र अधीश्वर हैं। मैं उनका प्रजा हूं। तु मुझे स्पर्श भी न कर सकेगा। शङ्करके राज्य में कृतान्तका कुछ भी अधिकार नहीं। यह देखले मेरे कर्ण उनके नाम-श्रवणसे पवित्र हो चुके, जिह्वा उनको निर्म्मल यश-महिमा गान कर धन्य हो गयी, हड्डीकी हरेक ग्रन्थि में उनके नाम लिखा हुआ है। मेरा प्राण उनका निश्वास में जा मिला, आत्मा उनका परम तेज में प्रवेश किया, मेरी चिताभस्म उनका अङ्गका भूषण हुआ। उधर देखले, उनकी उज्ज्वल दीप्ति श्मशान-भूमिको रक्षा कर रही है। उनके डरसे माया यह पैठने नहीं पाती है। वह देखले, अहङ्कारके उन्नत सीर पीसा-हुआ पड़ा है। उधर देखले, ममता विवसना, दम्भ हतचेतन औ कन्दर्प भस्म होगये। उधर देखले, क्रोध यहां डरसे घावड़ा गया, लोभ को मूर्च्छा लग गयी, घृणाका सीर उड़ गया, अभिमान पीसा गया। काल! देख देख तेरे भृत्यगण ने शङ्कर सदन में कैसो दुर्दशाको प्राप्त हुए है। तु अपना शासन दण्ड लेकर अशिव राज्य में चला जा, यहां फिर तनिक भी ठहरना नहीं। देख रुद्र तेज तेरी धृष्ठता को निवारणार्थ वज्रवेगसे मेरे अंग आकर्षण कर रहा है। तु शीघ्र भाग जा।

मानवगण! आज तुमलोगोंसे—समस्त प्राणीयोंसे—मैं ने अवकाश लिया, कालका भय छुट गया। महाकालके महातेज में मैं नृत्यकर रहा हूं। वह देख लेना, काल मुझे स्पर्श करनेको भी साहस न किया। सावधान! काल किंकरोंके मोहन मन्त्रसे आत्मविस्मृत न होना दो दिनके अर्थ देह पाये चिरदिनके संग्रह किया हुआ धन व्ययन करना। एकवार भी तो वाह्यजगतको परित्याग करके अन्तर्जगत में प्रवेश करो; देख लो,

চিরদিনের সঞ্চিত ধন, ব্যয় করিও না। একবার বাহ্য জগৎ পরিহার করিয়া, অন্তর্জগতে প্রবেশ কর, দেখিতে পাইবে, দেবলোকে কি আশ্চর্য্য লীলা হইতেছে; তথায় অভয় ও আনন্দের স্রোতে অবগাহন করিয়া পবিত্র হইবে। বীরবিক্রমে কালচক্রভেদ করিয়া, নিত্য নিকেতনে আসিতে পারিবে।

ওঁ শান্তিঃ, শান্তিঃ, শান্তিঃ, হরিঃ ওঁ।

আর্য্য-শাস্ত্র বিজ্ঞান।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

বাগ্বৃত্তির প্রধান কারণ প্রচোদনা। প্রচোদনা দ্বিবিধ। ১ম, অপর ব্যক্তি কর্ত্তৃক প্রশ্নাদি জন্য; ২য়, কেহ প্রশ্নাদি না করিলেও নিজ মনেই কল্পিত প্রশ্নের উদয় জনিত। কোন ব্যক্তি কোন বিষয় জানিবার জন্য প্রশ্ন করিলে, কিম্বা বাচয়িতব্য শব্দার্থের নির্দ্ধারণ করিয়া "বল" বলিয়া প্রেরণা করিলে, বক্তার সেই বাক্য গুলির জ্ঞান হইয়া, তদীয় অর্থের উপলব্ধি হয়। অনন্তর প্রশ্ন করিলে, বক্তার মনে অর্থান্বেষণ বৃত্তি জন্মিয়া, প্রকাশয়িতব্য অর্থ সকল জ্ঞানক্ষেত্রে প্রতিভাসিত হইয়া থাকে। বিষয় সমূহের পরস্পর সম্বন্ধের ঘনিষ্টতাপেক্ষী প্রকাশয়িতব্য অর্থ সমূহের জ্ঞান সমূহ এরূপ ঘনসম্বন্ধযুক্ত হয় যে, তদবকাশে অন্যবিধ জ্ঞানের অভ্যুদয় হইতে পারে না।

বিষয়ের সম্বন্ধ যতই ঘনীভূত হইবে, ততই এক বিষয়ের জ্ঞান অপর বিষয়ের স্মৃতি জ্ঞানের কার্য্যপ্রবণ বীজ হইবে, সুতরাং তদবকাশে কারণাভাব প্রযুক্ত অন্য জ্ঞানের উৎপত্তির সম্ভাবনা নাই। প্রশ্নকর্ত্তার প্রচোদনার সম্মিলনে ঈদৃশ জ্ঞান বাগ্বৃত্তির কারণ হইয়া থাকে। প্রচোদনা সম্বলিত জ্ঞান মার্গে যে যে বিষয় অধিরূঢ় হয়, তাহাই প্রকাশ করিবার নিমিত্ত বাক্য প্রবর্ত্তিকা শক্তির উদ্রেক হয়, এ নিমিত্ত উক্তবিধ জ্ঞানের পারম্পর্য্য বাক্‌প্রবর্ত্তিকা বৃত্তির ক্রম বলিয়া কথিত হয়। উক্তবিধ জ্ঞান যেরূপ ক্রমানুসারে উদয় হয়, বাগ্বৃত্তিও সেই ক্রমেই উদয় হইয়া থাকে। জ্ঞান যে পদার্থটীকে নিজ বিষয় করিয়া লইবে, সেই পদার্থই, বাগ্বৃত্তি দ্বারা প্রকাশিত হইতে আরব্ধ হইবে।

देवलोक में कैसी लीला हो रही है, वहां अभय औ आनन्दके प्रवाह में स्नानकर पवित्र होओगे वीर विक्रमसे कालचक्रको भेदकर नित्यनिकेतन में आ सकोगे।

ओं शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरि ओं।

आर्य्य शास्त्र विज्ञान।

(पूर्व्वप्रकाशितके आगे।)

प्रचोदना वाग्वृत्तिका प्रधान कारण है। यह प्रचोदना दो प्रकारकी है। १म, दुसरा किसीने पुछनेसे; २य, बिना किसीसे प्रश्न सुने आपने ही मन में कोइ कल्पित प्रश्न उठनेसे। किसीने कोइ विषय जाननेके अर्थ यदि कुछ पुछे अथवा वाचयितव्य शब्दार्थको निर्द्धारण कर ऐसी प्रेरणा करे कि "कहो" तब उन वाक्योंके समझसे तदीय अर्थकी उपलब्धी वक्ताकी होती है। अनन्तर प्रश्न करने पर, वक्ताके मन में अर्थान्वेषणकी वृत्ति जन्मति औ प्रकाशयितव्य अर्थ सबने ज्ञानक्षेत्र में प्रतिभाषित हुआ करता है। बिषयोंके परस्पर जो सम्बध है, उसकी घनिष्ठतापेक्षी प्रकाशयितव्य अर्थसमूहका ज्ञानराशि ऐसा घनसम्बन्धसे युक्त है, जो तदवकाश में दुसरी भान्ति ज्ञानका अभ्युदय नहीं हो सक्ता है।

विषयका सम्बन्ध जितना ही घनीभूत होगा, उतनाही एक विषयकज्ञान दुसरा विषय की स्मृतिज्ञानका कार्य्योत्पादक वीजस्वरूप बनेगा, सुतरां तदवकाश में कारणके अभावसे दुसरा ज्ञानोत्पत्ति की सम्भावना नहीं। पुछनेहारे की प्रचोदना से मिलने पर इस भान्ति ज्ञान वाग्वृत्तिका हेतुरूप बना करता है। जो जो विषय प्रचोदनासे मिलकर ज्ञानमार्गपर आरूढ़ होते है, उन सबको प्रकाश करनेके निमित्त "वाक प्रवर्त्तिका-शक्ति" तेज होती हैं, इसलिये उस भान्ति ज्ञानका पारम्पर्य्यको "वाक-प्रवर्त्तिका वृत्ति' के क्रम करके जानना। वाग्वृत्ति उसी क्रमसे उदय होती है, जिस क्रमसे उक्तविध ज्ञान बना करता है। ज्ञान जिस पदार्थको अपना विषयकर लेगा, वही पदार्थ वाग्वृत्ति से प्रगट होना प्रारम्भ करेगा।

অপর ব্যক্তি যখন প্রকাশয়িতব্য অর্থের নির্দ্ধারণ করিয়া, বক্তাকে অনুমতি করে যে "রাম রাম বল, "শিব শিব বল" ইত্যাদি তখন আর বক্তার বক্তব্য বিষয়ের জন্য অনুসন্ধিৎসা বৃত্তির উদয় হয় না; তখন প্রচোদনা সম্বলিত দ্বিতীয় বাক্যার্থ জ্ঞানই বক্তার বাগ্‌বৃত্তির কারণ হইয়া থাকে।

মনে করুন, প্রশ্নকর্ত্তা কোন ব্যক্তিকে বলিলেন, "কীদৃশাৎ ভাবো গ্রাহ্য?" (কিরূপ হইতে—কিরূপ ব্যক্তি হইতে ভাব গ্রহণ করিতে হয়) এস্থলে বক্তার আদৌ ঐ পদ কয়েকটীর শ্রবণানন্তরই ইহার জ্ঞান হইবে এবং দ্বিতীয় ব্যক্তির মুখ্য প্রচোদনা সম্বল নিবন্ধন ঐ সমস্ত অর্থের মধ্যে কেবল "কিং" শব্দের অর্থের (যেরূপ ব্যক্তি হইতে ভাব গ্রাহ্য, তাহার বিশেষণ) অন্বেষণী বৃত্তির উদ্রেক হইবে; তৎপরে অন্বেষণের চরিতার্থতা কালীন প্রথম সেই অর্থটীকে (ভাবস্বরূপ বিশেষণ) লক্ষ্য করিয়া, নিশ্চয়াত্মক জ্ঞান জন্মিবে। এই জ্ঞানই উক্তবিধ স্মৃতি জ্ঞানের বীজ স্বরূপ; এই জ্ঞান উদিত হইয়াই স্বকীয় বিষয়ের ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধী অর্থকে উদ্ভাসিত করিতে থাকে। দ্বিতীয় ব্যক্তির প্রচোদনা সম্বলিত অর্থগুলির মধ্যে যে অর্থ ঐ জ্ঞান বিষয় অর্থের নিকট সম্বন্ধী, সেই অর্থই জ্ঞানাভিমুখীন হইবে।

এক্ষণে বিবেচনা করুন, বক্তার মনে যে ভাব স্বরূপ বিশেষণার্থের উদ্ভাসন হইল, তাহার ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধী কে? ভাবস্বরূপ বিশেষণার্থের ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধীভাবযুক্ত, আবার তাহার ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধী বিভক্তির (আৎ) অর্থ (হইতে) অতএব বক্তার মনে ভাব, যুক্ত, হইতে এই তিনটী অর্থের স্মরণ জ্ঞান হইল, পরে ঐ জ্ঞান দ্বিতীয় ব্যক্তির প্রচোদনা ক্রিয়ার সম্বন্ধ থাকা নিবন্ধন, ক্রিয়ার প্রতিক্রিয়া স্বরূপ স্মৃতার্থ প্রকাশিকা বাগ্‌বৃত্তি জন্মিয়া অবিচ্ছেদে উক্ত তিনটী অর্থের প্রকাশক তিন শব্দের (ভৌ উক—আৎ) নিষ্পাদন করিবে।

উক্ত বৃত্তি "ভৌ" মাত্র নিষ্পাদন করিয়া বিশ্রান্ত হইল না, কেন না "ভৌ" দ্বারা কোন অর্থ অভিব্যক্ত হয় না, সুতরাং বৃত্তির কৃতার্থতা হইল না। কৃতার্থ না হওয়া পর্য্যন্ত, বৃত্তির বিশ্রামের অবকাশ নাই। একটী লোষ্ট্র ঊর্দ্ধ হইতে অবক্ষেপ করিলে, উহা পৃথিবী সংশ্লিষ্ট না হওয়া পর্য্যন্ত যে

दूसरा व्यक्ति जब प्रकाशयितव्य अर्थके निर्द्धारण कर वक्ताको ऐसी अनुमति करे कि "राम२ कहो" "शिव२ कहो" इत्यादि, उस समय वक्तव्य विषयके लिये वक्ता की अनुसन्धित्सा वृत्ति नहीं तेज होती; उस समय प्रचोदनासे मिला हुआ वाक्यार्थ-ज्ञान ही वाग्वृत्तिका कारण बनता है।

मानीये, प्रश्नकर्त्ता किसीको बोला "कीदृशात् भावो ग्राह्य:" (किस प्रकारसे—किस प्रकार पुरुषसे भावग्रहण करना चाहिये) यहां इन पदोंको सुनने हीसे वक्ताके मन में इस विषयका ज्ञान होगा और पुछनेहारे की मुखीया प्रचोदना करके उन समस्त अर्थके मध्य में केवल "किं" शब्दार्थको (जिस भान्ति पुरुषसे भाव ग्रहणीय है, उसका विशेषण) अन्वेषण वृत्ति उपजेगी; तदनन्तर अन्वेषण की चरितार्थताके काल में पहले इसी (भाव स्वरूप विशेषण) लक्ष्य करके निश्चयात्मक अर्थको ज्ञान उपजेगा। इस ज्ञान हीको उक्तविध स्मृति ज्ञानका बीजस्वरूप है। यही ज्ञान प्रगट होकर निज विषयके घनिष्ट सम्बधी अर्थको प्रकाश करता रहता है। प्रश्नकर्त्ताकी प्रचोदनाके सम्बलित अर्थसमुहके मध्य में जो अर्थ उस ज्ञानविषयक अर्थका निकट सम्बधी है, वही अर्थ ज्ञानके साम्हने आवेगा।

अब विचार कीजिये, वक्ताके मन में जो भावस्वरूप विशेषणार्थका उद्भासन हुआ, उसका घनिष्ठ सम्बधी कौन है? भावस्वरूप विशेषणार्थका घनिष्ठ सम्बन्धी भावयुक्त, फिर उस की घनिष्ट सम्बन्धी विभक्तिका (आत्) अर्थ "से" अतएव वक्ताका मन में "भावयुक्तसे" इन तीनों अर्थका स्मरणज्ञान उपजा, तदनन्तर वह ज्ञान, प्रश्नकर्त्ताकी प्रचोदना क्रियासे सम्बन्ध रहेपर क्रिया की प्रतिक्रियाका स्वरूप स्मृतार्थ प्रकाशिका वाग्वृत्ति बनकर लगातार उक्त तीन अर्थके प्रकाशक तीन शब्दको (भौ+उक+आत्) निष्पादन करेगा।

"भौ" मात्र निष्पादन करके उक्त वृत्ति न ठहरी, क्यों कि "भौ" से कोइ अर्थ बोध नहीं होता है, सुतरां वृत्ति कृतार्थ न हुई। जबतक कृतार्थ न हो, तबतक वृत्तिका विश्राम लेनेका अवकाश नहीं। किसी एक लोष्ट्रको यदि उपरसे गिराय दिया जाय तो वह जबतक भूमिपर न

বিশ্রাম গ্রহণ করে না, ইহা কাহারই অবিদিত নাই। অতএব বক্তৃ মনোবৃত্তি "ভৌ" নিষ্পন্ন করিবার অব্যবহিত পরক্ষণেই "উক" এবং "উক" নিষ্পাদনের অব্যবহিত পরক্ষণেই "আৎ" নিষ্পন্ন করে, তাহার পর বিশ্রান্ত হয় এই প্রকারে অপ্রতি সংহার নির্গমন হইয়া থাকে।

কেহ প্রশ্ন বা অনুমতি না করিলে, বক্তা যখন নিজ হইতেই কোন বিষয় বলেন, তখনও আপনা আপনিই প্রচোদনার তুল্য ফলপ্রদ উদ্দেশ্য জ্ঞানাত্মিকা ক্রিয়া জন্মে ;তৎপরে উক্ত প্রকারেই সমস্ত ক্রিয়া হইয়া থাকে। এই প্রকার স্থলে "ভৌ উক আৎ" ইত্যাদি প্রকার পৃথক্ উচ্চারণ হইতে পারে না, কারণ ঔকারের উচ্চারণে সার্দ্ধদ্বিমাত্রা কাল (১) অতীত হয় এবং একটী স্বরবর্ণের পর দ্বিতীয় আর একটি স্বরবর্ণ উচ্চারণ করিতে তদুভয়ের অবকাশেও অর্দ্ধমাত্রা কাল অতীত হয় এইরূপে 'ভ' এর "ঔ" কারের উচ্চারণ অবধি "উক" এর "উর উচ্চারণারম্ভ তিন মাত্রা কাল অতীত হইয়া থাকে। এস্থলে পূর্ব্বোক্ত কারণ বশতঃ বাগ্বৃত্তির অবিচ্ছিন্নতানিবন্ধন "ভৌ" এর "ঔ" কার উচ্চারণের পর ছেদ না হওয়া হেতু উভয় উচ্চারণের অবকাশ স্বরূপ অর্দ্ধমাত্রা কাল ভগ্ন হইয়া "ঔ" কারের উচ্চারণের পরক্ষণেই "উ" উচ্চারণের অভিব্যক্তি হইতে থাকে। সুতরাং উক্ত ত্রিমাত্র কালের অর্দ্ধমাত্রা ন্যূন হইল এবং ধ্বনিযুক্ত প্রসারিতোষ্ঠের আকুঞ্চন দ্বারা অর্দ্ধমাত্র "ব" আর দ্বিমাত্র "আ" হইয়া পড়িল। অতএব "ভৌ" উক" ইহার সন্ধি কার্য্য অন্য প্রকার না হইয়া "ভাবুক"(২) হইয়া পড়িল। তৎপরে উক্তকারণেই বাগ্বৃত্তি "ভাবুকের" একমাত্র স্বর "অ" এর উচ্চারণের শেষ ক্ষণে "আৎ" উচ্চারণের অভিব্যঞ্জিকা হইলে, "আ" উচ্চারণের পরও অর্দ্ধমাত্রা কাল ন্যূন হইল, সুতরাং "অ" এবং "আ" উচ্চারণের প্রভেদ না

(১) একটী হ্রস্ব বর্ণ (অ) উচ্চারণ করিতে যে কাল অতীত হয়, তাহার নাম মাত্রাকাল। একটী ব্যঞ্জনবর্ণ (ক) উচ্চারণ করিতে যে কাল লাগে, তাহাকে অর্দ্ধমাত্রা বলে। আর একটী দীর্ঘ বর্ণ উচ্চারণ (আ) করিলে যে কাল লাগে, তাহার নাম দ্বিমাত্রা কাল।

(২) সন্ধিজাত "ব" মাত্রেই অন্তস্থ, ইহার উচ্চারণ দন্ত ও ওষ্ঠদ্বয় নিষ্পন্ন, সুতরাং বর্গীয় "ব" হইতে ইহার উচ্চারণ, অনেক বিসদৃশ।

गिरे तबतक जो वह विश्राम नहीं करता सो सब कोइ विदित हैं। अतएव वक्ता की मनोवृत्ति "भौ" निष्पन्न करके झट "उक" औ "उक" को निष्पादन करके उसही क्षण में "आत्" निष्पादन करती है, तदनन्तर विश्राम करती है। इस रीति "अप्रतिसंहार-निर्गमन" हुआ करता है।

विन किसीसे पुछे अथवा अनुमति मिले, जब वक्ता स्वयं ही कुछ बोलें तो उस समय भी प्रचोदनाके तुल्य फलदायी उद्देश्य ज्ञानात्मिका क्रिया, आप ही आप उपजती, तदनन्तर उक्त रीतिसे कार्य्य हुआ करता है।

ऐसे स्थान में "भौ+उक+आत्" इत्यादि रूप पृथक् उच्चारण नहीं हो सक्ता है, क्यों कि औकारका उच्चारण में सार्द्ध द्विमात्रा काल (१) लगता है औ एक स्वरवर्णके अनन्तर दुसरा एक स्वरवर्णके उच्चारण करने में जो अवकाश मिलता उस में भी अर्द्धमात्रा काल व्यतीत होता है, इस रीति "भ" में जो "औ" है, उसके उच्चारण कालसे लेकर "उक" के "उ" के उच्चारणके प्रारम्भ तक तीन मात्रा काल व्यतीत हुआ करता हैं। यहा पूर्व्वोक्त कारण करके वागवृत्ति लगातर रहनेसे "भौ" शब्दके "औ" कारके उच्चारणके अनन्तर छेद न रहा, इससे उभय उच्चारणके अवकाश रूप अर्द्धमात्रा काल भग्न होकर "औ" कारका उच्चारण होते ही "उ" उच्चारण की अभिव्यक्ति हुआ करती है। सुतरां उक्त त्रिमात्रा काल की अर्द्धमात्रा न्यून हुआ औ ध्वनिसे युक्त विस्तार हुआ ओष्ठके आकुञ्चनसे अर्द्धमात्रा "व" औ द्विमात्रा "आ" बनगया। अतएव "भौ+उक" इसका सन्धिकार्य्य अन्य प्रकार विन बने "भावुक" (२) ऐसा ही बन गया। तदनन्तर उक्त कारण होसे वागवृत्ति "भावुक" के एकमात्र स्वर "अ" उच्चारणके अन्त में

(१) कोइ ह्रस्ववर्णोच्चार में जितना देर लगता है, उसीका नाम मात्रा काल। कोइ व्यञ्जनवर्णोच्चारण में जितना काल व्यतीत होता है, उसका नाम अर्द्धमात्रा औ कोइ दीर्घवर्णोच्चारण (आ) में जितना काल लगता उसका नाम "द्विमात्रा" काल है।

(२) सन्धिसे जो "व" बनता है, उसका उच्चारण स्थान दन्त औ ओष्ठ, सुतरां "ब" से इसका उच्चारण अत्यन्त पृथक है।

হইয়া, কেবল মাত্র "আ" ই পরিস্ফুট হইল। সর্ব্বত্রই এইরূপ।

অতএব বাক্যের ঈদৃশ স্বভাব অবগত হইবার জন্য ব্যাকরণ বলিলেন যে, ঔকারের পর স্বরবর্ণ থাকিলে, "ঔ" স্থানে আব হইয়া যায়, এবং "অ"কারের পর "অ" বা "আ" থাকিলে, "আ" হইয়া যায় ইত্যাদি।

এস্থলে এরূপ আপত্তি হইতে পারে, "যে" ইদানীন্তন লোকেরা যে সংস্কৃত বা অন্য রূপ ভাষার প্রয়োগ করিয়া থাকেন, তাহা উক্তবিধ অর্থ বোধ পূর্ব্বক নহে, অতএব অভিহিত সন্ধিবিজ্ঞান পরিশুদ্ধ হয় না।"

এতদুত্তরে বক্তব্য এই যে, ভাষা বিজ্ঞানানভিজ্ঞ লোকেরা যে কোন শব্দের প্রয়োগ করিয়া থাকে, তাহা সমস্তই সাঙ্কেতিকত্বে অধিরূঢ় হইয়া পড়ে, সুতরাং তাহাদিগের অর্থবোধ পূর্ব্বক প্রয়োগ না হওয়াতে কোন দোষ হইতে পারে না। স্বভাবানুসারে তত্তদর্থের বোধক তত্তৎ শব্দের প্রকৃতি ব্যাখ্যাই ব্যাকরণের উদ্দেশ্য। ইহার বিশেষ বিবরণ "শশধর বাগ্বিজ্ঞানে" বিস্তৃত হইয়াছে। অপ্রতিসংহার নির্গমন মাত্রেই উক্ত কারণে সন্ধিকার্য্য না হইয়া থাকিতে পারে না। সর্ব্বত্রই যথাযথ সন্ধি কার্য্য হইবে শব্দ দ্বয়ের ঘনিষ্টতার নাম সন্ধি, সুতরাং উক্ত কারণে শব্দের ঘনিষ্ঠতা হইলেই, তজ্জনিত ফলও হইয়া পড়ে এবং সেই বাক্‌স্বভাবজাত ফল যাদৃশাকারে পরিণত হয় ব্যাকরণ তাহাই প্রতিপাদন করিয়া থাকে।

ক্রমশঃ।

কলিকাতা হরিভক্তিপ্রদায়িনী সভা।

উক্ত সভার তৃতীয় বাৎসরিক অনুষ্ঠানপত্র এক খানি আমাদিগের হস্তগত হইয়াছে। পুস্তিকাকারে মুদ্রিত পত্র খানির আদ্যোপান্ত পাঠ করিয়া, যথাসম্ভব আনন্দলাভ করিলাম এবং ধর্ম্মোৎসাহী সভাসদ্বর্গ ও সম্পাদক মহাশয়কে ধন্যবাদ দিলাম। পত্র পাঠে বিদিত হইলাম, যে "আমাদিগের ধর্ম্মই সত্য সনাতন ধর্ম্ম, ইহা সুশিক্ষিত সমাজে প্রতিপন্ন করাই এই সভার মুখ্য উদ্দেশ্য।" "এক্ষণে সনাতন বৈষ্ণব ধর্ম্মের নিতান্ত মলিন দশা, (বঙ্গীয়

"आत्" उच्चारण की अभिव्यक्तिका होने पर "आ" उच्चारणके अनन्तर भी अर्द्धमात्रा काल न्यून हुआ, सुतरां "अ" औ "आ" उच्चारणका प्रभेद न बुझ पड़ा, केवलमात्र "आ" ही परिस्फुट हुआ। ऐसाही सर्व्वत्र जानना।

अतएव वाक्यका इस भान्ति प्रकृति प्रगट करने के अर्थ व्याकरण बोला जो औकारके अनन्तर स्वर रहने पर औके स्थान में "आव" होजाता है। औ अकारके अनन्तर अवा आ रहनेसे "आ" बन जाता है। इत्यादि।

यहां इस भान्ति शङ्का हो सक्ती है कि आज कलके लोगोंने जो संस्कृत वा अन्यरूप भाषा व्यवहार किया करता है, सो उक्तरूप अर्थ बोध करके नहीं, अतएव कथित सन्धिविज्ञान विशुद्ध नहीं बुझ पड़ता है।

इसके उत्तर में यह वक्तव्य है जो भाषा विज्ञानके अनभिज्ञ लोगों ने जिस किसी शब्दका व्यवहार करता है सो सब सांकेतिकत्व पर आरूढ़ होते हैं, सुतरां उन सबका व्यवहार अर्थबोध पूर्व्वक न भी होतो कुछ दोष नहीं हो सक्ता है। स्वभावानुसार तत्तदर्थबोधक तत्तत् शब्दकी प्रकृति की व्याख्या करना ही व्याकरणका अभिप्राय है। इस विषयके विस्तार विवरण "शशधर वाग्विज्ञान" में लिखा हुआ है। अप्रतिसंहार निर्गमन मात्र ही उक्त कारणसे सन्धि बने बिना नहीं रह सक्ता है। सर्व्वत्र ही जहां जैसा हो सन्धि कार्य्य अवश्य ही होगा। दो शब्द की घनसम्बन्धका नाम "सन्धि" है। सुतरां उक्त कारणसे शब्दों की घनिष्ठता होनेहीसे उससे फल भी होता है, औ उस वाक् स्वभावसे जन्मा हुआ, फल जिस रीति से परिणत होता है, व्याकरण उस ही को प्रतिपादन किया करता है। (शेष आगे)

कलकत्ता हरिभक्तिप्रदायिनी सभा।

उक्त सभाका अनुष्ठानपत्र तीसरे वर्षके एक खण्ड हमारे हात लगा। पुस्तिकाकार में छापा हुआ, पत्र की आदिसे लेकर अन्त तक पढकर हमने यथासम्भव आनन्दलाभ किया औ धर्म्मोत्साहि सभासदों औ सम्पादक जीको धन्यवाद दिया। पत्र में लिखा हुआ है, जो "हमारे धर्म्म ही सत्य सनातन धर्म्म हैं, यह सुशिक्षित समाज में प्रतिपन्न करना ही इस सभाका मुख्य उद्देश्य है।" आज कल सनातन वैष्णव धर्म्म की अतीव मलिन दशा है, (बङ्गदेशी वैष्णव, वैरागीयोंके दुश्चरि-

বৈষ্ণব বৈরাগীগণের লাম্পট্যাদি জন্য) অতএব যাহাতে এই সত্য ধর্ম্মের উক্তরূপ আরোপিত দোষ সকল অপনীত হইয়া বৈষ্ণব সনাতনধর্ম্ম সর্ব্বসাধারণের নিকট নির্ম্মল ভাবে ও সজীব ভাবে আভাসমান হয় তদ্বিষয়ে সবিশেষ যত্ন করা এই সভার দ্বিতীয় উদ্দেশ্য।" "ব্রজের স্নেহ, সখ্য ও প্রেম ভাব অতি গূঢ় পদার্থ, উহাই বৈষ্ণব ধর্ম্মের সার।" "এই পবিত্র আহ্লাদ জনক ব্রজের ভাব সাধারণের বোধগম্য করান, এই সভার তৃতীয় উদ্দেশ্য।" "কুসংস্কার বিশিষ্ট আর্য্য সন্তানগণের চিত্তক্ষেত্র হইতে ধর্ম্মগত বিরুদ্ধ ভাব সকল অপনয়ন করা এবং উপযুক্ত প্রচারক দ্বারা ও যাহাতে সর্ব্বসাধারণের মনে বৈষ্ণব ধর্ম্মে আস্থা জন্মে তাহার উপায় করা এতৎ সভার চতুর্থ উদ্দেশ্য।"

আমরা উক্ত উদ্দেশ্য গুলি পাঠ করিয়া, সভার প্রকৃত ও গম্ভীর লক্ষ্যের যথাযথ মর্ম্মোদ্ভেদ করিতে সমর্থ হইলাম না। সভার ২য়, ৩য়, ও ৪র্থ উদ্দেশ্যের শেষাংশ প্রনিধান পূর্ব্বক পাঠ করিলে প্রতীতি হয়, যেন সভাটী কেবল মাত্র বৈষ্ণব সম্প্রদায়েরই মতপ্রচার ও উৎকর্ষ সাধন জন্য স্থাপিত হইয়াছে। সভার প্রথম উদ্দেশ্যে ও চতুর্থের প্রথমার্দ্ধে যে "আমাদিগের সত্য সনাতন" ও "আর্য্যধর্ম্ম" আদি কয়েকটী শব্দ ব্যবহৃত হইয়াছে তাহার অর্থ আমরা বুঝিতে পারিলাম না। সভা যদি উক্ত সনাতন বা আর্য্য ধর্ম্মের লক্ষণ প্রকটন করিতেন তাহা হইলে বরং ভাল হইত, নতুবা সাধারণ্যে ইহাই প্রতীতি হইবে যে, বৈষ্ণব সম্প্রদায়ের ধর্ম্মাচারই" এ সভার "আর্য্যধর্ম্ম"। অথবা যদি ঈদৃশী প্রতীতিই সভার হৃদয়ের গূঢ় অভিপ্রায় হয়, তাহা হইলে যে বর্ত্তমান ভারতের সর্ব্বসাধারণ আর্য্য জনসমাজ হইতে তাঁহারা সহানুভূতি প্রাপ্ত হইবেন, সে আশা নিতান্ত সুদূরপরাহত। বৈষ্ণব ধর্ম্মের প্রতি আমাদিগের প্রগাঢ় শ্রদ্ধা সত্বেও সমাজের দিকে দৃষ্টি পূর্ব্বক আমরা ঈদৃশী সমালোচনা না করিয়া থাকিতে পারিলাম না।

কলিকাতা ও তন্নিকটবর্ত্তী স্থানসমূহে "হ, ভ, প্র, সভা নামে অনেকগুলি আর্য্যধর্ম্ম সভা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, কিন্তু সর্ব্বত্রই প্রায় সাম্প্রদায়িক দৃষ্টি, সাম্প্রদায়িক মত ও সাম্প্রদায়িক ভাবের কার্য্য হইয়া থাকে, প্রায় কোন সভাতেই শ্রীমদ্ভাগবদাদি ভিন্ন

वादिके हेतु करके) अतएव जिन उपायोंसे उक्तरूप वक्तल दोष, जो कुछ इस सत्यधर्म्म पर डाले गये है, अपनयन किये जावें औ सर्व्वसाधारणके निकट निर्म्मल औ जीवत भावसे वैष्णव धर्म्मको समझाया जाय, तदर्थ विशेषरूप यत्न करना इस सभाका दुसरा उद्देश्य है।" "व्रजलीलाके स्नेह, सख्य औ प्रेमभाव अतीव गूढ़ पदार्थ हैं, वेही वैष्णव धर्म्मका सारांश है।" "इस पवित्र आह्लादजनक व्रजलीलाके भाव साधारणको समझाय देना, सभाका तीसरा उद्देश्य है।" "कुसंस्कारयुक्त आर्य्यजनोंके चित्त-क्षेत्र में से धर्म्मसम्बन्धी विरुद्ध भावों को अपनयन करना औ सुयोग्य प्रचारकोंको नियत करके देश देशान्तर में आर्य्यधर्म्म प्रचार करावना औ जिस रीतिसे सब जनोंके मन में वैष्णव धर्म्म पर श्रद्धा उपजे तदर्थ उपाय करना इस सभाका चतुर्थ उद्देश्य है।"

हम उक्त उद्देश्य समूह पढ़कर सभाके प्रकृत वो गम्भीर लक्ष्यार्थको यथा रीति उद्भेद न कर सकें। सभाके २य, ३य औ ४र्थ उद्देश्यके शेषांशपर तनिक प्रणिधान करनेसे यही प्रतीति होती है, जो केवलमात्र वैष्णव सम्प्रदायके मतप्रचार औ उन्नतिके अर्थ यह सभा स्थापित हुई है। हमसे उन "हमारे सत्य सनातन" औ "आर्य्य धर्म्म" आदि कतिपय शब्दोंके, जो कि सभाके १म उद्देश्य औ ४र्थके प्रथमार्द्ध में लिखित हैं, अभिप्राय भांली भान्ति न समझे गये। सभा यदि उक्त सनातन वा आर्य्य धर्म्मके लक्षण प्रगट करती तो उत्तम होता, नहीं तो सब किसही की यही प्रतीति होगी कि वैष्णव सम्प्रदायका धर्म्माचार ही इस सभाका "आर्य्य धर्म्म" है। अथवा यदि इस रीति ही सभाके हृदयका गूढ़ अभिप्राय हो, तब वर्त्तमान भारतके सर्व्वसाधारण आर्य्यजनोंसे सहानुभूति की आशा नितान्त सुदूरपराहत है। वैष्णव धर्म्म पर हमारी प्रगाढ़ श्रद्धा रहेपर भी समाजके ओर दृष्टिपूर्व्वक हमको इस भान्ति समालोचना करना पड़ी।

कलकत्ता औ उसके आस पासके स्थानों में "ह. भ. प्र. सभा" नाम बहुतेरी आर्य्यधर्म्म सभा बन चुकी हैं। किन्तु सर्व्वत्र ही प्राय साम्प्रदायिक दृष्टि, साम्प्रदायिक मत औ साम्प्रदायिक रीतिसे कार्य्य हुआ करता है। प्राय किसी सभा में

মনু সংহিতা, যাজ্ঞবল্ক্য সংহিতা, তন্ত্র, বেদ, বেদান্তাদির ব্যাখ্যাদি হয় না। আর্য্য জাতির অবশ্য পালনীয় বর্ণাশ্রম ধর্ম্মাদির উপদেশ ও অবশ্য জ্ঞাতব্য বৈজ্ঞানিক রহস্য ভেদের প্রতিষ্ঠা সমাজে ক্রমে লুপ্ত প্রায় হইতে চলিল। ভক্তি শাস্ত্রাদি দ্বারা মানবের মন ভাবরাজ্যে প্রবেশ করে বটে, কিন্তু আশ্রম ধর্ম্মাচার লোপের ও বৈজ্ঞানিক দৃষ্টির অভাবের সঙ্গে সঙ্গে ঘোর সামাজিক বিপ্লব ও হৃদয়ের সংকীর্ণতা উপস্থিত হইয়া সমস্ত বিশৃঙ্খল করিয়া দেয়। গত বর্ষে উক্ত সভাভবনে ধর্ম্মপ্রচারক সম্পাদক যে "গার্হ্যস্থ ধর্ম্ম" সম্বন্ধে একটী বক্তৃতা করিয়াছিলেন, তাহাতে এতাবৎ বিধিপূর্ব্বক প্রদর্শিত হইয়াছিল এবং অনেক বার সভাকে বিশুদ্ধ আর্য্য পদ্ধতিতে কার্য্য করিতে অনুরোধও করা হইয়াছিল। বর্ণাশ্রম ধর্ম্মের উপদেশ গ্রন্থগুলির চর্চ্চা আজ কাল কেবল অধ্যাপক মহাত্মাদিগের চতুষ্পাটীতেই আবদ্ধ রহিয়াছে; অন্যান্য ধর্ম্মালোচনা স্থানে কেবল ভক্তিশাস্ত্র, বৈরাগ্য শাস্ত্রাদির চর্চ্চা। অহো সভামণ্ডলি! যদি জনসমাজের কল্যাণেচ্ছু হইয়া অভ্যুদিত হইয়া থাকেন, তবে সত্বরেই সংহিতাকার ও বৈজ্ঞানিক তত্ত্ববেত্তাগণকে আচার্য্যের আসনে আহ্বান করুন। যাহাতে তাঁহাদের বর্ণাশ্রমোচিত এবং আধ্যাত্মিক ও ভৌতিক বিজ্ঞানানুমোদিত অমুল্লঙ্ঘনীয় উপদেশজ্যোতিঃ সমাজ ধ্যে বিকীর্ণ হয়, কায়মনোবাক্যে তাহারই যত্ন করুন।

বোধ করি আর্য্যধর্ম্মী মাত্রেই সভার সভ্য ও সহানুভাবক হয়েন, ইহা প্রত্যেক সভারই আকাঙ্ক্ষা। সভাগত ব্যক্তিমণ্ডলী যে বিবিধ সম্প্রদায়ভুক্ত হইবেন, তাহার বিচিত্রতা কি! কিন্তু সাধারণতঃ সকলেই গৃহস্থ, সুতরাং সে স্থানে সাম্প্রদায়িক মত প্রচারিত হইলে, তৎ সম্প্রদায়ী ভিন্ন অন্যান্য সকলেই প্রীতিলাভ করিতে পারেন না; কিন্তু বর্ণাশ্রম ধর্ম্ম বা বৈজ্ঞানিক রহস্য ব্যাখ্যা করিলে, কাহারই কামনা অপূর্ণ থাকে না। নিজ নিজ আশ্রমোচিত ধর্ম্মাচার ভিন্ন মনুষ্যের হৃদয় যথাযথ সুসংগঠিত হয় না এবং ঈদৃশ ধর্ম্মের প্রচার ভিন্ন ভারত কখনই নিজ প্রকৃতিস্থ হইবে না।

কলিকাতা হরিভক্তি প্রদায়িনী সভার সহৃদার সভ্যগণ যদি প্রকৃত আর্য্যধর্ম্মের পুনরুদ্দীপনার্থ আপনাদিগকে বদ্ধপরিকর মনে করেন, তবে বোধ

श्रीमद्भागवतादि छोड़के, मनु स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, तन्त्र, वेद, वेदान्तादि की व्याख्या न होती है। आर्य्य जातिके अवश्य-पालनीय,, वर्णाश्रम धर्म्मादिके उपदेश औ अवश्य ज्ञातव्य वैज्ञानिक तत्त्व की प्रतिष्ठा समाज में से धीरे धीरे उठती चली जाती है। भक्ति शास्त्रादि करके मनुष्योंके मनभाव राज्य में प्रवेश करते हैं सही, किन्तु आश्रम धर्म्माचारके विलोप औ वैज्ञानिक दृष्टिके अभावके सङ्ग ही सङ्ग घोर सामाजिक विप्लव औ हृदय की सङ्कीर्णता मचकर समस्त रीति, नीतिको उलट पालट कर देते है। गत वर्ष में धर्म्म प्रचारक सम्पादकने जो उस सभाभवन में "गार्ह्यस्थ धर्म्म" इस आशय पर एक वक्तृता करीथी, तत्काल ये विधि भांती भान्ति देखलायी गयी औ अनेक वार विशुद्ध आर्य्य रीतिसे कार्य्य चालानेके लिये सभाको अनुरोध भी किया गया था। आज कल् केवल पाठशाले ही में विद्यार्थियोंको सिखलानेके अर्थ वर्णाश्रम धर्म्मके उपदेशोंसे पूर्ण शास्त्रकी चर्च्चा हुआ करती है। अहो सभामण्डलि! आप सवका अभ्युदय, यदि समाजके कल्याणार्थ हुआ हो तो शीघ्र ही स्मृति शास्त्रवाले औ वैज्ञानिक तत्त्ववेत्ताओंको श्रद्धापूर्व्वक आचार्य्यकी वेदी पर वैटाइये। औ कायमन वचनसे इसीके यत्न करते रहिये कि जिस रीतिसे उन्होंके वर्णाश्रमोचित औ आध्यात्मिक वो भौतिक विज्ञानानुमोदित अनुल्लङ्घनीय उपदेशरूप ज्योतिः जनसमाजके सर्व्वत्र ही विकीर्ण होवे।

वोध होता है, कि प्रत्येक सभा की यह आकांक्षा है, कि हरेक आर्य्य धर्म्मी ही सभाके सभ्य औ सहानुभावक वनें। यह कुछ विचित्र नहीं, जो सभा में आये हुए, व्यक्ति समूह विविध सम्प्रदायके हैं; किन्तु साधारणतः सब कोइ गृहस्थ हैं, सुतरां वहां किसी एक सम्प्रदायके मत प्रचार होनेसे उस सम्प्रदायी छोड़कर सब किसीकी प्रीति न वढ़ सकेगी, किन्तु वर्णाश्रम धर्म्म वा वैज्ञानिक तत्त्व की व्याख्यानसे किसीकी कामना अपूर्ण न रहेगी। निज निज आश्रमके योग्य धर्म्माचार किये विना मनुष्यका हृदय यथायथ सुगठित न होता है औ इस भान्ति धर्म्मके प्रचार विना भारत कभी निज प्रकृतिको न प्राप्त होगा।

कलकत्ता हरिभक्ति प्रदायिनी सभाके सहृदार सभ्य जनोंने यदि प्रकृत आर्य्य धर्म्म की पुनरुद्दीपनाके अर्थ आपनेको वद्धपरिकर मानें तो,

করি, স্থিরচিত্তে তাঁহাদের উদ্দেশ্য গুলির প্রতি পুন-প্র'ণিধান পূর্ব্বক আমাদিগের আশা পূর্ণ করিবেন, আর যদি কেবল বৈষ্ণব ধর্ম্মের দিকেই তাঁহাদের লক্ষ্য থাকে, তাহাও উত্তম, কিন্তু তজ্জন্য কার্য্য প্রণালী আরও কিছু স্বতন্ত্র ভাবে করিতে হইবে। সভার বর্ত্তমান রীতি, নীতি তাহার পূর্ণানুকুল নহে।

মুঙ্গের আ, ধ, প্র, সভার উপদেশ।

(ধর্ম্মপ্রচারক সম্পাদককর্ত্তৃক ব্যাখ্যাত।)

যে কেহ যে কোন দ্রব্যই ভোজন করুক না কেন, ভোজনান্তে কিয়ৎ পরিমাণে জলপান করা প্রাণী মাত্রেরই অভ্যাস। অন্ন খাও, রুটী খাও, পিষ্টক খাও, ফল মূল খাও, পরিশেষে জল না খাইলে, শরীর সুশীতল হয় না, প্রাণ প্রফুল্ল হয় না, অথবা অন্নাদি সুচারুরূপ পরিপাকও হয় না। জলীয় পরমাণু শরীরে প্রবেশ না করিলে, প্রাণী জীবিত থাকিতে পারে না। জল জীবের জীবন স্বরূপ। অগ্নির তাপে, সূর্য্যের তাপে, মনস্তাপে কণ্ঠ শুষ্ক হইলে, জল পানে শরীর শীতল হয়, যেন নবীন বলের সঞ্চার হয়, এই জন্য জলের এত আদর। এই জন্যই জগদীশ্বর জলধীখাত খনন করিয়া ধরাকে বেষ্টন করিয়া রাখিয়াছেন। সময়ে২ জীবের জন্য জলরাশি আকাশে আকর্ষণ পূর্ব্বক সংশোধন করতঃ, জলদজাল রচনা করিয়া, বর্ষণ করিয়া থাকেন; কঠিন পাষাণ ভেদ করিয়া, জলের উৎস উৎসারিত হইতেছে, ভূমি খনন করিয়া দেখ বিধাতা সেখানেও জীবের জন্য অগাধ সঞ্চিত জলরাশি লুকাইয়া রাখিয়াছেন। যদি তাপিত অঙ্গ শীতল করিতে চাও, জলে অবগাহন কর।

আমাদিগের দেশে সর্ব্ব বিভাগেই দেখিতে পাই, কুলললনাগণ কক্ষে বা মস্তকে করিয়া, গঙ্গাদি নদী হইতে জলকলস বহন করিয়া আনে। প্রত্যক্ষ ঘটনার সঙ্গে সঙ্গে ভাবের তরঙ্গ খেলিতে লাগিল। দেখিলাম বাঁধাঘাটে অনেকগুলি ইতর ও ভদ্র কুলনারী জলানয়নার্থে অবতরণ করিয়াছে। বর্ষাকাল-পথ ও ঘাট পিচ্ছিল, অতি সাবধানে অবতরণ ও আরোহণ করিতে হয়। একটী দীনদুঃখী রমণী সোপানস্তরে দণ্ডায়মানা—দক্ষিণ হস্তে শূন্য

आशा है, वे स्थिर चित्ततासे अपने उद्देश्य सबको फिर प्रणिधान कर हम सब की कामना पुरी करेंगे और यदि केवलमात्र वैष्णव मतकी ओर उन्हों की दृष्टि रहे, तौ भी कुछ हानि नहीं, किन्तु तन्निमित्त सभा की कार्य्य-प्रणाली और कुछ स्वतन्त्र करनी पड़ेगी। सभा की विद्यमान रीति तत्कार्य्यसिद्धिका पर्य्यानुकूल नहीं है।

मुङ्गेर आ, ध, प्र, सभाका उपदेश।

(धर्म्मप्रचारक-सम्पादकजीने व्याख्यान किया)

जिस किसीने जो कुछ द्रव्य क्यों न भोजन करे, भोजनान्त में थोड़ा बहुत जलपीना हरेक प्राणीका अभ्यास है। चाहे अन्नखाय, चाहे रोटी खाय, चाहे पिष्टक अथवा फल मूल भोजन करे, अन्त में जल पिये विना शरीर सुशीतल नहीं होता, प्राण भी प्रफुल्लित नहीं होता अथवा अन्नादि सुन्दररूप नहीं पचता है। जलीय परमाणु यदि शरीरके भीतर प्रवेश न करें तो प्राणी जी नहीं सक्ता है। जलको जीवोंके जीवन रूप करके मानना। अग्निके तापसे सूर्य्यके तापसे अथवा मनस्तापसे कण्ठ यदि सूक जायतो जल पीनेसे शरीर शीतल होता है, मानो नवीन बलका सञ्चार होता है, एतदर्थ जलको इतना आदर किया जाता है। इसी लिये जगदीश्वरने जलधी खात खोदकर धराको घेर रख छोड़ा है। समय समय में जीवोंके अर्थ जलराशिको आकाशमार्ग पर आकर्षण पूर्व्वक संशोधनानन्तर जलद जाल रचना करके जलवर्षण करता है; कठिन पाषाण भेदकरके जलकी झरना उछल आती है, भूमिको खोद कर देखलो. विधाता वहां भी जीवोंकेलिये अगाध जलराशि को सञ्चय कर छिपाय रख दिये हैं, यदि तापित अङ्गको शीतल करना हो तो जलमें अवगाहन पूर्व्वक स्नान करलो।

हमारे भरतखण्डके सकल विभाग ही में यह देख पड़ता है, जो कुलनारीयां गङ्गादि नदीयां मेंसे जल भर भर कर घड़ाओंको कक्ष वा सीरपर करके लाया करती हैं। प्रत्यक्ष घटनाके सङ्ग ही सङ्ग भावकी लहरीमाला उछलने लगीं। देख पड़ा कि पक्केघाट पर बहुत सी इतर वो भद्रकुलनारीयां जल लानेके अर्थ उतरीं हैं। वर्षाकाल, घाट औ घाटसब पीछल होगये। अतिसावधानतापूर्व्वक चढ़ना औ उतरना पड़ता है। कोई एक दीन दुःखिनी रमणी सीढ़ीपर खड़ी हुई। दाहिने

কলসের অধোভাগের দ্বারা জলকে আন্দোলিত করিতেছিল, অকস্মাৎ কলস করচ্যুত হইয়া গেল, তরঙ্গের জলে নৃত্য করিতে করিতে প্রবাহবেগে মধ্যগঙ্গায় উপস্থিত হইল। ক্রমে প্রবলবেগে যাইতে লাগিল, সম্মুখে একখানি বাষ্পীয় জলযান-তদুচ্ছ-লিত জলবেগে প্রবহমান কলস জলে পরিপূর্ণ হইল ও অগাধ গম্ভীর জলে ডুবিয়া গেল। দৃষ্ট হইল যে আর একটী কলসও ভাসিতে ছিল, বোধ হইল তাহা অপবিত্র বোধে কেহ যেন ভাসাইয়া দিয়াছে, সেটী নদীর কিয়দ্দুর গিয়া কূলে লাগিয়াছে ও তদুপরে একটী কাক উপবিষ্ট হইয়া, মল ত্যাগ পূর্ব্বক উড়িয়া গেল।

এদিকে দুঃখিনীর এক মাত্র কলস ভাসিয়া গেল, দেখিয়া অন্যান্য রমণীগণ হাসিতে লাগিল। তন্মধ্যে একটী রমণী বেশভূষান্বিত, হাসিতে ২ যেমন উঠিতেছিল, অমনি পিচ্ছল সোপানে পদ-স্খলিত হইয়া পড়িয়া গেল, শরীরে আঘাত লাগিল, কলসটী ভাঙ্গিয়া, নদীর জল নদীতে গিয়া মিশিল। আর একটী নারী জলকলস কক্ষে করিয়া, পথ দিয়া যাইতেছিল। বোধ হয় তাহার কলসটী যথোচিত সুপক্ক ছিল না, অকস্মাৎ তাহার অধোদেশ কক্ষ-চ্যুত হইয়া পড়িল, সমস্ত জলই নির্গত ও ভূমিতে পতিত হইল। আর একটী নারী জলপূর্ণ কলস মূর্দ্ধা স্থানে রক্ষা করিয়া দুই হাত দোলাইয়া সঙ্গি-নীর সহিত অনবহিত চিত্তে বিবিধালাপ করিতে করিতে যাইতেছিল একজন রহস্য প্রিয় পুরুষ সেই সময় অপর একজন লোককে ডাকিয়া বলিল, দেখ দেখ, কি আশ্চর্য্য, আজ দিবাভাগে আকাশে কেমন রাশি ২ নক্ষত্র দেখা যাইতেছে, উক্ত নারীর কর্ণে এই কথা প্রবেশ করিবামাত্র কিং কর্ত্তব্য বিচারবিমূঢ়ের ন্যায়, তৎক্ষণাৎ গ্রীবা উত্তোলন পূর্ব্বক আকাশ-মার্গে দৃষ্টি চেষ্টা করিল, অমনি জলকলস তাহার পশ্চাৎ ভূমিতে পতিত ও চূর্ণ হইয়া গেল। লোক সকল হাস্য করিয়া উঠিল। আর কয়েকটী স্ত্রীকে দেখিলাম তাহারা মস্তকে জল কলস রক্ষা করিয়াছে এবং দুই হস্তে ধরিয়া যত্ন পূর্ব্বক নিজ গৃহে লইয়া গেল। যাহারা নির্ব্বিঘ্নে জল লইয়া গৃহে পৌঁছিল, তাহাদের পিপাসার শান্তির উপায় হইল। তন্মধ্যে কেহ নিজ কলস মুখ আচ্ছাদন করিয়া, পবিত্র স্থানে

हातसे शून्य घड़ाके निम्नभाग जल में घोरही थी, घड़ा अकस्मात हातसे निकल गया। तरङ्गके जलके साथ नाचता कुन्दता प्रवाहके वेगसे वीच गङ्गाजी में आ पड़ा। क्रमे क्रम प्रवल गतिसे जाने लगा। साम्हने में एक वड़ी भारी वाष्पीय जलयान (जाहाज)। उसकी विषम गतिसे उच्छलती हुइ जलराशि करके वहता जाता हुआ घड़ा जलराशिसे पूर्ण हुआ औ अगाध गम्भीर जल में डुव गया। वहां और भी एक घड़ाको वहता जाता देख-पड़ा वुझ पड़ा, कि उसको अपवित्र मान् कोइ वहा दिया होगा। नदीके थोड़े दुरतक जाकर फिर किनारे में लगा और उसपर एककाक वैठके विष्ठा त्यागकर उड़गया।

इधर दुःखिनी की घड़ा को वह जाता देख कर अन्यान्य रमणीयां हंसने लगी। उन में एक रमणी जो कि वेश भूषासे विभूषित थी, हंसती हसती ज्यों उठ रहीथी, त्योंही पीछल सीँडि परसे फिछल गयी, शरीर में चोट लगा। घड़ा फूटगया। नदीका जल नदी में जा मिला। दुसरी एक स्त्री कोमर पर करके भर घड़ा जल लिये जाती थी। वोध हुआ कि उसका घड़ा यथोचित कठिन वा पक्का न था। अकस्मात् उसकी पेंदां कोमरसे खस पड़ा। समस्त जल ही निकल कर भूमिपर गिर गया। और एक स्त्री जलपूर्ण घड़ा शीरपर धरकर दो हात डोलाती हुइ, साथी-योंके सङ्ग असावधान चित्ततासे नाना भान्ति वार्त्तालाप करती हुइ जातीथी, एक कोइ रहस्य-प्रिय पुरुषने उस समय दुसरे एक जनको फुकर कर वोला, देख देख, क्या आश्चर्य्य, आज दिनहीको आकाशमण्डल पर कैसे नक्षत्रराशि देख पड़ते है, उस नारीके कान में इतनी वातें वैठते ही, उसने किंकर्त्तव्य विचारविमूढ़के समान झट सीर उठा कर आकाश मार्ग में दृष्टि की चेष्टा करी, जल की घड़ा उसकी पश्चात् भूमिपर गिर कर चूर चूर हो गया। सव लोग हसने लगे। औ कितने स्त्रीयां को देखा कि वे सीरपर घड़ा लिये दो हातसे यत्न पूर्व्वक पकड़े हुइ, अपने अपने घर ले गयी। जितनी स्त्रीयां निर्व्विघ्नतासे जल ले लेकर घर पहुच गयी उन्होंको प्यास मिठावनेका उपाय हुआ। उन्हों में से कोइ अपने घड़ेके मुह झाप कर पवित्रस्थान पर रखी, कोइ असावधानता से

রাখিল, কেহ বা অনবহিত চিত্তে অনাবৃত রাখিয়া দিল। অনাবৃত কলসে যদি কোন বিষধরাদি জলপান করে অথবা কোন কীট পতঙ্গাদি পড়িয়া, তাহাতে প্রাণত্যাগ করে, তবে অবশিষ্ট জলপায়ীগণের প্রাণ নষ্ট বা পীড়া হইবার সম্ভাবনা। কেহ বা যখন জল আনিতে গিয়াছিল তখন দেখে নাই যে একটী ক্ষুদ্র মৃতমুষিক শূন্য কলস মধ্যে পড়িয়াছিল, সেই কলসে জল আনিয়াছে, ক্রমে মৃতমুষিকের পূতিগন্ধে জল বিকৃতাস্বাদ ও দুর্গন্ধযুক্ত হইয়া উঠিয়াছে। জল পান পূর্ব্বক সকলে সিদ্ধান্ত করিতে লাগিল, গঙ্গাজল অত্যন্ত দুষিত ও পীড়াদায়ক। সেই দিন হইতে তাহারা জাহ্নবীর জল পান পরিত্যাগ করিল।

মহাত্মাগণ! লৌকিক রহস্যের নিগূঢ় মর্ম্ম উদ্ভেদ না করিয়া, থাকিতে পারিতেছি না। সাধারণের বুদ্ধিতে গুঢ় তত্ত্ব সকল সরল ভাবে গৃহীত হইবে এই জন্য একটী লৌকিক ব্যাপারের আদর্শ-চিত্র করিলাম, এক্ষণে আসুন এই চিত্রের অবগুণ্ঠন উন্মোচন পূর্ব্বক উহার মধ্যে প্রকৃতির রহস্যময়ী লীলা দর্শন করি।

ভগবৎপ্রেমকেই আমি নির্ম্মল জল রূপে লক্ষ্য করিয়াছি। মনুষ্য নানাবিধ সাংসারিক সুখ, দুঃখ ভোগে যে নিরন্তর বিমোহিত থাকে, তত্তাবতই জীবের বিবিধ আহারীয় দ্রব্য। চতুরশীতি লক্ষ জন্ম জীব এইরূপ ভোগ করিয়া আসিয়াছে, মনুষ্য জন্মই মর্ত্ত্য জীবের ভোগাবসান কাল। এই সময়েই সুচতুর মনুষ্যগণ ভোগরাশিকে পরিপাক বা বিনষ্ট করিবার জন্য, ভগবৎ প্রেমনীর পান করিতে থাকেন। শোক, রোগ, পাপ, তাপ, কর্ম্মাদি সমস্তই জীর্ণ হইয়া যায়। জগতের সর্ব্বত্রই এই প্রেমরাজ্য বিস্তৃত রহিরহিয়াছে; সংসার (বিষয় বুদ্ধি) অতিক্রম করিয়া যাও, দেখিবে, ভগবৎ প্রেমের অগাধ সিন্ধু যেন জগৎকে গ্রাস করিতেছে। অন্তরীক্ষে দেবগণের দিকে দৃক্‌পাত কর, তথা হইতে নির্ম্মল প্রেম-ধারা বৃষ্টি হইতেছে; গিরির ন্যায় অচল ঋষির গম্ভীর মুখের দিকে তাকাইয়া দেখ, প্রেমের উৎস উৎসারিত হইয়া, জগৎকে ভাসাইবার উপক্রম করিতেছে। আমরা যাহাদিগকে হীন জাতি বলিয়া ঘৃণা পূর্ব্বক নীচ মনে করি, দেখ তাহাদিগের

घड़ेको मुँह खुला रख छोड़ दीया। खुला हुआ मुँह घड़े में से यदि सर्पादि जल पिये, अथवा कोइ कीड़ा फड़िङ्गा गिर कर मरजाय तो अवशिष्ट जल पीनेवालेके प्राणनाश वा पीड़ा होने की सम्भावना है। एक स्त्री जब जल लाने को गयी थी, तब यह नहीं देखी कि एक छोटा सा मरा हुआ मूसा खाली घड़े में पड़ा रहा था, उस घड़े में जल भर लाई। क्रमे क्रम मूसाके दुर्गन्धसे जल भी विकृतास्वाद वो दुर्गन्धयुक्त हो गया। जल पीनेसे सबका यही सिद्धान्त हुआ, कि गङ्गाजल अत्यन्त दुषित औ दुःखदायी है। उसी दिनसे वे लोग गङ्गाजल पीना छोड़ दिये।

महात्मागण! इस लौकिक रहस्यके निगूढ़ मर्म्मोद्भेद किये विना मुझसे नहीं रहा जाता हैं। सब जनों की बुद्धि में गूढ़तत्त्व समूह सरल रीतिसे ग्रहण किये जाऐं इसलिये मैंने एक लौकिक व्यापारके चित्र खिच लिया, अब आइये इस चित्रके आवरण खुलकर, भीतर इसके प्रकृति की रहस्यमयी लीला दर्शन करूं।

भगवत प्रेम होको मैं निर्म्मल जल करके लक्ष्य किया। मनुष्यगण जो निरन्तर नाना भान्तिके सांसारिक सुख, दुःख भोग में मोहित रहते है, उन सबको जीवोंके विविध आहारीय द्रव्य करके जानना। जीव चौरासी लक्ष जन्म इस रीति भोग करते आये, मर्त्त्य जीवोंका मानव जन्म ही भोगावसान काल है। सुचतुर मनुष्यगण इसी समय में भोग राशिको परिपाक वा विनष्ट करनार्थ भगवत प्रेमनीर पीते रहते हैं। शोक, रोग, पाप, ताप, कर्म्मादि समस्त ही जीर्ण हो जाते हैं। जगतके सर्व्वत्र ही यह प्रेमराज्य विस्तृत है। संसार की सीमा (विषयबुद्धि) टप जाओ, देखोगे भगवत प्रेमका अगाधसिन्धु जैसा कि जगत को ग्रास करने चाहता है। अन्तरीक्ष में देवगणोंके ओर नेत्र पसारो, वहांसे भी निर्म्मल प्रेमधारा वृष्टि हो रही है। गिरिके समान अचल ऋषिके गम्भीर मुखारविन्दके ओर ताक देखो, प्रेम की झरना उछल कर, जगतको प्लावित करनार्थ उद्यत हो रहा हैं। तुम सब जिन्होंको हीन जाति समझकर घृणा पूर्व्वक नीच मानते हैं, देखलो उन्होंके हृदय में भी प्रेम लुक रहा है। यदि आधि-

হৃদয়েও প্রেম লুকায়িত রহিয়াছে। যদি আধি ভৌতিক, আধিদৈবিক ও আধ্যাত্মিক তাপের দুঃসহ যাতনা শীতল করিতে চাও তবে ভগবৎ প্রেমনীরে নিমগ্ন হও।

জীবগণই কুলনারী বলিয়া বর্ণিত এবং ভগবৎপ্রেমের নদীই গঙ্গানদী এবং হৃদয়ই জলকলস রূপে লক্ষিত হইয়াছে। শাস্ত্রচর্চ্চা, সাধুসঙ্গ, তপস্যাদিই নদীর বাঁধাঘাটের সোপানস্তর; মনুষ্যগণ সাধারণতঃ এতদুপায়েই ভগবৎপ্রেমের রসাস্বাদন করিতে পারে। কুমতি, কুবাসনাদিই বর্ষাবারির ন্যায় সাধুমার্গকে অত্যন্ত পিচ্ছিল ও দুর্গম করিয়া দিয়াছে। অতি সাবধানে ঘাটে অবতরণ ও তথা হইতে উত্থিত হইতে হয়।

সাধুর হৃদয় প্রেমে ভাসিতেছে দেখিয়া, বেশধারী পণ্ডিতাভিমানী জীব উপহাস করিয়া উঠে ও আপনাকে জ্ঞানী জানিয়া, যেমন উচ্চতর সোপানে আরোহণ করিতে যায়, অহংকারে উন্মত্ত মূঢ় অমনি পদস্খলিত হইয়া, আঘাত প্রাপ্ত হয় এবং তাহার হৃদয় ছিন্ন ভিন্ন ও প্রেমবিশুষ্ক হইয়া যায়! প্রেমিকের প্রতি উপহাস করিলে, ভগবান তাহার অহংকার চূর্ণ করিয়া দেন। যে জীব জ্ঞান বিজ্ঞানাদির অনুশীলন ও গুরু সুশ্রূষার অভাবে, আপনার হৃদয়কে সুদৃঢ়রূপে গঠন করিতে পারে নাই, তাহার প্রেমরাশি, কামিনী কক্ষচ্যুত ভগ্ন কলসের ন্যায়, হৃদয় ভেদ করিয়া, সংসার মার্গে বিস্তৃত হইয়া যায়। যাহারা প্রেমলাভ পূর্ব্বক মস্তিষ্কের চিন্তাবৃত্তিতে মাত্র রক্ষা করিয়া, অনবহিতচিত্তে সাংসারিকতায় উন্মার্গগামী হয়, তাহারা মিথ্যা রহস্য প্রিয় পুরুষের অর্থাৎ ভ্রমের মিথ্যা প্ররোচনায় বিশ্বাস করিয়া, ভগ্নহৃদয় ও প্রেমশূন্য হইয়া পড়ে। আর কতিপয় মহাত্মা প্রেম রাশিকে শিরোধার্য্য করিয়া যত্ন ও চেষ্টা দ্বারা রক্ষা পূর্ব্বক গৃহে বা আত্মমন্দিরে প্রবেশ করিয়া থাকেন।

যাহারা এইরূপে গৃহে পৌঁছিলেন তাঁহাদেরই তৃষ্ণার শান্তি হইবার ও ভোগাবসানের উপায় হইল। প্রেমলাভের পরেও আবার নানা চিত্তবিকার হইবার সম্ভাবনা থাকে, এই জন্য সুচতুর প্রেমিকগণ মনের ভাব, মনের কথা, প্রেমের তত্ত্ব সমস্ত হৃদয়ের মধ্যেই লুকায়িত রাখেন, পাছে হৃদয়-[illegible] রাখিলে, নির্ম্মল প্রেম কলুষিত হয়

भौतिक, आधिदैविक औ आध्यात्मिक तापों की यातनाको शीतल करने चाहो तो भगवत् प्रेमनीर में निमग्न हो जाओ।

जीवगण ही कुलनारी करके वर्णित, भगवत् प्रेमनदी ही गङ्गानदी औ हृदय ही जल भरने का घड़ा करके लक्षित हुआ है। शास्त्रचर्च्चा, साधुसङ्ग, तपस्या आदि ही मानो नदीके पक्के घाट की सीढ़ी हैं। मनुष्यगण साधारणत: इस ही उपायसे भगवत प्रेमके रसास्वाद कर सक्ते हैं। कुमति, कुवासना आदि ही वर्षावारिके समान साधुमार्गको अत्यन्त पिछल औ दुर्गमकर दी है। अतीव सावधानतापूर्व्वक घाट में उतरना औ वहांसे उठना पड़ता है।

साधुके हृदयको प्रेमसे प्लावित देखकर भेषधारी पण्डिताभिमानी जीव उपहास किया करता है और आप अपनेको ज्ञानी मानकर ज्यों उच्चतर सोपानपर आरूढ़ होने चाहता त्योंही अहङ्कारसे फुला हुआ मूढ़ पिछलकर आघात प्राप्त होता है, और उसका हृदय छिन्न भिन्न और प्रेमशून्य हो जाता है। प्रेमिकके ओर हंसनेसे भगवान उस्के अहङ्कार चूर्ण कर देते हैं। जो जीव ज्ञान, विज्ञान आदि की चर्च्चा और गुरु की सेवाके अभावसे अपने हृदयको सुदृढ़ नहीं बनाय सके, उस्की प्रेमराशी कामिनीके कक्षच्युत फूटा हुआ, घड़ाके समान, हृदयको भेद करके संसारमार्ग पर विस्तार हो जाते हैं। जो लोग, प्रेमलाभ पूर्व्वक केवलमात्र मस्तिष्क की चिन्तावृत्ति में रखकर असावधान चित्ततासे सांसारिकता रूप कुमार्ग में जाते हैं, वे मिथ्या रहस्यप्रिय पुरुष की अर्थात् भ्रम की मिथ्या प्रेरणा पर विश्वास करके भग्न-हृदय और प्रेमशून्य हो जाता है। और कितने महात्मा प्रेमराशीको सिरपर धरकर यत्न और चेष्टासे रक्षापूर्व्वक गृह अर्थात् आत्म मन्दिर में प्रवेश किये करते हैं।

जो लोग इस रीतिसे घर में जा पहुंचे, उन्हों की तृष्णा-शान्ति होनेका औ भोगावसानका, उपाय मिला। प्रेम उपजनेके अनन्तर भी फिर नाना चित्तविकार होनेकी सम्भावना रहती, इसीलिये सुचतुर प्रेमिकोंने निज निज मनके भाव मन की गूढ़ बातों, प्रेमके तत्त्व समूह हृदयही के मध्य में छिपा रखते हैं, आयदा बच है, कि

ইহাই তাঁহাদের আশঙ্কা। যে প্রেমিক সদাই বাহিরে প্রেমের ভাব দেখাইয়া থাকে, তাহার প্রেমের সঙ্গে সঙ্গে ক্রমে অহঙ্কারাদি বিষ ও মলিনতা মিশ্রিত হইবার সম্ভাবনা। আবার হয় ত কেহ সৎসঙ্গ দ্বারা প্রেম লাভার্থ গমন করিবার সময়, হৃদয়ের মধ্যে বিতর্ক বাসনা (মৃতমূষিক) লইয়া যায়, প্রত্যাবৃত্ত হইলে, তাহার হৃদয়ের ভাব অতি দূষিত বলিয়া, প্রতীত হইয়া থাকে। এই জন্য প্রেম শিক্ষা করিবার সময়, অতীব নির্ম্মল চিত্ত হইতে হয়।

প্রথমে যে দুঃখিনীর কলস ভাসিয়া গিয়াছিল বলিয়াছিলাম, তাহার লক্ষ্যার্থ এই যে নিরহঙ্কৃত সাধকের নির্ম্মল হৃদয়ের প্রেমাভ্যাস করিতে ২ অগাধ প্রেমনীরে ভাসিয়া যায়, সাধক তখন সন্ন্যাসী তাঁহার সেই নির্ম্মল হৃদয় ভগবৎ প্রেমতরঙ্গে নৃত্য করিতে করিতে অপার ভবপারাবার পার পারগ ভগবচ্চরণারবিন্দরূপ অর্ণবপোতের সমাগম ও কৃপালাভ করে, অমনি উচ্ছলিত প্রেমাবেশে হৃদয় পরিপূর্ণ হইয়া, গম্ভীর জলগর্ভে নিমগ্ন হইয়া যায়, সংসার আর তাহাকে দেখিতে পায় না, সুশীতল সলিলে সাধক চিরদিনের জন্য মগ্ন হইলেন, আর উঠিলেন না। অপর কলশটী শূন্যহৃদয় বেশধারী সন্ন্যাসীর আদর্শ, তাহার বিভূতি লেপন কাকবিষ্ঠার ন্যায় লক্ষিত হয় ও সংসাররূপ কূলে লাগিয়া থাকে।

সাধকগণ! যদি সন্তপ্ত হৃদয়কে শীতল করিতে চাও, যদি যাতনা জাল ছেদ করিতে চাও, যদি আনন্দরত্নাকরের রত্নছটা দর্শন করিতে চাও, তবে যাও, দুঃখিনীর কলসের ন্যায় ডুবিয়া যাও, প্রেম সরিতের গভীর সলিলে ডুবিয়া যাও, সংসারকে পশ্চাতে তুচ্ছ বোধে উপেক্ষা করিয়া প্রেমের উত্তালতরঙ্গমালার সঙ্গে নৃত্য করিতে২ অতলস্পর্শ জলে ডুবিয়া যাও, সুশীতল হইবে চিরদিনের জন্য শান্তিলাভ করিবে, আনন্দের হিল্লোল তোমার চতুর্দ্দিকে বহিতে থাকিবে।

ওঁ শান্তিঃ, শান্তিঃ, শান্তিঃ, হরি ওঁ।

हृदयके द्वार खुला रखनेसे यदि कोइ निर्म्मल प्रेम को कलुषित कर दें। जिस प्रेमिकने सदा बाहर बाहर प्रेमके भाव देखाया फिरता है उसके प्रेमके सङ्ग ही सङ्ग क्रमे क्रम अहङ्कारादि विष औ मलिनता मिश्रित हो जा सक्ती हैं। फिर यह भी देखिये कि कोइ सत्सङ्गके द्वारा जब प्रेम शिक्षार्थ जाता है, उस समय यदि उसके हृदय में वितर्क-वासना (हत मूषिक) रह जाय तो लौटनेके अनन्तर उसकी चित्तवृत्ति और भी दूषित बुझ पड़ती है। इसीलिये प्रेमशिक्षाके समय में अतीव निर्म्मल चित्त होना चाहिये।

पहले ही जो मैं कहा है, कि एक दुःखिनीका घड़ा बह गया, उसका लक्ष्यार्थ यह है, कि अहङ्कारसे रहित साधकका हृदय प्रेमाभ्यास करते करते अगाध प्रेमरूप नीर में बह जाता है। मानो साधक उस समय सन्यासी बने। उनका वह निर्म्मल हृदय भगवत् प्रेमतरङ्ग में नाचते कुन्दते भगवच्चरणारविन्दरूप अर्णवपोतके, जो कि अपार भवपारावार-पारपारग हैं, समागम औ कृपा लाभ करते हैं, औ उच्छलता हुआ प्रेमके आवेशसे हृदय पूर्ण होकर गम्भीर जल गर्भ में निमग्न हो जाता है, उस समय वे संसारके अदर्शनीय हो जाते हैं, सुशीतल जल में साधक चिरदिनके निमित्त निमग्न हुए, फिर नहीं उठे। दुसरा घड़ाको मानो शून्यहृदयभेषधारी सन्यासीका आदर्श है, उसके शरीरपर जो भस्म लगाया जाता है, उसको काकविष्ठाके समान लक्षित किया गया औ संसाररूप किनारे में लगा रहता है।

साधकवृन्द! यदि सन्तप्त हृदयको शीतल करने चाहो, यदि यातना जालको छेद करने चाहो, यदि रत्नाकर की रत्नछटा दर्शन करने चाहो, तो जाओ, दुखिनीका घड़ाके नाई डुबे जाओ, प्रेम नदीके गभीर सलिल में डुबे जाओ, संसारको पीछे छोड़कर उपेक्षापूर्व्वक तुच्छ मानके प्रेम को उत्ताल तरङ्गमालाके साथ नृत्य करते हुए अतलस्पर्श जल में डुबे जाओ, सुशीतल होओगे। चिरदिनके निमित्त शान्तिलाभ करोगे, आनन्दहिल्लोल तुम्हारे चारो ओर बहता रहेगा।

ओं शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरि ओं।

বিজ্ঞাপন।

নিরুদ্দেশ।

আমার প্রিয়তমা ভার্য্যা-ভক্তি-বহুদিন হইতে "আর্য্য" নামধারী মহাত্মাগণের সুশ্রুষায় সন্তুষ্টা হইয়া তাঁহাদিগের প্রাসাদে ও কুটীরে বাস করিতেন। তাঁহারা যে দিন হইতে স্বদেশে গমন করিয়াছেন, সেই দিন হইতে আমার ভার্য্যার কোন উদ্দেশ পাওয়া যাইতেছে না। দেশে দেশে, নগরে নগরে, পথে২, মঠে২, পর্ণকুটীরে, কমলকুটীরে, যেখানে সেখানে অনুসন্ধান করিয়াও তাঁহার উদ্দেশ পাইলাম না। সভায়, সমাজে, আখড়া ও মহোৎসব মেলাতেও তত্ত্ব করিতে ক্রুটী করি নাই, কিন্তু কোথাও প্রিয়তমার দেখা পাইলাম না। "ভক্তির" বেশ ধারণ করিয়া কতিপয় ব্যভিচারিণী রমণী আমার পাণিস্পর্শ করিতে আসিয়াছিল, কিন্তু লক্ষণাদি দ্বারা দেখিলাম যে তাহাদের কেহই আমার প্রকৃত ভার্য্যা নহে। যে ব্যক্তি আমার প্রিয়তমাকে আমার নিকট আনিয়া দিবে, আমি তাহাকে আনন্দ রাজ্যে অভিষেক করিয়া নিত্যনিকেতনের অধিকারী করিব, এবং শান্তি নাম্নী অলোকসামান্যা কন্যার সহিত বিবাহ দিব। মুক্তি তাহার পরিচর্য্যা করিতে থাকিবে। অলমতি বিস্তারেণ।

ব্রহ্মলোক। শ্রীশ্রীশ্রী ওঁ

ধর্ম্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী।

১। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা আর্য্যধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারবান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহসহকারে ধর্ম্ম প্রচারকে প্রকাশ করিব।

২। ধর্ম্মপ্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি মুঙ্গের "আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভায়," আমার নামে পাঠাইতে হইবে। পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মণিঅর্ডারে, পাঠাইবেন। ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন।

৪। ধর্ম্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১৩ সংখ্যা হইতে ডাকব্যয়-সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার হইয়াছে।

উত্তম কাগজে,	বার্ষিক	৩।৵০,	প্রতিখণ্ড।৵০
মধ্যম ঐ	,,	২।৵০	,, ।০
সাধারণ ঐ	,,	১।৵০	,, ৵০

মুঙ্গের, আর্য্যধর্ম্ম-প্রচারিণী সভা। } শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন। সম্পাদক।

☞ এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

विज्ञापन।

पता नहीं मिलता।

मेरी प्रियतमा भार्य्या-भक्ति-बहुत दिनोंसे आर्य्यनाम महात्माओंकी सेवासे सन्तुष्ट होकर उन्हों के प्रासाद में औ कुटीर में वास करती थी। जब से वे अपने देशको (नित्यधाम) सिधारे हैं उस दिनसे मेरी भार्य्या की कोइ पता नही लगता है। देश देशान्तर में, नगर नगर में, वाट वाट में, मठ्ठ मठ्ठ में, पर्णकुटीर में, कमलकुटीर में, जहां तहां ढूढ़ती गई, किन्तु उनका पता नहीं मिला। सभा में, समाज में, अखाड़े में, औ महोत्सव की मेलाओं में अन्वेषण करनेमें भी त्रुटी न की गई किन्तु कहीं प्रियतमासे भेट न हुआ। "भक्ति" के भेषली हइ. कितनी व्यभिचारिणी रमणी मेरे पाणिस्पर्श करनेके लिये आई थीं, किन्तु लक्षणादिसे देखा गया, जो उन में कोइ भी मेरी प्रकृत भार्य्या नहीं है। जो मेरी प्रियतमा को मेरे निकट लाय देगा, मैं उसको आनन्दराज्य में अभिषेक कर नित्यनिकेतनके अधिकारी बनाऊंगा और शान्ति नाम कन्याके सहित, जिसका रूप अलोकसामान्य है, विवाह दे दूंगा। मुक्ति उसकी परिचर्य्या में लगी रहेगी। अलमति विस्तारेण।

ब्रह्मलोक। श्रीश्रीश्री ओं।

धर्म्मप्रचारकसम्बन्धी नियमावली।

१। यदि कोई धर्म्मात्मा आर्य्यधर्म्म की प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करनेके निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में या इन दोनों भाषाओंमें कोई प्रबन्ध लिखके भेजें तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होनेसे आनन्द औ उत्साह सहित धर्म्मप्रचारक में प्रकाश कियाजायगा।

२। धर्म्मप्रचारक पत्रके मोल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मुङ्गेर "आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके" पत्तेमें मेरे पास भेजने होगा। पत्र वैरिं होतो नहीं लिया जायगा।

३। मोल सम्भवतः पोष्टाल मनि अडौर करके भेजना। यदि डाक टिकिट में भेजें तो आध आनिया टिकिट करके भेज देवें।

४। धर्म्मप्रचारक १म भाग, १३ संख्यासे डाककर सहित अग्रिम वार्षिक मोल तीन प्रकार हुआ।

उत्तम कागजपर,	वार्षिक	३।৵	प्रतिसंख्या।৵
मध्यम ,,	,,	२।৵	,, ।०
साधारण ,,	,,	१।৵	,, =

मुङ्गेर, आर्य्यधर्म्म-प्रचारिणी सभा। } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन सम्पादक।

☞ यह पत्र हर पूर्णिमा में मुङ्गेर आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके उत्साहसे प्रकाशित होता है।

☞ *Printed by B. M. Chakravorti, At the B. P. M's Press, No. 22, Jhamapooker Lane, Calcutta*
Published by Srikrishna Prosanna Sen, at Monghyr Aryadharmaprocharinee Sabha.

“একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেহপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥”

৩য় ভাগ। ৪৬ সংখ্যা। } শকাব্দাঃ ১৮০৩। শ্রাবণ—পূর্ণিমা।

পরমার্থ সার।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)।

ত্রিগুণা চৈতন্যাত্মনি সর্ব্বগতেহবস্থিতাখিলাধারে।
কুরুতে সৃষ্টিমবিদ্যা সর্ব্বত্র স্পৃশতে নয়ানাত্মা ॥৫০॥

সর্ব্বত্র ওতঃ প্রোতভাবে বিদ্যমান ও সমস্ত জগতের আধার ভূত আত্ম চৈতন্যাশ্রিত অবিদ্যা-রূপিণী মায়া হইতেই তাবৎ সৃষ্টি ক্রিয়া নির্ব্বাহ হইয়া থাকে, বস্তুতঃ উক্ত রচনা কার্য্য আত্মাকে সংস্পর্শ করিতে পারে না।

আত্ম-সত্তা নিষ্ক্রিয়; ক্রিয়া সমস্ত প্রকৃতির স্ফূর্ত্তি মাত্র। দাহিকা শক্তিই (অগ্নির প্রকৃতি) যেমন অন্য পদার্থকে ভস্ম করিয়া ফেলে কিন্তু অগ্নি দ্রব্য দাহের কারণ নহে, তদ্রূপ আধার স্বরূপ নিষ্ক্রিয় পরমাত্মা সৃষ্টির কারণ নহেন, প্রকৃতিই তাবৎ সৃষ্টির বীজ স্বরূপ।

রজ্জাং ভুজঙ্গহেতৌ প্রভব বিনাশৌ যথানন্তঃ।
জগদুৎপত্তিবিনাশৌ নতৎ কারণে তত্ত্বদিহ ॥৫১॥

“एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समन्नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥”

३य भाग। ४६ संख्या। } शकाब्दा १८०३। श्रावण—पूर्णिमा।

परमार्थ सार।

(पूर्व्व प्रकाशितके आगे)

त्रिगुणा चैतन्यात्मनि सर्व्वगतेऽवस्थिताखिलाधारे।
कुरुते सृष्टिमविद्या सर्व्वत्र स्पृशते नयनात्मा ॥५०॥

सर्व्वत्र ओतप्रोत करके विद्यमान औ सब जगत के आधारभूत आत्म चैतन्यके आश्रित जो अविद्या-रूप माया है, उसहीसे समस्त सृष्टि हुआ करती है; फलत: उक्त रचना आत्माको संस्पर्श नहीं कर सक्ती है।

आत्म-सत्वा निष्क्रिय है; क्रियायेंको प्रकृतिका स्फुरण करके जानना। दाहिका शक्ति ही (अग्नि की प्रकृति) जैसा अन्य पदार्थको भस्म कर डालती है, किन्तु वस्तुतः अग्नि द्रव्यदाहका कारण नहीं है, उस भान्ति आधार स्वरूप निष्क्रिय पर-मात्मा सृष्टिका कारण नहीं, प्रकृति ही समस्त सृष्टिका वीज रूप है।

रज्ज्वां भुजङ्गहेतौ प्रभव विनाशौ यथा नस्तः।
जगदुत्पत्तिविनाशौ न तत्कारणेस्तद्वदिह ॥५१॥

রজ্জুতে যে ভুজঙ্গ ভ্রম হয়, সেই ভ্রম বুদ্ধিরই উৎপত্তি ও বিনাশ হইয়া থাকে বস্তুতঃ তাহা ভুজঙ্গে আরোপিত হয় না, তদ্রূপ জগতেরই উদয় ও ক্ষয় হইয়া থাকে কিন্তু তাহা কখনই পরমাত্মাতে আরোপিত হইতে পারে না।

জন্মবিনাশনগমনাগমনমলৈঃ সঙ্গবিবর্জ্জিতো নিত্যং।
আকাশ ইব ঘটাদিষু সর্ব্বাত্মা সর্ব্বতোপেতঃ॥৫২॥

যেমন আকাশ সমস্ত ঘটে বিরাজ করিয়াও সমস্ত বস্তু হইতে নিঃসঙ্গ তদ্রূপ ক্ষয়োদয় ও গমনাগমন আদি মল বর্জ্জিত নিত্য পরমাত্মা নিরন্তরই সর্ব্বথা নির্লিপ্ত।

কর্ম্ম শুভাশুভজনিতৈঃ
সুখ দুঃখৈর্যোগো ভবৎ পুপাধীনাং।
তৎসংসর্গাদ্বন্ধ
স্তস্কর সংগাদতস্করবৎ॥ ৫৩॥

যেমন তস্করের সঙ্গ বশতঃ অতস্করও বন্ধন প্রাপ্ত হয় তদ্রূপ সুখ দুঃখ ফলপ্রদ শুভাশুভ কর্ম্ম জন্য দেহাদির সংযোগে আত্মাও তদ্দেহ নিবাস বশতঃ বন্ধন দশাগ্রস্তের ন্যায় প্রতীত হন, বস্তুতঃ আত্মার বন্ধন হয় না।

দেহ গুণকরণ গোচর সংগঃ পুরুষস্য যাবদিহ ভবতি।
তাবন্মায়াপাশৈঃ সংসারে রুদ্ধ ইবাভাতি॥ ৫৪।

যে পর্য্যন্ত জীব দেহ ইন্দ্রিয়াদিতে সঙ্গ করিতে থাকিবে তাবৎ কাল সংসার মায়া পাশে আপনাকে আবদ্ধ বলিয়া প্রতীত হইবে।

যে পর্য্যন্ত দেহ মন প্রাণাদিতে "আমি" বা "আমার" ইত্যাকার বুদ্ধি থাকিবে, তাবৎ কালই জীব বন্ধন গ্রস্ত; উক্ত দুর্ব্বুদ্ধি বশতঃই লজ্জা, হিংসা অভিমানাদি অষ্ট সংসার পাশ জীবকে বদ্ধ করিয়া রাখে। জন্ম জন্মান্তরের মলিনা বাসনা রাশিই জীবকে ঈদৃশ দুর্ব্বুদ্ধিযুক্ত করিয়া বিবিধ ভোগায়তনের প্রেরণা করিতে থাকে।

মাতৃ পিতৃ পুত্র বান্ধবা ধন ভোগ বিভাগ সংমূঢ়ঃ।
জন্মজরা মরণময়ে চক্র ইব ভ্রাম্যতে জন্তুঃ॥ ৫৫॥

পিতা, মাতা, পুত্র, মিত্র, কলত্র, বিত্ত ভোগ ভাগে বিমূঢ় হইয়া জীবগণ জন্ম জরা, মরণরূপ চক্রে নিরন্তর বিঘূর্ণিত হইয়া থাকে।

ক্রমশঃ।

रज्जु में जो भुजङ्गरूप भ्रम होता है, उस भ्रमबुद्धिहीका उत्पत्ति औ विनाश होता है; वस्तुत: भुजङ्गका नहीं, उस भान्ति जगतहीका उदय औ क्षय हुआ करता है किन्तु परमात्मा में उसका आरोप करना भूल है।

जन्मविनाशनगमनागमनमलै: सङ्गविवर्ज्जितो नित्यं।
आकाश इव घटादिषु सर्व्वात्मा सर्व्वतोपेत: ॥५२॥

जैसा आकाश सब घट में रहै भी सबसे अलग है उस भान्ति क्षयोदय औ गमनागमन आदि मल से रहित नित्य परमात्मा सदा ही सर्व्वथा निर्लेप हैं।

कर्म्मशुभाशुभजनितै:
सुखदुखैर्योग भवत्युपाधीनां।
तत्संसर्गाद्बन्धस्तस्कर
सङ्गादतस्करवत्॥ ५३॥

जैसा चोरके सङ्ग करके वह भी बन्धा जाता है, जो कि चोरी नहीं किया, तद्रूप सुख दु:ख फल देनेवाले शुभ औ अशुभ कर्म्मसे बना हुआ देह आदिके संयोग करके उस देह में रहने वाले आत्माका भी बन्धन दशाग्रस्त बोध होता है वस्तुत: आत्माका बन्धन नहीं होता है।

देहगुणकरणगोचरसङ्ग: पुरुषस्य यावदिह भवति।
तावन्मायापाशै: संसारे रुद्ध इवाभाति ॥५४॥

जबतक जीव देह इन्द्रियादिके सङ्ग करके रहेङ्गे, तबतक वह अपनेको संसार फांस में बन्धा हुआ देखता रहेगा।

जबतक देह, मन, प्राण आदि में "मैं" वा "मेरा" इस भान्ति बुद्धि रहेगी, तब ही तक जीवकी बन्धन दशा है; उक्त दुर्बुद्धि करके लज्जा, हिंसा, अभिमानादि संसाररूप अष्ट पाशोंने जीवको बन्ध कर रखता है। जन्म जन्मान्तर की मलिना वासना राशि ही जीवको ऐसी दुर्बुद्धियुक्त करके नाना भान्ति भोगादि की प्रेरणा की करती हैं।

मातृपितृपुत्रबान्धवा धनभोगविभागसंमूढ़:।
जन्मजरामरणमये चक्र इव भ्राम्यते जन्तु: ॥५५॥

पिता, माता, पुत्र, मित्र, कलत्र, धन भोगादि से मूढ़ जीवगण जन्म, जरा, मरणरूप चक्र में निरन्तर भ्रमते रहते हैं। (शेष आगे)

আর্য্য শাস্ত্র বিজ্ঞান।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

এক্ষণে সপ্রতি সংহার নির্গমনের কারণ নির্দিষ্ট হইতেছে। পূর্ব্বে উক্ত হইয়াছে যে ক্রিয়া মাত্রেরই প্রতিক্রিয়া আছে, সুতরাং বাগ্‌বৃত্তি রূপ ক্রিয়ারও প্রতিক্রিয়া আছে। বাঙ্‌নিষ্পাদক যন্ত্রের স্বভাবাবস্থাপিকা ক্রিয়াই বাগ্‌বৃত্তির প্রতিক্রিয়া। বাগ্‌বৃত্তি যখন বাঙ্‌নিষ্পাদক যন্ত্রের স্বভাব স্থাপিকা ক্রিয়াকে অভিভূত করিয়া স্বকার্য্যে প্রবৃত্ত হয়, তখনই স্বভাবাবস্থাপিকাও স্বীয় আত্মাকে লাভ করিবার জন্য যত্নবতী হয় কিন্তু বাগ্‌বৃত্তির প্রবল কারণ ঘনিষ্ট সম্বন্ধি অর্থের প্রচোদনা সম্বলিত স্মরণাত্মক জ্ঞান দৃঢ় রূপ বিদ্যমান থাকাতে কোন মতেই তদীয় কার্য্য বাগ্‌বৃত্তিকে অভিভূত করিতে পারে না; অতঃপর যখন উক্তবিধ জ্ঞান বিষয়ার্থ প্রকাশের শেষ হয় তখন সেই স্বভাবাবস্থাপিকা ক্রিয়া চরিতার্থ হয়। এই অবকাশে যদি পুনর্ব্বার প্রচোদনা ঘটিত অর্থান্তর স্মরণ বৃত্তির অভ্যুদয় হয় তবে ঐ প্রতিক্রিয়া অত্যল্প ক্ষণেই অভিভূত হইয়া যায় এবং বাগ্‌বৃত্তির পুনঃ প্রবৃত্তি জন্মে। ইহাই সপ্রতিসংহার নির্গমনের কারণ। আর যখন উক্তবিধ স্মরণবৃত্তি জন্মিতে বিলম্ব হয় তখন সবিরাম নির্গমনের কারণ স্বরূপ হইয়া থাকে।

মনে কর, প্রশ্ন কর্ত্তা জিজ্ঞাসা করিল যে কীদৃশাৎ কিং গ্রাহ্যম্" ? (কিরূপ হইতে—কিরূপ ব্যক্তি হইতে কি বস্তু গ্রহণ করিতে হয়) এইক্ষণ অপ্রতিসংহার স্থলোক্ত রীতি ক্রমে জিজ্ঞাস্য অর্থ সকলের মধ্যে কেবলমাত্র দুইটী কিম্ শব্দের অর্থের (যেরূপ ব্যক্তি হইতে এবং যাহা গ্রহণ করিতে হয়) অন্বেষণ বৃত্তি এবং উক্ত মতে "ভাবুকাৎ" নিষ্পন্ন হইয়া ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধী অর্থের প্রকাশ নিবন্ধন স্বভাবাবস্থাপিকা ক্রিয়া দ্বারা বাগ্‌বৃত্তি অভিভূত হইল, এই অবকাশে অতি শীঘ্রই প্রচোদনা ঘটিত "ভাব" অর্থের স্মরণ বৃত্তি হইল সুতরাং অত্যল্প ক্ষণের পরেই পুনঃ বাগ্‌বৃত্তির প্রবৃত্তি হইয়া "ভাবঃ" এই শব্দকে নিষ্পন্ন করিল।

এস্থলেও অপ্রতিসংহারের ন্যায় সন্ধি কার্য্যের অবশ্যম্ভাবিতা দৃষ্ট হয়। সপ্রতিসংহার সির্গমনে, বাগ্‌বৃত্তি একটী কথার নিষ্পাদনান্তে এমত অল্প

आर्य्य शास्त्र-विज्ञान।

(पूर्व्व प्रकाशितके आगे)

अब सप्रतिसंहार-निर्गमनका कारण निरूपण किया जाता है। पूर्व्व में कहा गया जो क्रिया मात्र हो की प्रतिक्रिया है, सुतरां वाग्वृत्ति नाम क्रिया की भि प्रतिप्रिया है। वाङ्निष्पादक यन्त्र की स्वभावावस्थापिका क्रिया होका नाम "वाग्वृत्तिकी प्रतिक्रिया"। वाग्वृत्ति जब वाङ्निष्पादक यन्त्र की स्वभाव स्थापिका क्रियाको अभिभूत करके स्वकार्य्य में प्रवृत्त होती है, उस ही समय स्वभावावस्थापिका भी निज आत्मासे मिलनेके लिये यत्न करती है किन्तु वाग्वृत्तिका प्रबल कारण घनिष्ठ सम्बन्धो अर्थको प्रचोदनासे सम्बलित स्मरणात्मक ज्ञान दृढ़रूपसे विद्यमान रहनेपर उसका कार्य्य किसी तरहसे वाग्वृत्तिको अभिभूत नहीं कर सक्ता है; तदनन्तर जब उक्त भान्ति ज्ञानके विषयार्थ प्रकाशका शेष हो जाय तव वह क्रिया भी तृप्त होती है। इस अवसर में यदि फिर प्रचोदना से बनीहुई अर्थान्तरस्मरण वृत्तिका अभ्युदय होय तो वह प्रतिक्रिया झट अभिभूत हो जाता है, औ वागवृत्ति की पुन: प्रवृत्ति होती है। इस हीको सप्रतिसंहार-निर्गमनके कारण करके जानना। औ जब उस भान्ति स्मरणवृत्ति बनने में विलम्ब होता है तब सविराम निर्गमनका कारण स्वरूप हो जाता है।

मानो, पुछनेहाराने जिज्ञासा करी जो "कीदृशात् किं ग्राह्यम् ?" (किस भान्तिसे—किस भान्ति व्यक्तिसे क्या लेना चाहिये) अब अप्रतिसंहार की रीतिसे पुछा हुआ अर्थसमूहके मध्य में केवल दो "किम्" शब्दके अर्थ की (जिस भान्ति व्यक्तिसे औ जो कुछ लेना चाहिये) अन्वेषणवृत्ति बनकर औ उस रीतिसे "भावुकात्" निष्पन्न होकर घनिष्ठ सम्बन्धीके अर्थका प्रकाश होनेसे स्वभावावस्थापिका क्रिया करके वागवृत्ति अभिभूत हुई, इस अवसर में झट प्रचोदनासे बना हुआ "भाव" अर्थ की स्मरणवृत्ति बनी, सुतरां तनिक विलम्बके अनन्तर फिर वागवृत्ति होकर "भाव:" इस शब्द को निष्पादन किया।

यहां भी अप्रतिसंहारके तरह सन्धि होनेको अवश्यम्भाविता देख पड़ती है। सप्रतिसंहार-निर्गमन में, वाग्वृत्ति एक शब्दको निष्पादन कर इस

কাল বিশ্রাম করে যে, সেই অবকাশে এক অর্দ্ধমাত্রা কালের পূর্ণতা হয় না এবং সেই অত্যল্প কালের পরেই শব্দান্তরের নিষ্পত্তি হয়। এ নিমিত্ত সপ্রতিসংহারে নির্গত শব্দের অন্তে যে কোন বর্ণ থাকে তাহার কাহারই সুপরিস্ফুট উচ্চারণ হইতে পারে না সুতরাং তখন অপ্রতিসংহারের ন্যায় সন্ধি কার্য্যের সম্ভাবনা হয়। "ভাবুকাদ্ভাবঃ" এস্থলে বক্তৃ বাগ্বৃত্তি "ভাবুকাৎ" এই শব্দকে নিষ্পন্ন করতঃ অন্তস্থিত "ৎ"কারের উৎপাদনান্তে পূর্ণ অর্দ্ধ মাত্রা কাল অতীত করে নাই, এ নিমিত্ত "ৎ" কারের পরিস্ফুট উচ্চারণ না হইয়া "ভ" এর সহিত ঘনীভাবে "দ্" কারের উচ্চারণ হইয়া পড়ে। ঈদৃশ স্থল লক্ষ্য করিয়া ব্যাকরণ প্রথম বর্ণের স্থানে তৃতীয় বর্ণ হওয়ার বিধান করিয়াছেন। সেই জন্য এই সন্ধি কার্য্য বহু প্রকারে বিভক্ত, এবং সকল প্রকার সন্ধি কার্য্যই স্বভাবানুযায়ী। সন্ধিকালীন স্বভাব জনিত যাদৃশ উচ্চারণ হয়, তাহার নাম সন্ধি-কার্য্য। কোন প্রকার সন্ধিকার্য্যই স্বভাবকে উল্লঙ্ঘন করে না। "ভাবুকাদ্ভাবঃ" এই স্থলে "ধ" "ন" প্রভৃতি অন্যবর্ণ না হইয়া "দ" হইল কেন? এবং "ভাবুকাৎ কিং" এস্থলেই বা "দ্" কারের উচ্চারণ না হইয়া "ৎ" কারের উচ্চারণ হইল কেন? "ভাবুকাচ্ছাত্রং" এস্থলেই বা "চ" কারের উচ্চারণ কেন হইল? ইত্যাদি বিষয়ের ভূরি ভূরি কারণ আছে এবং অন্য প্রকার স্বরসন্ধিও ব্যঞ্জন সন্ধিতে বিশেষ বিশেষ হেতুবাদ আছে। ফলতঃ ধর্ম্ম প্রচারকের স্থানাভাব বশতঃ সংক্ষেপে লিখিত হইল।

সবিরাম নির্গমনে অন্তস্থিত বর্ণের পূর্ণ উচ্চারণ কালই থাকে, এজন্য তখন সন্ধির সম্ভাবনা হয় না। সুতরাং সন্ধিকার্য্যেরও সম্ভব নাই। যথা ভাবুকাৎ——ভাবঃ॥"

এইক্ষণ সমাসবিষয়েও অতি সংক্ষেপে কিঞ্চিৎ বলা আবশ্যক বোধ হইতেছে। দ্বিপদের বা বহুপদের অর্থ সংক্ষেপবশতঃ সংক্ষিপ্ত অবস্থাকে সমাস বলে। সমাস হইলে সেই সমস্ত পদের বিভক্তির উচ্চারণ হয় না। বক্তার বাগ্বৃত্তিই সমাস হইবার কারণ। বাঙ্‌নিষ্পত্তির অধ্যবসায়ের পূর্ব্বে আদৌ বক্তার মনে প্রকাশয়িষ্যমান অর্থ বিষয়ে

भान्ति तनिक विश्राम कर लेती है, जो उस अवकाश काल में एक अर्द्धमात्रा काल की भी पूर्णता नहीं होती औ उस अत्यल्प ही कालके अनन्तर दूसरा शब्दकी निष्पत्ति होती है। इसलिये सप्रतिसंहार में निकला हुआ शब्दके अन्त में जो कोइ वर्ण रहे, उसका सुपरिस्फुट उच्चारण नहीं हो सक्ता है, सुतरां उस समय अप्रतिसंहारके न्याइ सन्धिकी सम्भावना होती है। "भावुकाद्भाव:" यहां वक्ता की वाग्वृत्ति "भावुकात्" इस शब्दको निष्पादन करके अन्तस्थ "त्" का उत्पादनानन्तर पूरी अर्द्धमात्र काल भी व्यतीत न किया इस लिये "त्" कारका परिस्फुट उच्चारण न होकर "भ" के साथ घनी भावके हेतु "द्" का उच्चारण होगया। इतना लक्ष्य करके व्याकरणकी रचना काल में प्रथम वर्णके स्थान में तृतीय वर्ण स्थिर हुआ। इस लिये सन्धिक्रिया नाना भान्ति में विभक्त है, औ सारी सन्धि क्रियायें स्वभावके नियमानुसार होती हैं। सन्धिके समय स्वभाव से जैसा उच्चारण होता हैं, उसही की नाम सन्धिक्रिया। किस ही भान्ति सन्धिक्रिया स्वभावक अतिक्रम न करती है। "भावुकाद्भाव" यहां "ध" "न" आदि अन्य वर्णके बदले "द्" क्यों हुआ? औ "भावुकात् किम्" यहां "द्" का उच्चारण न होकर क्यों "त्" का उच्चारण हुआ? "भावुकाच्छात्रं", यहां क्यों चका उच्चारण हुआ? इस भान्ति विषयोंके भूरि भूरि हेतु है औ दूसरी स्वर सन्धि औ व्यञ्जन सन्धि में विशेष हेतुवाद हैं। फलत: धर्म्मप्रचारक स्थानाभाव करके औ विस्तार न किया गया।

सविराम निर्गमनके अन्तस्थित वर्णोच्चारणका पूर्ण काल ही रहता है, इस लिये वहां सन्धि की सम्भावना नहीं। सुतरां सन्धिकार्य्य भी नहीं होनेवाला है। जैसा "भावुकात्——भाव:"।

अब समासके विषय पर भी अति संक्षेपसे कुछ कहना आवश्यक बोध होता है। द्विपद अथवा बहुपदके अर्थ संक्षेपसे बनी हुइ संक्षिप्त अवस्थाका नाम समास। समास होजानेपर उन समस्त पद की विभक्तिका उच्चारण नहीं होता है। वक्ता की वाग्वृत्ति ही समास होनेका कारण है। वाङ्‌निष्पत्तिके अध्यवसायके पहले ही प्रथमावस्था में

স্মরণ বৃত্তি জন্মিয়া থাকে। সম্বন্ধী বিষয়ক জ্ঞানই স্মরণ জ্ঞানের প্রধান কারণ। সম্বন্ধী অর্থের জ্ঞান হইলেই পরক্ষণে অপর সম্বন্ধীর স্মরণ হয়। সেই সম্বন্ধ নানা প্রকার। কোন স্থলে পরম মিত্রতা সম্বন্ধ, কোন স্থলে পরম বৈরভাব, কোথাও অবিচ্ছিন্ন সাহচার্য্য, কোন খানে পরম প্রণয়, কোন খানে অত্যন্ত অভেদ, কুত্রাপি একজাতীয়ত্ব, কোথাও জন্য-জনকত্ব, কুত্রচিৎ ভোগ্য-ভোক্তৃত্ব, কুত্রচিৎ স্বত্ব-স্বামিত্ব ইত্যাদি। যথা, কৃষ্ণার্জ্জুন অহিনকুল, রাম লক্ষ্মণ, বশিষ্ঠারুন্ধতী, নীলোৎপল, স্বর্ণরৌপ্য, রাজপুত্র, ব্রাহ্মণান্ন, বিপ্রবিত্ত ইত্যাদি স্থলে যখন কৃষ্ণাদি সম্বন্ধীর জ্ঞান হইয়া অপর সম্বন্ধী অর্জ্জুনাদির স্মরণ হয়, তখনই সমাস হইবার সম্ভাবনা হয়।

সমাসস্থলে উক্ত স্মরণ বৃত্তি এমত শীঘ্র উদিত হয় যে তদবকাশে আর জ্ঞানান্তর জন্মিতে পারে না। সুতরাং সমাস স্থলীয় সকল গুলি পদার্থেরই সূচী দ্বারা পত্রস্তর বেধন ক্রিয়ার ন্যায় দুরবগম্য বিচ্ছেদ একটী জ্ঞান ক্রিয়া জন্মে। এ নিমিত্ত তদবকাশে উক্তবিধ জ্ঞান দ্বারা "সমস্ত * পদার্থ" গুলির ক্রিয়ার যে সম্বন্ধ থাকে সেই সম্বন্ধ, কিম্বা ক্রিয়া ভিন্ন কোন বস্তুর সহিত, "সমস্ত পদ" সমূহের সকল পদার্থের সম্বন্ধ সম্ভবপর থাকিলে সেই সম্বন্ধ আভাসিত হয় না। সকল "সমস্ত পদার্থের" জ্ঞানের পরই উক্ত উভয়বিধ সম্বন্ধের জ্ঞান হয়; কিন্তু প্রয়োগকর্ত্তার প্রয়োগের হেতুভূত সমস্ত-পদার্থের পরস্পর যে সম্বন্ধ তাহার আভাস হয়, অথচ উহা সেই সেই পদার্থের নিয়ত ধর্ম্মের ন্যায় তাহার সহিতই আভাসমান হয়, পৃথগ্‌ভাবে হয় না। বাগ্‌বৃত্তিও পূর্ব্বতন জ্ঞানবৃত্তির অধীনা। যে কোন বস্তু পূর্ব্বক্ষণে জ্ঞানাধিরূঢ় হয়, তাহাই বাগ্‌বৃত্তি দ্বারা প্রকাশিত হয়। এজন্য "সমস্ত পদার্থ" সমূহের উক্তবিধ সম্বন্ধের জ্ঞান না হওয়ায় তাহার ব্যক্তিকা বিভক্তির উচ্চারণ হইতে পারে না।

অতএব বক্তা দ্বিতীয় কোন ব্যক্তিকে কৃষ্ণার্জ্জুনাদি বিষয়ক কোন কথা প্রতিপাদন করিতে যত্নবান হইলে কৃষ্ণাদিপদের বিভক্তির উচ্চারণ না হইয়া "কৃষ্ণস্য অর্জ্জুনস্য কথাং শৃণু" (কৃষ্ণের অর্জ্জুনের কথা শুন) এইরূপ হইবে। কিন্তু

* যে পদের সমাস হয় তাহাকে "সমস্ত পদ" বলে।

वक्ताके मन में उस अर्थ विषय की स्मरणवृत्ति जन्मती है जिसको प्रकाश करना अभिप्राय है। सम्बन्धी विषयक जो ज्ञान है, वही स्मरण ज्ञानका प्रधान कारण है। सम्बन्धी अर्थके ज्ञान होने ही झट दुसरा सम्बन्धीका स्मरण होता है। वह सम्बन्ध नाना भान्तिका है। कहीं परम मित्रतारूप सम्बन्ध, किस ही स्थान में वैरभाव, कहीं अविच्छिन्न साहचर्य्य, कहीं परम प्रणय, कहीं अत्यन्त अभेद, कहीं एकजातीयत्व, कहीं जन्य जनकत्व, कहीं भोग्य भोक्तृत्व, कहीं स्वत्व स्वामित्व इत्यादि। जैसा कि कृष्णार्ज्जुन, अहिनकुल, रामलक्ष्मण, वशिष्ठारुन्धती, नीलोत्पल, स्वर्णरौप्य, राजपुत्त, ब्राह्मणान्न, विप्रवित्त इत्यादि स्थल में जब कृष्णादि सम्बन्धी ज्ञान उपजकर अपरसम्बन्धी अर्ज्जुनादिको स्मरण होता है, तब ही समास होने की सम्भावना है।

समासके स्थल में उक्त स्मरणवृत्ति इतना शीघ्र उदय होती है, जो तदवकाशकाल में दुसरा ज्ञान नहीं उदय हो सक्ता है। सुतरां समासस्थलके हरेक पदार्थ की ऐसी एक ज्ञानक्रिया जनमती है, जिसका विच्छेद कालसमझना बुद्धिका बाहर है, औ सूंईसे उपरे उपर रखेहुए पत्तायोंको बिंधने समान बोध होता है। इस लिये तदवकाश में उक्त भान्ति ज्ञान करके "समस्त * पदार्थो की क्रियाका जो सम्बन्ध रहता है, वही सम्बन्ध, अथवा क्रिया छोड़के अन्यवस्तुके साथ, "समस्त पद" समूहका सम्बन्ध सम्भव होनेपर उस सम्बन्धका आभासना खोया जाती है। सब "समस्त पदार्थ"के ज्ञानके अनन्तरही उक्त उभयविध सम्बन्धका ज्ञान होता है; किन्तु प्रयोगकर्त्ताके प्रयोगके हेतुभूत "समस्त पदार्थ" का परस्पर जो सम्बन्ध है, उसी की आभासना होती है, अथच वह उन पदार्थके नियत धर्म्मके न्याइ उसीके साथ आभासमान हैं, पृथक रीतिसी नहीं होता है। वाग्वृत्ति भी पूर्व्वतन ज्ञानवृत्तिका अधीना है। जो कोई वस्तु पहले ज्ञानाधिरूढ़ होता है, वाग्वृत्ति उसीको प्रकाशकर देती है। इसलिये "समस्त पदार्थ" समूहके उक्त भान्ति ज्ञान हुए बिना, व्यक्तिका विभक्तिका उच्चारण नहीं हो सक्ता है।

अतएव वक्ता यदि दुसरा किसीको "कृष्णा-

* जिस पदका समास होता है, उसीका नाम समस्तपद।

"কৃষ্ণস্য" (কৃষ্ণের) আর "অর্জ্জুনস্য" (অর্জ্জুনের) "স্য" (এর) উচ্চারিত না হইয়া "কৃষ্ণার্জ্জুন কথাং শৃণু" (কৃষ্ণার্জ্জুন কথাশুন) এই প্রকার হইয়া পড়ে।

এ প্রকারে পদার্থের সংক্ষেপ হইয়া পদের সংক্ষেপ নামক সমাস হয়। এইরূপ সর্ব্বত্র। ঈদৃশ বাক্ স্বভাব জাত সমাসের আকার প্রতিপাদনের নিমিত্ত ব্যাকরণ বিবিধ সূত্র গান করিয়াছেন। অধিক বিস্তারের প্রয়োজন নাই।

নিরুক্ত শাস্ত্র। ইহা এক প্রকার অভিধান বিশেষ। ভগবান্ যাস্ক মহর্ষি ইহার প্রণেতা। ইহা দ্বারা বেদোক্ত শব্দ সকলের অর্থের নির্ণয় করা হইয়াছে। শ্রুত্যুক্ত শব্দার্থের নির্ব্বাচন করা হেতু ইহার নাম "নিরুক্ত"। এজন্য ইহা বেদের অঙ্গ, এবং ত্রিবিধ ভাষা বিজ্ঞানের ফল বিজ্ঞানের অংশ বিশেষ। নিরুক্ত শাস্ত্র দ্বারা ভাষার আকৃতি মাত্র অবগত হওয়া যায়। ইহার "হেতু-বিজ্ঞান" শ্রুতি ও দর্শন শাস্ত্রে আছে; তত্ত্বাবদ্বিবরণ "শশধর বাগ্বিজ্ঞানে" বিস্তারিত হইয়াছে॥

ক্রমশঃ।

শিশুর প্রকৃতি গঠন।

যে দিন হইতে গর্ভকোষে প্রাণীর সঞ্চার হয় সেই দিন হইতেই শারীরতত্ত্ববিৎ চিকিৎসক ও ধর্ম্মতত্ত্ববেত্তা মহাত্মাগণের পরামর্শানুসারে জননীকে নানাবিধ নিয়মের অধীন হইয়া থাকিতে হয়। ভোজন, ভ্রমণাদি সমস্ত ব্যাপারই বিশেষ বিশেষ নিয়মানুসারে না করিলে গর্ভিণী ও গর্ভস্থ শিশুর অনিষ্ট হইয়া থাকে। যে সকল স্থানে থাকিলে, যে সকল বিষয় বা বস্তু বা ব্যাপার দর্শন করিলে, যে সকল শব্দ শ্রবণ করিলে, যেরূপ বিষয় সম্বন্ধে বাচনিক ব্যাখ্যা করিলে, যে সকল বস্তু সংস্পর্শ করিলে, এবং যে সকল পদার্থের আঘ্রাণ গ্রহণ করিলে শরীর কম্পিত ও লোমাঞ্চিত, শারীর যন্ত্রাদি আকুঞ্চিত বা আন্দোলিত, মনভীত, বিস্মিত, চিন্তিত, অভিভূত, বা আত্ম বিস্মৃত হইয়া

र्जुन" आदि आशयपर कोई बात प्रतिपादन करने कहैं, तो कृष्णादि पदकी विभक्तिका उच्चारण न होकर "कृष्णस्य अर्ज्जुनस्य कथां शृणु" (कृष्ण की अर्ज्जुन की कथा सुनो) ऐसा होगा। किन्तु यहां "कृष्णस्य" (कृष्णकी) औ "अर्ज्जुनस्य" (अर्ज्जुनकी) यह "स्य" (की) का उच्चारण न होकर "कृष्णार्ज्जुनकथां शृणु" (कृष्णार्ज्जुन की कथा सुनो) ऐसा होजायगा।

इस रीतिसे पदार्थका संक्षेप होनेपर पदके संक्षेप नाम समास होता है। ऐसा ही सर्व्वत्र जानना। इस भान्ति वाक्स्वभावसे बनता हुआ समासके रूप प्रतिपादनके अर्थ व्याकरण में नाना सूत्र की व्याख्या को कहइ है; अधिक फैलाने में प्रयोजन नहीं।

निरुक्त शास्त्र। यह एक भान्तिका कोष है। भगवान यास्कका बनाया हुआ है। इसकी सहायतासे वेदोक्त शब्दोंके अर्थ निरूपण किया गया है। श्रुत्युक्त शब्दार्थोंके निर्व्वाचनके हेतु इसका "निरुक्त" नाम हुआ। इस लिये यह वेदका अङ्ग है औ त्रिविध भाषाविज्ञानके फल विज्ञानका अंश है। निरुक्त शास्त्रसे केवल भाषाका अवयव जाना जाता है। इसका "हेतु विज्ञान" श्रुति औ दर्शनशास्त्र में है। विस्तारित विवरण "शशधर-वाग्विज्ञान" में प्रगट कियाहुआ है। शेष आगे।

शिशुकी प्रकृति निर्म्माण।

जिसदिनसे गर्भकोष में प्राणीका सञ्चार होता है उसी दिनसे जननीको शारीरतत्त्ववित् चिकित्सकोंके औ धर्म्मतत्त्ववेत्ता महात्माओंके परामर्शानुसार विविध नियमके अधीन रहना पड़ती है। भोजन, भ्रमण आदि समस्त कार्य्य ही विशेष विशेष नियम अनुसार न करनेसे गर्भिनी औ गर्भस्थ शिशुका अनिष्ट होता है। जिस जिस स्थान मे रहनेसे, जिस जिस विषय वा वस्तु, वा व्यापार दरशन करनेसे जिन सब शब्द श्रवण करनेसे, जिस भान्ति प्रबन्धके आशयपर वाचनिक व्याख्यान करनेसे जिन सब वस्तुको स्पर्श करनेसे औ जिन सब पदार्थोंकी आघ्राण लेनेसे शरीर कम्पित औ रोमाञ्चित, शारीरयन्त्र आदि आकुञ्चित वा

থাকে, জননীকে এতাবৎ হইতে সর্ব্বদা সুদূরে ও সাবধান থাকিতে হয়। সর্ব্বদা বিকট মূর্ত্তিদর্শন, উৎকট চিন্তা বা বিষয় অনুশীলন প্রভৃতি জন্য যে কতশত জননীকে শোকসন্তপ্ত ও কাতর হইতে হইয়াছে তাহা বোধ হয় তত্ত্ববেত্তাবর্গের অবিদিত নাই। পুরুষাপেক্ষা স্ত্রীজাতির ভাবিকা * বা ভাব গ্রাহিকা শক্তির অধিক প্রবলতা অথবা উহারা উক্ত উপাদানেই গঠিত বলিলেই হয়। শারীরিক ইন্দ্রিয়াদি এবং মানসিক বৃত্তি সকল অত্যন্ত আগ্রহ পূর্ব্বক যে সকল বিষয়ের গ্রহণ বা ধারণা করিতে থাকে, জীবের প্রকৃতি তদনুসারিণী দশা প্রাপ্ত হয় সুতরাং ভাবিকা শক্তি প্রধানা রমণীগণ কর্ম্মেন্দ্রিয়, জ্ঞানেন্দ্রিয় বা মনোবৃত্তি দ্বারা যে সকল ব্যাপার ধারণা করিবেন, তাঁহাদের প্রকৃতি এবং অগত্যা গর্ভস্থ শিশুর প্রকৃতি তত্তদ্ভাবাপন্ন হইয়া যাইবে, এই জন্যই তত্ত্ববেত্তা মহোদয়গণ গর্ভিণীকে সর্ব্বদা সাবধান থাকিতে আদেশ ও উপদেশ দিয়াছেন। প্রকৃতিতত্ত্বজ্ঞ মহাত্মাগণই এতদ্ব্যবহারের অবশ্যাবশ্যকতা ও সারবত্তা অনুভব করিতে পারেন। স্নেহময়ী জননী অতিকষ্টে যথাশাস্ত্র কঠোর ব্রত উদ্‌যাপন পূর্ব্বক নিয়মিত কালে সন্তান প্রসব করিয়াই অবকাশ পাইলেন না; শিশু যতদিন তাঁহার স্তন্য পান করিবে, যতদিন তাঁহার প্রকৃতি অনুসরণ ও যতদিন তাঁহার আদেশ ও উপদেশানুসারে আপনার প্রকৃতি সংগঠন করিতে থাকিবে, ও যতদিন তাঁহার আদর্শ, শিশুর জীবিত কালের সম্পূর্ণ না হউক আংশিক আদর্শ স্থলও রচনা করিবে, জননী যদি স্বরূপতঃ শিশুর কল্যাণ কামনা করেন, তবে ততদিন তাঁহাকে অতীব সাবধানে জীবনাতিপাত করিতে হইবে।

হা! বর্ত্তমান ভারতবর্ষের কি বিড়ম্বনাই উপস্থিত হইয়াছে। শিশু সূতিকাগৃহকে সুশোভিত করিবামাত্রই যে বাহ্য জগতের কতশত প্রকৃতি সেই নিঃসহায় কোমল প্রকৃতির উপর আধিপত্য

* যে শক্তি দ্বারা অন্য বস্তুত্বের যথাযথ ধারণা করিতে পারা যায়।

आन्दोलित, मन भीत, विस्मित, चिन्तित, अभिभूत औ आत्मविस्मृत होजाता है, जननीको इन सबसे सर्व्वदा दूर औ सावधान रहना पड़ता है। बोध होता है, तत्ववेत्ताओंके यह अविदित नहीं, जो सर्व्वदा बिकट मूर्त्तिके दर्शनसे, उत्कट चिन्ता वा विषय की चर्च्चा आदिसे कितनी जननीको शोकसन्ताप औ दुःख भोगने हो भी पड़ा। पुरुषसे स्त्रीजाति की भाविका * वा भावग्राहिका शक्ति की अधिक प्रबलता है अथवा वे उक्त उपादान होसे बनी हुई है, मान लेना शारीरिक इन्द्रियादि औ मन की वृत्तियें अत्यन्त आग्रह पूर्व्वक जिन सब विषयों की धारणा वा ग्रहण किये करते है, जीवकी प्रकृति तदनुसारिणी दशाको प्राप्त होती है सुतरां रमणीगण, जिन्हो की भाविका शक्तिप्रधान है, कर्म्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय वा मनोवृत्तिसे जितने व्यापारोंको धारणा करेङ्गी उन्हों की प्रकृति औ अगत्या गर्भस्थ शिशु की प्रकृति उस भान्ति भावको प्राप्त होजायगी इसलिये तत्त्वज्ञ महोदयगण गर्भिणीको सर्व्वदा सावधान रहनेके अर्थ आदेश औ उपदेश किये हैं। प्रकृति-तत्वज्ञ महात्मागण ही इन सबकी अवश्यावश्यकता औ सारवत्ताको अनुभव कर सक्ते हैं। स्नेहमयी जननी अतीव कष्टसह कर शास्त्रविधिके अनुसार कठोर व्रत उद्यापनपूर्व्वक सन्तानको केवल प्रसव कर अवकाश न पाइ; शिशु जबतक उनका स्तनके दूध पीता रहेगा, जबतक उनकी प्रकृतिका अनुसरण औ जबतक उनके आदेश औ उपदेशके अनुसार शिशु निज प्रकृतिका निर्म्माण करता रहेगा औ जबतक शिशु जीवित कालके सम्पूर्णरूप न हो, आंशिक आदर्श स्थल भी रहेगा, यदि जननी यथार्थ में शिशुका कल्याण चाहें तो तबतक उनको उचित है अतीव सावधानतासे जीवनको व्यतीत करें।

हा! वर्त्तमान भारतवर्ष की क्या दुर्दशा आ पड़ी है। शिशु जब ही सुतिका गृहको सुशोभित करता है उसी समय जो बाह्य जगत की कितनी प्रकृति उस निःसहाय कोमल प्रकृति पर आधिपत्य

* जिस शक्ति करके अन्य वस्तुओं की यथाविधि धारणा कीजा सक्ती है।

করিতে আরম্ভ করিল ও তাহার চরম ফল কিরূপ হইবে তাহা ক্ষণজন্যও আর পিতা মাতা চিন্তা করিবার জন্য মস্তিষ্ক আলোড়ন করিতে চাহেন না। যে শুভক্ষণ হইতেই শিশুর চক্ষু কর্ণ নাসাদি ইন্দ্রিয়গণ কার্য্যক্ষেত্রে অবতরণ করে অথবা বাহ্য জগৎ যে ক্ষণ হইতেই শিশুর লীলা ভূমি হইয়া উঠে, সেই সময় হইতে পরম যত্নের সামগ্রী শিশুকে সুসংগঠিত করিবার জন্য পিতা মাতাকে কায়মনোবাক্যে যত্ন করিতে হইবে। যাহাতে শরীরের পুষ্টি, আয়ুর বৃদ্ধি, হৃদয়ের প্রশস্ততা, মনের উচ্চ ভাবের বিকাশ, মস্তিষ্কের গভীর চিন্তাশীলতাদি গুণের যথোচিত উৎকর্ষ সাধন হইতে পারে, তদ্রূপ আহারীয় বস্তু, তদ্রূপ ঘ্রাণের সামগ্রী, তদ্রূপ শ্রোতব্য বিষয়, দ্রষ্টব্য পদার্থ, এবং লেপনাদি স্পর্শনীয় দ্রব্য তাহার সম্মুখে উপস্থিত করা কর্ত্তব্য। এই প্রকৃতি স্ফুরণের অঙ্কুর কাল হইতেই অত্যন্ত অবহিতচিত্তে তাহার শুশ্রূষা করিতে হইবে। সদ্যবস্থার কিছুমাত্র ন্যূনতা ও ত্রুটী হইলে শিশুপ্রকৃতি বিকৃত ও অতি কদর্য্য দশাগ্রস্ত হইয়া কাল সহকারে জনক জননীর বিবিধ দুঃখের প্রধান হেতু ও সমাজের ঘোর আবর্জ্জনা তুল্য হইয়া পড়িবে।

আমরা সচরাচর দেখিতে পাই, যে যে পর্য্যন্ত শিশু প্রাপ্তবয়স্ক না হয় তাবৎকাল পিতা মাতা গৃহকার্য্য সৌকার্য্যার্থে অথবা শিশুর সর্ব্বদা তত্ত্বাবধান করিবার জন্য শিশুদিগকে দাস দাসীর নিকট রক্ষা করেন। ভারতবর্ষীয় দাস দাসীগণ যে সকলেই অশিক্ষিত, মূর্খ, ও স্থূল বুদ্ধি তাহা বোধ করি কাহারই অবিদিত নাই। তাহাদের সহস্রের মধ্যে একজনও সুনীতিমার্গের কোন সুসমাচার অবগত আছে কিনা তাহাও সম্পূর্ণ সন্দেহ স্থল। বরং তাহদের মধ্যে অনেকের চরিত্র দূষিত, আচার ব্যবহার কদর্য্য ও অননুকরণীয়, ভাষা অসাধু, ভাব অতীব কলুষিত এবং প্রকৃতি নীচ। ভাবীবংশধরগণের ঈদৃশ কোমল প্রকৃতিদর্পণে যদি দাস দাসীগণের মলিন প্রকৃতির প্রতিকৃতি একবার অঙ্কিত

করনা আরম্ভ করতী হৈ ঔ উসকা পরিণাম ক্যা হোগা, পিতা, মাতা ফির ইস বিষয় কী চিন্তাকে লিয়ে তনিক ভী মস্তিষ্ককো পরিশ্রম করানে নহীঁ চাহতে হৈঁ জিস শুভক্ষণ হোসে শিশুকে চক্ষু, কর্ণ, নাসা আদি ইন্দ্রিয়গণ কার্য্যক্ষেত্র মেঁ অবতরণ করতে হৈঁ অথবা বাহ্য জগত জিস ক্ষণ হোসে শিশু কী লীলাভূমি হো উঠতী হৈ, উসী সময়সে শিশুকো, জো পরম যত্নকী সামগ্রী হৈ, সুসংগঠিত করনার্থ পিতা মাতাকো কায়মন বচনসে যত্ন করনা চাহিয়ে। জিস মেঁ শরীর কী পুষ্টী, আয়ু কী বৃদ্ধি, হৃদয় কী প্রশস্ততা, মনকে উচ্চ ভাবকা বিকাস, মস্তিষ্ক কী গম্ভীর চিন্তাশীলতা আদি গুণকা যথোচিত উৎকর্ষ সাধন হো সকে, উসকে যোগ্য ভোজন দ্রব্য, উসকে যোগ্য ঘ্রাণকে সামগ্রী, উসকে যোগ্য শ্রোতব্য বিষয়, দ্রষ্টব্য পদার্থ, ঔ অঙ্গলেপ আদি স্পর্শনীয় উসকে সামনে লানা চাহিয়ে। ইস তরহসে প্রকৃতি স্ফুরণ কী প্রথমাবস্থাহিসে অত্যন্ত দত্তচিত্ত হোকর উসীকী শুশ্রূষা করনা চাহিয়ে। সদ্যবস্থা কী কুছ ন্যূনতা ঔ ত্রুটী হোনে পর ভী শিশু কী প্রকৃতি বিকৃত ঔ অত্যন্ত কদর্য্য দশাগ্রস্ত হোকর কালসহকার জনক, জননীকে নানা ভান্তি দুঃখকা প্রধান হেতু ঔ সমাজকা ভয়ঙ্কর আবর্জ্জন তুল্য বনেগা।

হম সবকো সচরাচর যহ দেখনে মেঁ আতা হৈ, জো জবতক শিশু কী অবস্থা অধিক ন হো তাবত কাল পিতা, মাতা, গৃহকার্য্য কী সুবিহিতাকে অর্থ অথবা সর্ব্বদা তত্ত্বাবধানকে লিয়ে শিশুওঁকো দাস দাসীকে নিকট রখ দেতে হৈ। ভারতবর্ষীয় দাস দাসীগণ জো নিতান্ত অশিক্ষিত, মূর্খ ঔ স্থূল বুদ্ধি হৈঁ সো বোধ হোতা হৈ কিসীকা অবিদিত নহীঁ, সহস্র ঐসে দাস, দাসিয়োঁকে মধ্য মেঁ একজন ভী সুনীতিমার্গকা কোই সুসমাচার জানতা হৈ, যা নহীঁ, সো ভী সম্পূর্ণ সন্দেহস্থল হৈ, বরং উন মেঁ বহুতেরোঁকা চরিত দূষিত, আচার ব্যবহার কদর্য্য ঔ অনুকরণকা অযোগ্য, ভাষা অসাধু, ভাব অতীব দূষিত ঔ প্রকৃতি অত্যন্ত নীচ হৈ। ভবিষ্যত্ বংশধরগণ কী ইস ভান্তি-কোমল প্রকৃতিরূপ দর্পণ মেঁ যদি দাস দাসিয়োঁ কী মলিনপ্রকৃতি কী প্রতিকৃতি একবার অঙ্কিত হো জায় তো উসকো অপনয়ন করনা জো কহাঁতক দুঃসাধ্য হোতা হৈ সো বোধ

হইয়া যায় তাহা অপনয়ন করা যে কতদূর দুঃসাধ্য হইয়া উঠে তাহা বোধ করি অনেক পিতা মাতা নিজ নিজ জীবনে প্রত্যক্ষ্য করিয়া থাকিবেন। নীচ সংশ্রব বশতঃ অনেক বালককেই অনুচ্চার্য্য অসাধু ভাষায় গালিবর্ষণ করিতে দেখিতে পাওয়া যায়; রীতিনীতি, কার্য্য কলাপ কতক পরিমাণে নিম্ন শ্রেণীস্থ কদাচারিগণের সদৃশ হইয়া উঠে। বালকবর্গ বিদ্যালয়ে প্রবেশ করিলে তাহাদিগকে শিষ্টাচারী ও ধীর করিবার জন্য শিক্ষককে বহুল পরিশ্রম ও যত্ন করিতে হয়, হয়তো কোন কোন বালকের বাল্য সংশ্রব দোষে মনঃপ্রকৃতি এরূপ মলিন ও অনাবিষ্ট হইয়া যায় যে শিক্ষক কোন ক্রমেই তাহাকে সরল ও সুনীতি পথের পথিক করিতে পারেন না। পিতা মাতাদি গুরুগণের অযত্ন ও অনবধানতাই এই গুরুতর দোষের সূত্রপাত করিয়া দেয়। অসৎ বালকবর্গের সঙ্গ করিতে ও নীচ শ্রেণীর লোকদিগের সঙ্গে থাকিবার অনুমতি বা প্রশ্রয় দান করিলে শিশু প্রকৃতিতে ভবিষ্যৎ জীবনের দুরপনেয় দূষিত ভাবের উপাদান সঞ্চিত হইতে থাকে। সন্তানগণকে হৃষ্ট পুষ্ট শরীর, সুসজ্জিত, ও বিশ্ববিদ্যালয়ের উপাধিধারী করিবার জন্য পিতা মাতাগণকে যত যত্নশীল দেখিতে পাওয়া যায়; তাহাদিগকে সচ্চরিত্র, নির্ম্মল প্রকৃতি ও সদাশয় করিবার জন্য তাদৃশ আকিঞ্চন দৃষ্ট হয় না। বর্ত্তমান ভারতীয় জনক জননীগণ ভাবী সামাজিক বিপ্লবের বিষম সোপান রচনা করিতে আরম্ভ করিয়াছেন। বিশ্ববিদ্যালয়ের বর্ত্তমান শিক্ষা প্রণালী তাহার আবার যথেষ্ট পৃষ্ঠপোষকতা করিতেছে।

উপসংহার কালে প্রত্যেক শিশুর পিতা মাতার নিকট আমাদের এই বিশেষ অনুরোধ যে যদি তাঁহারা স্ব স্ব সন্তানকে প্রকৃত রূপ স্নেহ করিয়া থাকেন, যদি তাহাদের চিরদিন কুশলে বাস করা তাঁহাদের অভীষ্ট হয়, যদি তাহাদিগের যশোসৌরভের সঙ্গে সঙ্গে নিজ নিজ উল্লাস বৃদ্ধি হইবার আকাঙ্ক্ষা করেন, যদি তাহাদিগকে সমাজাভরণ করিতে ইচ্ছা থাকে, এবং আধ্যাত্মিক বিক্রমবলে ভৌতিক বিপ্লব রাশি বিদূরিত হইয়া যায় যদি ইহা তাঁহাদের বিশ্বাস থাকে তবে যে দিন শিশু ভূমিষ্ঠ হইবে সেই দিন হইতেই তাহার প্রকৃতি

होता है बहुतेरे पिता, माता निज २ जीवन में प्रत्यच किये होंगे। नीच जातिके सङ्ग करके बहुतेरे बालकको यह देख पड़ता है जो वे अनुच्चार्य्य, औ असाधु भाषा में गाली बकते हैं; रीति, नीति कार्य्यकलाप भी थोड़ा बहुत निम्नश्रेणिस्थ कदाचारियोंके बराबर हो जाते हैं। बालकवर्ग विद्यालय में प्रवेश करने पर उन्होंको शिष्टाचारी औ धीर करनेके अर्थ शिक्षकको बहुत परिश्रम औ यत्न करना पड़ता है; यह भी देखा जाता है कि बाल्यसंश्रवके दोषसे किसी किसी बालक की मनोप्रकृति इस भान्ति मलीन, औ अनाविष्ट हो जाती है जो शिक्षक कोसी उपायसे सरल औ सुनीति मार्गपर न ला सक्ते हैं। पिता, माता आदि गुरुओंके अयत्न औ अनवधानता ही इस गुरुतर दोषका सूत्रपात कर देती हैं। असत् बालकोंके सङ्ग करने की औ नीचश्रेणीस्थ लोगोंके सङ्ग में रहने की अनुमति वा प्रश्रय देनेसे शिशुप्रकृति में भविष्यत् जीवनके दुरपनेय दूषित भावका उपादान सञ्चय होता रहता है। सन्तानोंको हृष्ट पुष्ट शरीर, सुसज्जित औ विश्वविद्यालयका उपाधिधारी करनेके अर्थ पिता, माताको जिस भान्ति यत्नशील देख पड़ता है उन्होंको सच्चरित्र, निर्म्मल प्रकृति औ सदाशय बनानेके लिये उस भान्ति आकिञ्चन नहीं देख पड़ता है। वर्त्तमान भारतीय जनक, जननीगण भविष्यत् सामाजिक विप्लवके विषम सोपानको रचना करना आरम्भ करदिये हैं। विश्वविद्यालय की वर्त्तमान शिक्षाप्रणाली फिर उस की यथेष्ट पृष्ट पोषकता या सहायता कर रही है।

उपसंहार काल में हर एक शिशुके पिता, माता के निकट हमारा यह विशेष अनुरोध है, जो यदि वे निज निज सन्तानको प्रकृतरूप स्नेह करते रहें, यदि लड़कोंके चिरदिन कुशल में रहना उनका अभीष्ट हो, यदि उन्होंके यशोसौरभके सङ्ग ही सङ्ग निज निज आनन्द वृद्धि की कामना करें, यदि उन्होंको समाज का शोभास्वरूप बनाने चाहें औ यदि यह विश्वास रहे कि आध्यात्मिक विक्रमके बलसे भौतिक विप्लवराशी दूर होजाते है तब जिस दिन शिशु भूमिष्ठ होगा उसी दिनसे उस की प्रकृति सुन्दर

গঠনের জন্য সদ্ব্যবস্থা করিতে থাকুন। শিশুকে অসতী স্ত্রী বা দুরাত্মা পুরুষের ক্রোড়ে দিবেন না। কুলটা, কদাচারিণী ও কুদৃষ্টিপরায়ণা কামিনীগণের নিকট শিশুকে কখনই রক্ষা করিবেন না। দুষ্ট বালক বালিকাগণের সঙ্গে মিত্রতা করিতে দিবেন না। নীচ শ্রেণীর লোকের সহবাস করিবার, ব্যভিচার ও কুৎসিত ক্রিয়া ক্ষেত্রে গমন করিবার প্রশ্রয় দিবেন না। প্রত্যহ সন্ধ্যাকালে তাহাদের নৈতিক উন্নতির পরীক্ষা ও শিক্ষাদান করিবেন। সুশীল সুবোধ বালকগণের সহিত যাহাতে সখ্যতা হয় তাহার যত্ন করিবেন। গৃহের দাস দাসীগণ শিশুর সমক্ষে কোন কদাচার ও কুৎসিত ভাষা প্রায়োগ না করে, তাহার ব্যবস্থা করিবেন। নীতিজ্ঞ মহাত্মাদিগের তত্ত্বাবধানে বালককে রক্ষা করিবেন। শিশুর সত্যে অনুরাগ, সৎসাহস, সদাচারাদি দৃষ্ট হইলে তাহাকে উৎসাহ ও পুরস্কার দিবেন। নিজ শিশুর সঙ্গে সঙ্গে তাহার পল্লীস্থ সহচরবর্গেরও প্রকৃতি সংস্কার করিতে হইবে। আমরা সংক্ষেপে শিশুর প্রকৃতি গঠনের সঙ্কেত করিলাম, আশা করি পুত্রবৎসল সহৃদয়মাত্রেই এতদ্বিষয়ে মনোযোগী হইয়া জগতের কল্যাণ বৃদ্ধি করিবেন।

ধর্ম্ম সাধন।

(শ্রীযুক্ত বাবু অঘোরনাথ ভট্টাচার্য্যের নিকট হইতে প্রাপ্ত।)

সম্পাদক মহাশয়! আপনার সাধুজন মান্য "ধর্ম্ম প্রচারকের" পাঠক মহাত্মাগণের পাঠার্থ নিম্নলিখিত কয়েক পংক্তি উক্ত পত্রের পার্শ্বে প্রকটন করিলে পরম সুখী হইব।

বিগত ৯ই শ্রাবণ শনিবার অপরাহ্ন বেলা ৫ ঘটিকার সময় "ধর্ম্ম প্রচারক" পত্র সম্পাদক মান্যবর শ্রীযুক্ত কুমার *শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন মহাশয়

* সর্ব্বত্যাগী মহাত্মা অবধূতের প্রিয়শিষ্য শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন ভারতে সনাতন আর্য্যধর্ম্মের পুনরুদ্দীপনা ও পুনর্গৌরব ঘোষণা করিবার জন্য আপনার জীবনকে উৎসর্গ করিয়াছেন এবং তজ্জন্যই অতীব কঠোর "চির কৌমার" ব্রত অবলম্বন পূর্ব্বক স্বকর্ত্তব্য সাধনে যথাবৎ প্রবৃত্ত হইয়াছেন। ধর্ম্মার্থ বক্তাকে "বাবু" বলিয়া সম্মান দান করায় কোন গৌরব নাই বরং অমর্য্যাদাই হইয়া থাকে। তিনিও স্বয়ং উপাধিপ্রিয়

वनानेके लिये सद्व्यवस्था करते रहें। शिशुको असती स्त्री वा दुरात्मा पुरुषके गोदपर नहीं देना। दुःशीला, कदाचारिणी और कुदृष्टियुक्त स्त्रियोंके निकट शिशुको कभी नहीं रखना। दुष्ट वालक वालिकागणके सङ्ग मित्रता करने ना देना। नीचश्रेणीके लोगोंके सहवास करनेका, व्यभिचार और निन्दित क्रियाक्षेत्र में जानेका प्रश्रय न देना। प्रतिदिन सन्ध्याकाल उन्हों को नैतिक उन्नतिको परीक्षा लेना और शिक्षादान करना। और ऐसा यत्न करना कि जैसे सुशील और सुवोध वालकोंसे मित्रता वढ़े। इस भान्ति व्यवस्था कर देना कि गृहके दास, दासीगण शिशुके साम्हने, किसी भान्ति कदाचार न करे, और निन्दित भाषा न वोले। नीतिशास्त्रवेत्ता महात्माओंके तत्त्वावधान में वालकको रक्षा करना चाहिये। जव शिशुका सत्यानुराग, सत्साहस, सदाचार, आदि देख पड़ेगा तव उसको उत्साह और पुरस्कार देना चाहिये। निज शिशुके सङ्ग हो सङ्ग उसकेमहल्लेके सहचरों को प्रकृति संस्कार करना चाहिये। हमने संक्षेपसे शिशु को प्रकृति निर्म्माणका इसारा किया, आशा करते हैं कि हर एक पुत्र-वत्सल सहृदय पुरुष इस विषय में दत्तचित्त होकर जगतका कल्याण वृद्धि करेंगे।

धर्म्मसाधन।

(श्रीमान् बाबु अघोरनाथ भट्टाचार्य्य जीके निकटसे पाए)।

सम्पादक महाशय! आपके साधुजनमान्य धर्म्मप्रचारकके पाटक महात्माओंके पठनार्थ यदि निम्न लिखित कतिपय पङ्क्ति उक्त पत्रके एक किनारे में स्थान दीजिये तो मैं परम सुख मानुङ्गा।

श्रावणवदी त्रयोद [illegible] के दिन, शनिवार, ५वजेके समय "धर्म्मप्रचारक" पत्रके सम्पादक, परम माननीय श्रीमान कुमार * श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन जीने

* सर्व्वत्यागी महात्मा अवधूतके प्रियशिष्य श्रीकृष्ण प्रसन्न जीने भारतवर्ष में सनातन आर्य्यधर्म्म की पुनरुद्दीपना औ उसका गौरव फिर घोषणा करनार्थ निज जीवनको उत्सर्ग किया है औ तन्निमित्त अतीव कठोर "चिरकौमार" व्रत अवलम्बन पूर्व्वक निज कर्त्तव्य साधन में यथारीति प्रवृत्त हुए हैं। धर्म्मार्थ वक्ताको "वाबु" इस उपाधि करके सम्मान देनेसे कुछ गौरव नहीं, वरं अमर्य्यादा ही देख पड़ती है। वे भी स्वयं

"ধর্ম্ম সাধন" সম্বন্ধে জামালপুর হরিসভায় একটী সুদীর্ঘ বাচনিক বক্তৃতা করেন। বক্তার প্রায় দুই ঘণ্টা কাল অবিশ্রান্ত বক্তৃতায় ভগবদ্ভক্ত ব্যক্তি মাত্রেই বিশেষরূপ সুখী ও উৎসাহিত হইয়াছিলেন। যাহাতে ইংরাজিতে বা নব্যরীতিতে সুশিক্ষিত ভারতবাসীগণ আর্য্যধর্ম্মের প্রকৃত তত্ত্বাবগত হইয়া তাহাতে আস্থাবান্ হয়েন এবং তাঁহাদের পূর্ব্ববংশীয় আর্য্য মহাত্মাগণের আচরিত ধর্ম্ম পথে অগ্রসর হইতে পারেন, তাহাই বক্তার প্রধান উদ্দেশ্য। এই জন্য তিনি "ধর্ম্ম সাধনের" মানবপ্রকৃতিগত আবশ্যকতা, তাহার ভিন্ন ভিন্ন পন্থা, তত্তাবতের গূঢ় অভিপ্রায়, ধর্ম্মই যে সূক্ষ্মবুদ্ধি মানবগণের বিশ্রাম স্থান, এতাবৎ বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিক্রমে উদার ও সরলভাবে ব্যাখ্যা করিলেন। প্রকৃতির অঙ্কশোভা ভারতভূমির প্রাচীন শূর বীর শান্ত সুধীর সন্তানগণের অনুষ্ঠিত সনাতন ধর্ম্ম যে আবার নবীন উৎসাহে, বীর বিক্রমে ও বৈজ্ঞানিক বেশে বিচিত্র মূর্ত্তিতে প্রচারিত হইবে, ইহা আমাদের আদৌ আশা ছিল না, যাহাহউক বক্তার যেরূপ উদ্যম, উৎসাহ ও ধর্ম্মোত্তেজনা দৃষ্ট হইতেছে তাহাতে ভারতীয় প্রাচীন ধর্ম্মের পুনর্নবোজ্বল মূর্ত্তি দর্শনে বোধ করি আমাদের আশা সফল হইবে। ভগবান এই কৌমারব্রতী বক্তার হৃদয়ে ঐশী শক্তির সঞ্চার করুন এবং তাঁহাকে দীর্ঘজীবী করিয়া ভারতের গুরুতর কার্য্যে নিরন্তর নিযুক্ত রাখুন। বক্তৃতার সারাংশ এই স্থানে প্রকাশ করিলাম।

মনুষ্যের চক্ষুরাদি ইন্দ্রিয়ের প্রকৃতির (চঞ্চলতাদি) দিকে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলে এইরূপ প্রতীতি হয়, যে তাহারা যেন কোন বিশেষ লক্ষ্য পদার্থের অনুসরণ করিতেছে, কিন্তু কি উপায়ে ও কোথায় যে তাহা প্রাপ্ত হইবে তাহার কিছুই জানে না। কেবল অনুসন্ধানেই ব্যস্ত; একবার একটী বস্তুকে অবলম্বন করিয়া মনে করিল, ইহাই বুঝি আমার অভিলষিত দ্রব্য, কিন্তু পরক্ষণেই আবার তাহাতে বীতরাগ হইয়া পরিত্যাগপূর্ব্বক ব্যাকুলভাবে

নহেন; এই বিবেচনায় তাঁহার মিত্রগণ তাঁহার স্বভাবগত "কুমার" এই শাস্ত্রোক্ত উপাধি দান করিয়াছেন। তাঁহাকে কেহ "বাবু" বলেন ইহা তাঁহার নিতান্ত অভিপ্রায়-বিরুদ্ধ।

जामालपुर हरिसभा में धर्म्मसाधन" इस आशयपर एक सुदीर्घ वाचनिक वक्तृता करी। प्राय दो घण्टे को अविश्रान्त वक्तृतासे वक्ता महात्माने भगवद्भक्त मातहोके मन में विशेषरूप सुख औ उत्साहको बढ़ायें। वक्ताका प्रधान अभिप्राय यहीथा कि अंरेजी में नवीन रीतिसे सुशिक्षित भरतखण्ड-निवासियों आर्य्यधर्म्मके प्रकृततत्व जानकर उसपर आस्था देखावें और उनके पूर्व्ववंशी आर्य्य महात्माओंके आचरित धर्म्ममार्ग में आगुआ हो सकें। इसलिये वे इन आशयोंपर वैज्ञानिक रीतिसे उदार औ सरल भाव करके व्याख्या किये कि धर्म्मसाधनके मानव-प्रकृतिगत क्या आवश्यकता है, उसकी भिन्न भिन्न राह क्यों औ कैसे बनी, उन सबका गूढ़ अभिप्राय क्या है, और सूक्ष्मबुद्धि मानवोंके लिये धर्म्म ही एकमात्र विश्रामस्थल है। यह हमलोगों को कभी आशा न थी जो सनातन धर्म्म, जिसको प्रकृति की क्रोड़-शोभा भारतभूमिके प्राचीन शूरवीर, शान्त, सुधीर सन्तानमण्डली अनुष्ठान करते गये, फिर नवीन उत्साह, वीरविक्रम औ वैज्ञानिक वेश करके विचित्र मूर्त्ति लियेहुए प्रचारित होगा, जो हो, वक्ताके जिस भान्ति, उद्यम, उत्साह औ धर्म्मोत्तेजना देख पड़ती है, उससे जोध होता है कि भारतीय प्राचीन धर्म्म की पुनर्णवीन औ उज्ज्वल मूर्त्ति देखकर हम सब की आशा सफल होगी। अब यही प्रार्थना है कि भगवान इस कौमारव्रती वक्ताके हृदय में ऐसी शक्तिको फैलावें औ उनको दीर्घमायु कर भारतके गुरुतर कार्य्य में निरन्तर नियत रखें। वक्तृताका सारांश मैं यहां प्रगट करता हूं।

मनुष्योंके चक्षुरादि इन्द्रियोंको प्रकृति (चञ्चलतादि) के ओर दृष्टिक्षेप करनेसे ऐसी प्रतीति होती है, जो वे जैसे कोइ विशेष लक्ष्य पदार्थका अनुसरण कर रहे हैं, किन्तु किस उपायसे औ कहां जो उस द्रव्यको प्राप्त होङ्ग सो उनको मालुम नहीं। केवल अनुसन्धान ही में व्यस्त हैं; एकबार किसी वस्तुको अवलम्बन करके समझे कि यही मेरा अभिलषित द्रव्य है, किन्तु झट फिर उसपर विराग पूर्व्वक परित्याग करके व्याकुल हुए इधर

कोइ उपाधिके प्यारे नहीं हैं, इतनी विवेचनासे मित्रगण उनके स्वभावानुगत "कुमार" इस शास्त्रोक्त उपाधि दिये हैं। उनको कोइ "बाबू" करके पुकारे, यह उनका नितान्त अभिप्राय विरुद्ध है।

ইতস্ততঃ অন্বেষণ করিতে থাকে। সম্মুখে যাহাকে দেখে তাহাকেই ব্যগ্রতার সহিত তাহার লক্ষ্য সামগ্রীর সমাচার জিজ্ঞাসা করে, কিন্তু কে বলিয়া দিবে! সকলেই সেই দ্রব্যের অন্বেষণ করিতেছে, কেহ বা কিঞ্চিন্মাত্র সন্ধান পাইয়াছে, কেহ বা কিছুই পায় নাই। ঘোর সংসার মায়ায় মুগ্ধ জীব কিছুতেই লক্ষ্য লাভে সমর্থ নহে—তাহাকে জিজ্ঞাসা করিয়াই বা কি হইবে; যৎসামান্য বলিতে পারিলেও তাহার কথায় বিশ্বাস হয় না, কারণ তাহাদের বুদ্ধিও কলুষিত। এইরূপে জীব স্বলক্ষ্য সন্ধানে ইতস্ততঃ ভ্রমণ করিয়া শেষে নিভৃত গুহাবাসী ধ্যানস্তিমিতনেত্র ঋষিদিগের নিকটে উপস্থিত হইয়া দেখিল তাঁহারা বাহ্যেন্দ্রিয়ের কার্য্যরোধ করিয়া নিশ্চল ভাবে বসিয়া আছেন। তথায় যাইবামাত্র তাঁহাদের সেই অলৌকিক মৌনভাবেই তাহাকে বলিয়া দিল যে ইঁহারাই যথার্থ অভীষ্ট বস্তু লাভ করিয়াছেন। তাঁহাদের ইন্দ্রিয়-চেষ্টা-চাপল্য বিদূরিত হইয়া গিয়াছে। তাঁহাদের নিশ্চল ভাব নীরব স্বরে এই কথা বলিয়া দেয় যে ধীবর যেমন নিজ শক্তি দ্বারা জাল নিক্ষেপ ও সংহরণ করিয়া থাকে তদ্রূপ জগৎস্রষ্টা কেন্দ্রাতিগ ও কেন্দ্রানুগ শক্তি (Centrifugal এবং Centripetal forces) দ্বারা সৃষ্টি ও সংহার করিতেছেন। উক্ত শক্তিদ্বয়ের মধ্যে প্রথমটী সৃষ্টি ও দ্বিতীয়টী সংহারের কারণ। অনেকে মনে করিতে পারেন যিনি মঙ্গলময় ও যাঁহার পালনীশক্তি নিত্য, তিনি কি কখন অনিষ্ট বা নাশ করিতে পারেন, তাহা হইলে তাঁহার মঙ্গলময় ও পালনকর্ত্তা নামে অনপনেয় কলঙ্কের সঞ্চার হইবে। কিন্তু সংহরণ শব্দের অর্থ (বিনাশ) সাধারণতঃ যাহা প্রতীত হয় তাহা নহে। সম্যক্ প্রকারে আহরণ অর্থাৎ দূর নিক্ষিপ্ত জগজ্জালকে আবার প্রেমাকর্ষণ পূর্ব্বক ঈশ্বরের নিজ বিশুদ্ধ সত্তায় আনয়ন করার নাম সংহার। ইহা কি প্রেমময়-মঙ্গলময়ের অমাঙ্গলিক অনুষ্ঠান! এই কেন্দ্রানুগ শক্তির প্রবলতা জন্য জীব যে কার্য্যানুষ্ঠানে প্রবৃত্ত বা উত্তেজিত হইয়া থাকে, তাহারই নাম "ধর্ম্ম-সাধন"। সমস্ত পরমাণু ও পারমাণবিক শক্তিই এই দুই মহতীশক্তি দ্বারা পরিচালিত হইতেছে, অতএব কোন জীবকে যথেচ্ছা পথে বিচরণ করিতে দেখিলে তাহাকে নিন্দা বা ঘৃণা করিতে

उधर ढुंढ़ते रहते हैं। सम्मुख में जिसको देख पड़ता है उसीको व्यग्रतासे पुछते रहते हैं कि लक्ष्य द्रव्यका पता बताओ, किन्तु हा! को बतावे, सबकोई उसी द्रव्यको ढुंढ़ रहे हैं, कोई किञ्चिन्मात्र सन्धान पाया, कोई फिर कुछ भी नहीं पाया है। घोर संसारमाया में मोहित हुए जीव किस ही प्रकारसे लक्ष्य द्रव्यको नहीं पा सक्ता है। उसको पुछने हीसे फिर क्या होगा! यदि थोड़ा बहुत भी कह सके तो उसकी बातपर विश्वास नहीं ठहरता है। क्योंकि उन सबकी बुद्धि भी मलिन है। इस रीतिसे जीव निज लक्ष्यका सन्धान करके इतस्तत: भ्रमण कर अनन्तर निभृत गुहानिवासी ध्यानस्तिमितनेत्र ऋषियोंको निकट जा पहुंचा औ देखा कि वे बाह्य इन्द्रियोंके कार्य्य रोक कर निश्चल भाव में विराज कर रहे हैं, वहां पहुंचने ही उन्होंका अलौकिक मौनभाव यह कह दिया जो ऐही यथार्थ अभीष्ट वस्तुको लाभ किये है। उन्होंकी इन्द्रिय-चेष्टा चपलता सब दूर होगयी है। उन्होंके निश्चल भाव नीरव स्वरसे इतने हो कह देता है जो धीवर (मल्लाह) जैसा निज शक्तिसे जाल पसारता औ समेट लेता है उस भान्ति जगतके रचनेहारे केन्द्रातिग औ केन्द्रानुग शक्ति (Centrifugal औ Centrepetal forces) करके सृजन औ संहार कर रहे है। उक्त शक्तियोंके मध्य में प्रथम सृष्टि औ दूसरी संहारका कारण है। बहुतेरे लोग यह कह सक्ते है कि जो मङ्गलमय हैं औ जिनकी पालनी शक्ति नित्य है, वे क्या कभी किसीका अनिष्ट वा नाश कर सक्ते हैं, इससे उनका "मङ्गलमय" औ "पालनकर्त्ता" इस नामपर ऐसा कलङ्क गीरेगा जो कभी मिटनेवाला नहीं है, किन्तु "संहरण" शब्दका अर्थ "विनाश" यह जो साधारण लोग मानते हैं सो नहीं है। सम्पूर्ण रीतिसे आहरण अर्थात् दूर तक पसारा हुआ जगज्जालको फिर प्रेमाकर्षण पूर्ब्बक ईश्वर की निज विशुद्धसत्ता में लानेका नाम "संहार"। यह क्या प्रेममय, मङ्गलमयका अमाङ्गलिक अनुष्ठान है!! इस केन्द्रानुग शक्ति की प्रबलता करके जीव जिस कार्य्यके अनुष्ठान में प्रवृत्त वा उत्तेजित हुआ करता है उसीका नाम "धर्म्म-साधन"। समस्त परमाणु औ पारमाणविक शक्ति ही इन दो महती शक्तियें करके चालायी जाती है, अतएव यदि कोई जीवको यथेच्छा पथ पर विचरता हुआ देखा जाय तो उसको निन्दा वा

পারা যায় না। সকলেই লক্ষ্যানুসন্ধানে প্রবৃত্ত। বানরগণ সকলেই রামবনিতা সীতার অন্বেষণে ব্যস্ত, সকলেই সমান যত্ন ও আগ্রহের সহিত জনকনন্দিনীর উদ্দেশে দিগ্দিগন্তে ধাবিত হইল, কিন্তু তন্মধ্যে কেবল পবনকুমারের শ্রমই সিদ্ধ ও সার্থক হইল, অপর বানরবৃন্দ বিফলমনোরথ হইয়া প্রত্যাবৃত্ত হইল বলিয়া কি তাহারা নিন্দাভাজন হইবে! কখনই নহে। তদ্রূপ যাহার যেরূপ প্রকৃতি সে সেই পথে যাইবে, তজ্জন্য তাহাকে নিন্দা করিবার কোন কারণ দৃষ্ট হয় না। এক্ষণে প্রকৃতি ভিন্ন ভিন্ন হয় কেন ইহাই বিচার্য্য। নিম্নলিখিত কয়েকটী কারণই প্রধান বলিয়া বোধ হয়। বিশেষ বিশেষ বাসস্থান হইতে সোম,সূর্য্য তারাদির দূরত্ব, স্থানীয় জল বায়ু, প্রাকৃতিক দৃশ্যমালা আদি দ্বারা জাতীয় প্রকৃতি সংগঠিত হয়; এই জাতীয় প্রকৃতি, পিতা মাতাদির ধাতুগত প্রকৃতি এবং পূর্ব্ব জন্মকৃত কর্ম্ম ফলাদির প্রকৃতি জীবের বিশেষ বিশেষ প্রকৃতি বা ভাব রচনা করিয়া থাকে। কেন্দ্রানুগ শক্তি দ্বারা সমস্ত জীব সর্ব্বদাই পরিচালিত হইয়া, পরমাত্মার অভিমুখে আকৃষ্ট হইতেছে এবং তদনুসারী কার্য্যকেই আমরা সংক্ষেপে "ধর্ম্মসাধন" পদে বরণ করিলাম। স্ব স্ব প্রকৃতি অনুসারে মনুষ্য ধর্ম্ম সাধন করিয়া থাকে, এই জন্যই মানব ধর্ম্ম, দানব ধর্ম্ম,দেব ধর্ম্মাদির প্রবর্ত্তনা, এই জন্যই মতবৈষম্য, সাম্প্রদায়িকতা ও বিবিধ ধর্ম্মশাস্ত্রের অভ্যুদয় হইয়াছে।

ধর্ম্মসাধন করিতে হইলে, কেন্দ্রাতিগ শক্তির* বিরুদ্ধে দণ্ডায়মান হইয়া, কেন্দ্রানুগ শক্তির আশ্রয় গ্রহণ করিতে অর্থাৎ অনাসক্ত, জিতেন্দ্রিয়, বিষয়-বিরাগী, নিষ্কাম ও ভগবৎপ্রেমী হইতে হইবে। ধর্ম্মাভিমান, সাম্প্রদায়িকতা আদি ধর্ম্ম সাধনের বিরোধী ভাব ত্যাগ করিয়া, ধর্ম্মানুকুল ভাব সমূহকে আগ্রহ পূর্ব্বক গ্রহণ করিয়া স্থিরচিত্তে মহাজনগণের পথ অনুসরণ করিবে। বাহ্য পদার্থের সহিত মনোপ্রকৃতির বিশেষ সম্বন্ধ আছে, তজ্জন্য আমাদের ধর্ম্ম সাধনের ভাষা, উপকরণ, পরিচ্ছদ, আরাধনার কাল, ও স্থানাদি বিশেষ অনুকুল হওয়া আবশ্যক। সংস্কৃত ভাষা; আসন, ধূপ, চন্দন, পুষ্প, কোশা-

* যদ্দ্বারা সংসারাশক্তি বা সংসার বিস্তার বাসনা উত্তেজিত হয়।

वृथा नहीं कीआ जा सक्ता है। सबकोइ लक्ष्यानुसन्धान में प्रवृत्त हैं। वानरमण्डलीके सबकोइ श्रीरामवनिता सीताके अन्वेषण में व्यस्त हैं, सबकोइ समान रीति यत्न औ आग्रहके सहित जनकनन्दिनीका पत्ता लगानेके लिये दिग्दिगन्त में धावमान हुए, किन्तु उन् में केवल पवनकुमारका श्रम ही सिद्ध औ सार्थक हुआ, अन्यान्य वानरवृन्द विफल मनोरथ हुए लौट आये, एतदर्थ क्या वे सब निन्दाके भाजन होङ्गे? कभी नहीं। उस भान्ति जिसकी जैसी प्रकृति है वह उसी राह पर जाङ्गे, तदर्थ उसको निन्दा करनेका कोइ कारण नहीं देख पड़ता है। प्रकृति भिन्न भिन्न मनुष्यकी भिन्न भिन्न क्यों होती है, सोइ अब विचारना चाहिये। नीचे लिखे हुए कारणों हीको प्रधान बोध होता है। विशेष विशेष वासस्थानसे सोम, सूर्य्य, तारकादिका दूरत्व, स्थानीय जल, वायु, प्राकृतिक दृश्यमाला आदि करके जातीय प्रकृति बनती है: फिर यह जातीय प्रकृति, पिता, माता की धातुगत प्रकृति औ पूर्व्व जन्मार्ज्जित कर्म्मफलादि की प्रकृतिने जीवकी प्रकृति वा भावरचना करती है। केन्द्रानुग शक्ति करके समस्त जीव सदा ही परिचालित होकर परमात्माके ओर आकृष्ट होते हैं औ तदनुसारी कार्य्य हीको हम संक्षेप में "धर्म्मसाधन" इस पद में वरण करते हैं। मनुष्य निज निज प्रकृतिके अनुसार धर्म्मसाधन किया करता है, इसलिये मानवधर्म्म, दानव धर्म्म, देवधर्म्मादि की प्रवर्त्तना हुए, इसीलिये मत-वैषम्य, साम्प्रदायिकता औ नाना भान्ति शास्त्रका अभ्युदय हुआ है।

यदि धर्म्मका साधन करना हो तो केन्द्रातिग* शक्तिके विरुद्ध में दण्डायमान होकर केन्द्रानुग शक्तिके आश्रय ग्रहण करना अर्थात् अनाशक्त, जितेन्द्रिय, विषय-विरागी, निष्काम औ भगवत्प्रेमी होना पड़ता है। धर्म्माभिमान, साम्प्रदायिकता आदिको, जो सब धर्म्मसाधनका विरोधी है, त्याग करके धर्म्मानुकुल भाव समूहको आग्रह पूर्व्वक ग्रहण कर स्थिर चित्तासे महाजनों की राहपर चलना होगा। बाह्य पदार्थोंसे मनोप्रकृतिका विशेषरूप सम्बन्ध है, तदर्थ हम सबके धर्म्मसाधन की भाषा, उपकरण, परिच्छद, आराधनाका काल औ स्थान आदि विशेषरूप अनुकुल होना चाहिये। संस्कृत भाषा, आसन, धूप, चन्दन,

* जिससे संसाराशक्ति या संसार विस्तार की वासना उत्तेजित होती है।

কুশী, জলাদি উপকরণ; পট্ট বস্ত্র, নামাবলি, মালা, তিলকাদি, পরিচ্ছদ ও চিহ্ন; ঊষা, মধ্যাহ্ন ও সায়হ্নাদি কাল; গঙ্গাতীর, দেবগৃহাদি স্থান সন্ধ্যাবন্দনাদির নিতান্ত বৈজ্ঞানিক রীতিক্রমে অনুকূল বলিয়া, আর্য্যগণ এতাবতের ব্যবস্থা করিয়া গিয়াছেন। যাঁহারা এতদনুসারে সাধনা করিয়া থাকেন, তাঁহারা অবশ্যই স্বীকার করিবেন যে উক্ত পদ্ধতি অবলম্বন কালে, সাংসারিক ব্যক্তির সংসার ভাব তিরোহিত হইয়া, আধ্যাত্মিক ভাবের উদয় হইয়া থাকে। কেন্দ্রানুগ শক্তির বিধি পূর্ব্বক সেবা অর্থাৎ ধর্ম্মসাধনে জীবনোৎসর্গ করিলে, আমাদিগের আশা পূর্ণ হইবে; আমরা দেবদুর্ল্লভ পরম ধাম প্রাপ্ত হইব।

যে স্থানে অবস্থান করিলে, মনুষ্যকে স্থূল দৃষ্টি বিমোহিত করিতে পারে না, যে স্থানে আরূঢ় হইলে, কাল জীবকে স্পর্শ করিতে পারে না, যে পদ প্রাপ্ত হইলে, জীব সংসারের সম্পদ, বিপদ অতিক্রম পূর্ব্বক চিরকাল অবিচলিত থাকে, কেন্দ্রানুগ শক্তি ধর্ম্মসাধন বলে জীবকে সেই পরম ধামে লইয়া যায়। যে স্থানে গমন করিলে, সোম সূর্য্যাদি গ্রহগণ জীবকে পীড়া দিতে সমর্থ হয় না, যেখানে দিবা, রাত্রি, শীত, বর্ষাদি কাল ভেদ নাই, যেখানে বাল্য, যৌবন, মূর্খ, জ্ঞানী, দুঃখী, ধনী আদি অবস্থা ভেদ ও সাম্প্রদায়িক বিরোধ, বিদ্বেষ নাই, যেখানে আমি তুমি, আলোক, অন্ধকার, অস্তি, নাস্তি নাই, কেন্দ্রানুগ শক্তি ধর্ম্ম সাধন বলে জীবকে অবিকার স্পৃষ্ট সেই পরম ধামে লইয়া যায়। যে স্থানে উপস্থিত হইলে বাক্মনোবুদ্ধির বিকার বিনষ্ট হইয়া যায়, যে স্থান লাভ করিবার জন্য ত্রিজগৎ ঊর্দ্ধ মুখে ধাবিত হইতেছে, যে স্থানে নিত্য অধিষ্ঠান করা বিরিঞ্চি, বিষ্ণু আদিরও বাঞ্ছনীয়, কেন্দ্রানুগ শক্তি ধর্ম্ম সাধন বলে সেই দেবদুর্ল্লভ পরম ধামে লইয়া যায়। জীব বারিধির বুদ্বুদবৎ মহান্ সত্তার্ণবের কোন্ নিভৃত স্থলে বিলীন হইয়া থাকে, তাহা ব্রহ্মেন্দ্র মরুদ্গণাদিরও অগোচর।

হে ধর্ম্ম! আমাদিগকে সেই অগাধ গম্ভীর ভাবময় পরম ধামে লইয়া যাও।

ওঁ শান্তিঃ, শান্তিঃ, শান্তিঃ; হরিঃ ওঁ।

पुष्प, ताम्रपात्र, जल आदि उपकरण, पट्टवस्त्र, नामावली, करांटी, तीलक आदि परिच्छद औ चिह्न; उषा, मध्याह्न औ सायाह्न आदि काल; गङ्गातीर, देवगृहादि स्थानको सन्ध्या वन्दनादिके लिये वैज्ञानिक रीतिसे विशेष अनुकूल जानकर आर्य्यमहात्मागण इन सब की व्यवस्था कर गये हैं। जो लोग एतदनुसार साधनाकिये करते हैं वे लोग अवश्य ही मानेंगे कि उक्त रीतिसे काम करनेपर सांसारिक पुरुषका संसारभाव अन्तर्ध्यान होकर आध्यात्मिक भावका उदय हुआ करता है। केन्द्रानुग शक्ति की विधिपूर्ब्बक सेवा अर्थात् धर्म्मसाधनार्थ जीवनको उत्सर्ग कर देनेपर हम सब की आशा पूर्ण होगी—हम सब देवदुर्ल्लभ परम धामको प्राप्त होंगे।

जहां स्थित होनेपर स्थूलदृष्टि मनुष्यको विमोहित नहीं कर सक्ति है, जहां आरूढ़ होनेपर काल जीवको स्पर्श नहीं कर सक्ता है, जिस पद मिलनेसे जीव संसारके सम्पद विपदको टपकर चिरदिन अविचलित रहता है। केन्द्रानुग शक्ति धर्म्मसाधन केवलसे जीवको परम धाम में ले जाती है। जहां जानेपर सोम सूर्य्यादि ग्रहमण्डली जीवको पीड़ा देने में समर्थ नहीं होते हैं, जहां दिवा, रात्रि, शीत वर्षादि कालभेद नही है, जहां बाल्य, यौवन, मूर्ख, ज्ञानी, दुःखी, धनी, आदि अवस्थाभेद औ साम्प्रदायिक विरोध, विद्वेष नहीं हैं, जहां मैं, तुम, प्रकाश, अन्धकार, अस्ति, नास्ति नहीं है, केन्द्रानुग शक्ति धर्म्मसाधन केवलसे जीवको विकारसे रहित परम धाम में लेजाती है। जहां पहुंचने पर वचन, मन, बुद्धिका विकार विनष्ट हो जाता है, जिस धामको लाभार्थ त्रिजगत ऊर्द्ध्वमुख होकर दौड़ रहे हैं, जहां नित्य अधिष्ठान करना विरिञ्चि विष्णु आदिका भी वाञ्छनीय है, केन्द्रानुग शक्ति धर्म्म साधनके बलसे उस देवदुर्ल्लभ धाम में लेजाती है। जीव वारिधिके बुद्बुदके समान महान सत्ता सागरके कौन निभृत स्थान में विलीन हो जाता है, सो ब्रह्मेन्द्र मरुद्गणादिका भी अगोचर है।

हे धर्म्म! हम सबको उस अगाध गम्भीर भावमय परम धाम में ले चलिये।

ओं शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरिः ओं।

প্রাপ্ত পুস্তক সমালোচনা।

১। **রামায়ণ।** শ্রীযুক্ত বাবু প্রতাপচন্দ্র রায় মহাশয় কর্ত্তৃক কলিকাতা, যোড়াসাঁকো, দাতব্য ভারত কার্য্যালয় হইতে প্রকাশিত ও বিনা মূল্যে বিতরিত। ইহার মূল দেবনাগরী অক্ষরে ও অনুবাদ বঙ্গাক্ষরে ও বঙ্গভাষায় প্রকাশিত হইতেছে। মূল অনুবাদের মাশুলাদি ব্যয় ৪৲ টাকা করিয়া ৮৲ টাকা ও কেবল অনুবাদের মাশুল ৪৲ টাকা মাত্র। মাশুল এককালীন দেয়। আমরা এতদ্রামায়ণের ১ম, ২য় ও ৩য় খণ্ড প্রাপ্ত হইয়াছি। পুস্তকত্রয়ের আকৃতি প্রকৃতি দেখিয়া মনে মনে প্রতাপ বাবুর অধ্যবসায় ও যথোচিত যত্নের বহুল প্রশংসা করিলাম। ভগবান তাঁহার অবতরণিকানুযায়ী অভীষ্ট সুসিদ্ধ করুন। যে আর্য্যসন্তানগণ সুলভ মূল্যে আর্য্যকুলতিলক নিষ্কলঙ্ক শ্রীরামচন্দ্রের সুচারু-চরিতামৃত পান পিপাসু, আশা করি তাঁহারা অবশ্যই এতদ্রামায়ণের গ্রাহক শ্রেণীভুক্ত হইয়া, প্রকাশকের অভীষ্ট সাধনের সাহায্য করিবেন। অনুবাদের ভাষা অপেক্ষাকৃত সময়োচিত সৌষ্ঠব সম্পন্ন করিলে, প্রকাশক বর্ত্তমান ভারতের সম্পূর্ণ অনুরাগাকর্ষণ করিতে পারিবেন।

২। **সামবেদ। ২য় খণ্ড।** শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত পণ্ডিত সত্যব্রত সামশ্রমী কর্ত্তৃক প্রকাশিত। ১ম খণ্ডের ন্যায় এখানিও প্রশংসনীয় হইয়াছে।

৩। **সঙ্গীত-মঞ্জরী।** শ্রীযুক্ত বাবু লালবিহারী বড়াল মহাশয় কর্ত্তৃক প্রকাশিত। সঙ্গীত গুলি ধর্ম্ম ভাব পূর্ণ ও সাধকমণ্ডলীর হৃদয়গ্রাহী হইয়াছে।

৪। **প্রেমগঙ্গ তরঙ্গ।** মুন্সী শ্রীতপস্বীরাম সীতারাম কর্ত্তৃক রচিত ও প্রকাশিত। মূল্য ডাক কর সহিত ২।।০ মাত্র। ইহাতে আর্য্য সাধারণ (হিন্দী) ভাষায় কবিতাকুসুম হারে শ্রীরামচন্দ্রের চারু চরিত্র সজ্জিত হইয়াছে। রচয়িতার কবিত্ব শক্তি ও প্রেমভাব অতীব প্রশংসনীয়। কবিতানুরাগী প্রেমিকগণ এতৎ গ্রন্থ পাঠে আনন্দিত হইতে পারিবেন।

৫। **শান্তিরসোদয় কাব্যং।** দিনাজপুরান্তর্গত আইহাই নিবাসি শ্রীযুক্ত পণ্ডিত কৃষ্ণচন্দ্র

प्राप्तपुस्तकोंकी समालोचना।

१। **रामायण।** कलकत्ता, जोड़ासांको, दातव्य भारतकार्य्यालयसे श्री बाबु प्रतापचन्द्र राय जीने छपवा कर बिन मोल लिये बट रहा है। मूल देवाक्षर औ तथा बङ्गाक्षर औ बङ्गभाषा में प्रकाश हुआ करता है। मूल औ अनुवादको इकट्ठे लेने में डाक करादिका व्यय ८ रुपये औ केवल अनुवाद में ४, रुपये लगेगा। महसूल एकवारगी देना चाहिये। इस रामायण १म, २य औ ३य खण्ड मुझे प्राप्त हुआ। इन दो पुस्तकों की आकृति प्रकृति देखकर हमने प्रताप बाबुको अध्यवसाय औ यथोचित यत्नकी बहुतही प्रशंसा की। भगवतसे यह प्रार्थना है कि वे अवतरणिके का लेख अनुसार अभीष्ट सुसिद्ध करें। जितने आर्य्यवंशी सुलभ मोल में आर्य्यकुलतिलक निष्कलङ्क श्रीरामचन्द्रके सुचारु चरितामृत पानके प्यासु हैं, हम आशा रखते हैं कि वे अवश्य ही एतद्रामायणके ग्राहक श्रेणी में प्रविष्ट होकर प्रकाशक के अभीष्ट साधन करने की सहायता करेंगे। पुस्तककी भाषा यदि और भी कुछ वर्त्तमान समय योग्य सुन्दर हों तो सर्व्वसाधारणके पूर्णरीति अनुराग बढ़ सक्ता है।

२। **सामवेद। २य खण्ड।** श्रद्धास्पद श्रीमान पण्डित सत्यव्रत सामश्रमी जी ने प्रकाश किया। १म खण्डके समान यह भी प्रशंसा योग्य हुआ।

३। **सङ्गीत मञ्जरी।** श्री बाबु लाल विहारि बड़ाल जीने छपावा कर प्रकाश किया है। समस्त भजन ही धर्म्म भावसे पूर्ण औ साधकोंके लिये परम मनोहर हुए।

४। **प्रेम--गङ्ग--तरङ्ग।** मुन्शी श्री तपस्वीराम सीतारामने छपावया। इसका मोल डाककर सहित २॥० मात्र है। आर्य्य-साधारण (हिन्दी) भाषा की कविता-कुसुम-हारसे इस ग्रन्थ मे श्रीरामचन्द्रजीका चारु चरित्र रचा गया है। रचने हारे की कवित्व शक्ति औ प्रेम भाव अतीव प्रशंसा योग्य है। कवितानुरागी प्रेमियोंने इस ग्रन्थ को पढ़कर परमानन्द प्राप्त हो सक्ता है।

५। **शान्तिरसोदय-काव्यम्।** जिले दिनाजपुरके आई हाईनिवासी श्रीयुक्त पण्डित-

রায় প্রণীত। ইহাতে জ্ঞান, ভক্তি, বৈরাগ্যাদি ভাবপূর্ণ ৩৮ টী নবরচিত সংস্কৃত শ্লোক ও তাহার অনুবাদ প্রকাশিত হইয়াছে। কবিতা গুলি সরল, সরস ও সাধুভাবপূর্ণ হইয়াছে। ধর্ম্মাত্মা পাঠক পুঞ্জের চিত্ত-বিনোদনার্থ ভাষানুবাদসহ দুইটী কবিতা নিম্নে উদ্ধার করিয়া দিলাম।

"সর্ব্বং দিনং গতমহো ধনচিন্তয়া তে,
রাত্রির্গতা প্রণয়িনী পরিচিন্তয়া চ।
হে চিত্ত! রাঘবপদং সুরচিন্তনীয়ং
যত্নৈস্ত্বয়া কিল কদা সুবিচিন্তনীয়ম্॥

হে চিত্ত! তোমার সকল দিন ধনচিন্তাতে ও রাত্রি রমণীচিন্তাতে গত হইল; কোন্ কালে তোমা কর্তৃক দেবচিন্তনীয় রাম-পদের চিন্তা হইবে!

ক্রোশত্রয়ং ক্রোশচতুষ্টয়ং বা
গচ্ছন্তি লোকা যদি সম্বলং হি।
চিণ্বন্তি, কিং ভো তব মূর্খ চিত্ত
পাথেয়মাগারগতো যমস্য॥

লোক সকল ক্রোশত্রয় কিংবা ক্রোশ চতুষ্টয় গমন করিলে, সম্বল সংগ্রহ করে, হে মূর্খ চিত্ত! যমগৃহ গমনে তোমার পথের সম্বল কি?

কৃতজ্ঞতাসহকারে ৪র্থ বর্ষের মূল্যপ্রাপ্তি স্বীকার

শ্রীমদ্রাজা নরেন্দ্র নারায়ণ রায় বাহাদুর,		কাঁদী	৫৲
শ্রীমদ্বাবু বিপিন মোহন সেন,		কলিকাতা	৬৷৹
,,	তারক চন্দ্র প্রামাণিক,	ঐ	৩।৵৹
,,	গোবিন্দ কুমার চৌধুরী,	ঐ	৩।৵৹
,,	কালী কৃষ্ণ প্রামাণিক,	ঐ	৩।৵৹
,,	দীন নাথ গঙ্গোপাধ্যায়,	সৈয়দপুর	৩।৵৹
,,	শ্যামাচরণ ঘোষ,	ভুরকুলিয়া	৬৷৹
,,	রঘু নন্দন লাল,	গয়া	২।৵৹
,,	রাজকৃষ্ণ প্রামাণিক,	ঐ	
,,	গণপতি প্রসাদ,	ভগলপুর	২।৵৹

মুঙ্গের, আর্য্যধর্ম্ম-প্রচারিণী সভা } শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন। সম্পাদক।

☞ এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

कृष्णचन्द्र राय जीने बनाया। इस में ज्ञान, भक्ति, वैराग्यादि भावपूर्ण ३८ नवीन संस्कृत श्लोक औ बङ्गभाषा में उसका उल्था प्रकाशित हुआ है। कविता सब सरल, सरस औ साधुभावसे पूर्ण हुए हैं। धर्म्मात्मा पाठकोंके चित्तविनोदनार्थ दो कवितायें औ उसकी भाषा नीचे प्रगट की गयी।

सर्व्वं धनं गतमहो धनचिन्तयाते.
रात्रिर्गता प्रणयिनी-परिचिन्तया च।
हे चित्त! राघव-पदं सुरचिन्तनीयं
यत्नैस्त्वया किल कदा सुविचिन्तनीयम्॥

दिनभर धन की चिन्ता में औ रात्रिभर रमणी की चिन्ता में तु वतीत किया, तो फिर हे चित्त! तुझसे कब वह श्रीराम पद की चिन्ता बनेगी, जो कि देवताओंको भी भजनीय हैं।

क्रोशत्रयं क्रोशचतुष्टयं वा,
गच्छन्ति लोका यदि सम्बलं ही।
चिन्वन्ति, किं भो तव मूर्खचित्त
पाथेयमागारगतो यमस्य॥

लोगोंने यदि तीन अथवा चार क्रोश दूर कोसी स्थान में जाय तो पथव्यय साथ ले लेता है, किन्तु हे मूढ़ चित्त! तु जो यमालयको जानेवाला है, तदर्थ क्या संग्रह कर रखा।

कृतज्ञतापूर्व्वक ४र्थ वर्षकी मूल्यप्राप्ति स्वीकार

श्रीमद्राजा नरेन्द्रनारायण रायबाहादूर,		कान्दी	५)
श्रीमद्बाबू बिपिनमोहन सेन,		कलकत्ता	६।।।
,,	तारकचन्द्र प्रामाणिक,	,,	३।=
,,	गोबिन्दकुमार चौधुरी,	,,	३।=
,,	कालीकृष्ण प्रामाणिक,	,,	३।=
,,	दीननाथ गङ्गोपाध्याय,	सैदपुर	३।=
,,	श्यामाचरण घोष,	तुरकुलिया	३।=
,,	रघुनन्दन लाल,	गया	२।=
,,	राजकृष्ण प्रामाणिक,	,,	२।=
,,	गणपति प्रसाद,	भागलपुर	२।=

मुङ्गेर, आर्य्यधर्म्म-प्रचारिणी सभा। } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन सम्पादक।

☞ यह पत्र हर पूर्णिमा में मुङ्गेर आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके उत्साहसे प्रकाशित होता है।

☞ *Printed by B. M. Chakravorti, At the B. P. M's Press, No. 22, Jhamapooker Lane, Calcutta*
Published by Srikrishna Prosanna Sen, at Monghyr Aryadharmaprocharinee Sabha.

"একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

৪র্থ ভাগ। শকাব্দাঃ ১৮০৩।
৪৭ সংখ্যা। ভাদ্র—পূর্ণিমা।

"एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समन्नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥"

४र्थ भाग। शकाब्दा १८०३।
४७ संख्या। भाद्र—पूर्णिमा।

পরমার্থ সার।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)।

লোকব্যবহারকৃতাং য ইহাবিদ্যামুপাসতে মূঢ়াঃ।
তে জননমরণধর্ম্মাণো হ্যন্ধতম এত্য খিদ্যন্তে ॥৫৬॥

যাহারা অজ্ঞানবশতঃ কেবল লোক ব্যবহারে নিরত থাকিয়া জীবনাতিপাত করে, তাহারা কখন জন্ম, মরণ হইতে মুক্তিলাভ করিতে পারে না, এবং ঘোরান্ধকারময় নরকে পতিত হইয়া অতীব খেদগ্রস্ত হইয়া থাকে।

গ্রাসাচ্ছাদনাদির আহরণ, পুত্র, দারা ও কুটুম্বাদির ভরণ পোষণ, সংসারে অভ্যুদয় কামনায় বিবিধ বিদ্যা ও কৌশলজাল শিক্ষাদিকেই জীবনের সার সর্ব্বস্ব বোধে যে ব্যক্তি দিনপাত করে, আত্মচৈতন্যদীপ্তি তাহার সম্মুখে প্রকাশিত হয় না। সে জন্ম, মৃত্যুর বশীভূত হইয়া ঈদৃশ নীচ যোনীতে প্রবেশ করে যে তাহা ঘোর অবিদ্যান্ধতমসাচ্ছন্ন, তথা হইতে জীব শীঘ্র উত্তীর্ণ হইবার পথ দেখিতে পায় না।

परमार्थ सार।

(पूर्व्व प्रकाशितके आगे)

लोकव्यवहारकृतां य इहाविद्यामुपासते मूढ़ाः।
ते जनन मरणधर्म्माणो ह्यन्धतम एत्य खिद्यन्ते ॥५६॥

जो मूढ़ लोग अज्ञान करके केवल लोक-व्यवहार में फंसे रहकर दिन बीताते हैं, उन सबका जनम, मरण कभी नहीं छुट सक्ता औ वे अत्यन्त अन्ध नरक में गिरकर अतीव खेदयुक्त हुआ करते हैं।

भोजन औ आच्छादनके संग्रह, पुत्र, स्त्री औ कुटुम्ब आदिके भरण, पोषण, संसार में अभ्युदय की कामना करके विविध विद्या औ छल बल शिखना हीको जो जीवनका सारकार्य्य समझ कर दिनातिपात करता है, आत्मचैतन्य-दीप्तिका प्रकाश उसके सामने नहीं होती है। वह जनम, मरणके वश होकर, इस भान्ति नीच योनी में प्रवेश करता है, जो अतीव अविद्यारूप अन्धकारसे परिपूर्ण है; वहांसे शीघ्र निकलने की सुराह जीवको नहीं सुझता है।

হিমফেণবুদ্‌বুদা ইব জলস্য ধূমোদগমো যথা বহ্নেঃ।
তদ্বৎস্বরূপভূতা মায়েয়া কীর্ত্তিতা বিষ্ণোঃ ॥ ৫৭ ॥

যেমন শীতলতা, ফেণা বা বুদ্‌বুদ জলকেই অবলম্বন করিয়া বিদ্যমান থাকে, এবং বিশেষ বিশেষ প্রক্রিয়া গুণে জলেই অন্য বস্তুর ন্যায় প্রতীতি হয়, ধূম্র যেমন বহ্নিতে অপ্রকাশিত হইয়া থাকে এবং ক্রিয়া কালে প্রকাশিত হয়, মায়াও বিষ্ণুতে তদ্রূপাবস্থাতে স্থিতি করিতেছে।

এবং দ্বৈতবিকল্পাং ভ্রমস্বরূপাং বিমোহিনীং মায়াং।
উৎসৃজ্য সকলনিস্কলমদ্বৈতং ভাবয়েদ্‌ব্রহ্ম ॥ ৫৮ ॥

ঈদৃশ দ্বৈতকল্পনা ভ্রমস্বরূপা বিশ্ব বিমোহিনী মায়াকে সম্পূর্ণ রূপে পরিহার পূর্ব্বক, বিকলতা বিহীন অদ্বৈতব্রহ্মকে ভাবনা করিবে।

মায়া দুই অংশে বিভক্ত; বিদ্যা ও অবিদ্যা। বিদ্যা প্রভাবে অবিদ্যাকে ক্ষীণ করিয়া, আত্ম যোগাভ্যাস পূর্ব্বক ক্রমশঃ বিদ্যাকেও পরিত্যাগ করিবে। যেমন অগ্নিকণা প্রথমতঃ তৃণ রাশিকে ভস্মাবশেষ করিয়া স্বয়ংও সর্ব্বশেষে ভস্ম হইয়া যায় তদ্রূপ বিদ্যা অবিদ্যাকে বিনষ্ট করিয়া অবশেষে স্বয়ং বিলুপ্ত হইয়া যাইবে, অতঃপর অদ্বৈতব্রহ্ম বুদ্ধির উদয় হইবে।

যদ্বৎসলিলে সলিলং ক্ষীরে ক্ষীরং সমীরণে বায়ুঃ।
তদ্বদ্বিমলে ব্রহ্মণি ভাবনয়া তন্ময়ত্বমুপয়াতি ॥৫৯॥

যেমন জলে জল, দুগ্ধে দুগ্ধ ও সমীরণে বায়ু মিশ্রিত হইয়া যায়, তদ্রূপ জীব প্রগাঢ় চিন্তা সমাধান দ্বারা নির্ম্মল ব্রহ্মে একীভূত হইয়া থাকে।

ইত্যং দ্বৈতসমূহে ভাবনয়া ব্রহ্মভাবমুপাসতে।
কো মোহঃ কঃ শোকঃ সর্ব্বং ব্রহ্মাবলোকয়তঃ ॥৬০॥

যিনি এইরূপে একাগ্রচিত্তে সমস্ত জগতে ব্রহ্ম-বুদ্ধির আরোপণ করিতে সমর্থ হয়েন, তাঁহার শোক মোহ বিদূরিত হইয়া যায় এবং সমস্তই ব্রহ্মময় প্রতীতি হইতে থাকে।

বিগতোপাধিঃ স্ফটিকঃ স্বপ্রভয়া ভাতি নির্ম্মলা যদ্বৎ।
চিদ্দীপঃ স্বপ্রভয়া তথা বিভাতীহ নিরুপাধিঃ ॥ ৬১ ॥

স্ফটিকমণির নিকট কোন রঙ্গিল বস্তু থাকিলে তাহার প্রতিবিম্ব স্ফটিকে পতিত হয় ও স্ফটিককে তদ্বর্ণানুরঞ্জিত বোধ হয়; তদ্বস্তুর অভাব হইলেই,

हिमफेणबुद्‌बुदा इव जलस्य धूमोद्गमो यथा वह्नेः।
तद्वत्स्वरूपभूता मायैषा कीर्त्तिता विष्णोः ॥ ५७॥

जैसी शीतलता, फेणा वा बुल्ला जल हीको अवलम्बन करके, विद्यमान रहता है, फिर कोइ विशेष प्रक्रिया गुणसे जल ही में दुसरा किसी वस्तुके समान भासित होता है, धुवां जैसा अग्नि में अप्रकाशित रहता औ क्रिया काल में प्रगट होता है, माया भी विष्णु में उस अवस्था करके रहती है।

एवं द्वैतविकल्पां भ्रमस्वरूपां विमोहिनीं मायां।
उत्सृज्य सकलनिष्कलमद्वैतं भावयेद्‌ब्रह्म ॥ ५८ ॥

इस भान्ति द्वैत की कल्पना भ्रमरूप विश्व-विमोहिनी मायाको सम्पूर्ण रूपसे छोड़ कर विकलतासे रहित अद्वैत ब्रह्मको भावना करें।

माया दो अंशमें विभक्त है; विद्या औ अविद्या। विद्याके प्रभावसे अविद्याको क्षीण करके आत्मयोगाभ्यास पूर्व्वक धीरे धीरे विद्याको भी परित्याग करना। जैसा अग्नि की कणा पहले तृण राशिको भस्म करके सर्व्वशेष में स्वयं भी भस्म हो जाती है, उस भान्ति विद्या अविद्याको विनष्ट कर अन्त में स्वयं विलुप्त हो जाती। अनन्तर अद्वैत ब्रह्म बुद्धिका उदय होता है।

यद्वत्सलिले सलिलं क्षीरे क्षीरं समीरणे वायुः।
तद्वद्विमले ब्रह्मणि भावनया तन्मयत्वमुपयाति ॥५९॥

जैसे जल में जल, दुध में दुध औ वायु में वायु मिल जाता है, तद्रुप जीव प्रगाढ़ चिन्तन समाधान करके निर्म्मल ब्रह्म में मिल जाता है।

इत्थं द्वैतसमूहे भावनया ब्रह्मभावमुपासते।
को मोहः कः शोकः सर्व्वं ब्रह्मावलोकयतः ॥ ६० ॥

जिनने इस रीति एकाग्रचित्ततासे सारे जगत् में ब्रह्मबुद्धिका आरोपण कर सका है, उनके शोक मोहादि सब छुट जाते हैं औ सब ही ब्रह्ममय प्रतीत हुआ करता है।

विगतोपाधिः स्फटिकः
स्वप्रभया भाति निर्म्मला यद्वत्।
चिद्दीपः स्वप्रभया
तथा विभातीह निरुपाधिः ॥६१॥

स्फटिकमणिके निकट कोइ रङ्गदार वस्तु रहनेसे उसका प्रतिबिम्ब स्फटिक पर गिरता है, इससे स्फटिकको उस रङ्गसे रङ्गा हुआ बोध होता है; उस वस्तुको हटाने हीसे स्फटिक निज निर्म्मल

স্ফটিক নিজ নির্ম্মল প্রভায় দীপ্তি পাইতে থাকে, তদ্রূপ চৈতন্যরূপ দীপ জগৎরূপ উপাধি বর্জ্জিত হইলেই স্বীয় তেজে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

ক্রমশঃ।

আর্য্যশাস্ত্র-বিজ্ঞান।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)।

ছন্দঃ শাস্ত্র। বাগ্বিজ্ঞানের অন্তর্গত প্রক্রিয়া বিজ্ঞান দুই ভাগে বিভক্ত। ১ম, অবিশিষ্ট ও ২য় বিশিষ্ট। বক্তার বাঙ্‌নিষ্পাদন প্রযত্নের তারতম্য থাকিলেও যে প্রক্রিয়ার ইতর বিশেষ না হয়, তাহাই অবিশিষ্ট প্রক্রিয়া এবং যে শাস্ত্র দ্বারা তদ্ভাবৎ প্রতিপন্ন করা যায় তাহার নাম "অবিশিষ্ট প্রক্রিয়া বিজ্ঞান"। এবং এতদ্দারা যাহার ইতর বিশেষ হয় তাহাকে বিশিষ্ট প্রক্রিয়া এবং তৎ প্রতিপাদক গ্রন্থকে বিশিষ্ট প্রক্রিয়া বিজ্ঞান বলা যায়।

ইতি পূর্ব্বে যে শিক্ষাশাস্ত্রের বিষয় বিবৃত হইয়াছে, তাহাই বাক্যের অবিশিষ্ট প্রক্রিয়া বিজ্ঞান। শিক্ষাশাস্ত্র দ্বারা বাক্যোৎপত্তির যাদৃশ প্রক্রিয়া প্রতিপাদিত হইয়া থাকে, তাহা বক্তার প্রযত্নভেদে বিভিন্ন প্রকার হয় না। বক্তা যে প্রকার প্রযত্নই করুন না কেন, স্নায়ু-ক্রিয়া-জনিত বক্ষঃস্থাদি-পেষী-ক্রিয়া দ্বারা সঞ্চালিত ফুস্ফুস্ হইতে বহির্নিঃসার্য্যমান বায়ু দ্বারা যথানিয়ত কারণে আকুঞ্চিতকণ্ঠ রসনিকার সংঘর্ষণ না হইলে "অ"কারের উৎপত্তি হইতে পারে না, ঐ সমস্ত কারণের প্রকারভেদও সম্ভবপর নহে। "আ"কারাদি বর্ণোৎপত্তিরও এই বিধি। এবম্বিধ বাক্‌প্রক্রিয়া শিক্ষাশাস্ত্র-প্রতিপাদ্য। এজন্য শিক্ষাশাস্ত্র, বাক্যের "অবিশিষ্ট-প্রক্রিয়া-বিজ্ঞান"। অবিশিষ্ট বিশিষ্ট প্রক্রিয়া বিজ্ঞানের নামই "ছন্দঃ শাস্ত্র"। এতদ্দারা যে প্রক্রিয়া প্রতিপন্ন হইয়াছে, তাহা বক্তৃ-প্রযত্নভেদে ভিন্ন রূপ হইতে পারে।

আভ্যন্তরিক ক্রিয়ার (বক্তার মনোগত ভাবের) সহিত মিলিত বাক্‌ক্রিয়ার বিভক্তিকে "ছন্দঃ" বলে। যখন সেই বক্তৃ মনোগত ভাবের মিলন না হয়, তখনও কৃত্রিম বিভক্তিযুক্ত বাক্যের প্রয়োগ হইতে

प्रभा करके शोभाको प्राप्त होता है; उस भान्ति चैतन्यरूप दीप जगत्‌रूप उपाधिसे रहित होने हीसे अपने तेज करके सुशोभित हुआ करता है।

(शेष आगे)

आर्य्य शास्त्र-विज्ञान।

(पूर्व्व प्रकाशितके आगे)

छन्दः शास्त्र। वाग्विज्ञानके अन्तर्गत प्रक्रियाविज्ञान दो भाग में विभक्त है। १म, अविशिष्ट, २य, विशिष्ट। वक्ताके वाङ्‌निष्पादन प्रयत्नका तारतम्य रहे पर भी जिस प्रक्रिया की कोइ विभिन्नता नहीं रहती है, उसीको "अविशिष्ट प्रक्रिया" करके जानना औ जिस शास्त्रके द्वारा उन सबको प्रतिपन्न किये जाते हैं उसीका नाम "अवशिष्ट प्रक्रिया विज्ञान"। औ इससे जिसको तारतम्य होता है उसको "विशिष्ट प्रक्रिया" औ तत्प्रतिपादक ग्रन्थको "विशिष्ट प्रक्रियाविज्ञान" कहा जाता है।

इसके पूर्व्व में "शिक्षा-शास्त्र" इस आशय पर जो लिखा गया है उसीको वाक्यका "अविशिष्ट प्रक्रियाविज्ञान" करके जानना। शिक्षा शास्त्रसे वाक्योत्पत्ति की जिस भान्ति प्रक्रिया प्रतिपादित हुआ करती है, सो कहनेहारके प्रयत्नकी भिन्नता करके भी दुसरी रीति की नहीं होती है। वक्ता जिस भान्ति प्रयत्न क्यों न करें स्नायु की क्रिया-जनित भीतर वक्ष को पेशीयों की क्रिया करके चलता हुआ फुस फससे बाहर निकलनेवाला वायुके द्वारा नियमित हेतुसे संकुचित हुआ कराठ जिह्वाके संघर्षण विना "अ" कारकी उत्पत्ति नहीं हो सक्ती है। उन सब कारणो की भिन्नता होना भी सम्भव नहीं। "आ"कार आदि की उत्पत्ति की विधि भी ऐसी है। इस भान्ति वाक्‌की प्रक्रिया शिक्षा-शास्त्र करके प्रतिपन्न होती है, एतन्निमित्त शिक्षाशास्त्रको वाक्यका "अविशिष्ट प्रक्रियाविज्ञान" करके कहा जाता है। अवशिष्ट जो "विशिष्ट प्रक्रियाविज्ञान" रहा, उसीका नाम "छन्दः शास्त्र"। इससे जो प्रक्रियाको प्रतिपन्न करी गयी है सो वक्ताके प्रयत्न की रीतिसे भिन्नरूप हो सक्ति है।

भीतर की क्रिया (कहनेहाराके मनके भाव) से मिली हुइ वाक् क्रिया की जो विभक्ति है, उसीका नाम छन्दः। जब वक्ताके उस मनके भावसे न मिले उस समय में भी कृत्रिम विभक्तियुक्त वाक्य

পারে, কিন্তু তাহাকে কৃত্রিম ছন্দঃই বলা যায়। কেবল বক্তার অভ্যাস বা ছল নিবন্ধনই তাহা সম্ভূত হয়।

ছন্দঃ শাস্ত্রে, ছন্দের লক্ষণ, প্রকার ভেদ ও তাহার লক্ষণ, উদাহরণ ও তাহার কালাদি নির্ণীত হইয়াছে।

ক্রমশঃ।

চারু চিন্তাবলী।

৯। কুলটা কামিনীর পরপুরুষ সংসর্গজাত পুত্রকে ক্রোড়ে করিয়া যদি স্বামী নিজপুত্রবোধে আদর বা স্নেহ প্রকাশ করে, তবে তদ্দর্শনে উক্ত পুরুষ ও কামিনী এই বলিয়া মনে মনে হাস্য করে যে কাহার বা পুত্র কে বা আদর করে!! জীব এই সংসারে মায়া বিমোহিত হইয়া শরীরাদিকে "আমার" বলিয়া কত যত্ন, কত সজ্জা ও কত সুশ্রূষা করিতেছে কিন্তু দূর হইতে কাল এই বলিয়া হাস্য করিতেছে যে হা মূঢ়! তুমি কাহাকে নিজ-বোধে যত্ন করিতেছ, কিছুই তোমার নহে, তুমি সত্বরেই এতাবৎ হইতে বঞ্চিত হইবে। আবার জীবকে গৃহের বা উদ্যানাদির সীমা লইয়া প্রতি-বাসীর সহিত বিবাদ করিতে দেখিয়া পৃথিবী এই বলিয়া মনে মনে হাস্য করেন যে আমি কার আর আমাকে কেইবা "আমার" বলিয়া অধিকার করিতে চাহে!! জীব! আমি তোমাদের কাহারও নহি— বৃথা বিবাদ পরিত্যাগ কর।

১০। মিষ্ট যেখানেই পড়িয়া থাকুক না কেন, পিপীলিকা দলে দলে আপনারাই তথায় আসিয়া উপস্থিত হইবে। তুমি সাধু বা গুণবান্ এ কথা নিজ মুখে কখন ঘোষণা করিও না। যদি তুমি ঈশ্বরের সম্মুখে প্রকৃত সাধু বা গুণী হও, তবে দেখিতে পাইবে, যে দলে দলে সৎসঙ্গী ও গুণ-গ্রাহীগণ তোমার উপদেশামৃত পানে লালায়িত হইয়া, তোমার গুপ্ত কুঠিরে আসিয়া উপস্থিত হইবে।

১১। এত লোককে যে তুমি হাসিতে দেখি-তেছ, তন্মধ্যে অনেকের হাস্যে গরল মিশ্রিত আছে, কেননা অনেকে পরের দুঃখ বা ছিদ্র দেখিয়া

का प्रयोग हो सक्ता है, किन्तु उसको कृत्रिम छन्द ही कहा जायगा। केवल वक्ताके अभ्यास वा छल ही करके ऐसा होता है।

छन्दः शास्त्र में छन्दका लक्षण, प्रकारभेद औ उसका लक्षण, उदाहरण औ काल आदि निरू-पण किया हुआ है। शेष आगे।

चारु चिन्तावली।

८। दुष्टा कामिनीके पुत्रको, जो कि दुसरा पुरुषके संसर्ग करके जन्म लिया है, यदि स्वामी निज पुत्र समझके आदर वा स्नेह देखावेतो उक्त स्त्री औ पुरुष यह समझकर मन मन हसते रहते हैं, कि हा! किसका यह पुत्र है औ कौन फिर इसको आदर करता है!! इस संसार में जीवको मायासे मोहित हुए "शरीरादि मेरे" है, इस भ्रमसे कितना यत्न, कितना साज, कितनी सुश्रूषा, करता हुआ देखकर काल दूरसे हसता हुआ यह कहा करता है, कि हा मूढ़! तु किसको आपना मानकर यत्न करता है, कुछ ही तेरा नही है, शीघ्र ही ये सब तुझसे छिनलिया जायगा। फिर जीवको गृह वा उद्यान आदिके लिये निकटनिवा-सियों झगड़ता विगड़ता देखकर पृथिवी यह कहके हंसती रहती है कि हा "मैं किसकी हुं औ मुझको फिर कौन अपनी मान अधिकार करने चाहतां है!! जीव! मैं तुम सवके किसीही की नहीं हुं। वृथा विवाद छोड़ दो।"

१०। मिटा जहां ही क्योंन पड़ा रहे, चूटीयों झुण्डके झुण्ड वहां आप ही आप आ पहुंचते हैं। तुम साधु वा गुणवान हो इस समा-चार निज मुंहसे कभी न कहा करो। यदि तुम ईश्वरके सामने यथार्थ ही गुणी वा सज्जन हो तो देखोगे जो दले दल सत्सङ्गी औ गुणग्राहीगण तुम्हारे उपदेशामृत पीनेके लालचसे तुम्हारे गुप्त कुठीर में आ पहुंचेङ्गे।

११। इतना लोगकों जो तुम हंसते हुए देखते हो, उन में वहुतेरेके हास्य में गरल मिला हुआ है, क्यों कि वहुतेरे लोग दुसरेका दुःख वा दोष देखकर, दुसरे की निन्दा कीर्त्तन वा श्रवण कर हंसते रहते हैं। और इतना लोगको जो

পরের কুৎসা কীর্ত্তন বা শ্রবণ করিয়া হাসিয়া থাকে। আর এত লোককে যে রোদন করিতে দেখিতেছ, তন্মধ্যে কাহারও অশ্রুবিন্দুতে অমৃত মিশ্রিত আছে, কেননা অপরের দুঃখ দেখিয়া, পূর্ব্বকৃত নিজ অপরাধ স্মরণ করিয়া অথবা ভগবৎ-প্রেমে বিগলিত হইয়া, কোন কোন মহাত্মার নিষ্পাপ নয়নে অশ্রুধারা বহিয়া থাকে।

ভারতবর্ষীয় আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভা।

প্রথম উচ্ছাস।

১৭৯৯ শকাব্দার শেষ দিন, মহাবিষুব সংক্রান্তি দিবসে "ধর্ম্মপ্রচারক" পত্র সম্পাদক শ্রীযুক্ত কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন পরম পবিত্র তীর্থ হরিদ্বার ক্ষেত্রে কুম্ভমেলার মহা মহোৎসব কালে, শুভ দিনে, শুভ লগ্নে, তত্রোপস্থিত দেশ বিদেশীয় মহাত্মাগণের নিকট ভারতের বর্ত্তমান দুর্দ্দশাপসারণ জন্য সনাতন আর্য্যধর্ম্মের পুনঃপ্রচারার্থ প্রস্তাব করিয়া সকলের নিকটেই যথোচিত সহানুভূতি লাভ-করেন। তিনি তথা হইতে লবপুর (লাহোর) অমৃতসর, দেববন্ধ, আলিগড়, মতিহারী আদি স্থান সমূহ পরিভ্রমণ করিয়া আসিবার সময় স্থানে স্থানে অনেক গুলি ধর্ম্মার্থযুক্ত বক্তৃতা করেন ও সর্ব্বত্র এই অতীব গুরুতর কার্য্যের আবশ্যকতা ঘোষণা করিয়া আসেন। "ধর্ম্মপ্রচারক" "প্রভাতী" "ন্যাসন্যাল পেপর" "এডুকেশন গেজেট" "ভারত বন্ধু" "মিত্রবিলাস" "ভারত মিত্র" আদি প্রকাশ্য সংবাদ পত্রাদিতে এই শুভ সংবাদ প্রকাশিত হইল। এই ভারতীয় ভাবী মঙ্গলের ভাব তরঙ্গ ভাগীরথীর অনিবার্য্য তরঙ্গের ন্যায় ক্রমে "ধর্ম্ম-প্রচারক" সম্পাদকের হৃদয়ে প্রবলরূপে উচ্ছসিত হইতে লাগিল। অতঃপর ইহার কার্য্যক্ষেত্র বিস্তার জন্য স্বতন্ত্র পন্থা উন্মুক্ত করা স্থির হইল।

প্রথমাধিবেশন।

১৮০১ শকাব্দার ১২ই মাঘ, রবিবার, অপরাহ্ণ বেলা ৩টার সময় মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভা-মণ্ডপে একটী বৃহতী বিশেষ সভার অধিবেশন

रोतेहुए देखते हो उन में किसीके अंसु में अमृत मिला हुआ है क्योंकि दुसरेका दुःख देखकर, अपना किया, पूर्व्व पाप हुआ अपराध स्मरण कर अथवा भगवत् प्रेमसे विगलित होकर किसी किसी महात्माके निष्पाप नयनेंसे अंसुकी धार बहती रहती है।

भारतवर्षीय आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभा।

प्रथम उच्छास।

शकाब्दा १७९९के अन्त दिन,—महा विषुव-संक्रान्तिके दिवस—धर्म्मप्रचारक पत्रके सम्पादक श्रीमान कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न सेन जीने परम पवित्र तीर्थ श्री हरिद्वार क्षेत्र में कुम्भमेलाके महा महोत्सव काल-शुभ दिन, शुभ लग्न में देश देशा-न्तरके महात्मागणके निकट, जो वहां विद्यमान थे, भारतवर्ष की वर्त्तमान दुर्द्दशा की शान्तिके निमित्त सनातन आर्य्यधर्म्मके पुनः प्रचारार्थ निर्देश किया था औ सबसे उसबात की यथोचित सहानुभुति प्राप्त हुई। कुमार जीने वहांसे लवपुर (लाहोर) अमृतसर, देवबन्ध, आलीगढ़, मतिहारी, आदि स्थानों में परिभ्रमण कर लौटते समय, स्थान स्थान में धर्म्मार्थयुक्त बहुतेरी वक्तृता करी औ इस अतीव गुरुतर कार्य्यकी आवश्यकता घोषणा करती आइ। धर्म्मप्रचारक, प्रभाती, नाशानल पेपार, एडुकेशन गेजेट, भारतबन्धु, मित्रविलास, भारतमित्र, आदि प्रसिद्ध समाचार पत्रादि में यह शुभ संवाद प्रचार हुआ। भारतीय भावी मङ्गल के भावतरङ्ग भागीरथीके अनिवार्य्य तरङ्गके समान शनैः शनैः धर्म्मप्रचारक सम्पादकके हृदय में प्रबल रूपसे उच्छसित होने लागे। अनन्तर इसके कार्य्यक्षेत्र विस्तार करनेके लिये स्वतन्त्र पन्था उन्मुक्त करना स्थिर हुआ।

प्रथमाधिवेशन।

माघ सुदी १२इ शकाब्दा १८०१ रविवार, दोपहरके उपरान्त बेला तीन बजे, एक विशेष वृहती सभाका अधिवेशन, मुङ्गेर आर्य्यधर्म्मप्रचा-

হইয়াছিল। ভূতপূর্ব্ব সভাধ্যক্ষ পরম ধর্ম্মাত্মা ৺ রায় অন্নদা প্রসাদ রায় বাহাদুর মহাশয় সভাধিনায়কের আসন পরিগ্রহ করিয়াছিলেন এবং ধর্ম্মপ্রচারক পত্র সম্পাদক শ্রীযুক্ত কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন মহাশয় আর্য্য সাধারণ (হিন্দি) ভাষায় "ভারতীয় ধর্ম্মরক্ষা" বিষয়িণী একটী বক্তৃতা করেন। বক্তৃতা মধ্যে সনাতন আর্য্যধর্ম্মের প্রতিভা ক্ষীণ হইবার বিবিধ কারণ এবং তাহা পুনরুদ্দীপিত করিবার উপায় স্বরূপ ধর্ম্মাচার্য্যাদি নিয়োগ দ্বারা ভারতের সর্ব্বতোভাগে সনাতন আর্য্যধর্ম্মপ্রচার, মূল গ্রন্থাদির সানুবাদ বহুল প্রকাশ, সংস্কৃত ভাষাদির পুনরুৎকর্ষ সাধন প্রভৃতির উল্লেখ এবং তদ্ভাবৎ কার্য্য সুশৃঙ্খলে চালাইবার জন্য এক লক্ষ টাকা মূলধন সংগ্রহের প্রস্তাব করেন। ইহারই উপস্বত্ব হইতে ধর্ম্মপ্রচার কার্য্যাদি যথারীতি নির্ব্বাহিত হইতে থাকিবে। এই গুরুতর হিতকর প্রস্তাব সর্ব্ব সজ্জন কর্ত্তৃক আনন্দপূর্ব্বক অনুমোদিত হইল, এবং পরম ধর্ম্মোৎসাহী সভাপতি মহাশয় এতৎ গুরুতর কার্য্যের সাহায্য জন্য ৪০০০৲ চারি সহস্র টাকা দানাঙ্গীকারপত্রে স্বাক্ষর করিলেন। অতঃপর সভাপতিকে ধন্যবাদ দান পূর্ব্বক সভা বিসর্জ্জিত হইল।

এই সময় হইতেই এই অভিনব ব্যাপারের সূত্রপাত ও যথাসম্ভব কার্য্যারম্ভ হইল। "ধর্ম্মপ্রচারক" সম্পাদকের যত্নে দেশ বিদেশ হইতে ধন সংগৃহীত হইতে লাগিল এবং তিনি নিজ ব্যয়ে দেশ দেশান্তরে, কোথাও স্বয়ং প্রবৃত্ত কোথাও বা আহূত হইয়া ধর্ম্মপ্রচার কার্য্য আরম্ভ করিলেন। এই সময়েই এই কার্য্যক্ষেত্রের "ভারতবর্ষীয় আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভা" নাম রক্ষিত, সভার উদ্দেশ্য* নিয়মাবলী * এবং ধর্ম্মাচার্য্য সম্বন্ধীয় নিয়মাবলি * লিপিবদ্ধ ও অবধারিত এবং ভারতের দিগ্দিগন্ত হইতে নির্ব্বাচিত অধ্যক্ষ মণ্ডলীর দ্বারা কার্য্যপ্রবাহ চলিতে থাকিবে নিরূপিত হইল।

---

* আগামী বারে প্রকাশিত হইবে।

रिणी सभामण्डप में हुआ था। उस सभाके सभाध्यक्ष परम धर्म्मात्मा राय अन्नदाप्रसाद राय बहादूर महाशयने सभाधिनायकके आसनपर सुशोभित हुए थे औ श्रीमान कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न सेन "धर्म्मप्रचारक" पत्रके सम्पादक जीने "भारतीय धर्म्म रक्षा" इस आशय पर आर्य्य साधारण (हिन्दी) भाषा में एक वक्तृता की थी। सनातन आर्य्यधर्म्म की प्रतिभा क्षीण होनेका क्या क्या कारण है, औ धर्म्माचार्य्यादि नियत करके भारतके सर्व्वतो भाग में सनातन आर्य्यधर्म्मका फिर प्रचार करावना, उलथा सहित मूल संस्कृत ग्रन्थ समूहको छपवाकर प्रकाश करना, संस्कृत भाषा का पुनरुत्कर्ष साधन करना आदि जो इस धर्म्म की पुनरुद्दीपनाका उपाय है, सो वक्तृता में भली भान्ति प्रसिद्ध कियागया था, औ यह प्रस्ताव छेड़ा गया कि इतना कार्य्य उत्तम रीति निवाहनेके अर्थ एक लक्ष रुपये संग्रह होना चाहिये। इसी की उपस्वत्व करके धर्म्मप्रचार कार्य्यादि यथा रीति निर्व्वाह होता रहेगा। इस गुरुतर हितकर निर्देश की सर्व्वसज्जन आनन्द पूर्व्वक अनुमोदन किये औ परम धर्म्मोत्साहि सभाधिनायक जी इस गुरुतर कार्य्य की सहायताके अर्थ ४०००) चार सहस्र रुपये दानाङ्गीकारपत्र में स्वाक्षर किये। तत्पश्चात् सभाधिनायकको धन्यवाद देकर सभा विसर्ज्जन हुई।

इसी समयसे अभिनव व्यापारका सूत्रपात औ यथासम्भव कार्य्यारम्भ हुआ। "धर्म्मप्रचारक" सम्पादक जीके यत्नसे देश देशान्तरसे धन इकट्ठे होने लगे औ वे निजव्यय स्वीकार करके, कहीं स्वयं प्रवृत्त हुए कहीं बुलाये हुए, देश देशान्तर में जा जाकर धर्म्मप्रचार कार्य्यका प्रारम्भ किये। इसी समय में इस कार्य्यभूमिका नाम "भारतवर्षीय आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभा" रखा गया। सभा का उद्देश्य * नियमावली * औ धर्म्माचार्य्य सम्बन्धी नियमावली* लिखगये औ निश्चय हुए, औ भारतके दिग्दिगन्तसे निर्व्वाचन कियेहुए अध्यक्षोंसे सभाके कार्य्य-निर्व्वाह होता रहेगा यह स्थिर हुआ।

---

* आगामी संख्या में लिखा जांगे।

দ্বিতীয় অধিবেশন।

মুঙ্গের তাং ২০ শ্রাবণ, শকাব্দা ১৮০৩। ইং ৬-৮-৮১ শনিবার।

উপস্থিত ব্যবস্থাপকগণের নাম।

শ্রীযুক্ত বাবু কালীপ্রসাদ চৌধুরী——উপাধিনায়ক
ঐ কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন (ধঃ,প্রঃ সং) কার্য্য সম্পাদক
ঐ বাবু দেবী প্রসাদ (ডিপুটী কলেক্টর) সভাসদ
ঐ ঐ কমলেশ্বরী প্রসাদ (ভু-স্বামী) ঐ
ঐ ঐ ভগবতীচরণ ঘোষ ঐ
ঐ ঐ মহেন্দ্রনাথ ঘোষ ঐ

শ্রীযুক্ত বাবু কালীপ্রসাদ চৌধুরী, উপাধিনায়ক মহাশয় যথারীত্যনুসারে সভাধিনায়কের আসন গ্রহণ করিলেন।

১। সম্পাদক মহাশয় ভারতবর্ষীয় আঃ, ধঃ, প্রঃ সভার প্রথমোচ্ছাস, প্রথমাধিবেশনের কার্য্য বিবরণ পাঠ এবং তৎপরে সভার উদ্দেশ্য ও নিয়মাবলী, ধর্ম্মাচার্য্য সম্বন্ধীয় নিয়মামবলী পাঠ ও বিবৃত করিলেন।

শ্রীমান বাবু কমলেশ্বরী প্রসাদ মহাশয়ের প্রস্তাব ও অন্যান্য সভ্যগণের অনুমোদনানুসারে সভার ষষ্ঠ নিয়মে যে দ্বাদশ জন মাত্র ব্যবস্থাপক সভার সভ্য থাকিবেন নিরূপিত ছিল, তৎপরিবর্ত্তে বিংশতি জন গৃহীত হইতে পারিবেন অবধারিত হইল।

২। সম্পাদক মহাশয় সভার ৭ ম নিয়মানুসারে নির্ব্বাচিত ব্যবস্থাপক মহাত্মাগণের নিকট হইতে উৎসাহ ও সহানুভূতিকর এবং স্ব স্ব পদ গ্রহণ সূচক যে সমস্ত পত্র পাইয়াছিলেন, তম্মধ্যে সভাধিনায়ক পাকুড়বাসী শ্রীযুক্ত রাজা তারেশ চন্দ্র পাণ্ডে বাহাদুর, কানপুরস্থ শ্রীযুক্ত বাবু মহেন্দ্রনাথ ঘোষাল, আলিগড়স্থ "ভারতবন্ধু" পত্র সম্পাদক ও পশ্চিমোত্তর প্রদেশীয় হাইকোর্টের উকীল শ্রীযুক্ত বাবু তোতারাম বর্ম্মা, মতিহারীস্থ শ্রীযুক্ত বাবু দরবারীলাল, সৈয়দপুরস্থ শ্রীযুক্ত বাবু দীননাথ গঙ্গোপাধ্যায় মহাশয়ের পত্র গুলির মর্ম্ম ক্রমান্বয়ে সভামধ্যে বিবৃত করিলেন। সভা তাঁহাদের এতাবৎ ভার গ্রহণ জন্য সবিশেষ আনন্দ প্রকাশ করিলেন, এবং সভার সর্ব্বসম্মতিক্রমে সম্পাদকোক্ত অন্যান্য নিয়মাদি সমস্তই অপরিবর্ত্তিত ও অবিচলিত রহিল।

दुसरा अधिवेशन।

मुङ्गेर आवण सुदी ११ श: १८०३।

ई० ६-८-८१ शनिवार।

सभा में विद्यमान सभासदोंके नाम।

श्रीयुक्त बाबु कालीप्रसाद चौधुरी, उपाधिनायक
,, कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न सेन,
(ध: प्र: सं) कार्य्यसम्पादक
,, बाबु देवीप्रसाद, (डि: कलक्टर) सभासद
,, बाबु कमलेश्वरी प्रसाद, (भूस्वामी) ,,
,, बाबु महेन्द्रनाथ घोष, ,,
,, बाबु भगवतीचरण घोष, ,,

यथारीतिसे सभाके उपाधिनायक श्री बाबु कालीप्रसाद चौधुरी जी सभाधिनायकके आसन पर सुशोभित हुए।

१। भारतवर्षीय आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाका प्रथमोच्छास वा पहिली सूचना, पिछली सभा (प्रथमाधिवेशन) की रुति, सभाके उद्देश्य औ नियमावली धर्म्माचार्य्य-सम्बन्धी नियमावली, सम्पादक जीने पढ़कर सभासदोंको सुनाया।

बाबु कमलेश्वरी प्रसाद जीके निर्देश और अन्यान्य सभ्य सज्जनोंके अनुमोदनसे सभाका षष्ठ नियम जिस में यह लिखा था कि व्यवस्थापक सभा की सभ्यसंख्या द्वादश मात्र रहेगी, बदल कर उसके स्थान पर विंशति तक रह सकेगी, यह निश्चय हुआ।

२। सभाका ७म नियमानुसार देश देशान्तरसे निर्व्वाचित कियेहुए व्यवस्थापक महात्माओंसे जो लोग अत्यन्त उत्साह औ सहानुभूति देखाये औ निज निजोचित पदको स्वीकार कर पत्र व्यवहार कियेथे, उन मेंसे सभाधिनायक पकौड़निवासी श्रीमान् राजा तारेशचन्द्र पाण्डे बहादूर, कानपुरके श्री बाबु महेन्द्रनाथ घोषाल, अलीगढ़के श्री बाबु तोताराम बर्म्मा, (हाइकोर्टके वकील श्री भारतबन्धु पत्रसम्पादक) सैदपुरके श्री बाबु दीननाथ गङ्गोपाध्याय जीके लिखेहुए पत्रोंके अभिप्राय सम्पादक जीने सभा में प्रगट किया। उन्हें जो निज निज पदको अङ्गीकार किये, इससे सभा अतीव आनन्द प्रकाश करी। तदनन्तर सभास्थ सब किसीको सम्मतिसे सम्पादकोक्त अन्यान्य नियमों बिन बदले स्थिर रहे।

৩। শ্রীযুক্ত বাবু কমলেশ্বরী প্রসাদের প্রস্তাব ও অধিকাংশ সভ্যগণের অনুমোদনানুসারে স্থির হইল যে মুঙ্গেরের প্রসিদ্ধ মহাজন শ্রীযুক্ত বাবু গঙ্গাপ্রসাদকে সভাসদ শ্রেণীভুক্ত করা হয় এবং তজ্জন্য সম্পাদক তাঁহাকে পত্র লিখিবেন এবং উক্ত বাবু স্বপদাঙ্গীকার পত্র পাঠাইলে তাঁহাকে সভ্য শ্রেণীভুক্ত করিবেন বলিয়া ভার গ্রহণ করিলেন।

৪। মুঙ্গের আঃ, ধঃ, প্রঃ সভার ভূতপুর্ব্ব সভাধ্যক্ষ মৃত মহাত্মা রায় অন্নদাপ্রসাদ রায় বাহাদুর যে ৪০০০, সহস্র মুদ্রা দান স্বীকার ও স্বাক্ষর করিয়াছিলেন, তাঁহার স্বর্গারোহণান্তে তাঁহার সমস্ত ঐশ্বর্য্য সম্পত্তি কোর্ট অব্ ওয়ার্ডসের তত্ত্বাবধানাধীন হইলে পর সম্পাদক তদঙ্গীকৃত অর্থ প্রার্থনা পূর্ব্বক মুঙ্গেরস্থ কলেক্টর সাহেবকে আবেদন করেন, সেই আবেদনপত্র যথাক্রমে বোর্ড কর্ত্তৃক গ্রাহ্য হইয়া আইসে। তদনুসারে শ্রীযুক্ত কুমার আশুতোষনাথ রায়ের বৈষয়িক কার্য্যাধ্যক্ষ মহাশয় মুরশিদাবাদের কলেক্টরকে যে ২৮এ মে, খৃঃ ১৮৮১, ২১৮ সংখ্যক পত্র লেখেন, উক্ত কলেক্টর তাহার প্রতিলিপি অত্র সভার জ্ঞাপনার্থ মুঙ্গের কলেক্টরকে প্রেরণ করেন। মুঙ্গেরের কলেক্টর উক্ত পত্রের তৃতীয় সূচনার (Para) প্রতিলিপি তাঁহার ৬ই জুন, খৃঃ ১৮৮১ তারিখের ৯৪ সংখ্যক পত্র দ্বারা অত্র সভায় পাঠাইয়া দিয়াছেন। এতদ্ পত্রের মর্ম্ম এই যে "যখন কতকগুলি মাত্র সাধারণ লোকের হস্তে এত অধিক মুদ্রা ধর্ম্মকার্য্যোদ্দেশে দান করা হইতেছে, তখন আমার বোধ হয়, মুঙ্গেরের কলেক্টর, সভার সম্পাদক ও সভাসদ্বর্গের নিকট হইতে এরূপ অনুবন্ধ পত্র স্বাক্ষর করিয়া লইবেন যে উক্ত টাকা চির দিন গবর্ণমেণ্টের হস্তে থাকিবে এবং তাহার সুদমাত্র লইয়া সভার কার্য্য নিয়োগ করিবেন এবং ইহাই যে মৃত দাতার অভিপ্রায় ছিল, তাহা বোধ করি, সম্পাদক বা সভাসদ্গণ অস্বীকার করিবেন না।" এতৎসহ মুঙ্গেরের কলেক্টর লেখেন যে "সম্পাদক উক্তমত অনুবন্ধ পত্র লিখিয়া দেন অথবা তাঁহার যদি কোন আপত্তি থাকে তবে তাহা পরিষ্কার করিয়া জ্ঞাপন করেন।

সম্পাদক এই পত্রখানি পাঠ করিলে সভাসদ্গণ শ্রীকুমার আ, না, রায়ের বিষয়াধ্যক্ষের পত্র মর্ম্মাবগতে অত্যন্ত আশ্চর্য্য হইলেন, এবং এই

३। श्री बाबु कमलेश्वरी प्रसाद जीके निर्देश औ अधिकांश सभ्योंके अनुमोदनसे यह निश्चय हुआ कि मुङ्गेरके प्रसिद्ध महाजन श्री बाबु गङ्गाप्रसाद जीको सभासद बना लिया जाय औ तन्निमित्त सम्पादक जीने यह भार उठा लिया कि उनने उक्त बाबुजीको इस आशय पर पत्र भेजेंगे औ यदि बाबु गङ्गाप्रसाद जी इस बातको अङ्गीकार करें तो उनके नाम सभासदोंके मध्य में लिख लिया जायगा।

४। मुङ्गेर आ, ध, प्र, सभाके भूतपूर्ब्ब सभाध्यक्ष मृत महात्मा राय अन्नदाप्रसाद राय बहादुर ने जो ४०००) रुपये दान स्वीकार औ स्वाक्षर कर गये, उनके परलोक सिधारने पर जब उनके समस्त ऐश्वर्य्य कोर्ट अव वार्डसके तत्वावधानके अधीन हुआ तब सभाके सम्पादक जीने मुङ्गेरके कलेक्टर साहबको इस आशयपर एक आवेदनपत्र भेजा कि मृत महात्माके अङ्गीकार कियेहुए धन शीघ्र मिले। उस आवेदनपत्र यथा क्रमसे वोर्डसे ग्राह्य हो आया। तदनुसार श्रीमान कुमार आशुतोष नाथ रायके वैषयिक कार्य्याध्यक्ष जीने जो पत्र नं २१८, ता २८से, सन इसाई १८८१, कलेक्टर मुरशिदाबादको भेजा थ, इस सभाके विदितार्थ उक्त कलेक्टर उस पत्र की प्रतिलिपि कलेक्टर मुङ्गेरको भेजे हैं। यहांके कलेक्टर साहब फिर उस पत्र की तीसरी सूचना (पैरा) की प्रतिलिपि (मेमो) नं ९४, ता ६ इ जून, सन इसाई १८८१, इस सभा में भेजे हैं। इस पत्रका आशय यह है—"जब कैक साधारण (प्राईवेट) पुरुषोंके हाथ पर इतनेसे रुपये धर्म्मकार्य्यार्थ दिये जाते हैं, तो मेरे विचार यह कि मुङ्गेरके कलेक्टर साहब, सभाके सम्पादक औ सभासदोंसे ऐसा एक अनुबन्धपत्र लिखवालें कि उक्त रुपये बराबर गवर्णमेण्ट सिकुरिटि में रहे औ उसका सूद सभाके कार्य्य में नियत किया जायगा, औ बोध होता है कि सम्पादक औ सभ्य सज्जन यह अस्वीकार नहीं करेङ्गे जो ऐसा ही मृत दाताका अभिप्राय था"। इसके साथ मुङ्गेरके कलेक्टर साहब और यह भी सूचित किये कि "सम्पादक जी उक्त रीति अनुबन्ध पत्र लिख दें अथवा यदि कुछ आपत्तियां उजुर रहे सो प्रगट करें।"

सम्पादक जीने इस पत्रको पढ़कर सभासदोंको सुनाये। आ, ना, रायके वैषयिक कार्य्याध्यक्षके पत्रके अभिप्राय सुनकर वे लोग बड़े आश्चर्य्य माने

মর্ম্মে মুঙ্গেরস্থ কলেক্টর সাহেবকে পত্র লিখিবার জন্য সম্পাদককে ভারার্পণ করিলেন যে "যে সভা বিশ্বস্ততার সহিত দেশ বিদেশে বিশেষ মান্য ও পরিচিত ও যাহার ধর্ম্মপ্রচার কার্য্য (বাচনিক বক্তৃতা ও "ধর্ম্মপ্রচারক" পত্র দ্বারা) ভারতের দিগ্দিগন্তকে আর্য্যভাবে উদ্দীপিত করিতেছে, এবং যে সভা লক্ষ মুদ্রা মূলধনের অধিকারী হইয়া ভারতে ধর্ম্মপ্রচারার্থ প্রবৃত্ত, তাহা কখনই ক্ষুদ্র বা সংকীর্ণমনা লোকমণ্ডলীর সভা নহে। ভারতবর্ষ যখন এতৎ সভার কার্য্যার্থ লক্ষ বা ততোধিক মুদ্রা দান করিবে, তখন ৪০০০ মুদ্রার দায়ীত্ব কি তদপেক্ষা অধিক? সভা যে মূলধনের উপসত্ব হইতে কার্য্য করিবেন, তজ্জন্য অনুবন্ধ পত্র লিখিয়া দিতে পারেন, কিন্তু গবর্ণমেণ্ট সিকিউরিটীতে টাকা রাখিতে সম্মত নহেন, কেননা অন্যোপায়ে মূলধনের উপসত্ব অনেক অধিক পরিমাণে হইতে পারে। গবর্ণমেণ্টের দাতব্য সুদ অতি অল্প, তাহাতে সভার কার্য্য সৌকার্য্য সিদ্ধ হইবে না। মৃত দাতারও যে উপসত্ব হইতে কার্য্য নির্ব্বাহ করিবার ইচ্ছা ছিল তাহা গবর্ণমেণ্ট সিকিউরিটীতে নহে, আমাদিগের সভার ২য় নিয়মানুযায়ী উপসত্ব হইতে বুঝিতে হইবে। মুঙ্গেরের কলেক্টরের পত্রোত্তরে এতাবৎ উল্লেখ করিয়া তাঁহার পাঠার্থ ২য় নিয়মের অনুবাদ প্রেরণ করাও আবশ্যক।"

৫। সম্পাদকের নিকট যে বিবিধ স্থান হইতে প্রাপ্ত আপাততঃ ২১২।৶১০ সঞ্চিত আছে, তাহা তিনি তৎপুষ্টিবর্দ্ধনার্থ যেরূপ কার্য্যে নিযুক্ত রাখিয়াছেন, সর্ব্বসম্মতিক্রমে আপাততঃ সেইরূপ থাকাই স্থির রহিল।

৬। শ্রীযুক্ত বাবু ভগবতীচরণ ঘোষ মহাশয় প্রস্তাব করেন যে এই সভার কার্য্য কল্পে মুঙ্গের হইতে ধনসংগ্রহার্থ শ্রীযুক্ত বাবু কালীপ্রসাদ চৌধুরী ও শ্রীযুক্ত বাবু দেবীপ্রসাদ (ডিপুটী কলেক্টর) ভারগ্রহণ করেন। সম্পাদক এতদ্ প্রস্তাবনায় অনুমোদন করিলে উক্ত বাবু দ্বয় কার্য্যভার গ্রহণে অনুগ্রহ পূর্ব্বক স্বীকার করিলেন।

৭। সম্পাদকের প্রস্তাবানুসারে সকলেই অনুমোদন করিলেন যে দেশ বিদেশীয় ব্যবস্থাপক মহোদয় মাত্রেই এই গুরুতর কার্য্যের জন্য অনুগ্রহ পূর্ব্বক অর্থ সংগ্রহের ভার গ্রহণ করেন।

औ सम्पादक जीको एक पत्र कलेकटर साहव मुङ्गेरको इस आशयपर लिखनेको भार दिया गया कि जिस सभाने विश्वस्तताके साथ देश देशान्तर में विशेषरूप मान्य औ परिचित है, जिस सभाका धर्म्मप्रचार कार्य्य (वाचनिक व्याख्यान औ धर्म्मप्रचारक पत्रसे) भारतवर्षके दिग्दिगन्तको आर्य्य भावसे उस्काता औ चेताता जाता है, और जिस सभाने लाख रुपये मूलधनके अधिकारी बने भारतवर्षीय कल्याण कार्य्यार्थ प्रवृत्त हो रहा है, वह सभा कभी क्षुद्र वा संकीर्णचित्त सामान्य सभा नहीं है। वह सभा जब भारतवर्षसे एक लक्ष वा उससे अधिक रुपये इकट्ठे कर कार्य्य करना चाहती है, उसके सामने ४०००) रुपयेका दायीत्व क्या अधिक है? मूलधन की उपसत्वसे जो कार्य्य निवाहा जाता तदर्थ सभा अनुबन्ध पत्र लिख दे सक्ती है, किन्तु गवर्णमेण्ट सिकुरिटी में रुपये रखना स्वीकार नहीं करती है, क्यों कि गवर्णमेण्टसे सुद अत्यन्त अल्प मिलता है, उससे सभाके कार्य्य में हानि पहुंचे गी औ स्वर्गारोही दाता की जो उपस्वत्वसे काम चलानेकी इच्छा थी सो गवर्णमेण्ट सिकुरिटी करके नहीं, हमारी सभाके २य नियमानुसार उपसत्वसे बूझना चाहिये। मुङ्गेरके कलेकटर साहवके पत्रोत्तर सहित उनके पाठार्थ २य नियमका उलथा भी अङ्गरेजी में भेजना चाहिये।

५। २१२।৶১০॥ जो कि विविध स्थानसे मिला हुआ अब सम्पादक जीके पास है, उसकी वृद्धिके लिये वे जिस काम में अब लगा रहे हैं, सर्व्वसम्मतिसे वह अब वैसाही रहे, यह निश्चय हुआ।

६। श्री बाबू भगवतीचरण घोष जीने यह निर्देश किया जो सभाके कार्य्यके लिये श्री बाबू कालीप्रसाद चौधुरी औ बाबू देवीप्रसाद (डि: कलेक्टर) ने मुङ्गेर में से धन संग्रहार्थ भार उठावें, सम्पादक जीके अनुमोदनसे उक्त दो महात्मा अनुग्रह कर इस भारको उठाना अङ्गीकार किये।

७। सम्पादक जीके निर्देश औ सब किसी जीके अनुमोदनसे यह निश्चय हुआ कि इस गुरुतर कार्य्यके अर्थ देश देशान्तरके व्यवस्थापक महात्मा भी कृपा कर धनागमको भार उठावें।

৮। শ্রীযুক্ত বাবু ভগবতীচরণ ঘোষ মহাশয়ের প্রস্তাব ও অন্যান্য সভ্যগণের উৎসাহপূর্ণ অনুমোদন ও উত্তেজনায় ইহা স্থির হইল যে এতৎ সভার সংস্থাপক ও সম্পাদক শ্রীযুক্ত কুমার শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন মহাশয় ভারতের দিগ্দিগন্তে পর্য্যটন পূর্ব্বক বক্তৃতাদি দ্বারা সর্ব্বসাধারণকে ধর্ম্মপ্রচারের কার্য্যকারীতা বুঝাইয়া উত্তেজনা ও চেষ্টা না করিলে সভার আশানুরূপ অর্থ সংগৃহীত ও উদ্দেশ্য সংসিদ্ধ হওয়া অতীব কঠিন। অতএব মাসিক ৪০্ বা ৫০্ টাকা উপসত্ত্বোপযোগী মূলধন সংগৃহীত হইলেই অথবা তিনি সুবিধা বোধ করিলেই প্রথমতঃ ভাঃ, আঃ, ধঃ, প্র, সভার কার্য্যার্থ ব্রতী হইয়া যাত্রা করিবেন, তৎপরে ক্রমশঃ ধর্ম্মাচার্য্য নিয়োগাদি অন্যান্য কার্য্যে মনোযোগী হওয়া যাইবে।

এতদনন্তর সভাধিনায়ককে ধন্যবাদ পূর্ব্বক সভাভঙ্গ হইল।

শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন।
কার্য্যসম্পাদক।

ধন্য ভারত ভূমি!!

অধ্যাপক মোক্ষমূলার সাহেব বহরমপুর নিবাসী শ্রীমদ্বাবু রাম দাস সেন মহাশয়কে এক খানি পত্রে লিখিয়াছেন "যদিও আমি কখন ভারতবর্ষে গমন করি নাই সত্য, কিন্তু আমার জীবনের অধিকাংশ সময় ভারতবর্ষীয় শাস্ত্র ও আর্য্যবর্গের বিরচিত গ্রন্থাদি পাঠেই অতিবাহিত করিয়াছি। আমি যদি ভারতবর্ষে জন্ম গ্রহণ করিতাম তাহা হইলে বড় সুখের হইত। এক্ষণে আমি পূর্ব্বকালের ন্যায় ভারতবাসীদিগের জাতীয় ভাব ও উৎসাহ এবং তাহাদিগকে প্রাচীন শাস্ত্রপাঠে তৎপর দেখিতে নিতান্ত ইচ্ছা করি। আপনাদিগের ভবিষ্যৎ যাহাতে অতীত অপেক্ষা উত্তম ও উজ্জ্বলতর হয় তদ্বিষয়ে আপনাদিগের বিশেষ যত্ন করা কর্ত্তব্য। ইউরোপের যাহা উৎকৃষ্ট তাহা গ্রহণ করুন কিন্তু ইউরোপীয় হইবার চেষ্টা করিবেন না। আপনারা আর্য্যনামেই পরিচিত থাকুন অর্থাৎ যে মনুর সন্তান আছেন সেই মনুর সন্তানই থাকুন। পুণ্যময়ী ভারতভূমির সুসন্তান হইয়া, সত্যানুসন্ধানে যত্নবান থাকিয়া এবং সেই অবিজ্ঞেয় পরমা-

८। श्री बाबू भगवती चरण घोष जीके निर्देश औ अन्यान्य सभ्य सज्जनोंके उत्साह पूर्व्वक अनुमोदन औ उत्तेजनासे यह स्थिर हुआ जो इस सभाके संस्थापक औ सम्पादक श्री कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न सेन जीको भारतभूमिके दिग्दिगन्त में पर्य्यटन पूर्व्वक वक्तृतादिके द्वारा उत्तेजना औ चेष्टा किये बिना सभा की आशानुरूप धनागम होना अतीव कठिन है, अतएव ऐसे कुछ रुपये जमने पर, जिससे मासिक ४०) वा ५०) रुपये उपसत्व हो, अथवा जितना शीघ्र वे स्वयं सुविधा समझें, पहले ही भारतवर्षीय आः, धः, प्रः सभाके कार्य्यार्थ व्रत लिये हुए यात्रा करेंगे। तत्पश्चात् क्रम क्रमसे धर्म्माचार्य्यनियोगादि अन्यान्य कार्य्य में दत्तचित्त होना चाहिये।

तदनन्तर सभाधिनायकको धन्यवाद देकर सभा विसर्जन हुई।

श्री श्रीकृष्णप्रसन्न सेन।
कार्य्यसम्पादक।

भारतभूमि! तू धन्य है!!

बहरम्पुरके रईस श्रीमद्बाबु रामदास सेन जीको अध्यापक मोक्षमूलर साहबने एक पत्र में लिखा है, "यद्यपि यह सत्य है, कि मैं भारतवर्ष में कभी नहीं गया, किन्तु भारतवर्षीय शास्त्र औ आर्य्यवर्गके बनायेहुए ग्रन्थादिके पठन होसे मैं ने मेरे जीवनका अधिकांश समय व्यतीत किया है। मैं यदि भारतवर्षीय होता तो परम सुख मानता। अब मैं पूर्णान्तःकरणसे यही चाहता हूं, कि वर्त्तमान भारतनिवासीगण पूर्व्व कालके समान जातीय भाव औ उत्साह देखावें औ प्राचीन शास्त्रोंके पठन में तत्पर रहें। आप सबको अब ऐसा विशेष यत्न करना चाहिये, कि जैसे आपलोगोंको भविष्यत् अतीतसे भी उत्तम औ अधिक उज्ज्वल होय। यूरोपके जो कुछ उत्तम है सो ग्रहण करना। परन्तु साहब बननेकी चेष्टा न कीजिये। आप लोग "आर्य्य" नाम होसे प्रसिद्ध रहिये, अर्थात् जो मनुके सन्तान हैं, सो मनुके सन्तान ही बने रहिये। पुण्यमयी भारतभूमिके सुसन्तान बनकर, सत्यानुसन्धान में यत्नवान रहकर औ उस परमात्माका उपासक बनकर विराजते

ন্যার উপাসক হইয়া অবস্থিতি করুন. যাঁহাকে না জানিতে পারিয়া মানবমাত্রেই কোন না কোন রূপে পূজা করিয়া থাকে, অথচ যাঁহাকে প্রত্যেকেই ন্যায় ও প্রকৃতার্থযুক্ত শ্রেয়স্কর কার্য্যানুষ্ঠান দ্বারা পরিসেবন পূর্ব্বক সত্য ও জ্ঞান লাভের পরিচয় দিয়া থাকে।" হা! এই ভারতমিত্র মহাত্মার মধুর বাক্য গুলি পাঠ করিলে কোন্ ভারতসন্তানের হৃদয় তন্ত্রী আনন্দে নৃত্য না করিয়া উঠে। ভারত! উক্ত সাধুহৃদয় মহোদয়ের সৎপরামর্শে অবধান কর।

শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত ধর্ম্মপ্রচারক সম্পাদক
মহাশয় মান্যবরেষু।

তত্ত্ব জিজ্ঞাসা।

আপনার ৪৫ সংখ্যক ধর্ম্মপ্রচারকের "নিরুদ্দেশ" শীর্ষক বিজ্ঞাপন পাঠে অবগত হইলাম যে শ্রীশ্রীশ্রী ওঁ ব্রহ্মলোক হইতে তাঁহার বনিতার উদ্দেশে অবনীতে সংবাদ ঘোষণা করিয়াছেন। আমি তদুল্লিখিত পুরস্কারে প্রলুব্ধ হইয়া প্রচ্ছন্নভাবে অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হওতঃ কোন স্থানের একটী জনরবে সন্দিহান হইয়া প্রকাশ করিতেছি যে এক স্থানে কতকগুলি লোক সমাবেশ হইয়া এই কলরব করিতেছেন "আমাদিগের মধ্যে যখন ভক্তির উদয় হইয়াছে, আইন আমরা এই নূতন বিধান অবলম্বন করিয়া ব্রহ্মানন্দ উপভোগ করি, এই নূতন ভাবের ভক্তি স্রোতে সর্ব্বজাতীয় ধর্ম্মভাব প্রবেশ করায় জগৎ প্লাবিত হইবে।" "ভক্তি" এবং "ব্রহ্মানন্দ" এই শব্দ দ্বয় আমার কর্ণকুহরে প্রবেশ করিবামাত্র ভাবিলাম, ইহা তো ব্রহ্মলোকের কথা, অতএব এই খানেই ভক্তির আগমন হইয়া থাকিবে। এইরূপ মনে করিয়া আমি কিঞ্চিৎ অন্তরালে দণ্ডায়মান থাকিয়া নিরীক্ষণ করিতে লাগিলাম। দৃষ্ট হইল একটী অর্দ্ধাবগুণ্ঠনবতী যুবতী তথায় চপলার ন্যায় প্রকাশিত হইয়াই তৎক্ষণাৎ অন্তর্হিত হইলেন। তাঁহার সমাগমমাত্রেই যেন কাহার কাহার মুখে আশ্চর্য্য ভাবাবেশের ছায়া পড়িল আবার ক্ষণমধ্যেই তাহা বিলুপ্ত হইল। ঐন্দ্রজালিকের ন্যায় তাহার হাব ভাব লক্ষণাদি ভালরূপে বুঝিতে পারিলাম না। যদি কেহ

रहिये जिनको बिन जान सकें। मानवमात्र ही किसी न किसी रूपसे पूजा किया करता है, अथच न्याय औ प्रकृतार्थयुक्त श्रेयस्कर कार्य्य के अनुष्ठान करके जिन की सेवापूर्व्वक सत्य औ ज्ञान लाभका परिचय दिया करता है।" हा! इस भारतमित्र महात्माके मधुर वचन पढ़कर कौन भारतसन्तान की हृदयतन्त्री आनन्दसे न दलकर उठती है। भारत! उक्त साधुहृदय महोदयका सत्परामर्श पर ध्यान दीजिये।

श्रद्धास्पद श्रीमान् धर्म्मप्रचारकसम्पादक
मान्यवरेषु

तत्त्वजिज्ञासा।

आपके ४५ संख्यक धर्म्मप्रचारक में "पता नहीं मिलता" इस आशय की सूचना पढ़कर मालूम हुआ जो श्री श्री श्री ओंकाररूप पुरुषोत्तम जीने आपनी भार्य्याका पता लगानेके अर्थ संसार में सम्वाद घोषणा किया। उस में लिखा हुआ पुरस्कारके लालचसे मैं प्रच्छन्नभावसे अन्वेषण में प्रवृत्त हुआ। किसी एक स्थानके शोरगुलसे मेरा सन्देह उपजा, सो मैं प्रगट करता हूं। किसी स्थान में कितनेसे मनुष्य इकट्ठे होकर यह गुल-मचाते हैं "हम सबके मध्य में जब भक्तिका उदय हुआ" अब आओ हमलोग इस "नूतन विधान"के आश्रय लेकर ब्रह्मानन्दका उपभोग करते रहें, इस नवीन रीति को भक्तिप्रवाह में सर्व्व जातीय धर्म्मभाव आजानेपर जगत् प्लावित होनेवाली है।" "भक्ति" औ "ब्रह्मानन्द" ये दोशब्द मेरे कर्णकुहर में पैठने होसे मैंने सोचा किये तो ब्रह्मलोक की वार्त्ता हैं, मालूम होता है कि यहां ही भक्तिका शुभागमन हुआ। इतना विचारकर मैं किञ्चित् अन्तराल में खड़े खड़े देखने लगा। वहांसे यह देख पड़ा कि एक अर्द्धावगुण्ठनवती युवती चपलाके समान चमककर झट अन्तर्ध्यान होगयी। उनके समागम होसे ऐसा सूझ पड़ा कि किसी किसीके मुंहपर एक आश्चर्य्य भावावेश की छाया पड़ी, फिर क्षणभर होमें सब मिट गयी। इन्द्र-जालीके समान उनके भाव लक्षण आदि मैं कुछ भली भांति समझ न सका। यदि कोई उनको

তাঁহাকে চিনিতে পারেন আমি দেখাইয়া দিব। এক্ষণে প্রার্থনা এই আপনার বিজ্ঞাপকের প্রিয়তমার প্রকৃত লক্ষণ কি প্রকাশ করিলে অনুগৃহীত হইব এবং তাঁহার অনুসরণে প্রস্তুত থাকিব।

কস্যচিৎ তত্ত্বানুসন্ধায়ী

ব্রহ্মলোকবিনোদিনী ভক্তির যে স্থানে সমাগম হইবে সেই পরম পবিত্র ধাম পূর্ণানন্দের সৌগন্ধে আমোদিত হইবে। তাঁহার সমাগমমাত্রেই লোকমণ্ডলী অনন্যকর্ম্মা হইয়া একতান চিত্তে রাজা পরীক্ষিতের ন্যায় তাঁহার পতির গুণানুবাদ শ্রবণে অভিনিবিষ্ট হইবে; মুনিপুঙ্গব শুকদেবের ন্যায় তদ্গত চিত্তে হরিগুণকীর্ত্তনে নিমগ্ন হইয়া যাইবে, দৈত্যকুলপাবক প্রহ্লাদের ন্যায় নিষ্ঠার সহিত তন্নাম স্মরণ পরায়ণ থাকিবে. উদ্ধবের ন্যায় তৎপদ পরিসেবনে আপনাকে নিরন্তর কৃতার্থ মনে করিবে; অম্বরীষের ন্যায় নির্ম্মলভাবে তাঁহার অর্চ্চনায় প্রবৃত্ত হইবে; সুনীতিসুত ধ্রুবের ন্যায় তৎপদারবিন্দ বন্দনে আনন্দিত ও নিশ্চলচিত্ত থাকিবে; হনুমানের ন্যায় নারায়ণের দাসত্বে ব্রতী হইয়া ত্রিজগতের পরম পদ তুচ্ছ করিবে; অর্জ্জুনের ন্যায় তৎসহ সখ্যতা ও একহৃদয়তা স্থাপন করিবে এবং দানবদলতিলক বলির ন্যায় তাঁহাকে আত্ম নিবেদন করিয়া দিবে। যেখানে এই সকল লক্ষণ দৃষ্ট হইবে সেই খানেই জানিবেন বিষ্ণুবিলাসিনী প্রকৃত ভক্তির উদয় হইয়াছে। আরও দেখিবেন নৃত্য ও নিশ্চলতা হাস্য ও রোদন একত্রে অবিসম্বাদিতভাবে তাঁহার নিকট রহিয়াছে এবং আত্মবোধ ও বৈরাগ্য নামে তাঁহার পুষ্ট কলেবর প্রিয়পুত্র দ্বয় তাঁহার মঙ্গলময় হস্তদ্বয় ধারণ করিয়া বিচরণ করিতেছে এবং মুক্তি নাম্নী দাসী তাঁহার সেবায় সদাই তৎপর রহিয়াছে। সংক্ষেপে ভক্তির পরিচায়ক আর্য্যবাণীর প্রতিধ্বনি করিলাম। যদি ঈদৃশী ভক্তি প্রাপ্ত হয়েন তবে অবশ্যই আপনি বিজ্ঞাপনানুসারে পুরস্কার পাইবেন। কিন্তু সাবধান, ভক্তির ভাণকারিণী ভ্রমময়ী ভামিনীর কুহকমন্ত্রে বিমোহিত হইবেন না।

ধঃ, প্রঃ, সং।

पहचान सके तो मैं देखा दूंगा। अब आपसे मेरी यह प्रार्थना है, कि आपके विज्ञापक की प्रियतमाका लक्षण आदि लिखकर मुझे अनुगृहीत कीजिये, मैं ढूंड़ता रहूंगा।

कस्यचित् तत्त्वानुसन्धायी।

ब्रह्मलोकविनोदिनी भक्तिका समागम जहांहो होगा, वह परम पवित्र धाम पूर्णानन्द की सुगन्धतासे आमोदित हो जायगा। उनके समागम होनेहीसे लोकमण्डली अनन्यकर्म्मा होकर एकतान चित्तासे राजा परीक्षितके नाईं उनके पतिको गुणानुवाद श्रवण में अभिनिविष्ट होंगे; मुनिपुङ्गव शुकदेव जीके समान तद्गतचित्त होकर हरिगुणकीर्त्तन में निमग्न हो जाऊं; दैत्यकुल पावक प्रह्लादजीके नाईं निष्ठाके सहित उनके नाम स्मरण में तत्पर रहेङ्ग; उद्धवजीके समान उनके पादारविन्दको सेवा में अपनेको निरन्तर कृतार्थ मानेङ्ग; अम्बरीषके समान निर्मल रीतिसे उनकी अर्चना में प्रवृत्त होंगे। सुनीति महारानीके पुत्र ध्रुवजीके समान तत्पदारविन्द-वन्दनासे आनन्दित औ निश्चलचित्त रहेङ्ग; हनुमानजीके समान नारायणको दासत्व करतेहुए त्रिजगत्को परमपदको तुच्छ समझेङ्ग; अर्ज्जुनके समान सख्यता औ एकहृदयता उनसे स्थापन करेङ्ग औ दानव-दलतिलक बली राजाके नाईं उनके निकट आत्मनिवेदन कर देङ्ग। ये सब लक्षण जहां हो देख पड़ेङ्ग; जान लेना कि वहांही विष्णु विलासिनी प्रकृत भक्तिका उदय हुआ है। और यह भी देख लेना जो नृत्य औ निश्चलता, हास्य औ रोदन विन परस्पर विरोध किये, एकट्ठे उनके समीप रहे हैं और आत्मबोध वो वैराग्य नाम उनके दो पुष्टकलेवर प्रियपुत्र उनके मङ्गलमय हस्तद्वय धारण पूर्व्वक विचरते हैं औ मुक्तिनाम दासी उनकी सेवा में सदा ही तत्पर रही है। नें ने भक्तिको यह जाननेके अर्थ ऋषियोंको कही हुई वाणियों की प्रतिध्वनि संक्षेपसे कर दिया। यदि इस भक्तिका आप पाइये तो अवश्य ही विज्ञापनानुसार पुरस्कार आपके हाथ लगेगा, परन्तु इतना सावधान रहना कि भक्तिका भाण्ड करने वाली भ्रममयी भामिनीके मायामन्त्र में विमोहित न होइये। ध:, प्र:, सं।

প্রাপ্ত পুস্তকের সমালোচনা।

১। **ঊর্ম্মিলা-কাব্য।** শ্রীমদ্বাবু দেবেন্দ্র নাথ সেন প্রণীত। (মূল্য ।॰ চারি আনা মাত্র)। পতি-বিরহ-বিধুরা ঊর্ম্মিলার উক্তিমালা অমিত্রাক্ষরে, ফুলবালাদিগের বচন-মাধুরীতে মিশ্রিত হইয়া কাব্যখানি রচিত হইয়াছে। কাব্যের স্থানে স্থানে কবিকে ভাবসাগরের গভীর গর্ভে মগ্ন হইতে দেখিয়া আমরা অতীব আনন্দানুভব করিলাম। ফুলবালাদিগের সরল হাস্যবিকাশে ও অকপট ভাব মাধুর্য্যে কবিতাবলী যথোচিত মনোহর রূপ ধারণ করিয়াছে। কবির ভাবুকতা প্রশংসনীয়।

২। **যমলোক যাত্রা।** বৃন্দাবনস্থ শ্রীমন্মান্যবর রাধাচরণ গোস্বামী কর্ত্তৃক প্রণীত ও প্রকাশিত। মূল্য ৵॰ দুই আনা মাত্র। পুস্তিকাখানির প্রথমাংশ রহস্যজনক ও উপসংহারাংশ বীভৎসরসপূর্ণ নরককুণ্ডের দৃশ্যমালায় রচিত হইয়াছে। গোস্বামী মহাশয় যদি এতন্মধ্যে স্বর্গরাজ্যের বিবিধ স্তর ও তত্তৎ স্থান নিবাসীগণের অপূর্ব্ব সুখসৌভাগ্যের চিত্র দেখাইতেন তবে আমরা আরও আনন্দিত হইতাম, কেন না তাঁহার নায়ককে কেবল নরক দর্শন করিতে দেখিয়া, অতীব দুঃখিত হইলাম। তথাচ ইহা অবশ্যই স্বীকার করি, যে পাপাচারের বিষম পরিণাম দর্শনে অনেক পাঠকের চৈতন্যোদয় হইবে।

৩। **শিক্ষাসার।** বৃন্দাবনস্থ শ্রীমদ্রাধাচরণ গোস্বামী মহাশয়ের দ্বারা সংগৃহীত। মূল্য /॰ এক আনা মাত্র। ইহাতে সমীচীন ও পরম হিতজনক ১৫০ নীতি উপদেশ আর্য্যসাধারণ (হিন্দী) ভাষায় প্রকাশিত হইয়াছে। আবাল, বৃদ্ধ, ও স্ত্রীপুরুষাদি সকলেরই পাঠোপযোগী বলিতে হইবে, বিশেষতঃ বিদ্যাধ্যয়নশীল বালক মাত্রেরই সাবহিতচিত্তে ইহা পাঠ করা কর্ত্তব্য। ভাষা প্রশংসনীয় হইয়াছে।

৪। **শ্রীমতী সুমতি উপাখ্যান।** শ্রীমন্মান্যবর বাবু কালীপ্রসাদ চৌধুরী প্রণীত ও তৎকর্ত্তৃক মুঙ্গের হইতে প্রকাশিত। মূল্য ৵॰ দুই আনা মাত্র। ইহাতে নারীগণের চরিত্রের পবিত্রতা রক্ষার্থ সঙ্কেত করা হইয়াছে।

प्राप्त पुस्तकों की समालोचना।

१। **ऊर्म्मिला-काव्य।** श्रीमद्बाबु देवेन्द्र नाथ सेनजीका बनाया हुआ। मौल्य ।॰ चार आना मात्र। “फुलबालों की वचन-माधुरीसे मिलीहुई पति-विरह-विधुरा ऊर्म्मिला की कातरोक्ति समूह करके अमित्राक्षर में इस काव्य की रचना है। काव्यके किसी किसी स्थान में कवि की भाव-सागरके गभीर गर्भ में मग्न होते देखकर हम अतीव प्रसन्न हुए। फुलबाले सबके सरल हास्य विकाश औ छल कपटाईसे रहित मधुर भावसे कवितावली यथोचित मनोहर रूप धरी है। कवि की भावुकता अति प्रशंसनीय है।

२। **यमलोक की यात्रा।** वृन्दावनके श्रीमन्मान्यवर राधाचरण गोस्वामीजीसे बनायी औ प्रकाश की गयी है। मौल्य केवल ⁄)। इस पुस्तकके प्रथमांश रहस्यजनक औ अन्तभाग बीभत्स रससे पूर्ण नरककुण्डके दृश्य समूहसे रचे गये हैं। गोस्वामी जी यदि इस में स्वर्गराज्यके भान्ति भान्तिके शोभायुक्त धाम औ तत्तत् स्थान निवासीगणके अपूर्व्व सुखसौभाग्यका चित्र देखाते तो हम औरभी प्रसन्न होते क्यों कि उनके नायकको केवल नरक देखते ही देखकर हम अत्यन्त दुःख माने। तथाच हम यह अवश्य ही अङ्गीकार करते हैं जो पाप कर्म्मका परिणामफल देखकर बहुतेरे पाठक सज्जन सचेत होंगे।

३। **शिक्षासार।** वृन्दावनके श्रीमद्राधाचरण गोस्वामीजीका संग्रह किया हुआ। मौल्य /) मात्र। इस में समीचीन औ परम हित जनक १५० नीतिपूर्ण उपदेश, भाषा में प्रकाशित हुआ हैं। आबाल वृद्ध औ स्त्रीपुरुषादि सबके पठनोपयोगी हुआ, विशेषतो विद्याभ्यासी हरेक बालकको सावहितचित्ततासे पढ़नाही चाहिये। रचना प्रशंसनीय हुई है।

४। **श्रीमति सुमतिका उपाख्यान।** श्रीमन्मान्यवर बाबु कालीप्रसाद चौधूरी जीसे बनाकर मुङ्गेरसे प्रकाश किया है। मौल्य ⁄) मात्र। नारियोंके चरित्र की पवित्रता रक्षार्थ सङ्केत इस में कियागया है। स्त्रीमात्र ही

শিক্ষিতা ও অশিক্ষিতা স্ত্রীমাত্রেই এক এক বার ইহা অভিনিবেশ পূর্ব্বক পাঠ বা শ্রবণ করিলে, অবশ্যই উপকার বোধ করিবেন। আজ কাল নাটক ও নবন্যাসে বঙ্গদেশ আচ্ছন্ন হইয়া গেল, কিন্তু সরলভাবে চরিত্র সংগঠনের উপদেশসূচক পুস্তক অতি অল্পই দেখিতে পাওয়া যায়। ভারতনারীর একমাত্র অমূল্য নিধি "সতীত্ব" রক্ষার সদুপদেশ দানের প্রবৃত্তি জন্য মাননীয় কালীপ্রসাদ বাবুকে আমরা ভূরি ভূরি ধন্যবাদ দিলাম।

৫। উপদেশামৃত। বৃন্দাবনস্থ শ্রীমন্মান্যবর মধুসূদন গোস্বামী মহাশয় কর্ত্তৃক দেবনাগরাক্ষরে মূল ও ভাষা প্রকাশিত হইয়াছে। ১১টী মাত্র সরল সংস্কৃত শ্লোকে কৃষ্ণভক্তির উদ্দীপনা, লক্ষণ ও ভাবাদি পাঠ করিয়া বিশেষ আনন্দলাভ করিলাম। মানব হৃদয়ের কোমল ভাব ভক্তির শিক্ষা দানে গোস্বামী মহাশয় প্রযত্নবান দেখিয়া, চিত্ত প্রফুল্ল হইল। ভাষা উত্তম হইয়াছে।

কৃতজ্ঞতাসহকারে ৪র্থ বর্ষের মূল্যপ্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীমদ্বাবু	আখরী কাঁদজী প্রসাদ,	বরহারোয়া	৩৵০
,,	কেদারনাথ মিত্র,	রামপুরহাট	৩৵০
,,	কালীপ্রসাদ চৌধুরী,	মুঙ্গের,	৩৲
,,	মহেন্দ্রনাথ রায়.	ঐ	৩৲
,,	বুলাকীলাল মহাজন,	ঐ	৩৲
,,	পার্ব্বতীচরণ নন্দী,	জামালপুর,	২৲
,,	জানকীনাথ ভট্টাচার্য্য	ঐ	২৲
,,	বৈদ্যনাথ বরাট	ঐ	২৲
,,	কেদারনাথ রায় (শঃ ১৮০৩)	কলিকাতা	২।৵০
শ্রীমৎ	পণ্ডিত কৃষ্ণ চন্দ্র রায়,	আই হাই	২।৵০
শ্রীমদ্বাবু	মধুসূদন চৌধুরী,	হাবড়া	২।৵০
,,	শম্ভুচন্দ্র বিশ্বাস	মুঙ্গের	১৲
,,	পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়, (শঃ১৮০২)	কলিকাতা	১।
,,	[illegible] ঘোষ, (শঃ ১৮০২—৩)	ঐ	২৸০
,,	শরচ্চন্দ্র ঘোষ, (শঃ ১৮০২—৩)	ঐ	১।৵০
,,	অবিনাশ চন্দ্র দে, (ঐ)	ঐ	২৸০
,,	জ্ঞানেন্দ্র নাথ গুপ্ত,	ঐ	১।৵০
,,	কান্তিচন্দ্র মুখোপাধ্যায়,	ঐ	১।৵০
,,	বংশী লাল,	ভগলপুর	১।৵০
,,	রঘুনাথ সহায়,	ঐ	১।৵০
,,	হরিপ্রসাদ মিশ্র,	ঐ	১।৵০
,,	কিশোর লাল মিশ্র,	ঐ	১।৵০
,,	হেমচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	লক্ষৌ	১।৵০
,,	গঙ্গাদাস ঐ, (শঃ১৮০২)	মুরসিদাবাদ	১।৵০
,,	শ্যামলাল সাহ,	রাজমহল	১।৵০
,,	ক্ষেত্রনাথ ঘোষ,	আসনসোল	১।৵০
,,	সারদাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায়,	ময়াহুমকা	১।৵০
,,	বিপিন চন্দ্র রায়,	কালীগঞ্জ	১।৵০

चाहे शिक्षिता वा अशिक्षिता हो, एक एक वार भी वे यदि दत्तचित्त हुए पढ़े वा सुने तो अवश्य ही कुछ उपकार मिलेगा। आज कल नाटक नवन्यासोंसे वङ्गदेश छाय गया, किन्तु, सरल रीतिके साधु चरित्र निर्म्माणके अर्थ उपदेशपूर्ण पुस्तक अति अल्प ही देखने में आती है। भारत-नारीके एकमात्र अनमोल्य निधि "सतीत्व" की रक्षा हेतु सदुपदेश दानार्थ प्रवृत्ति जन्य माननीय कालीप्रसाद बाबुको हम भूरि भूरि धन्यवाद दिये।

५। उपदेशामृत। वृन्दावनके श्रीमन्मान्यवर मधुसूदन गोस्वामीजीने देवाक्षर में मूल औ भाषा प्रकाश किया है। केवल ११ सरल संस्कृतावद्ध श्लोक में कृष्ण-भक्ति की उद्दीपना, लक्षण औ भावादिके पठनसे हम बड़े प्रसन्न हुए। मानव-हृदयके कोमल भावभक्ति की शिक्षादान में गोस्वामी जीको प्रयत्न करते हुए देखकर चित्त-प्रफुल्ल माना। भाषा उत्तम हुई है।

कृतज्ञतापूर्व्वक ४र्थ वर्षकी मूल्यप्राप्ति स्वीकार।

श्रीमद्बाबु	आखोरी कान्दजीप्रसाद,	बरहरोआ	३।=
,,	केदारनाथ मित्र,	रामपुरहाट	३।=
,,	कालीप्रसाद चौधुरी,	मुङ्गेर	३)
,,	महेन्द्रनाथ राय,	,,	३)
,,	बुलाकीलाल, महाजन	,,	३)
,,	पार्व्वतीचरण नन्दी,	जामालपुर	२)
,,	जानकीनाथ भट्टाचार्य्य,	,,	२)
,,	वैद्यनाथ वराट,	,,	२)
,,	केदारनाथ राय,	कलकत्ता	२।=
,,	शम्भुचन्द्र विश्वास,	मुङ्गेर	२)
श्रीमत्पण्डित	कृष्णचन्द्र राय,	आइहाइ	२।=
श्रीमद्बाबु	मधुसूदन चौधुरी,	हावड़ा	२।=
,,	पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय, (श:१८०२)	कलकत्ता	१।=
,,	बेणीलाल घोष, (श: १८०२-३)	,,	२॥।
,,	शरच्चन्द्र घोष, (श: १८०२)	,,	१।=
,,	अविनाशचन्द्र दे, (,, ३)	,,	२॥।
,,	ज्ञानेन्द्रनाथ गुप्त,	,,	१।=
,,	कान्तिचन्द्र मुखोपाध्याय,	,,	१।=
,,	बंशीलाल,	भागलपुर	१।=
,,	रघुनाथ सहाय,	,,	१।=
,,	हरिप्रसाद मिश्र,	,,	१।=
,,	किशोरलाल मिश्र,	,,	१।=
,,	हेमचन्द्र वन्द्योपाध्याय,	लखनौ	१।=
,,	गङ्गादास, ,, (श: १८०२)	मुरशिदाबाद	१।=
,,	श्यामलाल साह,	राजमहल	१।=
,,	क्षेत्रनाथ घोष,	आसेनशोल	१।=
,,	शारदाप्रसाद मुखोपाध्याय,	मयाडुमका	१।=
,,	विपिनचन्द्र राय,	कालीगञ्ज	१।=

শ্রীমদ্বাবু মথুরানাথ ঘোষ,	গাইবান্ধা	১।৵০
,, রত্নগোবিন্দ চৌধুরী,	করিমগঞ্জ	১।৵০
,, শ্রীমন্ত রায় কবিরাজ,	ভবানীগঞ্জ	১।৵০
,, দীননাথ দাস, (শ: ১৮০২)	শ্রীহট্ট	১৵০
,, কালীদাস মুখোপাধ্যায়,(শ: ১৮০২-৩) কলিকাতা		২৸০
,, রাসবিহারী বসাক (শ: ১৮০২)	ঐ	১।৵০
,, মতিলাল সেন,	মুরশিদাবাদ	১।৵০
,, মহিমাচরণ আচার্য্য,	ঐ	১।৵০
,, জগচ্চন্দ্র রায়,	ঐ	১৵০
,, কৈলাশচন্দ্র রায়,	ঐ	১।৵০
,, কৃষ্ণচন্দ্র বসু,	ঐ	১।৵০
,, তারাদাস চট্টোপাধ্যায়,	দুনগ্রাম	১।৵০
,, নীলমোহন মুখোপাধ্যায়,	বাঁকা	১।৵০
,, কৃষ্ণেন্দ্রনাথ সরকার, জমীদার,	মাদলা	১৵০
,, তারাপ্রসাদ রায় চৌধুরী,	দুবরাজপুর	১।৵০
,, গোপাল গোবিন্দ চৌধুরী, জমিদার ইন্দানগর		১।৵০
,, দীন নাথ প্রামাণিক,	ভদ্রেশ্বর	১।৵০
,, অঘোরানন্দ চট্টোপাধ্যায়,(শ:১৮০২) বননবগ্রাম		১।৵০
,, রামমোহন আদিত্য চৌধুরী,	করিমগঞ্জ	১৵০
,, রাধাগোবিন্দ দত্ত,	ঐ	১।৵০
,, গৌরীচরণ আদিত্য,	ঐ	১।৵০
,, রাধামোহন দাস,	মালদহ	১।৵০
,, কৃষ্ণ কিশোর দত্ত,	কেশবপুর (শ্রীহট্ট)	১।৵০
,, আশুতোষ মুখোপাধ্যায়,	সারণ	১৵০
শ্রীমৎপণ্ডিত রাজচন্দ্র চক্রবর্ত্তী,	হবিগঞ্জ	১৵০
শ্রীমদ্বাবু প্যারে লাল,	পাঁচমারী (মধ্য প্রদেশ)	১৵০
,, প্রমথ নাথ ঘোষ,	অহম্মদনগর	১।৵০
,, বগলাপ্রসাদ রায়,	দারজিলিং	১।৵০
,, প্যারীমোহন গোস্বামী,	মোনাখালি	১।৵০
,, ভুবনমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়,	পুপুরিয়া	১।৵০
,, কৈলাশচন্দ্র নিয়োগী,	বারিলা	১।৵০
,, রাধিকাপ্রসাদ সিংহ,	জয়পুর	১।৵০
,, মধুসূদন ভট্টাচার্য্য,	পাকুড়	১৴
,, বলরাম পাল,	ঐ	১।৵০
,, বিষ্ণুনারায়ণ দাস,	বীরভূম	১৵০
,, রমণীমোহন দাস,	নয়াসরক	১।৵০
শ্রীমান্ পণ্ডিত জগন্নাথ,	ছুঁসিয়ারপুর	১।৵০
শ্রীমদ্বাবু পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট	১।০
,, ধর্ম্মদাস মুখোপাধ্যায়,	ঐ	১।০
,, চুনীলাল মুখোপাধ্যায়,	ঐ	১।০
,, বিশ্বেশ্বর ঘোষ,	ঐ	১।০
,, সারদাপ্রসাদ রায়,	ঐ	১।০
,, হারাধন সেন,	ঐ	১।০
,, জগদ্বন্ধু দাস,	ঐ	১।০
,, ব্রজনাথ বসু,	ঐ	১।০
,, যোগেশচন্দ্র রায়,	ঐ	১।০
,, মতিলাল চট্টোপাধ্যায়,	ঐ	১।০

श्रीमद्बाबु मथुरानाथ घोष,	गाइबन्धा	१।=
,, रत्नगोविन्द चौधुरी,	करिमगञ्ज	१।=
,, श्रीमन्त राय कविराज,	भवानीगञ्ज	१।=
,, दीननाथ दास, (श: १८०२)	श्रीहट्ट	१।=
,, कालीदास मुखोपाध्याय (श १८०२-३) कलकत्ता		२≡
,, रासविहारी वसाक, (श: १८०२)	,,	१।=
,, मतिलाल सेन,	मुरशीदाबाद	१।=
,, महिमाचरण आचार्य्य,	,,	१।=
,, जगच्चन्द्र राय,	,,	१।=
,, कैलाशचन्द्र राय,	,,	१।=
,, कृष्णचन्द्र वसु,	,,	१।=
,, ताराद्दास चट्टोपाध्याय,	दुलग्राम	१।=
,, नीलमोहन मुखोपाध्याय,	बांका	१।=
,, कृष्णेन्द्रनाथ सरकार, जमींदार,	मादला	१।=
,, ताराप्रसाद रायचौधरी,	दुबराजपुर	१।=
,, गोपालगोविन्द चौधुरी, जमींदार, इन्द्रनगर		१।=
,, दीननाथ प्रामाणिक,	भद्रेश्वर	१।=
,, अघोरानन्द चट्टोपाध्याय, (श: १८०२)	बननबग्राम	१।=
,, राममोहन आदित्यचौधुरी,	करिमगञ्ज	१।=
,, राधागोविन्द दत्त,	,,	१।=
,, गौरीचरण आदित्य,	,,	१।=
,, राधामोहन दास,	मालदह	१।=
,, कृष्णकिशोर दत्त,	केशवपुर (श्रीहट्ट)	१।=
,, आशुतोष मुखोपाध्याय,	सारण	१।=
श्रीमत्पण्डित राजचन्द्र चक्रवर्त्ती,	हबिगञ्ज	१।=
श्रीमद्बाबु प्यारेलाल, पाञ्चमारी,	(मध्यप्रदेश)	१।=
,, प्रमथनाथ घोष, अहम्मदनगर (दक्षिणदेश)		१।=
,, बगलाप्रसाद राय,	दारजिलिं	१।=
,, प्यारीमोहन गोस्वामी,	मोनाखाली	१।=
,, भुवनमोहन बन्द्योपाध्याय,	पुकुरिया	१।=
,, कैलाशचन्द्र नियोगी,	बारिला	१।=
,, राधिकाप्रसाद सिंह,	जयपुर	१।=
,, मधुसुदन भट्टाचार्य्य,	पाकौड़	१)
,, बलराम पाल,	,,	१।=
,, विष्णुनारायण दास,	वीरभूम	१।=
,, रमणीमोहन दास,	नयासरक	१।=
श्रीमान् पण्डित जगन्नाथ,	हौंशीयारपुर	१।=
श्रीमद्बाबु पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट	१।
,, धर्म्मदास मुखोपाध्याय,	,,	१।
,, चुन्नीलाल,	,,	१।
,, विश्वेश्वर घोष,	,,	१।
,, सारदाप्रसाद राय,	,,	१।
,, हाराधन सेन,	,,	१।
,, जगद्बन्धु दास,	,,	१।
,, ब्रजनाथ वसु,	,,	१।
,, मतिलाल चट्टोपाध्याय,	,,	१।

শ্রীমদ্বাবু	হরিদাস মুখোপাধ্যায়,	রামপুরহাট	১।০
,,	ধনকৃষ্ণ বিশ্বাস,	ঐ	১।০
,,	দীননাথ পাত্র,	ঐ	১।০
,,	মহেন্দ্রনাথ ঘোষ,	মুঙ্গের	১৻
,,	নবীনচন্দ্র সরকার,	ঐ	১৻
,,	রামচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়,	জামালপুর	১৻
,,	রামলাল চট্টোপাধ্যায়,	ঐ	১৻
,,	নেপালচন্দ্র সেন,	ঐ	১৻
,,	বিপিনবিহারী মজুমদার,	ঐ	১৻

বিদেশীয় এজেন্টগণের নাম।

শ্রীযুক্ত বাবু	পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	বাঁকিপুর।
,, ,,	যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	নতিহারী।
,, ,,	জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর।
,, ,,	পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট্।
,, ,,	ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্ত্তী এম্, এ, বিএল,	গয়া।
,, ,,	বিহারিলাল রায়,	জামালপুর।
,, ,,	রমেশচন্দ্র সেন,	ঐ
,, ,,	উপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়,	ঐ
,, ,,	রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিগ্রাম।

উপরোক্ত এজেন্ট মহোদয়গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয়গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব।

ধর্ম্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী।

১। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা আর্য্যধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারবান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহসহকারে ধর্ম্মপ্রচারকে প্রকাশ করিব।

২। ধর্ম্মপ্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি মুঙ্গের "আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভায়," আমার নামে পাঠাইতে হইবে। পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মনিঅর্ডারে, পাঠাইবেন। ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন।

৪। ধর্ম্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১৩ সংখ্যা হইতে ডাকব্যয়সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার হইয়াছে।

উত্তম কাগজে,	বার্ষিক	৩।৵০,	প্রতিখণ্ড	।৵০
মধ্যম ঐ	,,	২।৵০	,,	।০
সাধারণ ঐ	,,	১।৵০	,,	৵০

মুঙ্গের, আর্য্যধর্ম্ম-প্রচারিণী সভা } শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন। সম্পাদক।

☞ এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

श्रीमद्बाबु	हरिदास मुखोपाध्याय,	रामपुरहाट	१।
,,	धनकृष्ण विश्वास,	,,	१।
,,	दीननाथ पात्र,	,,	१।
,,	महेन्द्रनाथ घोष,	मुङ्गेर	१)
,,	नवीनचन्द्र सरकार,	,,	१)
,,	रामचन्द्र भट्टाचार्य्य,	जामालपुर	१)
,,	रामलाल चट्टोपाध्याय,	,,	१)
,,	नेपालचन्द्र सेन,	,,	१)
,,	विपिनविहारि मजुमदार,	,,	१)

विदेशके एजेण्ट सबका नाम।

श्रीयुक्त बाबु	पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय,	बांकीपुर।
,, ,,	यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	नतिहारी।
,, ,,	जगद्बन्धु सेन,	लाहोर।
,, ,,	पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट।
,, ,,	इन्द्रनारायण चक्रवर्त्ती, एम् ए, बिएल	गया।
,, ,,	विहारीलाल राय,	जामालपुर।
,, ,,	रमेशचन्द्र सेन,	जामालपुर।
,, ,,	उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय,	जामालपुर।
,, ,,	राधिकानाथ गोस्वामी,	कलिग्राम।

उपरोल्लिखित एजेण्ट महोदयोंके पास तत्तत् स्थानके ग्राहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मैं पाऊंगा।

धर्म्मप्रचारकसम्बन्धी नियमावली।

१। यदि कोई धर्म्मात्मा आर्य्यधर्म्म की प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करनेके निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओंमें कोई प्रबन्ध लिखके भेजें तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होनेसे आनन्द औ उत्साह सहित धर्म्मप्रचारक में प्रकाश कियाजायगा।

२। धर्म्मप्रचारक पत्रके मोल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मुङ्गेर "आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके" पतेमें मेरे पास भेजने होगा। पत्र बैरिं होतो नहीं लिया जायगा।

३। मोल सम्भवतः पोष्टाल मनि आर्डार करके भेजना। यदि डाक टिकिट में भेजें तो आध आनिया टिकिट करके भेज देवें।

४। धर्म्मप्रचारक १म भाग, १३ संख्यासे डाकखर्च सहित अग्रिम वार्षिक मोल तीन प्रकार हुआ।

उत्तम कागजपर,	वार्षिक	३।/	प्रतिसंख्या	।/
मध्यम ,,	,,	२।/	,,	।०
साधारण ,,	,,	१।/	,,	=

मुङ्गेर, आर्य्यधर्म्म-प्रचारिणी सभा। } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन सम्पादक।

☞ यह पत्र हर पूर्णिमा में मुङ्गेर आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके उत्साहसे प्रकाशित होता है।

☞ *Printed by B. M. Chakravorti, At the B. P. M's Press, No. 22, Jhamapooker Lane, Calcutta*

Published by Kumar Srikrishna Prosanna Sen, at Monghyr Aryadharmaprocharinee Sabha,

“একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥”

৪র্থ ভাগ। } শকাব্দাঃ ১৮০৩।
৪৮ সংখ্যা। } আশ্বিন—পূর্ণিমা।

“एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समन्नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति॥”

४र्थ भाग। } शकाब्द १८०२।
४८ संख्या। } आश्विन—पूर्णिमा।

পরমার্থ সার।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর।)

গুণকরণগণশরীর প্রাণৈস্তন্মাত্রজাত সুখদুঃখৈঃ।
অপরামৃষ্টাব্যাপী চিদ্রূপোহং সদা বিমলঃ॥ ৬২॥

সত্বাদি তিন গুণ, চক্ষু, কর্ণ, নাসাদি দশ ইন্দ্রিয়, স্থূল সূক্ষ্মাদি তিন শরীর এবং প্রাণাপানাদি পঞ্চ বায়ু আদি জাত সুখ দুঃখ আমাকে স্পর্শ করিতে পারে না। আমি সর্ব্বব্যাপী সদা নির্ম্মল চৈতন্য স্বরূপ।

অনেকের এইরূপ সিদ্ধান্ত যে “আমি ব্রহ্ম” ইত্যাকার চিন্তা করা অতীব ঘৃণিত ও অহংকার-মূলক। ঈদৃশ সিদ্ধান্ত অতীব অপরিণত বুদ্ধি বিজৃম্ভিত বলিতে হইবে। সাধারণ অহংমমেতির দুর্গন্ধ দূষিত বায়ু যত দূর গমন করে আত্মজ্ঞানোপ-দেশের “অহং” শব্দ সে রাজ্যের সীমার বহির্ভূত। আত্মজ্ঞানবিমূঢ় জীব। “আমি” বলিবামাত্রই তুমি যত দূর ভাবরাজ্যে প্রবিষ্ট হইলে, আত্মজ্ঞ পুরুষের “আমি” তথা হইতে অলক্ষ্য স্থানের রত্নভাণ্ডার

परमार्थ सार।

(पूर्ब्ब प्रकाशितके आगे)

गुणकरणगण शरीरप्राणैस्तन्मात्रजातसुखदुःखैः।
अपरामृष्टा व्यापी चिद्रूपोहं सदा विमलः॥६२॥

सत्व आदि करके तीन गुण, चक्षु, कर्ण, नासा, आदि दश इन्द्रियों, स्थूल, सूक्ष्म आदि तीन शरीर औ प्राणापानादि पञ्च वायु आदिसे जन्मे हुए सुख वो दुःख मुझे स्पर्श नहीं कर सक्ते हैं। मैं सर्व्वव्यापी वो सदा निर्म्मल चैतन्यरूप हूं।

बहुतेरेका यह सिद्धान्त है, जो “मैं ब्रह्म हूं” इस भान्ति चिन्ता करना अतीव घृणित औ अहङ्कारसूचक है। यह सिद्धान्त अत्यन्त अपरिणत बुद्धिका ऐसा सूचित होता है। साधारण अहं ममेति रूप दुर्गन्ध-दूषित वायु जहांतक जाया करता है आत्मज्ञानोपदेशका “अहं” शब्द उस राज्य की सीमाका वाहर है। हे आत्म-ज्ञान-विमूढ़ जीव! “मैं” इस शब्दको सुनते ही तुम जहांतक भावराज्य में प्रविष्ट हुआ, आत्मज्ञ पुरुष का “मैं” वहांसे दृष्टिके वाहर स्थानके रत्नभाण्डार

হইতে নির্গত হইতেছে জানিবে তোমার "আমি" ও আত্মজ্ঞের "আমি" দুইটী অতীব স্বতন্ত্র পদার্থ।

দ্রষ্টা শ্রোতা ঘ্রাতা স্পর্শয়িতা রসয়িতা গৃহীতা চ।
দেহী দেহেন্দ্রীয়ধী বিবর্জ্জিতঃ স্যান্নকর্ত্তাসৌ ॥ ৬৩॥

যে জীবকে দ্রষ্টা, শ্রোতা, ঘ্রাণকর্ত্তা, স্পর্শয়িতা, রসাস্বাদনকর্ত্তা বা গ্রহণকর্ত্তা বলিয়া বোধ হইয়া থাকে, তাহা বাস্তবিক দেহ বা ইন্দ্রিয় ধর্ম্ম বিবর্জ্জিত, সুতরাং তিনি কিছুই করেন না।

সূক্ষ্ম জ্ঞানের অভাব প্রযুক্ত দেহেন্দ্রিয়াদির ক্রিয়া জীবাত্মাতে আরোপিত হইয়া থাকে। আত্ম বিচারণা ভিন্ন এ ভ্রম বিদূরিত হইবার উপায় নাই।

একোনৈকত্রাবস্থিতোহমৈশ্বর্য্যো গতো ব্যাপ্তঃ।
ব্যাপ্যাকাশবদখিলং ন কশ্চিদত্রাস্তি সন্দেহঃ ॥৬৪॥

আত্মা এক হইয়া অহং রূপ ঐশ্বর্য্য গুণে সর্ব্বত্রই অবস্থিত এবং আকাশের ন্যায় সর্ব্বত্রই ব্যাপ্ত, ইহাতে আর কিঞ্চিন্মাত্রও সন্দেহ নাই।

আত্মৈবেদং সর্ব্বং নিষ্কলসকলং যদৈব ভাবয়তি।
মোহ গহনাদ্বিমুক্তস্তদৈব পরমেশ্বরো ভবতি ॥ ৬৫ ॥

নিষ্কল বা কলাযুক্ত যাহা কিছু বিদ্যমান আছে সমস্তই আত্ম সত্বাময়, এই রূপ চিন্তা দ্বারা যখন বস্তু বুদ্ধির উদয় হইবে, তখন জীব মোহমলা মুক্ত হইয়া স্বয়ং ঈশ্বর পদ লাভ করিবে।

সিদ্ধান্তাগমতর্কাদিষু ভ্রমন্তি যে যদ্রাগান্ধাঃ।
অনুমোদামস্তেষাং সর্ব্বাত্মবাদিধিয়া ॥ ৬৬ ॥

বিষয়ানুরাগে অন্ধ হইয়া যাহারা সিদ্ধান্ত, আগম, তর্কাদি শাস্ত্রের জ্ঞানাভিমানে উন্মত্ত, আমরা আত্মবাদ-বুদ্ধি দ্বারা তাহাদিগেরও প্রতি প্রসন্ন থাকি।

আত্মতত্বজ্ঞ পুরুষের যখন আত্মদৃষ্টি বলবতী হয়, কোন জীবে বা কোন পদার্থে বা কুত্রাপি তাঁহার ভেদ বুদ্ধি বা অসন্তোষের উদয় হইবার সম্ভাবনা নাই। আমিই সর্ব্বত্রে ও সমস্তই আমাতে ঈদৃশ ওতঃপ্রোতভাবে আত্ম দর্শন হইলে জীবের শত্রু, মিত্র, উচ্চ, নীচ, লঘু, গুরু, শুভ, অশুভ, উৎকৃষ্ট, নিকৃষ্ট, ত্যাজ্য, গ্রাহ্য, আত্মীয়, অপর আদি বিকৃত ভাব বিদূরিত হইয়া যায়। আত্মজ্ঞগণ আপনাতে যাদৃশ অভিরমণ করিতে

से निगल रहा है जानना। तेरा "मैं" और आत्मज्ञ पुरुषका "मैं" येदो अतीव स्वतन्त्र पदार्थ हैं।

द्रष्टा श्रोता घ्राता स्पर्शयिता रसयिता गृहीता च।
देही देहेन्द्रियधी विवर्जितः स्यान्न कर्त्तासौ ॥६३॥

जिन जीवको द्रष्टा, श्रोता, घ्राणकर्त्ता, स्पर्शयिता, रसास्वादनकर्त्ता वा ग्रहणकर्त्ता करके सूचित होता है, वे वास्तव में देह वो इन्द्रिय-धर्म्मसे रहित हैं, सुतरां वे कोइ कार्य्य नहीं करते हैं।

सूक्ष्म ज्ञानके अभाव करके शरीर वो इन्द्रियों की क्रिया सब जीवात्मा पर डाली जाती हैं। बिन आत्म विचार किये यह भ्रम कभी छुटनेवाला नहीं।

एको नैकत्रावस्थितोऽहमैश्वर्य्यो गतो व्याप्तः।
व्याप्याकाशवदखिलं न कश्चिदत्रास्ति सन्देहः ॥६४॥

आत्मा एकमात्र होए भी अहंरूप ऐश्वर्य्य करके सर्व्वत्र ही स्थित हैं औ आकाशके समान सर्व्वत्र ही व्याप्त हैं, इस में कुछ भी सन्देह नहीं।

आत्मैवेदं सर्व्वं निष्कलसकलं यदैव भावयति।
मोहगहनाद्विमुक्तस्तदैव परमेश्वरो भवति ॥ ६५ ॥

कलासे रहित वा कलासे युक्त जो कुछ विद्यमान है, समस्त ही आत्मसत्वासे पूर्ण है, इस भान्ति चिन्ता करके जब वस्तु-बुद्धिका उदय होगा उस समय जीव मोहरूप मलीनतासे मुक्त होकर स्वयं ईश्वरपद प्राप्त होगा।

सिद्धान्तागमतर्कादिषु भ्रमन्ति ये यद्रागान्धाः।
अनुमोदामस्तेषां सर्व्वात्मवादि धिया ॥ ६६ ॥

विषयके अनुरागसे अन्ध होकर जितने लोग सिद्धान्त, आगम, तर्क आदि शास्त्रोंके ज्ञानाभिमानसे उन्मत्त हैं, हम आत्मवाद बुद्धि करके उनपर भी प्रसन्न रहते हैं।

आत्मतत्वके जाननेवारे पुरुष की आत्मदृष्टि जब तेज होजाती है, उस समय किसी जीव में वा कोइ पदार्थ में वा किसी स्थान में उनको भेदबुद्धि वा असन्तोषका उदय होना सम्भव नहीं। मैं ही सर्व्वत्र, औ सब ही मुझ में इस भान्ति ओतप्रोत भावसे आत्मदर्शन होनेपर जीवका शत्रु, मित्र, उच्च, नीच, लघु, गुरु, शुभ, अशुभ, उत्कृष्ट, निकृष्ट त्याज्य, ग्राह्य, अपना बेगाना आदि विकृत भाव छुट जाता है। आत्मज्ञानी पुरुषगण अपने में जिस भान्ति अभिरमण करते रहते हैं

থাকেন অন্যত্রও তাদৃশ অভিরতি প্রযুক্ত কাহারও প্রতি অপ্রসন্ন হয়েন না।

ক্রমশঃ।

আর্য্যশাস্ত্র বিজ্ঞান।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর।)

দর্শনজাতীয় গ্রন্থ ভিন্ন সংস্কৃত ভাষার নিখিল গ্রন্থই ছন্দ বন্ধনে গ্রথিত; কিন্তু আধুনিক কাব্যাদি গ্রন্থে কৃত্রিম ছন্দঃই অধিক দেখিতে পাওয়া যায়, কেবল মাত্র বেদেরই সর্ব্বাঙ্গে—গায়ত্র্যাদি অকৃত্রিম ছন্দঃ পরিদৃষ্ট হয়। এজন্য অনুমিত হয় যে, বেদ সঙ্কলনের পর কেবল বৈদিক ছন্দঃ সকল বোধের নিমিত্তই প্রাচীন ছন্দঃশাস্ত্রের অবতারণা হইয়াছে। অতএব ছন্দঃশাস্ত্র বেদের অঙ্গ বলিয়া পরিগণিত। বাস্তবিক তদ্দ্বারা অন্যান্য ছন্দোযুক্ত গ্রন্থেরও উপকারিতা হয়।

এক্ষণে আমাদের আলোচ্য এই যে, ছন্দের প্রয়োজন কি, এবং উহা স্বভাবসিদ্ধ একটি বৈজ্ঞানিক বিষয় কি না। ছন্দের বৈজ্ঞানিকতা এবং স্বাভাবিকত্বের প্রমাণ হইলে বেদাঙ্গতাও সপ্রমাণীকৃত হইতে পারে।

ছন্দের প্রথম প্রয়োজন ভাবোদ্ভাসন। ছন্দোদ্বারা বক্তার অন্তঃকরণগত ভাবের উদ্ভাসন হয়, এবং শ্রোতার মনে সেই ভাব সঞ্চারিত হইয়া প্রকৃতার্থ বোধের উদ্ভাসন করে। বক্তা—বিশেষতঃ অন্য কর্তৃক গ্রথিত বাক্‌প্রবন্ধের বক্তা—নিজ চিত্তে যে ভাবের উদ্ভব হইলে বাক্যাবলীর উচ্চারণ করেন, ছন্দঃ সেই ভাবকে পরিণত করিয়া শ্রোতৃ চিত্তে সঞ্চারিত করে।

বক্তা ছন্দোরহিতবাক্য প্রয়োগ করিলে তদ্দ্বারা তাহার অন্তঃকরণগত ভাবের উদ্রেক না হওয়ায় শ্রোতৃচিত্তে সেই ভাবের উদয় হইতে পারে না। বক্তা যে ভাব বা ক্রিয়াবিশিষ্ট হইয়া বাক্যে প্রবৃত্ত হয়, সেই ক্রিয়া বা ভাব বাক্‌ক্রিয়ার সহিত মিলিত হইলেই ছন্দের উদ্ভব হয়। সুতরাং শ্রোতার মনে সেই ভাবের আবির্ভাব হয়।

বাক্য যে সঞ্চারশীল ক্রিয়া তাহা সকলেই বিদিত আছেন। উহা "ক্রিয়া" পদার্থ না হইলে

अन्यत्र भी ताहृश अभिरतिके कारण किसीपर अप्रसन्न नहीं रहते हैं। शेष आगे।

आर्य्य शास्त्र-विज्ञान।

(पूर्व्व प्रकाशितके आगे)

"दर्शन" श्रेणीके ग्रन्थ छोड़कर संस्कृत भाषाके समस्त ग्रन्थ ही छन्दबन्ध करके लिखित हैं। किन्तु अधुनिक काव्य आदि ग्रन्थों में अधिकांश ही कृत्रिम छन्दः देख पड़ते हैं, केवल वेदहीके सर्व्वाङ्ग में गायत्री आदि अकृत्रिम छन्दः दृष्ट होता है। इससे सूचित होता है जो वेद सङ्कलनके अनन्तर केवल वैदिक छन्दःके बोधार्थ प्राचीन छन्दः शास्त्र की अवतारणा हुइ। अतएव छन्दः शास्त्रको वेदका अङ्ग करके मानना। वास्तव में उससे अन्यान्य छन्दः युक्त ग्रन्थोंका भी उपकार होता है।

अब हमको यह आलोचना करना चाहिये जो, छन्दका प्रयोजन क्या है? औ यह स्वभावसिद्ध कोइ वैज्ञानिक विषय है या नहीं। छन्द जो विज्ञानमूलक औ स्वभावसिद्ध है, इतना प्रमाण होनेसे इसकी वेदाङ्गता भी प्रमाण हो सकेगी।

भावोद्भासन या भावका पूर्ण रीति प्रकाश करना छन्दका प्रथम प्रयोजन है। छन्द करके वक्ताके अन्तःकरणस्थ भावका उद्भासन वा पूर्ण-प्रकाश होता है औ श्रोताके मन में वही भाव सञ्चारित होकर प्रकृतार्थ बोधका उद्भासन करता है। वक्ता—विशेषतः जो वक्ता दुसरा किसीका बनायो हुई कथाप्रबन्ध को बक्ते है, निज मन में जिस भावका उद्भव होने पर कथाका उच्चारण किये करते है, छन्द उसी भावको परिणत करके श्रोताके चित्त में सञ्चार करता है।

वक्ता छन्द हीन वाक्योंको प्रयोग करनेसे उनके अन्तःकरणके भावका प्रकाश नहीं होता, सुतरां श्रोताके चित्त में वह भाव कभी नहीं उठ सक्ता है। वक्ताने जिस भाव वा क्रियायुक्त होकर कहने में प्रवृत्त होता है वही भावका क्रिया, वाक्-क्रियासे मिलने ही पर छन्दका उद्भव होता है। सुतरां श्रोताके मन में उस भावका आविर्भाव होता है। वाक्य जो सञ्चारणशील क्रिया है, सो सबकोइ विदित हैं। वह यदि "कार्य्य" पदार्थ न होता तो किसीका वाक्य किसीके कान में न

কাহারও বাক্য কাহারও কর্ণগোচর হইত না। অধিক কি "বাক্ প্রসারণ" (Phonogram) বিষয়ে যাহার বোধ আছে তিনি এবিষয় অনায়াসেই বিশ্বাস করিবেন। বাক্ ক্রিয়া প্রসারিত হইয়া কর্ণকুহর দ্বারা স্নায়ুপথে আরোহণ পূর্ব্বক মস্তিষ্কে আঘাতানন্তর অন্তঃকরণকে আঘাত করিলে অন্তঃকরণ বাক্যাকারে পরিণত হয়। তখন বাক্যের অনুভব হইয়া থাকে। এইক্ষণ চিন্তা করিয়া দেখুন বাক্য ক্রিয়া যদি বক্তার ভাব সহিত মিলিত হয় তবে সেই ভাব শ্রোতার অন্তঃস্থ কেন না হইবে।

ছন্দঃ প্রথমতঃ দ্বিবিধ। এক স্বভাবতন্ত্র, দ্বিতীয় উভয়তন্ত্র। যে ছন্দঃ বক্তার ইচ্ছাকে অপেক্ষা না করিয়া তত্তদ্ভাব প্রকাশ করিতে হইলে স্বভাবতঃই প্রাদুর্ভূত হয় তাহাকে "স্বভাবতন্ত্র," আর যাহা "ছন্দোযোগ করিয়া বলিব" ইত্যাকার বক্তার. ইচ্ছা এবং স্বভাব এতদুভয় দ্বারা সমুদ্ভূত হয় তাহাকে "উভয় তন্ত্র" ছন্দঃ বলা যায়। এতদুভয় বিধ ছন্দোমধ্যে উভয়তন্ত্র ছন্দঃ এক প্রকার থাকিয়াও বহুপ্রকার ভাবের উদ্ভাসক হইতে পারে। ছন্দোবিশেষে প্রকারভেদেও ভিন্নবিধ ভাবের সমুদ্ভাসন হয়। স্বভাবতন্ত্র ছন্দঃ ঈদৃশ নহে, ইহার প্রকার ভেদেই ভিন্ন প্রকার ভাবের উদ্ভেদ হয়। এক প্রকার স্বভাবতন্ত্র ছন্দোদ্বারা দ্বিবিধ ভাবের উদ্ভাসন হয় না। স্বভাবতন্ত্র ছন্দের আরও বিশেষ এই যে তত্তদ্বাক্যে তত্তচ্ছন্দ ব্যতিরেকে বক্তৃ মনোগত ভাব কিয়দংশও কোন প্রকারে অভিব্যক্ত হয় না। উভয়তন্ত্র ছন্দের রীতি তদ্রূপ নহে। এতদ্ব্যতিরিক্তও বক্তৃভাব কথঞ্চিৎ পরিব্যক্ত হইতে পারে। এবং স্বভাবতন্ত্র কেবল বক্তৃ মনোগত ভাবের সহিত মিলিত বাক্যক্রিয়ার বিভক্তি মাত্র, উভয়তন্ত্রের কিঞ্চিৎ বিশেষ আছে। বাক্য সমূহ নিষ্পাদন করিতে যে উদাত্ত (উদারা) অনুদাত্ত (মুদারা) স্বরিত (তারা) এই ত্রিবিধ গ্রামের একতর গ্রামে ষড়্জ (ষা) ঋষভ (ঋ) গান্ধার (গা) মধ্যম (মা) পঞ্চম (পা) ধৈবত (ধা) নিষাদ (নি) এই সপ্তবিধ স্বর উত্থিত হয়, তাহার প্রত্যেকের পরস্পর যোগ, অথবা মধ্যবর্ত্তি একতমের বা দ্বিতীয়ের বর্জ্জনপূর্ব্বক অবশিষ্টের যথা নিয়ত যোগ, কিম্বা ব্যত্যয় যোগ বিশিষ্ট বক্তৃভাবের সহিত মিলিত-বাক্য ক্রিয়ার বিভক্তিকে উভয় তন্ত্র ছন্দঃ বলা যায়। ক্রমশঃ।

पैठता। अधिक क्या कहा जाय, "वाक्प्रसारण" (Phonogram) जो विदित हैं, वे इसको अनायास विश्वास करेंगे। वाक्क्रिया प्रसारित होकर कर्ण विवरसे स्नायु पथ में आरोहणपूर्व्वक मस्तिष्क में आघातानन्तर अन्तःकरणके आघात करनेसे अन्तःकरण वाक्याकार प्राप्त होता है, उसी समय वाक्यका अनुभव हुआ करता है। अब विचार कर देखिलेना जो वाक्क्रिया यदि वक्ताके भावसे मिले तो वह भाव श्रोताके अन्तःकरण में क्यों न पैठेगा।

छन्दः दो प्रकारके हैं। १म, स्वभाव-तन्त्र, २य, उभतन्त्र। जो छन्दः वक्ता की इच्छा की अपेक्षा न करके तत्तद्भावके प्रकाश काल में स्वयमेव प्रादुर्भूत होता है, उसको स्वभावतन्त्र औ जो "छन्द मिलाकर कहूंगा" इस भान्ति वक्ता की इच्छा औ स्वभाव इन दोनोसे समुद्भूत होता है उसीको "उभतन्त्र" छन्द कहा जाता है। ये दो प्रकार छन्दके मध्य में "उभतन्त्र छन्द" एक प्रकारका रह कर भी नाना भान्ति भावका उद्भासक हो सक्ता है। किसी किसी छन्द में विधिभेद करके भिन्न भिन्न भावका समुद्भासन होता है। स्वभाव तन्त्र छन्द इस रीतिका नहीं, इसके प्रकारभेद होसे भिन्नविध भावका उद्भेद होता है। एक प्रकारको स्वभाव-तन्त्र छन्दःके द्वारा द्विविध भावका उद्भासन नहीं होता है। स्वभाव-तन्त्र छन्दका यह भी एक विशेषता है जो तत्तद्वाक्य तत्तच्छन्द छोड़के वक्ताके मनका भाव कुछ भी किसी तरहसे प्रकाश नहीं होता है। उभ-तन्त्र छन्द की रीति उस भान्ति की नहीं। इसको छोड़के भी वक्ताका भाव थोड़ा बहुत व्यक्त हो सक्ता है। स्वभाव-तन्त्र केवल वक्ताके मनके भावसे मिलीहुइ वाक्यक्रिया की विभक्तिमात्र है। उभतन्त्र की कुछ विशेषता है। वाक्यसमूहके निष्पादन करने में जो उदात्त (उदारा), अनुदात्त (मुदारा) स्वरित (तारा) इन त्रिविध ग्रामके किसी ग्राम में षड़ज (षा) ऋषभ (ऋ) गान्धार (गा) मध्यम (मा) पञ्चम (पा) धैवत (धा) निषाद (नि) ये सात तरहके स्वर उठते हैं, उस में हरेकका परस्पर मेल अथवा बीचके एक या दुसरेको छोड़कर अवशिष्टका यथा नियत योग वा व्यत्यय योगविशिष्ट वक्ताके भावके सहित मिलीहुइ वाक्यक्रिया की विभक्तिको उभतन्त्र छन्द कहाजाता है। शेष आगे।

(প্রাপ্ত)

অভিনব ব্রাহ্মধর্ম্মই কি ভারতের ভবিষ্যদ্ধর্ম্ম হইবে!!!

ব্রাহ্মদিগের বক্তৃতা, প্রার্থনা ও সঙ্গীতাদি পাঠ করিলে, দেখিতে পাওয়া যায় যে ব্রাহ্মেরা আশা করেন তাঁহাদের কথিত ব্রাহ্ম ধর্ম্ম এক সময়ে ভারতের সমস্ত নরনারীর হৃদয় অধিকার করিয়া, ভারতে এক অতি বিচিত্র স্বর্গরাজ্য আনয়ন করিবে। ভারতবর্ষে বহুকাল হইতে ঈদৃশ ব্রাহ্মধর্ম্মের ন্যায় শত শত ধর্ম্ম উদয় হইয়া, মহা আস্ফালনে ও বীর-দর্পে গগণমণ্ডল ভেদ করতঃ, ব্রাহ্মসমাজের ন্যায় কতই আশা ও কতই ভরসার ইন্দ্রজাল বিস্তার পূর্ব্বক ভারতবাসির সরল মনকে মুগ্ধ করিয়াছিল, কিন্তু হায়! কালের বিচিত্র লীলা কে বুঝিবে? দেখিতে দেখিতে সকলেই এক একটী সংকীর্ণ সম্প্রদায়ে বিভক্ত হইয়া নিজ নিজ ধর্ম্ম প্রবর্ত্তকের মত পোষণ করত, জীবনাতিপাত করিতে লাগিল। এইরূপ ধর্ম্ম বিপ্লবরাশি যে ভারতের কোমলাঙ্গ কতই ক্ষত বিক্ষত করিয়াছিল তাহার ইয়ত্তা করা সুকঠিন; কিন্তু কি আশ্চর্য্য, ঋষিদিগের আচরিত ও প্রবর্ত্তিত সনাতন আর্য্যধর্ম্মকে কেহই স্থান ভ্রষ্ট করিতে পারিল না। যখন ইশা আসিয়া খণ্ডের পশ্চিম বিভাগে প্রথম ধর্ম্মপ্রচার করিতে আরম্ভ করেন, তখন কে মনে করিয়াছিল যে তাঁহার প্রচারিত "একমেবাদ্বিতীয়ং" মত কালেতে ত্রিত্ববাদে পরিণত হইয়া সংকীর্ণ খ্রীষ্টধর্ম্ম নামে আখ্যাত হইবে। মহম্মদীয় ধর্ম্মের অবস্থাও সেইরূপ হইয়াছে। মহম্মদ যখন একেশ্বরবাদ প্রচার করেন তখন কে মনে করিয়াছিল যে তাহার নির্দ্দিষ্ট কঠিন নিয়ম সমুহ ভেদ করিয়া নানাপ্রকার সম্প্রদায়ের উদ্ভব হইবে ও তন্মধ্যে পৌত্তলিকতা প্রবেশ করিবে। যখন কোন মহাত্মা জন্ম গ্রহণ করেন, তাঁহার মানসিক প্রকৃতি সাধারণ লোকের মানসিক প্রকৃতি অপেক্ষা স্বতন্ত্র রূপ ধারণ করিয়া থাকে; তাঁহার গগণস্পর্শী উচ্চ চিন্তা সমুহ সাধারণ লোকের ধারণার অতীত। সমুদ্র কুলস্থিত কুল নির্দ্দেশ সূচক আলোক স্বরূপ হইয়া তিনি মনুষ্য রূপ অর্ণবযান সমূহকে শান্তি ধাম দেখাইয়া দেন। এরূপ মহাত্মাদিগের প্রচারিত ধর্ম্ম বিকৃত ভাব-ধারণ করিবে, ইহা অতি আশ্চর্য্যের বিষয়। কিন্তু

(प्राप्त)

नवीन ब्राह्मधर्म्म ही क्या भारतवर्षका भविष्यद्धर्म्म बनेगा!!!

ब्रह्मलोगों की वक्तृता, प्रार्थना औ सङ्गीतादिके पढनेसे सूचित होता है कि उन्हे यह आशा रहती है जो ब्राह्मधर्म्म एक समय में भारतवर्षके समस्त नर नारीके हृदय अधिकारकर भारतभूमि पर एक अति विचित्र स्वर्गधाम बनावेगा। कितनेही धर्म्म भारतवर्ष में बहुत दिनसे इस ब्राह्मधर्म्मके न्याइ उदय होकर बड़ा भारि तड़पन औ वीरदर्पसे गगणमण्डल भेद करके ब्राह्म समाजके समान कितनी आशा औ कितनी भरोसाके इन्द्रजाल पसारके भारत निवासियोंका सरल हृदयको मुग्ध कियेथे, किन्तु हाय! काल की विचित्र लीला को समझे? आंखके पलक गिराते ही सबकोइ एक एक सङ्कीर्ण सम्प्रदाय बनकर निज निज धर्म्मप्रवर्त्तकके मत पोषण करते हुए दिन बिताने लगे। इस भान्ति धर्म्मविप्लव राशि जो भारतके कोमलाङ्गको कितना ही क्षत विक्षत कियेथे, उसकी सीमा करना ही सुकठिन है; किन्तु क्या आश्चर्य्य! ऋषियोंके आचरित औ प्रवर्त्तित सनातन आर्य्यधर्म्मको स्थानभ्रष्ट करना किसोसे नहीं बन सका। जब ईशामसीने आशाखण्डके पश्चिमांश में पहले पहले धर्म्मका प्रचार प्रारम्भ कियाथा, उस समय को अनुमान कियाथा जो उनका प्रचारित "एकमेवाद्वितीयं" यह मत काल पाकर त्रित्ववाद (पिता, पुत्र औ पवित्रात्मा) में परिणतहोके सङ्कीर्ण "ईशाइ धर्म्म" इस नामसे प्रसिद्ध होगा। महम्मदी धर्म्म भी उस दशाको प्राप्त हो चुकी। महम्मद जब एकेश्वरवाद प्रचार कियेथे उस समयको अनुमान कियाथा जो उनके निर्द्दिष्ट औ नियमोंको तोड़कर नाना भान्तिके सम्प्रदाय बनेगा औ उन में मूर्त्ति पूजा की रीती आ जायगी। जब किसी महात्माने जन्म लेता है, उनकी मानसिक प्रकृति साधारण लोगोंकी प्रकृतिसे कुछ और ही रूप धारण करलेती है; उनकी गगणस्पर्शी ऊंची चिन्ता समूह साधारण लोगों की धारणा शक्तिका बाहर है। कुलनिर्द्देशक दीपक जैसा जाहाजोंके कल्याणार्थ समुद्र की किनारे पर रहता है, उस भांति वे मनुष्यरूप समुद्रपोतोंको शान्तिधाम देखला देते हैं। यह बड़ा आश्चर्य्यका विषय है, जो ऐसे ऐसे महात्माओं का फैलाया हुआ धर्म्म दुर्दशाको प्राप्त होनेवाला

প্রকৃতির বিচিত্র লীলা কে বুঝিবে। সামান্য ক্ষুদ্র প্রকৃতি মনুষ্য কি কখন সমুচ্চ শৈল শিখরের বাসোপযোগী হইতে পারে। তথাকার প্রবল বায়ুর আঘাতে জর্জ্জরিত হইয়া তাহাকে নিশ্চয়ই নিম্ন-ভূমির আশ্রয় গ্রহণ করিতে হইবে। উন্নত সাধু মহাত্মাদিগের ধর্ম্মভাব কি সাধারণ মনুষ্য ধারণ করিতে পারে, না তাঁহাদিগের প্রদর্শিত পন্থা অবলম্বন করিয়া একেবারে তাঁহাদের উন্নত প্রকৃতির সঙ্গে মিলিত হইতে পারে? যে সাধন সমাধির অবস্থায় তাঁহারা ভগবানের প্রফুল্ল আনন দর্শন করিতে থাকেন, এবং তাঁহার বিমল বাণি শ্রবণ করিয়া জগতে তাহার ঘন ঘোর গম্ভীর অস্তিত্বের সুসমাচার ঘোষণা করিতে থাকেন, বল দেখি, সে অবস্থা কি তোমার আমার ভাগ্যে ঘটিয়া থাকে? সাধু মহাত্মাগণ ঈশ্বরের প্রেরিত। ঈশ্বরের সঙ্গে তাঁহাদের সখ্যভাব, তুমি কি সাহসে হে ক্ষুদ্র মনুষ্য! অবলম্বন ও সাধন ভিন্ন তাঁহার স্থান অধিকার করিতে চাও? ভারতবর্ষে ব্রাহ্মসমাজ এখন বামন হইয়া চন্দ্রধারণে উদ্যত, অনধিকার চর্চ্চা করিয়া ভারতে মহা অকল্যাণ আনয়ন করিতেছেন। তাঁহাদের প্রচারের ফল যে কি হইবে তাহা বোধ হয় বুদ্ধিমান মাত্রেই বুঝিতে পারিতেছেন।

ব্রাহ্ম সমাজের প্রতিষ্ঠাতা রাজা রামমোহন রায় বঙ্গদেশের রত্ন স্বরূপ হইয়া জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। তিনি বহু ভাষাবিদ্ ছিলেন। বলিতে কি দুই তিন শতাব্দীর মধ্যে বঙ্গদেশে রামমোহন রায়ের তুল্য বুদ্ধিমান ও বিচক্ষণ ব্যক্তি কেহই জন্মগ্রহণ করেন নাই। তিনি একজন বিদ্যা-বিশারদ ছিলেন, কিন্তু আমরা তাঁহাকে একজন পরম ব্রহ্ম পরায়ণ ধার্ম্মিকের মধ্যে গণ্য করিতে পারি না। তাঁহাকে আমরা রামানুজ স্বামী, শঙ্করাচার্য্য, নানক প্রভৃতি ধর্ম্মসংস্কারকের শ্রেণীতে স্থান দিতে পারি না। তিনি তাৎকালিক আর্য্য-ধর্ম্মাবলম্বীদিগের আভ্যন্তরিক দুর্ব্বলতা ও দুরবস্থা দর্শনে ব্যথিত হইয়াছিলেন, সন্দেহ নাই, কিন্তু একেশ্বরবাদ প্রচারের জন্য ব্রাহ্মসমাজ প্রতিষ্ঠা তাঁহার প্রকৃত ধর্ম্ম সংস্কারের পরিচায়ক হয় নাই। তিনি যে প্রচলিত আর্য্যধর্ম্মের বিরুদ্ধে দণ্ডায়মান হইয়া স্বতন্ত্রতা অবলম্বন করিয়াছিলেন ইহাতে

है; किन्तु प्रकृति की विचित्र लीला को समझे। सामान्य क्षुद्र प्रकृतिका मनुष्य क्या कभी समुच्च शैल-शिखर पर बसनेका योग्य बन सका है, वहांके प्रबल वायुके आघातसे जर्ज्जरित होकर, उनको निश्चय ही निम्न भूमिका आश्रय लेना पड़ेगा। उन्नत साधु महात्माका धर्म्मभाव क्या साधारण मनुष्य कभी धारण कर सका है, अथवा उनका देखाया हुआ मार्गको अवलम्बन कर एकबार भी उन्होंकी उन्नत प्रकृतिसे मिल सक्ता है? जिस साधन-समाधिकी अवस्था में वे भगवानका प्रफुल्ल मुखारविन्दको दर्शन करते रहते हैं औ उनकी विमल वाणी श्रवण कर जगत में उनके घनघोर गम्भीर अस्तित्वका सुसमाचार प्रचार किये करते हैं, कहोतो भला, वह अवस्था क्या तुम्हारे या मेरे भाग्य में प्रकाश पाती है? साधु महात्मागण ईश्वरके प्रेरित पुरुष हैं। ईश्वरसे उन्होंकी मित्रता है, तुम किस साहससे, हे क्षुद्र मानव! विना अवलम्बन औ विना साधन किये उनका स्थान अधिकार करने चाहो! वामनकी चेष्टा चन्द्रमा धारण करने की न्याई अब भारतवर्ष में ब्राह्म-समाजका उद्यम है, ब्राह्मगण अनधिकारचर्च्चा करके भारतवर्ष में महान् अनर्थ लाने चाहते हैं। उन सबके धर्म्मप्रचारका किस भान्ति फल मिलेगा, सो बोध होता है किसी बुद्धिमानका समझनेको बाकी न रही।

ब्राह्म समाजके प्रतिष्ठाता राजा राममोहन रायने बङ्गदेशका एक महारत्न स्वरूप था। वे बहुत भाषाभिज्ञ थे; फलतः दो तीनसौ वर्षके बीच में राजा राममोहन रायके समान कोइ बुद्धिमान औ विचक्षण पुरुष बङ्गदेश में जन्म नहीं लिया। वे एक विद्याविशारद पुरुष थें, ता में सन्देह नहीं; किन्तु हम उनको एक परम ब्रह्म परायण धर्म्मात्माके मध्य में नहीं गीन सक्ते हैं। उनको हम रामानुज स्वामी, शङ्कराचार्य्य, नानक आदि धर्म्मसंस्कारकों की श्रेणी में नहीं ले सक्ते हैं। वे उस समयके आर्य्यधर्म्मावलम्बियों की आभ्यन्तरिक दुर्ब्बलता औ दुर्दशा देखकर निःसन्देह ही व्यथित हुएथ, किन्तु एकेश्वरवाद प्रचारार्थ ब्राह्म-समाजका निर्म्माण करना उनके लिये प्रकृत धर्म्म-संस्कारकका परिचायक न हुआ। इससे इतना ही सूचित होता है जो वे स्वतन्त्रता अवलम्बन

তাহাই প্রতিপন্ন হইতেছে। সমাজের মনঃপীড়া দিয়া ধর্ম্মসংস্কার করা আজ তিন চারি শতাব্দী হইতে ধর্ম্মসংস্কারকদিগের একটী রোগ হইয়া দাঁড়াইয়াছে। ইহার পরিণাম এই হয় যে প্রকাণ্ড সমাজ হইতে কতকগুলি উদ্ধত ও চঞ্চল প্রকৃতির লোক স্বতন্ত্র হইয়া একটি সঙ্কীর্ণ সম্প্রদায়ের সৃষ্টি করে। এইরূপ ভারতে যে কতই সম্প্রদায়ের সৃষ্টি হইয়াছে তাহার গণনা করা যায় না। এই রূপে হিন্দু সমাজকে সংস্কার করিবার অভিপ্রায়ে রাজা রামমোহন রায় কলিকাতা মহানগরীতে একটি ব্রাহ্ম সমাজ স্থাপন করিলেন। আজ অর্দ্ধ শতাব্দী হইল ব্রাহ্মসমাজের বেদি হইতে ব্রাহ্ম ধর্ম্মপ্রচার হইতেছে সত্য, কিন্তু রাজা রামমোহন রায়ের উদ্দেশ্য কতদূর সিদ্ধ হইল? কয়জন ব্যক্তি তাঁহার প্রদর্শিত পন্থা অবলম্বন করিল? আমরা এখন তাহার প্রকৃত গণনা করিয়া বলিতে পারি না, তবে এই পর্য্যন্ত বলিতে পারি যে প্রত্যেক ব্যক্তি পাঁচ মুহূর্ত্তকাল নিজ নিজ অঙ্গুলি দ্বারা গণনা করিলেই বোধ হয় শেষ করিতে পারিবেন। প্রকাণ্ড হিন্দুসমাজের নিকট ব্রাহ্মসমাজ একটি জলবুদ্বুদ বলিলেও বোধ হয় অত্যুক্তি হয় না। আমরা মহাত্মা শ্রীমদ্বাবু দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুরকে রাজা রামমোহন রায়ের একজন প্রধান শিষ্য বলিলেও বলিতে পারি। তিনি একজন প্রকৃত ধর্ম্ম পরায়ণ বলিয়া অনেকের নিকট পরিচিত এবং আমরাও তাহা স্বীকার করি, কিন্তু রাজা রামমোহন রায়ের উদ্দেশ্য সিদ্ধি পক্ষে তিনি কিছুই করিয়া উঠিতে পারিতেছেন না। "পৌত্তলিকতার মূলে কুঠারাঘাত করিয়া একেশ্বরবাদ প্রচার করা রাজা রামমোহন রায়ের একটি প্রধান উদ্দেশ্য ছিল; বাবু দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর তাঁহার প্রধান শিষ্য, তিনি সে লক্ষ্য সিদ্ধির পক্ষে এখন হতাশ হইয়া দেশে দেশে নগরে নগরে পর্ব্বতে ও কাননে পরিভ্রমণ করত অস্থির হইয়া বেড়াইতেছেন। বাবু দেবেন্দ্র নাথ ঠাকুরের প্রধান শিষ্য বাবু কেশবচন্দ্র সেন বর্ত্তমান সভ্য জগতে বড়ই সদ্বক্তা ও ধর্ম্মপরায়ণ বলিয়া পরিচিত। তিনি যে একজন সুচতুর, সদ্বিদ্বান্ এবং সদ্বক্তা আমরাও ইহা মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করি; ব্রাহ্ম ধর্ম্মকে তিনি বড়ই ভাল বাসেন এবং তাহার প্রচারের জন্য তিনি যথোচিত ত্যাগ স্বীকার

पूर्व्वक प्रचलित आर्य्यधर्म्मका विरोधी बनेथे ; लोकसमाजके मन दुःखाकर धर्म्मसंस्कार करना आज कोइ तीन चार सौ वर्षसे संस्कारकों की एक तरहकी पीड़ा होगयी है, अन्तफल इसका यही होता हैं जो एक हृहत समाजसे थोड़े बहुत उद्धत औ चञ्चल प्रकृतिके मनुष्य निकसकर एक सङ्कीर्ण सम्प्रदाय बना डालते हैं। इस रीतिसे भारतवर्ष में जो कितना ही सम्प्रदाय बन चुका उसकी सीमा न कीजा सक्ति है। इस रीतिसे हिन्दु समाजके संस्कारार्थ राजा राममोहन राय महा नगरी कलकत्ता में एक ब्राह्मसमाज निर्म्माण किये। कोइ ५० वर्ष हुए ब्राह्मसमाजके वेदीपरसे ब्राह्मधर्म्म प्रचार हो रहा है सही, किन्तु राजा राममोहन रायका अभिप्राय कहांतक सिद्ध हुआ? कितना पुरुष उनके प्रदर्शित राहपर चलने लगें? हम अब ही उस को प्रकृत संख्या नहीं दे सक्ते, किन्तु हां यहांतक कह सक्ते है जो हरेक व्यक्ति पांच मुहूर्त्तकाल में निज निज उंगलीसे यदि गिने तो उसका अन्त पा सक्ता है। हृहत हिन्दु समाजके सामने ब्राह्मसमाज एक जलबुद्बुदके समान, इतना कहनेसे भी कुछ अत्युक्ति सूचित नहीं होती है। हम महात्मा श्रीमद्बाबु देवेन्द्रनाथ ठाकुरको राजा राममोहन रायके एक प्रधान शिष्य कहैं तो कह सक्ते हैं। वे एक परम धर्म्मात्मा करके सबके निकट परिचित हैं औ हम भी इस बातको अङ्गीकार करते हैं, किन्तु राजा राममोहन रायके उद्देश्य साधनार्थ वे कुछ भी न कर सकें। मूर्त्तिपूजाको निर्म्मूल कर एकेश्वरवादका प्रचार करना राजा राममोहन रायका एक प्रधान उद्देश्य था ; बाबु देवेन्द्रनाथठाकुर उनका शिष्य हैं, वे उस उद्देश्य सिद्धिकी आशा छोड़ छाड़ कर अस्थिर चित्ततासे देश देशान्तर में नगर नगर में पर्व्वत कानन में घुमते फिरते रहते हैं। बाबु केशवचन्द्र सेन, जो कि महात्मा देवेन्द्र नाथ ठाकुरका एक प्रधान शिष्य हैं, आज कलके सभ्य जगत में एक प्रधान सद्वक्ता औ धर्म्मपरायणा करके प्रसिद्ध हैं। वे जो एक बड़े सुचतुर, विद्यावान औ सद्वक्ता हैं, यह हम भी मुक्तकण्ठसे स्वीकार करते हैं ; ब्राह्मधर्म्मको वे बहुत ही चाहते है और उस धर्म्मके प्रचारार्थ वे यथोचित त्याग भी करलिये, अधिक क्या

করিয়াছেন, বলিতে কি তাঁহারই জন্য তাঁহার কথিত ব্রাহ্ম ধর্ম্ম এখনও ভারতবর্ষে জীবিত রহিয়াছে। তাঁহার কয়েক জন শিষ্য দেশ দেশান্তরে যাইয়া প্রচার করিয়া থাকেন। তাঁহারাও অতি সবক্তা উৎসাহী এবং নির্ভীক। বাবু কেশবচন্দ্র ব্রাহ্ম ধর্ম্মকে সর্ব্বদাই নূতন বেশে সাধারণের সম্মুখে উপস্থিত করিয়া লোকের হৃদয় মন আকর্ষণ করিতে ইচ্ছা করেন। পরিবর্ত্তনই তাঁহার এক মাত্র ধর্ম্মোন্নতির পরিচায়ক। তিনি ইহাও আশা করেন যে ভারতবর্ষ হইতে একেবারে "পৌত্তলিকতা" বিদূরিত হউক এবং জাতিভেদ উঠিয়া গিয়া সমস্ত পৃথিবীর লোক এক জাতিতে পরিগণিত হউক। এ আশা কিছু নূতন আশা নয়, আমরাও ক্ষুদ্র প্রাণি হইয়া মধ্যে মধ্যে তাঁহার আশা মরীচিকাকে সত্য মনে করিয়া থাকি, কিন্তু পরক্ষণে বাতুলের প্রলাপবৎ প্রতীত হয়। কিছু দিন হইতে বাবু কেশবচন্দ্র সেন একটি নূতন মতের আবিষ্কার করিয়াছেন সে মতটীর নাম "আদেশ।" যদিও এ মতটী আমাদের নিকট নূতন নহে, কিন্তু তাঁহার পক্ষে সম্পূর্ণ নূতন, কেন না তিনি এ মতটীকে তাঁহার "নববিধান" রূপ নবরচিত ইন্দ্রজালের মূল করিয়া সাধারণের নিকট প্রচার করিতেছেন। কেশব বাবু বলেন, যে তিনি মধ্যে মধ্যে ঈশ্বরের নিকট হইতে আদেশ পাইয়া থাকেন, এবং সেই সকল আদেশই তিনি উপদেশ ও বক্তৃতাদির দ্বারা সাধারণের নিকট প্রকাশ করিয়া থাকেন। আমরা আর্য্য ধর্ম্মাবলম্বী সুতরাং আমরাও আদেশ বাদ (দৈববাণি) মানিয়া থাকি, কিন্তু আমরা এই উনবিংশ শতাব্দীর ঘোর নাস্তিকতা ও কপটতার মধ্যে বাবু কেশবচন্দ্র সেনকে বিষয় বিলাসে আসক্ত দেখিয়াও তিনি যে ঈশ্বরানুপ্রাণিত হইয়া থাকেন একথা আমরা কখনই বিশ্বাস করিতে পারি না। ঈশ্বরাদিষ্ট হওয়া বড় কঠিন কথা। তাহার সাধন স্বতন্ত্র। ব্রাহ্ম সমাজের আদিষ্ট সাধন প্রণালী অবলম্বন করিলে ঈশ্বরাদেশ কখনই শ্রবণ করা যায় না। যদি কেহ যথার্থ রূপে ঈশ্বরাদেশ শ্রবণ করিতে চাহেন তবে তাঁহাকে আর্য্য শাস্ত্রোক্ত সাধন পদ্ধতি অবলম্বন করা উচিত। বাবু কেশবচন্দ্র সেন কি জনক রাজার ন্যায় গৃহর্ষি হইতে চাহেন? জনক রাজা

उन्हींके यत्नसे मानो उनके कथित ब्राह्मधर्म्म अब-तक भी भारतवर्ष में जीवित रहा है। उनके कैक शिष्य देश देशान्तर जा जाकर धर्म्मका प्रचार किये करते हैं। वे भी सद्वक्ता, उत्साही औ निर्भीक चित्त हैं। बाबु केशवचन्द्र चाहते हैं कि ब्राह्म-धर्म्मका सदा ही नवीन नवीन वेश बना बना कर सबके सामने देखावें औ लोगोंके हृदय मनको मोहावें। परिवर्त्तन ही उनकी धर्म्मोन्नतिका परिचायक है। वे यह भी आशा रखते हैं कि मूर्त्तिपूजा भारतवर्षसे एकबार ही दूर होजाय औ वर्णभेद विचार उठ जाकर पृथ्वीके समस्त लोग मिलके एकजाति बनें। यह आशा कुछ नवीन आशा नहीं, हम सब क्षुद्र जीव होकर भी बीच बीच में उनकी आशारूप मृगतृष्णाको सत्य समझते हैं, किन्तु क्षणभर में उन्मत्त की प्रलापोक्तिके भान्ति प्रतीति होती है। थोड़े दिनोंसे बाबु केशवचन्द्र सेनने एक नवीन मत प्रकाश किया है, जिसका नाम है "आदेश"। यद्यपि यह मत हमारे सामने नवीन नहीं, किन्तु उनके लिये सम्पूर्ण नवीन हैं, क्यों कि इस मतको वे अपने नव रचित नवविधानरूप इन्द्रजालके जड़ करके साधारणके सामने प्रगट करते हैं। केशव बाबु कहते हैं, जो बीच बीच में उनको ईश्वरसे आदेश मिलता है, औ वही आदेश वे उपदेशादिका व्याख्यान करके सर्व्वसाधारणके निकट प्रचार करते हैं। हम सब आर्य्यधर्म्मावलम्बी, सुतरां हम भी आदेश वाद (दैववाणी) को मानते हैं, किन्तु हम इस उनीस शताब्दी की घोर नास्तिकता औ कपटताके मध्य में बाबु केशवचन्द्र सेनको विषय विलास में आसक्त देखकर भी, उनसे जो ईश्वरवाणी सुनी जाती है, यह कभी विश्वास नहीं कर सक्ता है। ईश्वरादिष्ट होना बड़ी कठिन बात है, उसकेलिये साधना कुछ और ही है, ब्राह्मसमाजके आदेशानुसार साधनकी रीतिपर चलनेसे ईश्वरवाणी कभी नहीं सुनीजा सक्ति है। यदि कोइ यथार्थ रीति ईश्वरवाणी सुनने चाहें तो उनको आर्य्यशास्त्रोक्त साधनविधिको अवलम्बन करना चाहिये। बाबु केशवचन्द्र सेन क्या जनक राजाके न्याइ गृहर्षि बनने चाहते है? जनक राजा गृहस्थों में एक प्रधान पुरुष हि सही, किन्तु वह भी अरण्य रहना

একজন ব্রহ্মনিষ্ঠ গৃহস্থ ছিলেন সত্য, কিন্তু সে ত্রেতাযুগের কথা, তখনও পৃথিবীতে ত্রিপাদ ধর্ম্মের আবির্ভাব ছিল, "কলিযুগের জনক রাজার" আবির্ভাবে বিবিধ রহস্যজনক ব্যাপার অভিনীত হইতেছে। এই নব বিধানান্তর্গত আদেশ বাদই বাবু কেশবচন্দ্র সেনকে সাধারণের নিকট হাস্যাস্পদ করিতেছে এবং তাঁহার উদ্দেশ্য সিদ্ধির পক্ষে বিশেষ ব্যাঘাত জন্মাইতেছে। এই সকল রহস্যজনক ব্যাপার দেখিয়া আমাদের এখন আশা হইতেছে যে, ভারতে অভিনব ব্রাহ্মধর্ম্ম লব্ধপ্রতিষ্ঠ হইতে পারিবে না। ব্রাহ্মেরা "পৌত্তলিকতাকে" গুরুতর পাপ বলিয়া বিশ্বাস করিয়া থাকেন, এবং হিন্দুদিগকে পৌত্তলিক মনে করিয়া, তাহাদের মুক্তির জন্য অশ্রুপাতের সহিত ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনাদি করিয়া থাকেন। আমরা সমস্ত আর্য্যজাতির প্রতিনিধি স্বরূপ হইয়া তাঁহাদিগের এ প্রকার মঙ্গল কামনার জন্য বিশেষ কৃতজ্ঞ হইতেছি, কিন্তু একটী কথা না বলিয়া, ক্ষান্ত থাকিতে পারিতেছি না; আমরা জানি ব্রাহ্মেরা বিশ্বাস করিয়া থাকেন যে, ঈশ্বর সর্ব্বব্যাপী, তিনি ওতপ্রোতভাবে সমস্ত জগতে বিরাজ করিতেছেন, তিনি এই প্রস্তর নির্ম্মিত মূর্ত্তিতেও বিরাজ করিয়া থাকেন; এক অবিশ্বাসী ব্রাহ্মের নিকট সেটী প্রস্তর নির্ম্মিত মূর্ত্তি ব্যতীত আর কিছুই উপলব্ধি হইল না, কিন্তু একজন যথার্থ ভগবদ্ভক্ত আর্য্য ভক্তির গুণে (ঈশ্বরের গুণে নহে) সেই প্রস্তর নির্ম্মিত মূর্ত্তির মধ্যে ঈশ্বরকে জাজ্বল্য রূপে প্রকটিত করিয়া, তাঁহার প্রফুল্ল আনন দর্শনে পরিতৃপ্ত হইয়া থাকেন। নিরবলম্ব উপাসনা বড়ই কঠিন সাধন। তত্ত্বজ্ঞানের স্ফূর্ত্তির সঙ্গে সঙ্গে তাহার স্পৃহা বৃদ্ধি পাইতে থাকে। ব্রাহ্মেরা স্বাবলম্বী উপাসনার প্রতি বুদ্ধি পোষণ করিয়া, আপনাদের ধর্ম্মোন্নতি পক্ষে বিশেষ ব্যাঘাত জন্মাইতেছেন। তাঁহারা কি মনে করিয়াছেন যে, তাঁহারা তাঁহাদিগের অভিনব ব্রাহ্ম ধর্ম্ম প্রচার দ্বারা ভারতবর্ষ হইতে তাঁহাদের কথিত "পৌত্তলিকতাকে" বিদূরিত করিতে পারিবেন। এরূপ যদি কখন আশা করিয়া থাকেন, তাহা হইলে তাঁহারা নিশ্চয় জানিবেন যে তাঁহাদের আশা ফলবতী হইবার নহে। মনুষ্য প্রকৃতির যত দিন তারতম্য অবস্থা থাকিবে, তত দিন ধর্ম্ম সাধন

चाहिये जो वे त्रेता युग में आविर्भूत हुए थे औ उस समय धर्म्म भी त्रिपादयुक्त विद्यमान था। अब "कलीयुगके जनकराजा" नाना भान्तिको व्यापारें जो कि रहस्यसे पूर्ण है, अभिनीत होते जाते हैं। इस "नवविधान" को "आदेशवाद" ही केशव बाबुको सबके सामने हास्यास्पद बना रही है औ उनकी सङ्कल्पसिद्धि में भी हानी पहुंचाती है। ये सब रहस्यजनक व्यापार देखकर हम सबको अब आशा होती है जो नवीन ब्राह्मधर्म्म भारतवर्ष में लब्धप्रतिष्ठ नही सकेगा। ब्राह्मलोग मूर्त्तिपूजाको बड़ा भारि पाप समझते है, आर्य्यधर्म्मीयोंको मूर्त्तिपूजनेहारे मानकर उन्होंकी मुक्तिके अर्थ आंसु गिरातेहुए ईश्वरके निकट प्रार्थनादि भी किये करते हैं। हम समस्त आर्य्य जातिके प्रतिनिधि बनकर उन्होंकी इस भान्ति कल्याण कामनाके निमित्त विशेषरूप कृतज्ञता मानते हैं, किन्तु एक बात हमसे बिन कहे नहीं रहे बनते हैं; हम जानते हैं जो ब्राह्मलोग इतना मानते हैं, कि ईश्वर सर्व्वव्यापी हैं, वे ओतप्रोत करके समस्त जगत में विराजकर रहे हैं, वे इस पत्थरसे बना हुआ मूर्त्ति में भी प्रगट हैं; एक अविश्वासी ब्राह्मके सामने वह पत्थरसे बनायाहुआ मूर्त्ति छोड़के दुसरा कुछ भी भाषित न होगा, किन्तु एक प्रकृत भगवद्भक्त आर्य्यने भक्तिके गुणसे (ईश्वरके गुणसे नहीं) उस पत्थर की मूर्त्ति में ईश्वरको उज्ज्वलरूपसे प्रगटकर उनके प्रफुल्ल मुखारविन्द दर्शनपुर्व्वक परितृप्त होते रहते हैं। निरवलम्ब उपासना अत्यन्त कठिन साधना है। तत्वज्ञान की स्फूर्त्तिके सङ्ग हो सङ्ग उसकी स्पृहा वृद्धि होती रहती है। ब्राह्मलोग स्वावलम्बी उपासना की रीतिपर आरूढ़ रहकर अपनी अपनी धर्म्मोन्नति का विशेष विघ्न पहुंचाते हैं। वे क्या सोचते हैं कि अभिनव ब्राह्मधर्म्मके प्रचारसे उन्होंके कथित "मूर्त्तिपूजा" की रीति भारतवर्षसे उठ जायगी? इस भान्ति आशा यदि कभी किये होतो वे स्थिर रखें जो उन्होंकी आशा कभी फलवती होनेवाली नहीं। जबतक संसार में मनुष्यों की उच्च नीच अवस्था बनी रहेगी तबतक धर्म्म साधन की रीति जुदी जुदी अवश्य ही रह जायगी। सैकड़ो धर्म्म संस्कारक यदि ईश्वर की आदेशलिपि (परवाना)

প্রণালীর বিভিন্ন অবস্থার অস্তিত্ব থাকিবে, শত শত ধর্ম্মসংস্কারক ঈশ্বরের আদেশলিপি প্রদর্শন করিয়া, একেশ্বর বাদ প্রচার করিলেও মনুষ্য প্রকৃতির সামঞ্জস্য স্থাপন করিতে পারিবেন না।

আজ কাল আর্য্যধর্ম্ম সমাজের দুরবস্থা দেখিয়া চারিদিক হইতে নানা প্রকৃতির ধর্ম্ম সংস্কারকদের আবির্ভাব হইতেছে। ইহারা সকলেই ভারতের দুঃখ দেখিয়া অশ্রুবর্ষণ করিতেছেন, এবং ইহার পরিত্রাণের জন্য ব্যতিব্যস্ত হইয়া পড়িয়াছেন। কিন্তু ভারতবাসী আর্য্য সন্তানেরা তাঁহাদিগকে চিনিতে পারিয়া, তাঁহাদের অভিসন্ধি বুঝিতে পারিয়াছেন। তাঁহারা এখন নিদ্রিত নাই, জাগ্রত হইয়াছেন এবং তাঁহাদের প্রাচীন পবিত্র আর্য্য ধর্ম্মের পুনরুদ্ধার করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছেন। যে আর্য্য ধর্ম্ম প্রাচীন আর্য্যকুলকে পৃথিবীর শীর্ষ স্থানীয় করিয়াছিল, আজ তাহার প্রতিভা মলিন করে কাহার সাধ্য, ভগবান্ আর্য্য ধর্ম্মের মঙ্গল সাধন করুন এই আমাদের প্রার্থনা। যদি ভবিষ্যৎ ভারতের ধর্ম্ম পিপাসা অক্ষুণ্ণ ও বলবতী থাকে, যদি আধ্যাত্মিক বিজ্ঞান মনুষ্যের তৃতীয় চক্ষুর স্বরূপ বলিয়া ভারত তাহার উন্মীলনে যত্ন করে, যদি প্রকৃত ব্রহ্ম জিজ্ঞাসা ভারতের মনকে উত্তেজিত করিয়া দেয় তবে নিশ্চয়ই আমরা বলিতে পারি যে আর্য্য ধর্ম্মই পুনরুজ্জ্বল ও সূর্য্যবৎ উদ্ভাসিত হইয়া উঠিবে। দিবাগমে নক্ষত্র, খদ্যোত, দীপাদির জ্যোতির ন্যায় আজ কালের অন্যান্য ক্ষুদ্র ধর্ম্ম মলিন ও নির্ব্বাপিত হইয়া যাইবে।

ভারতবর্ষীয় আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উদ্দেশ্য।

১। ভগবদ্বাণী বেদাদি বোধিত সনাতন আর্য্য ধর্ম্মের পুনরুদ্দীপন এবং আশ্রমোচিত ধর্ম্মোপদেশাদি দ্বারা সর্ব্বসাধারণকে মুক্তিমার্গে প্রবর্ত্তিত করিতে হইবে।

২। ধর্ম্মভাব সূত্রে ভারতীয় আর্য্য ধর্ম্মাবলম্বিদিগের মধ্যে বাসস্থান, ভাষা, পরিচ্ছদ ও বর্ণ নির্ব্বিশেষে মিত্রতা ও একতা দৃঢ় করিতে এবং অন্যান্য ধর্ম্মাবলম্বিদিগের সহিত যাহাতে কোনরূপ বিরোধ উপস্থিত না হয়, বরং একদেশে বাস জন্য সহানুভূতি প্রদর্শন করিতে হইবে।

देखाकर एकेश्वरवाद प्रचार करते रहे, तौ भी मनुष्य प्रकृतिका सामञ्जस्य कभी नहीं बना सकेंगे।

आजकल आर्य्यधर्म्म समाज की दुर्दशा देखकर चारों ओरसे नाना भान्तिके धर्म्मसंस्कारकोंका आविर्भाव हो रहा है। ये लोग सबकोइ भारतके दुःख देखकर आंसु गिरा रहे हैं औ इसका परित्राणार्थ व्यतिव्यस्त हो उठे हैं। किन्तु भारतनिवासी आर्य्यवंशीगण उन्हें पहचान औ उन्होंकी अभिसन्धि समझ लिये हैं। अब वे लोग सोएहुए नहीं, जाग चुके हैं औ उन्होंके प्राचीन पवित्र आर्य्य धर्म्मका पुनरुद्धार करने में प्रवृत्त हुए हैं। जो आर्य्य धर्म्मने पुराने आर्य्य लोगोंको पृथिवीके शीर्षस्थानीय किया था, अब किसका सामर्थ है जो उसको प्रतिभाको मलिन करे। भगवान आर्य्य धर्म्मका मङ्गल साधन करें यही हमारी प्रार्थना है। यदि भविष्यत भारत की धर्म्मतृष्णा अटुट औ प्रबल रहे, यदि आध्यात्मिक विज्ञानको तिसरे नेत्र मानकर भारत उसको खुलनेका यत्न करे, यदि प्रकृत ब्रह्म जिज्ञासा भारतको उत्तेजित कर दे, तो हम निश्चय कह सक्ते हैं जो आर्य्य धर्म्म ही पुनरुज्ज्वल औ सूर्य्यके न्याइ उद्भासित हो उठेगा। दिवागम से नक्षत्र, भगयोगिनी, दीप आदिके ज्योतिके समान आज कलके और और क्षुद्र धर्म्म सब मलिन औ निर्व्वापित हो जांगे।

भारतवर्षीय आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाका उद्देश्य।

१। भगवद्वाणी वेदादि बोधित सनातन आर्य्यधर्म्म की पुनरुद्दीपना औ आश्रमोचित धर्म्मोपदेशादि करके सब जनोंको मुक्तिमार्ग में प्रवृत्ति देना।

२। वासभूमि, भाषा, परिच्छद औ वर्णभेद पर ध्यान दिये विना धर्म्मभावसे भारतवर्षीय आर्य्य धर्म्मावलम्बियोंके मध्य में परस्पर मित्रता औ एकताको दृढ़ करना औ अन्यान्य धर्म्म वालोंसे किसी रीति विरोध न हो, वरं एकदेश में निवासनिबन्धन परस्पर सहानुभूति प्रकाश कीजाय तदर्थ यत्न करना।

৩। ভারতবর্ষে আর্য্য বা সংস্কৃত ভাষার প্রতি সাধারণের অনুরাগাকর্ষণ এবং তদনুশীলনের উন্নতি সাধন করিতে হইবে।

৪। ভাব ও কবিত্বের অবগুণ্ঠনে ইতিহাস, পুরাণ, তন্ত্রাদিতে যে বৈদিক উজ্জ্বল জ্ঞানোপদেশ, দার্শনিক ও বৈজ্ঞানিক নিগূঢ় তত্ত্ব সমূহ লুক্কায়িত রহিয়াছে, তত্তাবৎ উন্মোচন করিয়া, সরল ভাবে সাধারণকে সদ্ধর্ম্ম পথ প্রদর্শন করিতে হইবে।

সভার নিয়মাবলী।

১। "ভারতবর্ষীয় আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণি সভা" সম্মিলিত ভারতীয় সভা বলিয়া জানিতে হইবে, ইহা কোন স্থানীয় বা সাম্প্রদায়িক সভা নহে।

২। ভারতে আর্য্য ধর্ম্মের পুনঃ প্রচারাদি দ্বারা এতৎ সভার গুরুতর উদ্দেশ্য সাধনাদি জন্য অন্যূন একলক্ষ মুদ্রা সংগ্রহ করিতে হইবে। এই মূল ধনের উপস্বত্ব হইতে কতিপয় সুযোগ্য "ধর্ম্মাচার্য্য" ভারতে চিরদিন ধর্ম্মোপদেশ দানে নিযুক্ত থাকিবেন এবং আর্য্য শাস্ত্র সমূহ সংগৃহীত ও আর্য্যশাস্ত্রের অনুবাদাদি (ভারতীয় বিবিধ ভাষায়) পুস্তক ও পত্রিকাকারে প্রচারিত হইবে। মূল ধন হইতে কোন রূপ ব্যয় নির্ব্বাহিত হইবে না।

৩। সভার মূল ধন সংগ্রহ কালে, এককালীন দানই গৃহীত হইবে, কেবল স্থানীয় সভাসমূহ মাসিক বৃত্তি দিতে অঙ্গীকার করিলে, তাহা প্রত্যাখ্যান করা হইবে না।

৪। এতৎ সভা "মুঙ্গের আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভা" অথবা ভারতের অন্য কোন স্থানীয় সভার অধীন থাকিবে না। ইহা স্বতন্ত্র ভাবে সমস্ত আর্য্যধর্ম্ম সভার কল্যাণ কুশল রক্ষা করিবেন।

৫। যে সমস্ত আর্য্য ধর্ম্ম সভা (যে কোন নামেই হউক) ভারতের প্রকৃত কল্যাণের জন্য প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, তন্মধ্যে যে যে সভা এতৎসভার সহিত সম্মিলিত হইয়া এতৎ সভার প্রবন্ধানুসারে কার্য্য করিতে থাকিবেন, তৎ সভাকে "সহযোগিনি সভা" বলিয়া আদর পূর্ব্বক গ্রহণ করা যাইবে ও পরস্পর পরস্পরকে নিজ নিজোচিত যথারীতি সাহায্য করিতে থাকিবেন।

३। आर्य्य वा संस्कृत भाषाके ओर भारतवासियोंके अनुराग बढ़ावना औ इस भाषा की उन्नति करना।

४। भाव औ कवित्वरूप परदे में ढके हुए पुराण औ तन्त्रादिके मध्य में जो वैदिक उज्ज्वल ज्ञानोपदेश, दार्शनिक औ वैज्ञानिक निगूढ़ तत्व-समूह छिप रहे हैं, उन सबकों प्रगटकर सरल रीतिसे सर्व्वसाधारणको धर्म्म मार्ग दिखाय देना।

सभाकी नियमावली।

१। "भारतवर्षीय आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा" को सम्मिलित भारतीय सभा करके जानना, यह सभा किसी एक स्थान अथवा किसी एक सम्प्रदाय के लिये नहीं बनी है।

२। भारतवर्ष में आर्य्यधर्म्म का पुनः प्रचारादिके द्वारा इस सभाके गुरुतर उद्देश्य साधनार्थ अन्यून लक्ष रुपये संग्रह होना चाहिये। इस मूल धनके लाभसे कतिपय सुयोग्य धर्म्मोपदेष्टा (इन्होंके नाम "धर्म्माचार्य्य" है) नियत हुए भारत खण्ड में बराबर धर्म्मोपदेश करते रहेंगे, आर्य्यशास्त्रसमूह संग्रह कियेजांगे, औ आर्य्य शास्त्रोंकी उलथा (भारतीय विविध भाषा में) पुस्तक औ पत्रिकाकी रीति मुद्रित होती औ निकलती रहेगी। किसी प्रबन्ध में मूल धन व्यय न किया जायगा।

३। सभाका मूलधन एकट्ठे करने में दाताओंसे एक बारभी दान लिया जायगा, केवल देश-देशान्तर की सभासमूह यदि मासिक वृत्ति देने चाहें तो उसको अस्वीकार न किया जायगा।

४। यह सभा "मुंगेर आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी" अथवा भारतीय अन्य किसी स्थान की सभाके अधीन न रहेगी, यह स्वतन्त्र रीतिसे सारे आर्य्य धर्म्म सभाका कल्याण कुशल रक्षा करती रहेगी।

५। जितनी आर्य्यधर्म्म सभा (जिस किसी नामसे प्रसिद्ध हो) भारतके प्रकृत कल्याणके अर्थ बनी है, उन में से जो जो सभा इस सभासे मिलकर इस सभाके प्रबन्धानुसार कार्य्य करती रहेगी, उन सभाओंको "सहयोगिनी सभा" मानकर आदर पूर्व्वक ग्रहण की जागी औ परस्परको निज निजोचित यथारीति सहायता करती रहेगी।

৬। সম্পাদক সহ সাকল্যে বিংশতি জন সুযোগ্য আর্য্যধর্ম্মোৎসাহি পুরুষ "ব্যবস্থাপক সভার" সভ্য থাকিয়া সভার কার্য্য কুশল রক্ষা করিবেন।

৭। এই "ব্যবস্থাপক সভা" এক স্থানীয় মহাত্মাগণের দ্বারা রচিত হইবেন। ভারতের দিগ্‌দিগন্ত হইতে সভ্য নির্ব্বাচিত হইবেন।

৮। ব্যবস্থাপক সভার সভ্যগণ সময়ে সময়ে পরিবর্ত্তিত হইতে পারিবেন। ভগবৎ প্রেরণাপরতন্ত্রতা জন্য ও ধর্ম্মপ্রচার কার্য্যের উদ্ভাবিনী সভার সর্ব্বসম্মতিক্রমে কেবল এতৎ সভার সংস্থাপক ও সম্পাদকের পদ তাঁহার ইচ্ছানুরূপ অবিচলিত থাকিবে, তিনি আবশ্যক বোধ করিলে উপযুক্ত পাত্রে নিজ ভার ন্যস্ত করিতেও পারিবেন।

৯। বিচারপূর্ব্বক "ধর্ম্মাচার্য্য" নিয়োগ, সংগৃহীত অর্থের রক্ষণাবেক্ষণ ও পুষ্টি সাধন এবং তত্তাবদ্ব্যবহারের সদ্ব্যবস্থা করাই "ব্যবস্থাপক" সভার বিশেষ কার্য্য।

১০। ব্যবস্থাপকগণের মধ্যে ৪ জন মাত্র সমবেত হইলেও সভার কার্য্য সম্পন্ন হইতে পারিবে।

১১। এতৎ সভার কার্য্যসম্বন্ধীয় পত্র ব্যবহারাদি তাবৎ লিপিকার্য্য, ধনাগম ও ব্যয় সম্বন্ধীয় বিবরণ রক্ষা এবং স্বাক্ষর পূর্ব্বক ধনাদি গ্রহণ ও প্রদান ভার সম্পাদকের হস্তে ন্যস্ত থাকিবে। প্রতি বর্ষের বৈশাখ মাসে সম্পাদক ধনের সমাগম ও ব্যয় বিবরণ ব্যবস্থাপক সভার জন্য প্রদান করিবেন।

ধর্ম্মাচার্য্য সম্বন্ধীয় নিয়মাবলী।

১। সচ্চরিত্র, শান্তপ্রকৃতি, সদুৎসাহি, আর্য্যশাস্ত্র নিপুণ, সংস্কৃত, বাঙ্গালা অথবা সংস্কৃত, হিন্দী আদি ভারতীয় ভাষাবিৎ, ত্যাগশীল, বাক্‌পটু, দ্বিজকুলোদ্ভূত মহাত্মাগণই "ধর্ম্মাচার্য্য" পদে বৃত হইবেন।

২। শাস্ত্র ব্যাখ্যান বা বক্তৃতাকালে শাক্ত, বৈষ্ণবাদি কোন সম্প্রদায়কে কোন অবৈধ আক্রমণ করিতে পারিবেন না, বরং সমস্ত সাম্প্রদায়িক মতের সমন্বয় করিয়া দিবেন।

৩। দেশ বিদেশে গমন পূর্ব্বক বাচনিক বক্তৃতা বা শাস্ত্র ব্যাখ্যানাদি দ্বারা লোকমণ্ডলীকে ধর্ম্মভাবে মত্ত করিতে থাকিবেন, সর্ব্বত্র আর্য্যধর্ম্ম সভা

६। सम्पादक वा लेखाध्यक्षको लेकर विंशति जनमात्र सुयोग्य आर्य्यधर्म्मोत्साही महात्मा "व्यवस्थापकसभा" के सभासद बनकर सभाका कार्य्य-कुशल रक्षा करेंगे।

७। यह "व्यवस्थापक सभा" किसी एक स्थान के महात्माओंको लेकर न रची जागी। भारतके दिग्दिगन्त मेंसे सभासदोंको निर्व्वाचन किया जायगा।

८। समय समय में व्यवस्थापक सभाके सभासद सज्जन लोग बदल भी जा सकेंगे। भगवत की प्रेरणा-परतन्त्रता और धर्म्मप्रचार कार्य्य की उद्भाविनी सभा की सर्व्वसम्मतिसे केवलमात्र इस सभाके संस्थापक औ सम्पादक की पदवी उनका जीवित काल बिन बदले स्थिर रहेगी। यदि आवश्यक होतो वे स्वयं योग्यपात्र पर कार्य्यका भार भी दे सकेंगे।

९। "व्यवस्थापक सभा" विचारपूर्व्वक "धर्म्माचार्य्यों" को नियत, संग्रह कियाहुआ धनको रक्षा और उससे व्यापारों को व्यवस्था करती रहेगी।

१०। व्यवस्थापकों मेंसे अधिक नहो, चार-सभासद मात्र इकट्ठे होने होसे सभाका कार्य्य निर्व्वाह हो सकेगा।

११। एतद् सभासम्बन्धी पत्र व्यवहार आदि समस्त लिपिकार्य्य, धनागम औ व्ययसम्बन्धी विवरण को रक्षा और स्वाक्षर पूर्व्वक धनादि संग्रह वा ग्रहणसम्पादक जी करते रहेंगे। धनका आगम औ निर्गमका कुलविवरण सम्पादक जी वार्षिक सभा में प्रगट करेंगे।

धर्म्माचार्य्यसम्बन्धी नियमावली।

१। द्विजकुलके उन महात्माओं होमेंसे धर्म्माचार्य्य निर्व्वाचन किया जायगा जो कि सुचरित्र, शान्तप्रकृति, उत्साही आर्य्यशास्त्रनिपुण, संस्कृत, बङ्गाला अथवा संस्कृत औ आर्य्य साधारण (हिन्दी) आदि भारतीय भाषाविद्, त्यागी, वाक्‌पटु हों।

२। शास्त्रका व्याख्यान वा वक्तृताके, समय शाक्त वैष्णव आदि सम्प्रदायको अवैध रीतिसे आक्रमन न कर सकेंगे, वरं सब सम्प्रदायके मतका सामञ्जस कर देंगे।

३। देश देशान्तर में जाजा कर वक्तृता वा शास्त्रव्याख्यानादिके द्वारा सब जनोंको धर्म्मभावसे मत्त

ও সংস্কৃত বিদ্যালয় স্থাপন করিতে যত্নবান হইবেন এবং অবকাশক্রমে সংস্কৃত মূল গ্রন্থানুবাদ করিবেন।

৪। ভোজন সামগ্রী বা বস্ত্রাদি ভিন্ন কেহ মুদ্রাদি দান করিলে, তিনি তাহা স্বয়ং গ্রহণ করিতে পাইবেন না, উহা সভার মূলধনে মিলিত হইবে।

৫। কোন অবৈধ আচার বা দুশ্চরিত্রাদি দোষ দৃষ্ট হইলে তাঁহাকে কার্য্য হইতে অবসর দান করা হইবে।

বর্ত্তমান ব্যবস্থাপক সভা।

শ্রীযুক্ত রাজা তারেশচন্দ্র পাণ্ডে	পাকুড়,	সভাধিনায়ক
,, বাবু কালীপ্রসাদ চৌধুরী	মুঙ্গের,	উপাধিনায়ক
,, কুমার শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন (ধঃ,প্রঃ,সং)	ঐ	কার্য্যসম্পাদক
,, বাবু কমলেশ্বরী প্রসাদ (ভূস্বামী)	ঐ	সভাসদ
,, বাবু দেবীপ্রসাদ, ডিপুটী কলেক্টর	ঐ	ঐ
,, বাবু শ্যামলদাস চক্রবর্ত্তী, বিএ, বিএল,	ঐ	ঐ
,, বাবু ভগবতী চরণ ঘোষ	ঐ	ঐ
,, বাবু মহেন্দ্রনাথ ঘোষ	ঐ	ঐ
,, বাবু তোতারাম বর্ম্মা("ভা,বন্ধু" সম্পাদক) আলীগড়		ঐ
,, বাবু মহেন্দ্রনাথ ঘোষাল	কানপুর	ঐ
,, বাবু দীননাথ গঙ্গোপাধ্যায়	সৈয়দপুর	ঐ
,, বাবু দরবারি লাল	মতিহারী	ঐ
,, বাবু হরিশ্চন্দ্র	কাশীধাম	ঐ
,, পণ্ডিত গোপীনাথ (মিত্রবিলাস-সম্পাদক) লাহোর		ঐ

প্রাপ্ত পুস্তকের সমালোচনা।

১। **শ্রীশ্রীমন্নারাণ পূজাপদ্ধতিঃ।** মুঙ্গের আর্য্য-ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার অন্যতর মুখ্য সভাসদ মান্যবর শ্রীমৎবাবু কালীপ্রসাদ চৌধুরী মহোদয় কর্ত্তৃক প্রকাশিত। বিনা মূল্যে বিতরণীয়। ৺ শালগ্রাম পূজা ও ৺ বিষ্ণু পূজার বিধি ব্যবস্থা সুশিক্ষার্থ এই পুস্তক খানি নিতান্ত অনুকূল। বিবিধ শাস্ত্রীয় প্রমাণ সংগ্রহে ও এতাবতের ভাবানুবাদে প্রকাশক অতীব যত্ন ও পরিশ্রম স্বীকার এবং যথোচিত অর্থ ব্যয় পূর্ব্বক পুস্তকাকারে প্রকাশ করিয়া ভগবদর্চ্চনাপ্রিয় আর্য্যসন্তান মাত্রেরই পরমোপকার সাধন করিয়াছেন। স্বদেশের ও স্বধর্ম্মের শ্রীবৃদ্ধি সম্পাদনতৎপরতা জন্য উক্ত মহোদয় আমাদিগের নিতান্ত ধন্যবাদার্হ।

২। **প্রেম মন্দাকিনী।** মান্যবর পণ্ডিত শ্রীমান্ শারদাপ্রসাদ বিদ্যাবিনোদ বিরচিত। মূল্য ॥৹ আট আনা মাত্র। কলিকাতা সংস্কৃত কলেজ ডিপজিটরী, ক্যানিং লাইব্রারি আদিতে প্রাপ্য। জনকনন্দিনী পাতাল প্রবেশ পূর্ব্বক গোলোক ধামে গমন করিলে সূর্য্য কুলতিলক শ্রীরামচন্দ্রের বনিতা-বিয়োগ বিধুরতা, তাঁহার ধরাধাম ত্যাগ, বৈকুণ্ঠে গমন, কমলা সহ সম্মিলন আদি অবলম্বন করিয়া প্রেম মন্দাকিনী

करते रहेंगे। मर्व्वत्र आर्य्यधर्म्म सभा औ संस्कृत विद्यालय स्थापनार्थ यत्न किया करेंगे।

४। भोजनसामग्री वा वस्त्रादि छोड़ यदि कोई धर्म्माचार्य्य के हात मुद्रादि दान करें तो वह उनको नहीं मिलेगा। सभाके मूलधन में जमाकर लिया जायगा।

५। कोई अवैध आचार वा दुश्चरित्रतादि दोष उन्हों में देख पड़नेसे उनको सभाका कार्य्य में से अवसर दिया जायगा।

वर्त्तमान व्यवस्थापक सभा।

श्रीयुक्त राजा तारेशचन्द्र पाण्डे, पकौड़		सभाधिनायक
बाबु काली प्रसाद चौधुरी, मुङ्गेर		उपाधिनायक
,, कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न सेन, मुङ्गेर (धर्म्मप्रचारकसम्पादक)		कार्य्यसम्पादक
,, बाबु कमलेश्वरीप्रसाद, (भूस्वामी) मुङ्गेर		सभासद
,, ,, देवीप्रसाद, (डिपुटी कालेक्टर) मुङ्गेर		,,
,, ,, श्यामलदास चक्रवर्त्ती, बिए, बिएल मुङ्गेर		,,
,, ,, भगवतीचरण घोष,	,,	,,
,, ,, महेन्द्रनाथ घोष,	,,	,,
,, ,, तोताराम बर्म्मा (भारतबन्धु सम्पादक) आलीगढ़		,,
,, ,, महेन्द्रनाथ घोषाल	कानपुर	,,
,, ,, दीननाथ गङ्गोपाध्याय,	सैयदपुर	,,
,, ,, दरबारी लाल,	मतिहारी	,,
,, ,, हरिश्चन्द्र,	काशीधाम	,,
,, पण्डित गोपीनाथ, (मित्रविलाससम्पादक) लाहौर		,,

प्राप्तपुस्तकोंकी समालोचना।

१। **श्रीश्रीमन्नारायण पूजापद्धतिः** (बङ्गाक्षर में)। मान्यवर श्रीमान् बाबु कालीप्रसाद चौधुरी आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा मुङ्गेरके एक मुख्य सभासदने प्रकाशकर बिन मूल्य लिये दान कर रहा है। शालग्राम जीकी पूजा औ विष्णु पूजाकी विधि व्यवस्था शिक्षार्थ यह पुस्तक परम उपकारी है। भांति भांतिके शास्त्रप्रमाण संग्रह औ इन सबकी व्याख्या करने में प्रकाशक जीने अतीव यत्न औ परिश्रम स्वीकार औ यथोचित धनव्यय पूर्व्वक पुस्तकाकार में प्रकाश करके भगवदर्च्चनाप्रिय हरेक आर्य्य सन्तानका परमोपकार किया। निज देश औ निज धर्म्मकी श्रीवृद्धि करने में तत्पर देखकर हम उक्त महात्माको परम धन्यवादयोग्य मानते हैं।

२। **प्रेममन्दाकिनी** (बङ्ग भाषा में)। मान्यवर पण्डित श्रीमान् शारदाप्रसाद विद्याविनोद जीकी बनाई हुई है। मूल्य ॥० आना मात्र। जनकनन्दिनी सीता पाताल प्रवेशपूर्व्वक गोलोक धामको सिधरने पर श्रीरामचन्द्रकी वनिता वियोग-विधुरता, उनका भूधाम परित्याग, बैकुण्ठको सिधरना, कमला सहित मिलना आदि प्रसङ्ग अवलम्बन करके "प्रेममन्दाकिनी" नाटक की रीतिसे रची गयी है। लेखक की किसी किसी स्थलकी रचना औ भावमाधुरीके गुणसे पाठ

নাটকাকারে রচিত হইয়াছে। লেখকের কোন কোন স্থানের রচনা ও ভাব মাধুরীর গুণে পাঠকের অশ্রুধারা বেগবতী হইয়া প্রেম মন্দাকিনীতে মিশ্রিত হয়। ঈদৃশ সদ্ভাবপূর্ণ নাটক গুলি নাট্যশালায় অভিনীত হইলে দর্শকমণ্ডলী আর্য্যভাব ভাণ্ডারের অনেক বিচিত্র পবিত্র চরিত্রের উপাদান সংগ্রহ করিতে পারেন। রচনা সর্ব্বাঙ্গ সুন্দর না হউক, প্রশংসনীয় হইয়াছে।

৩। দি এণ্টি ক্রিশ্চিয়ান। (The Anti Christian) এখানি ইংরাজি ভাষায় লিখিত মাসিক পত্র—মাননীয় শ্রীযুক্ত বাবু কালীপ্রসন্ন কাব্যবিশারদ মহোদয় কর্ত্তৃক সম্পাদিত। খ্রীষ্টধর্ম্মের মতবিরোধ, বাইবেলের লিপিবৈষম্য, ভ্রম প্রমাদ, অসারত্ব আদি প্রতিপন্ন করিয়া বর্ত্তমান জগৎকে সচেতন ও সাবধান করাই সম্পাদকের প্রধান উদ্দেশ্য। অধুনাতন ধর্ম্ম বিপ্লব কালে ঈদৃশ এক খানি সাময়িক পত্রের অভাব আমরা অনেক দিন হইতে অনুভব করিতেছিলাম। বিশারদ মহাশয় এই মহৎ কার্য্যে ব্রতী হইয়া আমাদিগের ধন্যবাদার্হ হইয়াছেন। সম্পাদকের লিপিনৈপুণ্য, বচনরচনাচাতুরী, সংকল্প সাধনোচিত সূক্ষ্মদৃষ্টি অতীব প্রশংসনীয়। যাঁহারা আর্য্যশাস্ত্রসন্দর্ভ পাঠে উপেক্ষা প্রদর্শন পূর্ব্বক পাদরীদিগের মোহমন্ত্রে মোহিত হইয়া বাইবেলকে সারগ্রন্থ বলিয়া জানেন, তাঁহারা চক্ষুরুন্মীলন পূর্ব্বক একবার এণ্টি ক্রিশ্চিয়ান পাঠ করুন। আমরা আশা করি এণ্টি ক্রিশ্চিয়ান শিক্ষিত সমাজের নিকট হইতে যথোচিত সহানুভূতি ও সাহায্য লাভ করিয়া ধর্ম্ম জগতের আবর্জ্জনা রাশি মার্জ্জনা করিতে থাকিবেন। এতৎ পত্রের দীর্ঘ জীবন একান্ত প্রার্থনীয়।

বিশেষ বিজ্ঞাপন!

কর্ম্মখালি।

অনেক গুলি গণিত শাস্ত্রাধ্যাপকের (ক) পদ শূন্য রহিয়াছে। বেতন—"যাহা" চাহিবেন "তাহাই" পাইবেন। যিনি বিশ্ব-বিদ্যালয়ের (খ) বিষম পরীক্ষায় (গ) যথাবিধি (ঘ) উত্তীর্ণ হইয়াছেন, তিনি ভিন্ন আর কাহারও আবেদন করিবার প্রয়োজন নাই। যিনি এক (ঙ) ভিন্ন আর কোন গণনা করিতে পারেন না, এবং একের মধ্যে যিনি সকল রাশির সমাবেশ (চ) করিতে শিখিয়াছেন, তিনিই আবেদন করিবার সুযোগ্য অধিকারী। প্রতিষ্ঠা বা প্রশংসা পত্র (ছ) সহ আবেদন করিলে তাহা অগ্রাহ্য হইবে। ইতি

শ্রীশ্রীশ্রীসচ্চিদানন্দ হরি ওঁ
সম্পাদক।

মায়াপুর বিদ্যামন্দির। (ভারত-কার্য্যালয়।) } (জ)

(ক) সমদর্শী মহাত্মা। (খ) সংসারের।
(গ) বিষয়ভোগ বাসনা। (ঘ) বেদাদিবোধিত নিয়মানুসারে।
(ঙ) এক পরমাত্মা।
(চ) সচরাচর জগৎ পরমাত্মায় সংস্থিত, এইরূপ দর্শন।
(ছ) নিজ প্রতিষ্ঠা বা যশোলাভ তৃষ্ণা।
(জ) মায়া বিরচিত সংসারে আর্য্যভূমি ভারতবর্ষই কার্য্যক্ষেত্র বলিয়া শাস্ত্রে প্রসিদ্ধ।

कथे आंखसे आंसुकी धारा तेज बहती हुइ प्रेममन्दाकिनी में आ मिलती है। इस भान्ति उत्तम भावपूर्ण नाटकों यदि नाट्यशाला में अभिनीत हुआ करें तो आर्य्य भाव भाण्डारके अनेक विचित्र पवित्र चरित्रका उपादान दर्शकमण्डली संग्रह कर सक्ते हैं। रचना सर्व्वाङ्गसुन्दर न हो किन्तु प्रशंसायोग्य हुइ है।

२। दि एण्टि क्रिश्चियान। (The Anti Christian) यह मासिक पत्र अंरेजी भाषा में लिखित। माननीय श्रीमान् बाबु कालीप्रसन्न काव्य-विशारद जी का सम्पादित है। इसाई धर्म्मका मतविरोध, बाइबलका लिपिवैषम्य, भ्रम प्रमाद, असारत्व आदि प्रमाण कर आज कलके मनुष्योंको सचेत औ सावधान करना सम्पादकजीका प्रधान अभिप्राय है। वर्त्तमान धर्म्मविप्लवके समय इस भान्ति एक सामयिक पत्रका अभाव हम अनेक दिनसे अनुभव करते आते हैं। विशारद जीने इस महत कार्य्यभार उठाकर हम सबको धन्यवादार्ह हुआ है। सम्पादक की लिपि-नैपुण्य, वचन-रचना चातुरी सङ्कल्पसाधनयोग्य सूक्ष्मदृष्टि अतीव प्रशंसनीय है। जो लोग आर्य्य शास्त्रसन्दर्भ पठनको उपेक्षा करके पादरीयोंके मोहमन्त्रसे मोहित होकर बैबलको सार ग्रन्थ जान मानते हैं, वे आंख खुलके एकवार एण्टि क्रिशान पढ़ले। हम आशा करते है कि "एण्टि क्रिश्चियान" शिक्षित समाजके समीप यथोचित सहानुभूति वो सहायता पाकर धर्म्मजगतके मालिन्य राशि मिटाते रहेंगे। यह चिरजीव रहे यही ईश्वरसे प्रार्थना है।

विशेष सूचना!

पदशून्य है।

बहुतेरे गणित शास्त्राध्यापकोंके (क) पद शून्य पड़े हुए हैं। वेतन "जो कुछ" प्रार्थना करेंगे "सो" ही मिलेगा। जो विश्वविद्यालय (ख की विषम परीक्षा (ग) में यथाविधि (घ) उत्तीर्ण हुए हैं, बिना वे और कोइ आवेदन न करें। जो "एक" (ङ) छोड़के दुसरा कुछ भी गिन नहीं सक्ते हैं, औ एक में जो समस्त राशिका समावेश (च) करने की रीति सिखे हैं, वे ही आवेदन करनेका योग्य अधिकारी हैं। प्रतिष्ठा वा प्रशंसापत्र (छ) सहित आवेदन करे तो प्रार्थना अग्राह्य होगी।

मायापुर विद्यामन्दिर भारत कार्य्यालय। } (ज) श्रीश्रीश्रीसच्चिदानन्द हरि ओं
सम्पादक।

(क) समदर्शी महात्मा। (ख) संसार।
(ग) विषयभोगवासना।
(घ) वेदादिबोधित नियमोंके अनुसार।
(ङ) एक परमात्मा।
(च) चराचरसहित जगत परमात्मा में स्थित है, इस भान्ति दृष्टि।
(छ) निज प्रतिष्ठा वा यश मिलने की तृष्णा।
(ज) शास्त्र में यही प्रसिद्ध है जो मायासे रचित संसार में आर्य्यभूमि भारतवर्ष ही कार्य्यक्षेत्र है।

সূচনা।

শ্রীপঞ্চমী হইতে প্রতি মাসে "ভারতেন্দু" নামক একখানি মাসিক পত্র (হিন্দীভাষায়) প্রকাশিত হইবে। ইহাতে কাব্য, নাটক, রসায়ন, নীতি, শিল্প, কৃষি, ধর্ম্মশাস্ত্র আদি পুস্তকাকারে লিখিত হইবে। বার্ষিক অগ্রিম মূল্য ৩, টাকা মাত্র। গ্রহণেচ্ছুগণ নিম্ন লিখিত ব্যক্তিকে পত্র লিখিলে বিশেষ বিবরণ বিদিত হইতে পারিবেন।

শ্রীপণ্ডিত জ্বালাদত্ত গোস্বামী,
রইস্ মধুসূদন লেন, লাহোর।

কৃতজ্ঞতা সহকারে চতুর্থ বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত রায় রাধাগোবিন্দ রায় সাহেব বাহাদুর দিনাজপুর		৩।৵০
শ্রীমদ্বাবু দয়াল নাথ ভট্টাচার্য্য	কলিকাতা	৩৵০
,, রামদাস সেন	বহরমপুর	৩।৵০
,, শ্যামাচরণ ভট্টাচার্য্য	ঐ	৩৵০
,, গৌরচন্দ্র রায়	ভগলপুর	৩।৵০
,, উমেশচন্দ্র রায়	ঐ	৩৸০
,, কাশীনাথ চট্টোপাধ্যায়	লক্ষ্ণৌ	৩৵০
,, কুমারনাথ ভট্টাচার্য্য	গয়া	৩৵০
,, গোলোক চন্দ্র ধর	শ্রীহট্ট	৩।৵০
,, রাধাগোবিন্দ পাল	ঐ	৩।৵০
,, রাজকিশোর লাল (ডিঃ মাঃ)	গয়া	৩।৵০
,, শ্যামল দাস চক্রবর্ত্তী বিএ বিএল মুঙ্গের		৩৲
,, কালীপ্রসন্ন মুখোপাধ্যায়	বাঁকীপুর	১।৵০
,, চরণ দাস	নরসিংপুর (মধ্যপ্রদেশ)	১৵০
শ্রীপণ্ডিত রামনাথ বিদ্যাভূষণ	কানসাট্	১।৵০
শ্রীমদ্বাবু কৈলাশ চন্দ্র সিংহ	মনিরামপুর	১৵০
,, দীনবন্ধু গঙ্গোপাধ্যায়	বাঁকীপুর	১।৵০
,, রমানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ	১।৵০
,, কালীকিঙ্কর সিং	ঐ	১৵০
,, কাশীনাথ শর্ম্মা	ডুল্লুচেরা (কাছাড়)	১।৵০
,, সিদ্ধেশ্বর চট্টোপাধ্যায়	শ্যামনগর	১।৵০
,, গোবিন্দ চন্দ্র মুখোপাধ্যায়	মুঙ্গের	১৲
,, রাখাল দাস সেন	ঐ	১৲
,, শরচ্চন্দ্র রায়	ঐ	১৲
,, পার্ব্বতীচরণ গুপ্ত	ঐ	১৲
,, বঙ্কুবিহারী চট্টোপাধ্যায়	ঐ	১৲
,, জানকীনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ	১৲
,, দীননাথ চৌধুরী	ঐ	১৲
,, দুর্গানারায়ণ মজুমদার	ঐ	১৲
,, সাধুলাল রায়	ঐ	১৲
,, উমেশচন্দ্র সান্যাল	ঐ	১৲
,, রাখাল দাস চট্টোপাধ্যায়	জামালপুর	১৲
,, হরিচরণ বসু	ঐ	১৲
,, রামদয়াল নন্দী	ঐ	১৲
,, রাধিকাপ্রসাদ বসু	ঐ	১৲

विज्ञापन।

भारतेन्दु।

जिस में काव्य, नाटक, रसायन, नीति, शिल्प, कृषी, धर्म्मशास्त्र इत्यादि विषय पुस्तकाकार में प्रकाशित हुआ करेंगे, प्रकाशारम्भ वसन्तपञ्चमीसे। वार्षिक अग्रिम मूल्य ३) होगी। जिसको पूर्व्वोक्त पत्रका ग्राहक होना होतो निम्न लिखित व्यक्तिको लिखें।

पं० ज्वालादत्त गोस्वामी।
रईस, मधुसूदन लेन, लाहोर।

कृतज्ञतापूर्व्वक ४र्थ वर्षका मूल्यप्राप्तिस्वीकार।

श्रीयुक्त राय राधागोविन्द राय साहब बहादुर दिनाजपुर		३।=
श्रीमद्बाबु दयालनाथ भट्टाचार्य्य,	कलकत्ता	३।=
,, रामदास सेन,	बहरम्पुर	३।=
,, श्यामाचरण भट्टाचार्य्य,	,,	३।=
,, गौरचन्द्र राय,	भागलपुर	३।=
,, उमेशचन्द्र राय,	,,	३।=
,, काशीनाथ चट्टोपाध्याय,	लखनौ	३।=
,, कुमारनाथ भट्टाचार्य्य,	गया	३।=
,, गोलोकचन्द्र धर,	श्रीहट्ट	३।=
,, राधागोविन्द पाल	,,	३।=
,, राजकिशोर लाल, (डिः माः)	गया	३।=
,, श्यामलदास चक्रवर्त्ती, बिए, बिएल. मुङ्गेर		३)
,, कालीप्रसन्न मुखोपाध्याय,	बांकीपुर	१।=
,, चरण दास, नरसिंपुर (मध्यप्रदेश)		१।=
श्रीपण्डित रामनाथ विद्याभूषण,	कानसाट	१।=
श्रीमद्बाबु कैलासचन्द्र सिंह,	मनिरामपुर	१।=
,, दीनबन्धु गङ्गोपाध्याय,	बांकीपुर	१।=
,, रमानाथ बन्द्योपाध्याय,	,,	१।=
,, कालीकिङ्कर सिं,	,,	१।=
,, काशीनाथ शर्म्मा,	डुलुचेरा (कछाड़)	१।=
,, सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय,	श्यामनगर	१।=
,, गोविन्दचन्द्र मुखोपाध्याय,	मुङ्गेर	१)
,, राखालदास सेन,	,,	१)
,, शरच्चन्द्र राय,	,,	१)
,, पार्व्वतीचरण गुप्त,	,,	१)
,, बंकुबिहारि चट्टोपाध्याय,	,,	१)
,, जानकीनाथ बन्द्योपाध्याय,	,,	१)
,, दीननाथ चौधुरी	,,	१)
,, दुर्गानारायण मजुमदार,	,,	१)
,, साधुलाल राय,	,,	१)
,, उमेशचन्द्र सान्याल,	,,	१)
,, राखालदास चट्टोपाध्याय,	जामालपुर	१)
,, हरिचरण बसु,	जामालपुर	१)
,, रामदयाल नन्दी,	,,	१)
,, राधिकाप्रसाद बसु,	,,	१)

শ্রীমদ্বাবু কৈলাশ চন্দ্র হালদার	জামালপুর	১৲
,, নিবারণ চন্দ্র ঘোষ	ঐ	১৲
,, গোপীনাথ রায়	ঐ	১৲
,, নীলাম্বর চট্টোপাধ্যায়	ঐ	১৲
,, দিগম্বর চট্টোপাধ্যায়	ঐ	১৲
,, বিষ্ণুচন্দ্র ভট্টাচার্য্য	ঐ	১৲
,, রমণচন্দ্র দত্ত	ঐ	১৲
,, কালীপদ মজুমদার	ঐ	১৲
,, অধরচন্দ্র বসু	ঐ	১৲
,, অন্নদাপ্রসাদ চট্টোপাধ্যায়	ঐ	১৲
,, কৈলাশ চন্দ্র চক্রবর্ত্তী	ঐ	১৲
,, শারদাপ্রসাদ সিংহ	ঐ	১৲
,, রাজকৃষ্ণ গুপ্ত	ঐ	১৲
,, নবীন চন্দ্র দত্ত	ঐ	১৲

তৃতীয় বর্ষের বক্রী মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীমদ্বাবু কেদার নাথ সেন	জামালপুর	১৲
,, পঞ্চানন বরাট	ঐ	১৲
,, বিহারীলাল বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ	১৲
,, নিবারণ চন্দ্র ভট্টাচার্য্য	ঐ	১৲
,, দুর্ল্লভ চন্দ্র মজুমদার	ঐ	২৲
,, রাসবিহারি ভট্টাচার্য্য	মুঙ্গের	১৲
,, ভগবতীচরণ ঘোষ	ঐ	১৲
,, দয়ালকৃষ্ণ নিয়োগী	ঐ	১৲
,, ভোলানাথ দে (২য় ও ৩য় বর্ষ)	ঐ	৪৲

বিদেশীয় এজেন্টগণের নাম।

শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	বাঁকিপুর।
,, ,, যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী।
,, ,, জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর।
,, ,, পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট।
,, ,, ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্ত্তী এম, এ, বি এল,	গয়া।
,, ,, বিহারিলাল রায়,	জামালপুর।
,, ,, রমেশচন্দ্র সেন,	ঐ
,, ,, উপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়,	ঐ
,, ,, রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিগ্রাম।

উপরোক্ত এজেন্ট মহোদয়গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয়গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব।

মুঙ্গের, আর্য্যধর্ম্ম-প্রচারিণী সভা } শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন। সম্পাদক।

☞ এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

श्रीमद्बाबु कैलाशचन्द्र हालदार,	जामालपुर	१)
,, निवारणचन्द्र घोष,	,,	१)
,, गोपीनाथ राय,	,,	१)
,, नीलाम्बर चट्टोपाध्याय,	,,	१)
,, दिगम्बर चट्टोपाध्याय,	,,	१)
,, विष्णुचन्द्र भट्टाचार्य्य,	,,	१)
,, रमणचन्द्र दत्त,	,,	१)
,, कालीपद मजुमदार,	,,	१)
,, अधरचन्द्र वसु,	,,	१)
,, अन्नदाप्रसाद चट्टोपाध्याय,	,,	१)
,, कैलाशचन्द्र चक्रवर्त्ती,	,,	१)
,, शारदाप्रसाद सिंह,	,,	१)
,, राजकृष्ण गुप्त,	,,	१)
,, नवीनचन्द्र दत्त,	,,	१)

३य वर्षका बकेया मूल्यप्राप्ति स्वीकार।

श्रीमद्बाबु केदारनाथ सेन,	जामालपुर	१)
,, पञ्चानन बराट,	,,	१)
,, बिहारिलाल बन्द्योपाध्याय,	,,	१)
,, निवारणचन्द्र भट्टाचार्य्य,	,,	१)
,, दुर्ल्लभचन्द्र मजुमदार,	,,	१)
,, रासबिहारि भट्टाचार्य्य,	मुङ्गेर	१)
,, भगवतीचरण घोष,	,,	१)
,, दयालकृष्ण नियोगी,	,,	१)
,, भोलानाथ दे, (२य वो ३य वर्ष)		१)

विदेशके एजेण्ट सबका नाम।

श्रीयुक्त बाबु पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय,	बांकीपुर।
,, ,, यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	मतिहारी।
,, ,, जगद्बन्धु सेन,	लाहोर।
,, ,, पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट।
,, ,, इन्द्रनारायण चक्रवर्त्ती, एम् ए, बिएल	गया।
,, ,, बिहारिलाल राय,	जामालपुर।
,, ,, रमेशचन्द्र सेन,	जामालपुर।
,, ,, उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय,	जामालपुर।
,, ,, राधिकानाथ गोस्वामी,	कलिग्राम।

उपरोल्लिखित एजेण्ट महोदयोंके पास तत्तत् स्थानके ग्राहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मैं पाऊंगा।

मुङ्गेर, आर्य्यधर्म्म-प्रचारिणी सभा। } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन सम्पादक।

☞ यह पत्र हर पूर्णिमा में मुङ्गेर आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके उत्साहसे प्रकाशित होता है।

☞ *Printed by B. M. Chakravorti, At the B. P. M's Press, No. 22, Jhamapooker Lane, Calcutta*

Published by Kumar Srikrishna Prosanna Sen, at Monghyr Aryadharmaprocharinee Sabha.

এক এব "সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

"एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समन्नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥"

৪র্থ ভাগ । শকাব্দাঃ ১৮০৩ ।
৪৯ হইতে ৫৪ সংখ্যা । কার্ত্তিক [illegible] চৈত্র-পূর্ণিমা ।

४र्थ भाग । शकाब्द १८०३ ।
४९से ५४ संख्या । कार्त्तिकसे चैत्र-पूर्णिमा ।

পরমার্থ সার ।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর ।)

সর্ব্বাকারো ভগবানুপাস্যতে যেন যেন ভাবেন ।
তং তং ভাবং ভূত্বা চিন্তামণিবৎ সমভ্যেতি ॥ ৬৭ ॥

ভগবান সর্ব্বরূপময়, মানব তাঁহাকে যে ভাবে চিন্তা ও উপাসনা করেন, তিনি চিন্তামণি প্রস্তরের ন্যায় সেইরূপ ধারণ করিয়াই উপাসকের মনোবাঞ্ছা পূর্ণ করিয়া থাকেন।

দুর্ল্লভ চিন্তামণি প্রস্তরের এইরূপ স্বাভাবিক গুণ আছে, যে দর্শক তাহাকে একদৃষ্টিতে লক্ষ্য করিয়া যাদৃশ আকার মনোমধ্যে চিন্তা করিবে, সংকল্পসূত্র চক্ষুর্জ্যোতি সহযোগে চিন্তামণিতে সংযুক্ত হইবামাত্র মণি দ্রষ্টার সংকল্পিতাকার ধারণ করিয়া থাকে। জগতে যত কিছু পদার্থ দৃষ্ট হয়, সমস্তই ভগবৎ সত্বাময়, তাঁহার অস্তিত্ব শূন্য হইলে কোন বস্তুরই বিদ্যমানতা থাকিতে পারে না, সুতরাং তিনিই বিবিধরূপে বিদ্যমান থাকিয়া বিশ্বের বিচিত্রতা সম্পাদন করিতেছেন। জাহ্নবীর

परमार्थ सार ।

(पूर्व्व प्रकाशितके आगे)

सर्व्वाकारो भगवानुपास्यते येन येन भावेन ।
तं तं भावं भूत्वा चिन्तामणिवत् समभ्येति ॥६७॥

भगवान सर्व्वरूपमय हैं। मनुष्य उनको जिस किसी भावसे चिन्ता औ उपासना क्यों न करें, वे चिन्तामणि पत्थरके समान उसीरूप धारण कर उपासक की मनस्कामना पूर्ण किये करते हैं।

दुर्लभ चिन्तामणि पत्थरका ऐसा एक स्वाभाविक गुण है, जो देखनेहाराने उसको दत्तचित्त होकर देखते समय जिस भान्तिके आकार मन में चिन्ता करेगी, सङ्कल्प सूत्र आंखके ज्योति करके चिन्तामणि में मिलते ही मणिने संकल्पानुरूप रूप धर लेता है। जगत में जो कुछ देख पड़ता है, समस्त ही भगवत् की सत्वासे पूर्ण है। उनके रहे बिना किसी वस्तु की विद्यमानता ठहर नहीं सक्ती है। सुतरां वेही विविधरूपसे भासित होकर विश्वकी विचित्रता सम्पादन कर रहे है। जाह्नवी

জল যেমন মনুষ্য কর্ত্তৃক কুম্ভে প্রবিষ্ট হইয়া কুম্ভাকার ধারণ পূর্ব্বক পানকর্ত্তার শীতলতা ও পবিত্রতা বিধান করে, ভগবান্‌ও সাধকগণের ভাবরূপ কুম্ভের সাদৃশ্য প্রাপ্ত হইয়া উপাসককে পরিতৃপ্ত, পবিত্র ও চরিতার্থ করিয়া থাকেন। প্রেম ও নির্ম্মল ভাবপূর্ণ নিগূঢ় চিন্তাই ভগবৎ পদলাভের হেতু।

নারায়ণমাত্মানং জ্ঞাত্বা সর্গস্থিতি প্রলয় হেতুম্।
সর্ব্বজ্ঞঃ সর্ব্বভূতঃ সর্ব্বঃ সর্ব্বেশ্বরো ভবতি ॥৬৮॥

জীব সৃষ্টি, স্থিতি ও প্রলয়কর্ত্তা নারায়ণকে আত্ম স্বরূপ বিদিত হইয়া তন্ময় হইয়া গেলে তাঁহার সর্ব্বজ্ঞতা ও সর্ব্বভূত স্বরূপ বুদ্ধির উদয় হয় এবং তিনি সর্ব্বেশ্বর হইয়া বিরাজ করিতে থাকেন।

ঈদৃশ তন্ময় ভাব প্রাপ্ত হইলে জীবের জীবত্ব সংজ্ঞা বিদূরিত হইয়া ভ্রমর কীট সদৃশ ঈশ্বরত্ব প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

আত্মজ্ঞস্তরতি শুচং যস্মাদ্বিদ্বান্ন বিভেতি কুতশ্চিৎ।
মৃত্যোরপি মরণভয়ং ভবত্যন্যৎ কুতস্তস্য ॥ ৬৯ ॥

যাঁহাকে দেখিলে জীবের কোন ভয়ের সঞ্চার হয় না, সেই আত্মজ্ঞ বিদ্বান মহাপুরুষ কখনও শোচনীয়াবস্থাগ্রস্ত হয়েন না, এমন কি তিনি মহা বীভৎসমূর্ত্তি মৃত্যুকেও ভয় করেন না।

আত্মা অভয়স্বরূপ, যিনি নিরন্তর তাঁহার ধ্যান নিরত, তিনিও অভয় ভাব লাভ করেন, সুতরাং তাঁহার পবিত্র প্রকৃতিতে ভয় ভাব অবস্থান করিতে পারে না, এই জন্যই ঈদৃশ মহা সাধুকে দেখিয়া কাহারও ভয়ের সঞ্চার হয় না। যাঁহাকে দেখিলেই ভদ্রতার স্মরণ হয়, তিনিই ভদ্র, যাঁহাকে দেখিলেই অসৎকার্য্যের ভাবোদয় হয় তিনিই অসাধু, যাঁহাকে দেখিলেই ভগবানের প্রতি ভক্তি হয় ও তৎপদ স্মৃতিপথে আরূঢ় হয় তিনিই ভক্ত ও সাধু। এইরূপ যাঁহাকে দেখিলেই জীবের ভয়োদ্রেক হয় তিনি নিশ্চয়ই সময়ে ভয় প্রাপ্ত হইবেন।

ক্ষয়বৃদ্ধি বন্ধঘাতক বন্ধনমোক্ষৈর্ব্বিবর্জ্জিতং নিত্যং।
পরমার্থ তত্ত্বমেকংহ্যতোঽন্যদনৃতং সর্ব্বম্ ॥ ৭০ ॥

যে পরমার্থ তত্ত্ব ক্ষয় ও উদয় রহিত, বন্ধ ও ঘাতক শূন্য এবং বন্ধন ও মুক্তি বিবর্জ্জিত অর্থাৎ নিত্য এক রস বর্ত্তমান তাহাই একমাত্র সত্য অপর সমস্তই মিথ্যা।

के जल यदि कोइ कुम्भमें धर रखे तो वह जल उस कुम्भके आकार धारण कर पीनेवालाको शीतल औ पवित्र कर देता है, भगवान भी साधकोंके भावरूप कुम्भके साहश्य पाकर उपासकको परितृप्त, पवित्र औ चरितार्थ किये करते हैं। प्रेम औ निर्म्मल भावसे पूर्ण निगूढ़ चिन्तन ही भगवानके चरणलाभका हेतु है।

नारायणमात्मानं ज्ञात्वा सर्गस्थिति प्रलयहेतुम्।
सर्व्वज्ञः सर्व्वभूतः सर्व्वः सर्व्वेश्वरो भवति ॥ ६८ ॥

जब जीव अपनेको सृष्टि, स्थिति, संहार करनेहारे जो नारायण, तन्मय कर जानलेते तब उसमें सर्व्वज्ञता शक्ति, औ मैं सर्व्वभूतके स्वरूप हूं, इस भान्ति बुद्धि उदय होती है औ वे सर्व्वेश्वर बनकर विराज करते रहते है।

इस भान्ति तन्मय भाव मिलनेपर जीवको "जीव" इस संज्ञाके बदले भ्रमर कीड़ाके सदृश ईश्वरत्व मिल जाता है।

आत्मज्ञस्तरति शुचं यस्माद्विद्वान्न बिभेति कुतश्चित्।
मृत्योरपि मरणभयं भवत्यन्यत् कुतस्तस्य ॥ ६९ ॥

जिनको देखने पर जीवका भय नहीं होता, वह आत्मज्ञ महापुरुष कभी शोक दुर्दशाको नहीं प्राप्त होते हैं, अधिक क्या, वे महावीभत्स मूर्त्ति मृत्युको भी नहीं डरते हैं।

आत्मा अभयस्वरूप हैं, जो निरन्तर उनके ध्यान में लगे रहते हैं, वे भी अभयपद लाभ करते, सुतरां उनकी पवित्र प्रकृति में भयका भाव ठहर नहीं सक्ता है, इसी लिये ऐसे महा साधुको देख कर किसीका भय नहीं होता है। जिनको देखते ही भद्रताका स्मरण होता है, वही भद्र हैं, जिनको देखते ही दुष्कर्म्मका भाव आजाय, वही असाधु, जिनको देखते ही भगवत् पर भक्ति बढ़े औ उनके चरण स्मरण होते रहे वही भक्त औ साधु हैं, उसी रीति जिनको देखते ही जीवका भय हो उनने निश्चय ही किसी समय में महा भयको प्राप्त होऊ।

क्षयवृद्धिवन्धघातक वन्धनमोक्षैर्व्विवर्ज्जितं नित्यम्।
परमार्थतत्वमेकं ह्यतोऽन्यत्तदनृतं सर्व्वम् ॥ ७० ॥

जिसके क्षय औ उदय नहीं, वन्धन औ मोक्ष नहीं, वन्ध औ घातक नहीं अर्थात् नित्य एक रस वर्त्तमान परमार्थ तत्त्व ही परम सत्य है, इतर समस्त हीं मिथ्या है।

এবম্প্রকৃতি পুরুষবিজ্ঞায় নিরস্ত কল্পনা জালঃ।
আত্মারামঃ প্রশমঃ সমাস্থিতঃ কেবলো ভবতি ॥৭১॥

এই প্রকারে মায়া ও ঈশ্বরকে বিদিত হইলে কল্পনাজাল বিদূরিত হইয়া যায় এবং জীব আত্মারাম স্বরূপ হইয়া শান্তি লাভ পূর্ব্বক কৈবল্যাবস্থা প্রাপ্ত হয়। ক্রমশঃ।

ধর্ম্মপ্রচারকের অনুগ্রাহক গ্রাহক মহোদয়মণ্ডলীর নিকট সম্পাদকের নিবেদন।

সনাতন ধর্ম্মরক্ষক ভগবানের কৃপায় ধর্ম্মপ্রচারক আপনাদিগের সাধু সহায়তার শীতল ছায়ায় পরিবর্দ্ধিত হইয়া ও সুস্থ শরীরে জীবিত থাকিয়া চারি বৎসর কাল ভারতের দিগ্দিগন্তে বিচরণপূর্ব্বক নিজ কর্ত্তব্য সাধনে যথাসাধ্য যত্ন করিয়াছেন। আপনারা শিশুবেশধারী স্থবির "ধর্ম্মপ্রচারক" কে যে যথোচিত সমাদর ও স্নেহ দৃষ্টি করিয়া তাঁহার সহানুভূতি ও কল্যাণ কামনা করিয়া আসিয়াছেন, এজন্য আমরা আপনাদিগের নিকট নিতান্ত কৃতজ্ঞ আছি। আপনাদিগের সকলের সহিত আমাদিগের চাক্ষুষ সাক্ষাৎ না থাকিলেও, আপনাদিগের সাধুভাব, সহৃদয়তা, ধর্ম্মানুরাগ আদির অনুরোধে আপনারা আমাদিগের কার্য্যক্ষেত্রে অতীব সুপরিচিত। আমরা এক্ষণে আপনাদিগকে পরমাত্মীয় মনে করিয়া থাকি। ভগবান্ আমাদিগকে আপনাদিগের অনুকম্পা সূত্রে ভারতের সেবার্থ চির দিন আবদ্ধ রাখুন।

বিবিধ হেতু নিবন্ধন বহু দিন হইতে ধর্ম্মপ্রচারকের নিয়মিত প্রকাশে কিছু অতিরিক্ত বিলম্ব হইয়া আসিতেছে। বাস্তবিকও আশ্বিন মাসের পত্র ফাল্গুন মাসে প্রকাশিত হইলে প্রকাশক, পাঠক, ও গ্রাহক আদি সকলেরই মনে ধর্ম্মপ্রচারককে নিতান্ত অলস ও অবসন্ন বলিয়া বোধ হয়। এই ক্ষোভোপশমের জন্য আমরা অনন্যোপায় হইয়া পঞ্চম বর্ষের প্রারম্ভ কার্ত্তিক হইতে ফাল্গুন পর্য্যন্তের পত্র বিভিন্নাকারে প্রকাশ করিলাম না। সংখ্যা পূরণার্থ এই চৈত্র মাসের পত্রই এতম্মাসষট্কের পত্র বলিয়া পরিকল্পিত হইল। এবং এবার হইতে

एवम्प्रकृतिपुरुषविज्ञाय निरस्त कल्पनाजालः।
आत्मारामः प्रशमः समास्थितः केवलो भवति ॥७१॥

इस रीतिसे माया ईश्वरको विदित होजाने पर कल्पनाजाल छुट जाते हैं औ जीव आत्मारामरूप बनकर शान्तिलाभ पूर्व्वक कैवल्य गतिको प्राप्त होता है। शेष आगे।

धर्म्मप्रचारकके अनुग्राहकग्राहक महोदयोंके निकट सम्पादकका निवेदन।

सनातन धर्म्मरक्षक श्रीभगवानकी कृपासे धर्म्मप्रचारक आपलोगोंकी साधु सहायता की सुशीतल छाया में परिवर्द्धित होकर औ आनन्दयुक्त शरीर में जीवित रहकर चार वर्ष भारतवर्ष की दिग्दिगन्त में विचरते फिरते हुए निज कर्त्तव्य साधन में साध्यानुसार यत्न किये। आपलोग बालकके भेष लियेहुए वृद्ध धर्म्म प्रचारकको जो यथोचित समादर औ स्नेहदृष्टि कर उनकी सहानुभूति औ कल्याण कामना कर आये, एतदर्थ हम आप सबके निकट नितान्त कृतज्ञ रहे हैं। यद्यपि आप लोगोंके सबसे हमारा चाक्षुष साक्षात् नहीं, तथापि आप सबके साधुभाव, सहृदयता, धर्म्मानुराग आदिके अनुरोधसे आप सब हमारे कार्य्यक्षेत्र में अतीव सुपरिचित हैं। अब हम आपलोगोंको परमात्मीय कर मानते हैं। भगवान भारतके सेवार्थ आप लोगोंकी कृपासूत्र में हमे चिरदिन आबद्ध रखें।

विविध हेतु करके अनेक दिनसे धर्म्मप्रचारकके नियम पूर्व्वक प्रकाश होने में थोड़ा बहुत विलम्ब होता आया। वास्तव में यदि आश्विन मासका पत्र फाल्गुन मास में प्रकाश हुए तो प्रकाशक, पाठक और ग्राहक आदि सब किसीके मनमें यही भावित होता है जो धर्म्मप्रचारक निपट अलस और अवसन्न हो रहा है। इस क्षोभ की शान्तिके लिये अनन्योपाय होकर पञ्चम वर्षके प्रारम्भकाल कार्त्तिकसे लेकर फाल्गुन पर्य्यन्तका पत्र भिन्न भिन्न करके प्रकाश नहीं किया गया। संख्या पुरी करनेके अर्थ इस चैत्र मासके पत्रहीको इन छः मास के पत्र करके कल्पना करी गई और इस वेरसे

নিয়মিত সময়ে যথাক্রমে পত্র প্রকাশিত হইতে থাকিবে। গ্রাহক ইচ্ছা করিলে পঞ্চম বর্ষের মূল্য প্রেরণ কালে পাঁচ সংখ্যার মূল্য ন্যূন পাঠাইতে পারিবেন (অর্থাৎ বিদেশীয় ১ম শ্রেণীর গ্রাহকগণ ১৸৶১০, ২য় শ্রেণীর ১৵১০, ও ৩য় শ্রেণীর ৸৵০ এবং স্থানীয় ১ম শ্রেণীর ১৸০, ২য় শ্রেণীর ১৶০ও ৩য় শ্রেণীর ৷৷৵১০মাত্র পাঠাইলেই হইবে, এবং যে সকল সহৃদয় মহাত্মা ধর্ম্মপ্রচারকের সাহায্য বিবেচনায় পূর্ণ মূল্য প্রেরণ করিবেন, আমরা অতীব কৃতজ্ঞতা সহ তত্তাবৎ গ্রহণ করিয়া তাঁহাদিগকে ধন্যবাদ প্রদান করিব ও চিরদিন স্মরণ রাখিব।

অনুগ্রাহক গ্রাহকগণ ধর্ম্মপ্রচারকের পঞ্চম বর্ষীয় অগ্রিম মূল্যাদি শীঘ্র প্রেরণ পূর্ব্বক ধর্ম্মপ্রচার কার্য্যের সহায়তা করিয়া আমাদিগকে কৃতজ্ঞতা বদ্ধ করুন।

আর্য্যশাস্ত্র বিজ্ঞান।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর।)

এতদুভয়বিধ ছন্দের উদাহরণ যথা——

মানবাদি যে স্বাভাবিক বাক্য প্রয়োগ করে তাহাই স্বভাবতন্ত্র ছন্দের উদাহরণ স্থল। মনে কর, কোন ব্যক্তি "রাম" এই শব্দ করিল। ঐ ব্যক্তির পুত্রের নাম রাম, স্বয়ংও রামভক্ত, কাহারও ঘৃণার উদয় হইলে যে "রাম,—নারায়ণ" প্রভৃতি শব্দের উচ্চারণ করিয়া থাকে, তাহাও সকলে জ্ঞাত আছেন। এইক্ষণ শ্রোতা উল্লিখিত "রাম" শব্দের ছন্দোব্যতিরেকে কোন্ তাৎপর্য্য গ্রহণ করিবে? বক্তা কি আহ্বান করিল, কিম্বা ভক্তি প্রকাশ করিল, না স্বাভাবিক রাম শব্দই করিল? বক্তা তাহার পুত্রকে যখন সম্বোধন করে তখনও রামশব্দের যেরূপ আকৃতি, ভগবদ্ভাবে যখন ভগবান্‌কে ডাকে তখনও তদ্রূপ, আবার ঘৃণাকালীনও সেই শব্দ, শোক প্রকাশ কালীনও তদ্রূপ, স্বাভাবিক উচ্চারণেও তাহাই। এইক্ষণ কেবল মাত্র ছন্দের ইতর বিশেষেই শ্রোতার ভাব গ্রহ হইয়া থাকে, নতুবা আর উপায় নাই। বক্তারও তত্তদ্ভাব প্রকাশ করিতে ইচ্ছা হইলে তত্তচ্ছন্দের আপন হইতেই আবির্ভাব

पत्र नियमित समय पर यथाक्रम प्रकाशित होता रहेगा पञ्चम वर्षका मूल्य भेजनेके समय ग्राहक महोदय चाहें तो पांच संख्याकी मूल्य न्यूनकर भेज सकते हैं (अर्थात् विदेशी १म श्रेणीके ग्राहकगण १।৶)॥, २य श्रेणीके १।৵)। और ३य श्रेणीके ।॥) और स्थानीय प्रथम श्रेणीके १॥) २य श्रेणीके १৶) और ३य श्रेणीके ॥)॥ भेजे) औ जो सब सहृदय महात्मा धर्म्म प्रचारकके साहाय्य की रीति पर पूर्ण मोल भेजेंगे, हम अतीव कृतज्ञता सहित उतना द्रव्य लेकर उन्होंको धन्यवाद देंगे औ चिरदिन स्मरण राखेंगे।

अनुग्राहक ग्राहकगण पञ्चम वर्षका अग्रिम मूल्य धर्म्म प्रचारकके शीघ्र भेजकर धर्म्मप्रचार कार्य्यकी सहायता कर हमको कृतज्ञतावद्ध करें।

आर्य्य शास्त्र-विज्ञान।

(पूर्व्व प्रकाशितके आगे)

इन दो प्रकार छन्दके उदाहरण जैसा,

मनुष्यगण जो स्वाभाविक कथन किये करते हैं, सो ही स्वभावतन्त्र छन्दका उदाहरण स्थल हैं। मानिये कोइ पुरुषने "राम" ऐसा शब्द किया। इसके पुत्रका नाम है "राम", वह स्वयं भी राम भक्त है, किसी वस्तुपर किसीकी घृणाका उदय होनेसे भी "राम" "नारायण" आदि शब्द का उच्चारण किया करता है यह भी अप्रगट नहीं। अब छन्द व्यतिरिक्त श्रोता ने उस राम शब्दका कौन सा तात्पर्य्य ग्रहण करेगा? वक्ता पुत्रको पुकारा वा भक्ति दिखाया अथवा स्वाभाविक "राम" शब्दका उच्चारण किया? वक्ता जब अपने पुत्रको पुकरता है, तब "राम" शब्दका जिस भान्तिरूप है, भक्ति करके जब भगवानको सम्बोधन करता है, तब भी वैसा ही है; घृणा वा शोक प्रकाश काल में भी वैसा ही शब्द, स्वाभाविक उच्चारण काल में भी वैसा ही। इस समय केवल छन्द:के इतर विशेष ही करके श्रोताने भावग्रह करता है, अन्यथा उपाय नहीं। वक्ताकी भी तत्तद्भाव प्रगट करने की इच्छा होनेपर तत्तच्छन्द: आप ही आप आविर्भूत होते हैं। समस्त शब्दकी

ড়ে। এই প্রকার সমস্ত শব্দেই জানি-বে। সর্ব্বদা ব্যবহৃত বাক্‌সমূহে যে এই স্বভাবতন্ত্র ছন্দঃ অভিহিত হইল, ইহার যদিচ কাল বিপর্য্যয়বশতঃ ছন্দো বলিয়াই সহজে প্রতীতি হয় না এবং ছন্দঃ শাস্ত্র দ্বারাও প্রতিপাদন নাই, তথাপি এই ছন্দই আদি ও নিখিল ছন্দের বীজ স্বরূপ, ইহা হইতেই সমস্ত প্রকার ছন্দের উৎপত্তি হইয়াছে, এবং ইহা ছন্দের লক্ষণকে অতিক্রম করে নাই। বক্তৃমনোগত ভাবের সহিত মিলিত বাক্যের বিভক্তি বা বিভাগ বা ভঙ্গী ক্রমই ছন্দের প্রকৃত লক্ষণ, সুতরাং কোন বাক্যই তাহার বিরহিত হইতে পারে না। মানবাদি শরীর যেরূপ ভঙ্গীক্রম উল্লঙ্ঘন করিয়া সম্ভাবান্‌ হইতে পারে না, স্বীয় অবয়ব সংস্থানের ভঙ্গীক্রম বিশিষ্টই হইয়া থাকে, বাক্যও তাদৃশ। বাক্যও স্বীয় অবয়বের ভঙ্গীক্রম বিশিষ্টই হইয়া থাকে। ইহাতে আর সন্দেহ নাই। অতএব স্বভাবতন্ত্র ছন্দঃ আদৌ ব্যাখ্যাত হইল।

উক্তবিধ বাক্য ভঙ্গীক্রম নানাবিধ, সুতরাং ছন্দঃও নানাবিধ। বক্তৃমনোগত ভাবের আবার নানারূপত্ব নিবন্ধন ভঙ্গীক্রমের নানা ভাব। তাহাতে সাধারণতঃ স্বভাবতন্ত্র ছন্দঃ দ্বিবিধ। অপ্লুত সংজ্ঞী,২য় প্লুত সংজ্ঞী। সাধারণ বাক্যে যে ছন্দঃ উৎপন্ন হয় তাহাকে অপ্লুত সংজ্ঞী, আর ক্রন্দনাদিতে যে ছন্দঃ উদ্ভূত হয় তাহাকে প্লুত সংজ্ঞী বলা যায়।

ক্রমশঃ

সনাতন আর্য্যধর্ম্মের পুনরুত্তেজনা।

বিশ্ববিখ্যাত আর্য্য মহাত্মাদিগের পরম পবিত্র তীর্থ গয়াক্ষেত্রে সনাতন আর্য্যধর্ম্মের পুনঃ প্রচারার্থ ও গয়া নিবাসী আর্য্য সন্তানগণের হৃদয়ে আর্য্য ভাবের পুনরুত্তেজনা করিবার নিমিত্ত ভারতবর্ষীয় আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভার সম্পাদক ও আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারক শ্রীমান্‌ কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন মহাশয় সম্প্রতি গয়াধামে শুভাগমন করিয়াছিলেন। উক্ত মহাত্মার শুভাগমন সংবাদ ইতিপূর্ব্বেই প্রচারিত হইয়াছিল। ১৮ই পৌষ রবিবার, দিবা ১০ ঘটিকার সময় তিনি অত্রস্থ রেলওয়ে ষ্টেশনে

में यही रीति जानना। सर्व्वदा व्यवहृत कथन समूह में जो स्वभावतन्त्र छन्द आरोप कियागया, यह यदिच काल विपर्य्यय करके सहज में छन्द होकरके नहीं प्रतीति होती है, औ छन्द शास्त्र करके भी प्रमाणीभूत नहीं, तथापि यही छन्द आदि औ निखिल छन्दका मूल है। इसीसे सब भान्ति छन्दकी उत्पत्ति है औ छन्दका जो लक्षण है, उसको भी यह अतिक्रम न किया। वक्ताके मनोगत भावके सहित मिलीहुई वचनकी विभक्ति वा विभाग वा भङ्गीक्रम ही छन्दका प्रकृत लक्षण है। सुतरां कोई वाक्य ही उससे रहित नहो सक्ता है। मानव आदि शरीर जैसा भङ्गीक्रमको लङ्घन करके नहीं ठहर सक्ता है, निज अवयव संस्थानके भङ्गीक्रमयुक्त ही होता है, वाक्य भी उस रीतिकी है। वाक्य भी निज अवयवके भङ्गीक्रमके अनुसार ही होती है। इस में कुछ सन्देह नहीं। अतएव स्वभावतन्त्र छन्दको इस रीति जानना।

इस भान्ति वाक्यकी भङ्गी नानाविध है सुतरां छन्द भी नाना भान्तिके वक्ताके मनोगत भाव भी नानारूप है, तदर्थ भङ्गीक्रम भी नाना भावयुक्त हैं। उससे साधारणतन्त्र छन्द द्विविध है। १म, अप्लुत संज्ञी। २य, प्लुतसंज्ञी। साधारण वाक्य करके जो छन्द उत्पन्न होता, उसको अप्लुत संज्ञी औ रोदन आदि में जो छन्द उत्पन्न होता है उसको प्लुत संज्ञी कहता हैं।

शेष आगे।

सनातन आर्य्यधर्म्मकी पुनरुत्तेजना।

जगत् प्रसिद्ध आर्य्य महात्माओंके परम पवित्र तीर्थ गयाक्षेत्र में भारतवर्षीय आर्य्य धर्म्मसभाके कार्य्यसम्पादक औ आर्य्यधर्म्म प्रचारक श्रीमान् कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न सेन जीने थोड़े दिन व्यतीत हुये, गयाधाम में सनातन आर्य्यधर्म्मके पुनर्व्वार प्रचारार्थ औ गयावासी आर्य्य सन्तानों के हृदय में आर्य्य भावको फिर उस्कानेकेलिये शुभागमन किया था। उक्त महात्माके शुभागमनके समाचार पहिले होके यहां प्रसिद्ध हुई थी। पौषसुदी १२वी रविवार बेला १० बजेके समय गयाके रेलवे

উপস্থিত হয়েন। ষ্টেশন হইতে তাঁহাকে অভ্যর্থনা পূর্ব্বক আনয়নার্থ অত্রস্থ উদারচেতা সদুৎসাহী সদরআলা শ্রীমদ্বাবু মাতাদীন, সদুদ্যমশীল ও কার্য্যকুশল ডেপুটী মাজিষ্ট্রেট শ্রীমদ্বাবু রামানুগ্রহ নারায়ণ, সাধুহৃদয় ও সত্যানুসন্ধিৎসু গবর্ণমেণ্ট উকীল শ্রীমদ্বাবু ভূপসেন সিং, শান্তপ্রকৃতি ও আর্য্যধর্ম্মানুরাগী শ্রীমদ্বাবু ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্ত্তী এম্, এ, বিএল, স্বদেশহিতৈষী সহৃদয় গয়াল শ্রীমদ্বাবু দাদুলাল কুটী, পবিত্রচিত্ত শ্রীমদ্বাবু অঘোরনাথ পাল মহাশয় এবং অন্যান্য অনেক গুলি স্থানীয় সম্ভ্রান্ত মহাত্মা একত্রিত হইয়া অগ্রেই তথায় প্রস্তুত ছিলেন। তিনি শকট হইতে অবতরণ করিলে এতন্মহাত্মামণ্ডলী দ্বারা সম্মান সহ গৃহীত ও সমাদর পূর্ব্বক বাসা বাটীতে আনীত হইলেন। স্থানীয় ভদ্রগণের সহিত সদালাপ, ধর্ম্মসম্বন্ধীয় আলোচনা আদি করিতে করিতে সে দিন অতিবাহিত হইয়া গেল।

সোমবার।

অপরাহ্ন বেলা ৩ টার সময় অত্রস্থ রাজকীয় বিদ্যালয়ে বাগ্মী মহোদয় "প্রকৃত উন্নতি সাধন" বিষয়িণী একটী সুদীর্ঘ বাচনিক বক্তৃতা করেন। সভাস্থলে অন্যূন ৩০০ সুশিক্ষিত ভদ্র লোক উপস্থিত ছিলেন। আর্য্যদিগের অসাধারণ সর্ব্বাঙ্গীন সুন্দর উন্নতি এবং আমাদিগের বর্ত্তমান যৎপরোনাস্তি অবনতি ও দুর্গতি বিশদরূপে বিবৃত হইল। কিরূপে শারীরিক, মানসিক ও আধ্যাত্মিক উন্নতি পরস্পর অবিরোধে সুসম্পন্ন হইতে পারে, এবং তত্তাবৎ দ্বারা কি প্রকারে ইহলৌকিক ও পারলৌকিক কল্যাণ সংসাধিত হয় আর্য্যশাস্ত্রীয় প্রমাণ সহ অভিনব বৈজ্ঞানিক ও দার্শনিক পদ্ধতিতে সুস্পষ্ট ব্যক্ত হইল। প্রাতঃস্নান, পুষ্পচয়ন, অন্তর্জ্জলি, আদি ব্যবস্থা গুলিরও অত্যাবশ্যকতা অকাট্য প্রমাণ দ্বারা প্রতিপন্ন হইল। আর্য্য ঋষিগণ সমস্ত কার্য্য, সমস্ত নিয়ম, এমন কি স্ব স্ব জীবনও ধর্ম্মময় করিয়াছিলেন, সুতরাং তাঁহাদের গ্রন্থ সকল, উপদেশ সকল ধর্ম্মাগ্নিতেজোময়ী প্রতিভায় পরিপূর্ণ। তাঁহারা যাহা বলিতেন, যাহা করিতেন, ধর্ম্মই সকল বিষয়ের একমাত্র লক্ষ্য ছিল। তাঁহারা ধর্ম্মপরায়ণ অগত্যা ধর্ম্মানুরঞ্জিত

स्टेशन पर उतरे। स्टेशन परसे उनको सम्मा पूर्व्वक लानेके लिये यहांके उदारचित्त उत्साह युक्त सदरआला श्रीमान् वावू मातादीन, साधु-हृदय और सत्यके खोजनेवार गवर्णमेण्ट वकील श्रीमान् वावू भूपसेन सिंह, परम उद्योगशाली औ कार्य्यकुशल डिपुटी मजिष्ट्रेट श्रीमान् वावु रामानुग्रह नारायण, शान्तप्रकृति आर्य्य धर्म्मानुरागी श्रीमान् वावू इन्द्रनारायण चक्रवर्त्ती एम, ए, विएल, स्वदेशहितैषी सहृदय गयावाल श्रीमान् वावू दादूलाल कुटी, पवित्रचित्त श्रीमान् वावू अघोरनाथ पाल जी औ अन्यान्य बहुतेरे मान्य महात्मालोग एकट्ठे होकर पहिली हीसे वहां प्रस्तुत थे। वे गाड़ी परसे उतरतेही इन महात्मा लोगोंने उनको सम्मान सहित ग्रहण किये औ समादर पूर्व्वक उनके अर्थ निरूपित डेरे में लाये, स्थानीय भद्र जनोंसे सदालाप औ धर्म्मसम्बन्धी चर्च्चा आदि करते करते वह दिन व्यतीत हुआ।

सोमवार।

दोपहरके उपरान्त यहांके राजकीय विद्यालय में वाग्मी महोदयने "प्रकृत उन्नति साधन" इस आशयपर एक सुदीर्घ वाचनिक वक्तृता करी। सभा में अन्यून २०० सुशिक्षित भद्र महात्मा उपस्थित थे। आर्य्य लोगोंकी असाधारण सर्व्वाङ्गसुन्दर उन्नति और हम सबकी यत्परोनास्ति अवनति और दुर्दशा विस्तार रूपसे विवृत हुई, शारीरिक, मानसिक औ आध्यात्मिक उन्नति बिन परस्पर विरोध किये, किस रीतिसे सुसम्पन्न हो सकती है और उन सबसे किस भांति इस लोक औ परलोकका कल्याण सिद्ध होता है सो सब आर्य्य शास्त्रके परमान सहित नवीन वैज्ञानिक औ दार्शनिकरीतिसे स्पष्टरूप समझा दिया गया। प्रातःकाल में स्नान करना, पूजाके लिये फूल तोड़ना मरण काल में अन्तर्जली करना आदि व्यवस्थायें की भी अत्यन्त आवश्यकता परम प्रबल प्रमाण करके प्रतिपादन करी गई। आर्य्य ऋषिगण समस्त कार्य्य, समस्त नियम, अधिक क्या निज निज जीवन भी धर्म्ममय किये थे, सुतरां उन्होंके ग्रन्थसमूह, उपदेश समूह धर्म्मरूप अग्निके तेजयुक्त प्रतिभासे परिपूर्ण थे। वे जो कुछ बोलते थे, जो कुछ करते थे, सब विषयका एकमात्र लक्ष्य धर्म्म होता था। वे लोग धर्म्म परायण थे, सुतरां बिना

না হইলে কিছুই তাঁহাদের ভাল লাগিত না। প্রকৃতিই আর্য্যধর্ম্মের আধার ভূমি, সুতরাং প্রাকৃতিক বিজ্ঞানের বিনানুমোদনে তাঁহারা কোন ব্যবস্থাই বিধিবদ্ধ করিতেন না। তাঁহারা সত্য স্বরূপের আশ্রিত, সত্যই তাঁহাদের জীবনাবলম্বন ছিল, তাঁহারা সত্যব্রত থাকিয়া সর্ব্বদা পরম সত্য পরমাত্মসত্বারই উপলব্ধি করিতেন; তাহাতেই তাঁহারা "প্রকৃত উন্নতির" শিখরদেশে আরোহণ করিতে পারিয়াছিলেন, তাহাতেই তাঁহাদের নাম ও প্রতিভা চিরস্মরণীয় ও বিশ্ব বিখ্যাত হইয়া রহিয়াছে। সত্য হইতে কখন তাঁহারা বিচ্যুত হইতেন না, অখণ্ড জগতকে এক সত্যময় দেখিতেন, আমরা যদি ভ্রান্তিক্রমেও তাঁহাদের উপদেশ ও বিধি সমূহকে অসত্য ও ভ্রমসংকুল মনে করি, তাহা আমাদের ঘোরতর ও ভয়ানক পাপ বলিয়া গণ্য হইবে। পূজ্যপাদ আর্য্যদিগের উপদেশানুসারে না চলিলে, সনাতন আর্য্যধর্ম্মের আশ্রয় না লইলে, আর্য্যভাবে হৃদয় সুসংগঠিত না করিলে ভারতের "প্রকৃত উন্নতি" হইবে না, অধোগতি ঘুচিবে না। শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন স্বীয় বক্তৃতায় এতাবৎ অতি বিস্তৃত রূপে অতি বিশুদ্ধরূপে প্রকাশ করিয়াছিলেন। বক্তৃতা শেষ হইল, শ্রোতৃগণ বক্তাকে আনন্দপূর্ণ হৃদয়ে অশেষ সাধুবাদ দান ও শ্রুত বিষয় পরমাদরে হৃদয়ফলকে অঙ্কিত করিয়া স্ব স্ব গৃহে গমন করিলেন, দিবা অবসান হইল।

মঙ্গলবার।

সন্ধ্যার পর গয়াধামের সুপ্রসিদ্ধ "বিষ্ণুপাদ" পীঠের প্রস্তর বিনির্ম্মিত নাট মন্দিরে "৭ হইতে ৯॥০ পর্য্যন্ত" "ভারতের প্রেতত্ব মোচন" বিষয়িণী বক্তৃতা হয়। নাটমন্দিরটী আলোকমালাদি দ্বারা অতীব সুসজ্জিত হইয়াছিল। গয়ার অধিকাংশ সম্ভ্রান্ত, উচ্চপদস্থ ও মান্য মহাত্মা ও সাধারণ লোকের সমাগমে নাটমন্দির ও গৃহ প্রাঙ্গণ পর্য্যন্ত জনাকীর্ণ হইয়াছিল। অন্যূন ৭০০।৮০০ লোক সোৎসুকচিত্তে সমবেত। বক্তার বক্তব্য বিষয়টীও স্থানোচিত হইয়াছিল। বক্তা প্রথমতঃ ভক্তিপূর্ণহৃদয়ে বিষ্ণুপাদে প্রণাম ও স্পর্শ করিলে ধর্ম্মোৎসাহী গয়াল শ্রীযুক্ত বাবু বিহারিলাল বারিক ও শ্রীযুক্ত বাবু দাহুলাল কুটী আদি সাধুমহোদয়গণ

धर्म्मसे रहना हुआ, कुछभी उनका सुखदायी नहीं बूझ पड़ता था, प्रकृति ही आर्य्य धर्म्म की आधार भूमि है सुतरां प्राकृतिक विज्ञानकी सम्मति विना वेलोग किस ही व्यवस्थाको विधिबद्ध नहीं करते थे। वे लोग सत्यस्वरूपके आश्रित थे, सत्य ही उन सबका जीवनावलम्बन था, वे सत्य व्रत रहकर सर्व्वदा परम सत्य परमात्मा की सत्ता अनुभव किये करते थे; उसीसे वे लोग प्रकृति उन्नतिके शिखरदेशमें आरूढ़ हो सके थे, उसीसे उन सबके नाम और प्रतिभा चिरस्मरणीय और सारे संसार में प्रगट हो रहे हैं। सत्यमार्गसे वे लोग कभी च्युत नहीं होते थे, अखण्ड जगतके एक सत्यमय देखा करते थे, यदि भूलसे भी हम उन्होंके उपदेश औ विधिसमूहको ऐसा समझें कि वे असत्य औ भ्रमपूर्ण हैं तो हमारा घोरतर और भयङ्कर पाप करके गिना जायगा। पूज्यभाजन आर्य्य लोगोंके उपदेश अनुसार चले विना, सनातन आर्य्य धर्म्मका आश्रय लिये विना, आर्य्य भावसे हृदयको सुन्दर बनाये विना, भारतकी "प्रकृत" उन्नति न होगी। अधोगति न मिटेगी। श्रीकृष्णप्रसन्न जीने वक्तृताके द्वारा अति विस्तारपूर्व्वक अति विशुद्ध रीतिसे प्रगट कियेथे। वक्तृताका शेष हुआ, श्रोतागण आनन्दपूर्ण हृदयसे वक्ताको अशेष साधुवाद दान और सुनीहुई बातोंको हृदय में परमादरसे अङ्कित कर निज निज गृह में चले, सूर्य्य भी अस्त गये।

मङ्गलवार।

गया धामके सुप्रसिद्ध विष्णुपादके सामने पत्थरसे बनाया हुआ। नाटमन्दिर में सन्ध्याके उपरान्त ७ बजेसे ९॥ बजे तक "भारतका प्रेतत्व मोचन" इस आशय पर एक वक्तृता हुई। भांति भांतिके दीपकोंसे नाटमन्दिर सुन्दररूप सजाये गयेथे गयाके अधिकांश प्रधान प्रधान उच्च पदवीके और मान्यमहात्मा और साधारण लोगोंके समागमसे मंन्दिर और गृहके अङ्गन स्थान परिपूर्ण हो गये थे। कमसे कम सात आठसौ लोग उत्सुकचित्तताके एकत्र हुएथे। वक्तृताका आशय भी उसस्थानके योग्य हुआथा। वक्ता पहिले भक्ति पूर्ण हृदयसे विष्णुपादको प्रणाम औ स्पर्श करनेपर साधुहृदय श्रीमान् बाबू बिहारीलाल बारिक वो श्रीमान् बाबू दाहुलाल कुटी आदि धर्म्मोत्साही गयावालोंने

কুমার শ্রীকৃষ্ণের গলদেশে সুরভি কুসুমরাজি রচিত আপাদবিলম্বিত বনমালা পরাইয়া দিলেন। বক্তা উৎসাহপূর্ণ হৃদয়ে দণ্ডায়মান হইয়া ভগবৎ স্তোত্র পাঠ পূর্ব্বক বক্তব্য বিষয়ের চমৎকার সূচনা ও ব্যাখ্যা করিলেন। বক্তৃতাটী প্রত্যেক শ্রোতার হৃদয়গ্রাহী হইয়াছিল। প্রথমতঃ আর্য্যদিগের নির্ম্মল জাতীয় প্রকৃতি, ধর্ম্ম ভাব ও সামাজিক উত্তমোত্তম রীতি নীতি পরিবর্ণিত এবং ইহাও বিশদরূপে প্রদর্শিত হইল যে আর্য্যদিগের রাজ্য হানির সঙ্গে সঙ্গে যাবনিক ও ম্লেচ্ছ ভাবরূপ প্রেত ভারতকে আশ্রয় করিয়াছে। যদি কোন পুং প্রেত কোন স্ত্রীকে আশ্রয় করে তবে সেই স্ত্রীর মুখ হইতে পুরুষোচিত ভাষা নির্গলিত হয়। প্রেতগ্রস্ত "কমলা"কে নাম জিজ্ঞাসা করিলে সে প্রেতের নামানুসারে বলিবে যে আমার নাম "রামচাঁদ।" তাহার রীতি প্রকৃতিও পুরুষের ন্যায় হইয়া যাইবে, অর্থাৎ সে পুরুষবৎ নির্ল্লজ্জ ভাবাদি যুক্ত হইয়া পড়িবে, কেন না এক্ষণে সে প্রেতপ্রকৃতিযুক্ত। আজ কাল আমাদিগের মধ্যে অনেক মহাত্মা যবন ও ম্লেচ্ছানুকরণে পরিচ্ছদ পরিবর্ত্তন করিয়াছেন; ভোজন, ভাষা, রীতি নীতি আদি বহুতর বিষয় ম্লেচ্ছাদি বিজাতীয়ভাবরূপে প্রেতের রীত্যনুসারে পরিবর্ত্তিত হইয়াছে। এমন কি সন্তানের নাম রক্ষা কালে "জয় সিং" না রাখিয়া "ফতেসিং" রাখিয়া থাকেন। ধর্ম্মানুশীলনও প্রেতভাবাপন্ন হইয়া গিয়াছে। আমাদিগের ধর্ম্মশাস্ত্রসিদ্ধ বিশ্বাস এই যে এতদ্বিষ্ণু পাদে শ্রদ্ধাপূর্ব্বক পিণ্ড প্রদান করিলে পিতৃগণের প্রেতত্ব বিমোচন হয়, এজন্য অদ্য আমরা বিষ্ণুপাদে সকলে সমবেত হইয়াছি। আলস্য, ঔদাস্য, উপেক্ষা, শাস্ত্রানভিজ্ঞতা, পরাধীনতা, ভীরুতা, ব্যভিচার, বিজাতীয় ব্যবহার, সুরাসেবন আদি প্রচণ্ড প্রেতমণ্ডলী আসিয়া ভারতকে আশ্রয় করিয়াছে, এতাবৎ প্রেতাপসারণ জন্য আমাদিগকে বিষ্ণু পাদের শরণ গ্রহণ করিতে হইবে। ধর্ম্মবল লাভ করিতে না পারিলে আমাদিগের হৃদয়ের তেজ বৃদ্ধি হইবে না। বিষ্ণুই একমাত্র রক্ষক, আর্য্য ধর্ম্ম ভাবোত্তেজনা দ্বারা আমাদিগকে মহান্ অনর্থজাল হইতে রক্ষা করুন। বিষ্ণু পাদাশ্রয়ই জীবের সমস্ত বলের সূচনা করিয়া দিবে। শ্রোতৃবর্গ বক্তৃতার আদ্যোপান্ত নিস্তব্ধ

कुमार श्री कृष्णके गले में सुगंधकुसुमराजि रचित आपाद विलम्बित वनमाला पहिराय दिये। वक्ताने उत्साहपूर्ण हृदयसे दण्डायमान होकर भगवत स्तोत्रके पठन पूर्व्वक वक्तव्य विषय की चमतकार सूचना ओ व्याख्या किये वक्तृता हरएक श्रोताके मनो हरणी हुई थी। आर्य्य सज्जनोंकी निर्म्मल जातीय प्रकृति, धर्म्मभाव और उत्तम उत्तम सामाजिक रीति, नीति पहिले वर्णन की गई और यहभी विस्तारपूर्व्वक देखाया गया जो आर्य्य लोगोंके राज्यनाशके सङ्ग ही सङ्ग यावनिक और म्लेच्छभावरूपोपेत भारतको आश्रय किये। यदि कोई पुरुष प्रेत किसी स्त्रीको आश्रय करे तो स्त्रीकी भाषा पुरुषोचित हो जाती है। प्रेतग्रस्त "कमला" को यदि नाम पूछा जाय तो वह प्रेतको नामानुसार कहेगी जो मेरा नाम "रामचांद" उसकी रीति प्रकृतिभी पुरुषकी नाईं हो जायगी अर्थात् वह पुरुषके समान निर्ल्लज्ज भाव आदिसे युक्त होगी क्योंकि वह अब प्रेतकी प्रकृतियुक्त हुई। आज कल हमारे मध्य में से वहुतेरे महात्मा यवन औ म्लेच्छकी रीतिसे वस्त्रादि पहिरने लगे हैं; भोजन, भाषा, रीति, नीति आदि वहुतेरे विषय म्लेच्छ आदि विजातीय भावरूप प्रेत की रीतिसे वदल गए। ऐसा की पुत्रके नाम रखनेके समय "जयसिं" के वदले "फतेहसिं" रख देते हैं, धर्म्मचर्च्चा भी प्रेतभावापन्न होगई। हमारे धर्म्म शास्त्र करके यह सिद्ध है जो इस विष्णुपाद में श्रद्धापूर्व्वक पिण्ड प्रदान करने पर पितरोंका प्रेतत्व छूट जाता है इसलिये आज हमसव विष्णुपाद में एकट्ठे हुए हैं। आलस्य, औदास्य, उपेक्षा, शास्त्रविमूढ़ता, पराधीनता, भीरुता, व्यभिचार, विजातीय व्यवहार, सुरासेवन आदि प्रचण्ड प्रेतमण्डली आकर भारतको आश्रय किये। इतने प्रेतोंको छोड़ानेके अर्थ हम सबको विष्णुपादके शरण लेना चाहिये। निज धर्म्मवल लाभ किये हम सबके हृदयका तेज न वढ़ेगा। विष्णु ही एकमात्र रक्षक हैं। आर्य्य धर्म्म भावको उसका कर हम सबको महानर्थ जालसे रक्षा करें। विष्णुपाद आश्रय ही करने पर जीवके समस्त वल की सूचना होगी। श्रोतामण्डलीने वक्तृताके आद्योपान्त स्थिर भावसे श्रवण किये थे। केवल [illegible]

ভাবে শ্রবণ করিয়াছিলেন, কেবল বক্তার বর্ণন ছটার সঙ্গে সঙ্গে আনন্দ জনিত করতালি ধ্বনিতে মন্দির উচ্চৈঃ প্রতিধ্বনিত হইতেছিল। সভা ভঙ্গ হইলে প্রোক্ত বিহারী বাবু ও দাদুলাল বাবু বক্তাকে সম্মানপূর্ব্বক জয় মাল্য ও প্রচুর মিষ্টান্ন প্রসাদ দান করিলেন।

বুধবার।

উত্তর মানসের নিকট হীনাবস্থাগ্রস্ত স্থানীয় ধর্ম্ম সভামণ্ডপে সন্ধ্যার পর মুঙ্গের, আ, ধ, প্র, সভার প্রধান পণ্ডিত শ্রীমদম্বিকাদত্ত মিশ্র মহাশয় প্রথমতঃ শ্রীমদভগবদ্‌গীতা ব্যাখ্যা করেন। ব্যাখ্যাতার পাণ্ডিত্য প্রশংসনীয়। এতদ্ব্যাখ্যাবসানে আমাদিগের বাগ্মীবর কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন বহুজনাকীর্ণ সভার অনুরোধানুসারে "ভারতীয় ধর্ম্মের দুর্দ্দশা শান্তি" বিষয়িণী একটী অনতিদীর্ঘ বক্তৃতা করেন। প্রথমে আর্য্য ধর্ম্ম বর্ত্তমান নিষ্প্রভাবস্থাগ্রস্ত হইবার বিবিধ কারণ প্রদর্শিত হইল। তৎপরে সংস্কৃত ভাষার বহুল চর্চ্চা, ভারতবর্ষীয় আ, ধ, প্র, সভার নিয়মানুসারে ধর্ম্মাচার্য্য মণ্ডলী নিয়োগ পূর্ব্বক দেশ দেশান্তরে সর্ব্বসাধারণের নিকট সনাতন ধর্ম্মশাস্ত্রের তাৎপর্য্য ব্যাখ্যা ও উপদেশ দান আদির আবশ্যকতা প্রকৃষ্ট রূপে ব্যাখ্যাত হইল। তদনন্তর সভাভঙ্গ হইলে, অশেষ ধন্যবাদ দান পূর্ব্বক শ্রোতৃগণ আনন্দোৎসাহপূর্ণ হৃদয়ে নিজ নিজ গৃহে গমন করিলেন।

বৃহস্পতিবার।

গয়ার প্রসিদ্ধ জমীদার মান্যবর শ্রীযুক্ত রায় শ্যামলাল মিত্র মহোদয়ের সুবিস্তীর্ণ ভবনে বঙ্গভাষায় (অপর বক্তৃতাগুলি হিন্দী ভাষায়) "ধর্ম্ম সাধন" বিষয়িণী বক্তৃতা হইয়াছিল। জড়ের সহিত চৈতন্যের সম্বন্ধ, প্রাকৃতিক জগত আমাদিগের শরীর, মন ইন্দ্রিয়াদির উপর কিরূপ আধিপত্য করে, দেশ কালাদিভেদে মনের উৎকর্ষ ও স্থিরতা সম্পাদনার্থ কি কি রূপ প্রাকৃতিক উপাদানের সহায়তা গ্রহণ করিতে হয়, বালক, যুবা, বৃদ্ধ, স্ত্রী, পুরুষাদির অবস্থা, জাতি ও প্রকৃতি ভেদে ধর্ম্মসাধন প্রণালীর ভিন্ন ভিন্ন পন্থাবলম্বন করা যে প্রাকৃতিক নিয়মানুমোদিত, এতাবৎ বক্তা মহো-

वर्णनचातुरीके सङ्ग ही सङ्ग आनन्दजनित करपुटध्वनीसे मन्दिर अत्यन्त प्रतिध्वनित होती था। सभा विसर्ज्जन होने पर प्रोक्त विहारी बाबु और दादूलाल बाबुने वक्ताको सम्मानपूर्ब्बक जयमाल्य और प्रचुर मिष्टान्न प्रसाद दिये।

बुधवार।

सन्ध्याके उपरान्त उत्तर मानसके निकट स्थानीय धर्म्म सभामण्डप में श्री मान्य अम्बिकादत्त मिश्र मुङ्गर आ, ध, प्र, सभाके प्रधान पण्डित जीने पहिले श्रीमद्भगवद्गीता की व्याख्या करी। व्याख्याताका पाण्डित्य प्रशंसनीय है। इस व्याख्यानके अनन्तर हमारे वाग्मीवर कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न जीने बहुल जनाकीर्ण सभाके अनुरोध अनुसार "भारतीय धर्म्मकी दुर्दशा शान्ति" इस आशय पर एक अनतिदीर्घ वक्तृता करी, पहिले विविध कारण देखायेगये की क्यों वर्त्तमान आर्य्यधर्म्म प्रभासे रहित अवस्थाग्रस्त हुआ। तदनन्तर संस्कृत भाषाकी बहुल चर्च्चा, धर्म्माचार्य्यमण्डलीको नियुक्त करके, देश देशान्तर में सर्व्वसाधारणके निकट सनातन धर्म्मशास्त्रका अभिप्राय व्याख्या और उपदेश दान आदि की आवश्यकता जैसा की भारतवर्षीय आ, ध, प्र, सभाके नियमानुसार है, भली भान्ति व्याख्या की गई। तदनन्तर सभा विसर्ज्जन हुई। श्रोतीगण आनन्दोत्साहपूर्ण हृदयसे धन्यवाद देतेहुए निज निज गृहको चले।

गुरुवार।

मान्यवर श्रीयुक्त राय श्यामलाल मित्र, गयाके प्रसिद्ध जमीदार महोदयके सुविस्तीर्ण भवन में "धर्म्म साधन" इस आशय पर एक बङ्गला वक्तृता हुई थी। जड़के साथ चैतन्यका सम्बन्ध, प्राकृतिक जगत हमारे शरीर, मन, इन्द्रियादिके उपर कैसा आधिपत्य करती है, देश, काल आदि भेद करके मन की उत्कर्ष औ स्थिरताके लिये किस किस भान्ति प्राकृतिक उपादान की सहायता लेना चाहीए, बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुषादि की अवस्था, जाति और प्रकृतिभेद करके धर्म्मसाधन रीति की भिन्न भिन्न पथ अवलम्बन करना जो प्राकृतिक नियमानुसार है, वक्ताने इतना अतीव

দয় অতীব দুর্জ্জেয় বৈজ্ঞানিক (আধিভৌতিক, আধিদৈবিক ও আধ্যাত্মিক, প্রমাণ ও যুক্তি জাল বিস্তার পূর্ব্বক পরমাত্মায় জীবাত্মার সমাধানই সকল কার্য্যের বা ধর্ম্ম সাধনের শেষ লক্ষ্য বলিয়া প্রতিপাদন করিলেন। প্রসঙ্গক্রমে স্ত্রী স্বাধীনতা ও বর্ণভেদ বিচারেরও যথোচিত সমালোচনা হইয়াছিল। স্ত্রী প্রকৃতি যে স্বভাবসিদ্ধ পরাধীন ও স্ত্রীদিগকে স্বাধীনতা দিলে স্ত্রীভাব বিনষ্ট হইয়া কিরূপে ধীরে ধীরে পুরুষ ভাব তাঁহাদিগকে আশ্রয় করে, এবং যে পর্য্যন্ত জীব আত্ম সমাধি দ্বারা পূর্ণ সিদ্ধি লাভ না করে, তাবৎকাল বিভিন্ন বা তমো-রজোগুণাদি বিদূষিত হীন বর্ণের স্পৃষ্ট বা দত্ত দ্রব্যাদি ভোজন করিলে সাধন কালে যে বিবিধ বিঘ্ন হইতে পারে, তত্তাবৎ সাধারণের হৃদ্গম্য বৈজ্ঞানিক যুক্তি দ্বারা প্রতিপন্ন হইল। ইহাও এস্থলে অবশ্য বক্তব্য যে স্বয়ংসিদ্ধ কতিপয় বৃথা জ্ঞানাভিমানী ব্যক্তি ভিন্ন, সহৃদয় মাত্রেই বক্তৃতার সূক্ষ্ম দর্শন গুলিতে প্রণিধান করিয়া বক্তাকে যথোচিত সাধুবাদ দান না করিয়া থাকিতে পারেন নাই। এতৎ বক্তৃতা কালে অধিকাংশ বাঙ্গালী ও সম্ভ্রান্ত বঙ্গভাষাবিৎ বেহারবাসী উপস্থিত ছিলেন।

শুক্রবার।

শ্রোতৃ সংখ্যা দিন দিন অধিক পরিমাণে বৃদ্ধি হইতেছে দেখিয়া ও সর্ব্বসাধারণের শ্রবণ সুগমার্থ অত্রস্থ রাজকীয় বিদ্যালয়ের সুপ্রশস্ত প্রাঙ্গণে অদ্যকার সভা হইল। সুবিশাল চন্দ্রাতপে ও প্রশস্ত আস্তরণ বিস্তারে প্রাঙ্গণ সমাচ্ছন্ন হইয়াছিল। অদ্যকার সভায় গয়ার সম্ভ্রান্ত, মান্য, উচ্চ পদস্থ, প্রসিদ্ধ ভদ্র কোন মহাত্মাই প্রায় অনুপস্থিত ছিলেন না। সাধারণ লোকের তো কথাই নাই, অদ্য লোকে লোকারণ্য হইয়াছিল। কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন আর্য্য ধর্ম্মার্থী ও অন্যান্য সাধারণ লোকের সংশয়াপনোদনার্থ অদ্য পৌত্তলিকতা বা „মূর্ত্তি পূজা'' বিষয়িণী একটী সুদীর্ঘ বক্তৃতা করেন। তিনি মধুর ও উৎসাহপূর্ণ বক্তৃতা মধ্যে ইহা প্রশস্ত রূপে বুঝাইয়া দিলেন, যে মূর্ত্তি পূজক আর্য্যগণ মৃত্তিকা বা ধাতু দার্ব্বাদির পূজা করেন না, তাঁহারা সূক্ষ্মে, ক্ষুদ্রে, বা অণু পরমাণুতে সর্ব্বথাধিষ্ঠিত পরমাত্মারই পূজা করিয়া থাকেন। মূর্ত্তি দর্শনে

दुर्ज्ञेय वैज्ञानिक (आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक) प्रमाण और युक्ति जाल फैलाकर परमात्मा में जीवात्माका समाधान करना ही जो समस्त कार्य्य वा धर्म्म साधन का शेष लक्ष्य है सो प्रतिपादन किया। प्रसङ्गके अनुसार स्त्री स्वाधीनता और वर्णभेद विचार की भी यथोचित समालोचना हुई थी। स्त्रीयों की प्रकृति जो स्वभावसिद्ध पराधीन है और स्त्रीयोंको स्वाधीनता देनेपर किस रीतिसे स्त्रीभाव विनष्ट होकर धीरे धीरे पुरुषभाव उन्हों को आश्रय करता है और यावत पर्य्यन्त जीव आत्म समाधि करके पूर्णसिद्धि लाभ न करे तावत काल भिन्न वर्णका वा तम रज गुण आदिसे दूषित नीच वर्णका छुआ हुआ वा दीया हुआ सामग्री भोजन करने पर साधन काल में जो विविध विघ्न हो सक्ते हैं सो सब वैज्ञानिक युक्ति करके जिस में साधारण लोगों की बुद्धि न पैठतो, प्रमाणोक्त हुआ। यह भी यहां अवश्य कहना चाहिये जो स्वयं सिद्ध कितना वृथा ज्ञानाभीमानी व्यक्ति छोड़के वक्तृताको सूक्ष्म दृष्टि में गौर कर किसी सहृदय पुरुषसे वक्ता को यथोचित साधुवाद दिये विना नहीं रहा गया। इस वक्तृता काल में अधिकांश बङ्गदेशी और प्रधान प्रधान विहारवासी, जो लोग बङ्गभाषा समझ सकते हैं, उपस्थित थे।

शुक्रवार।

श्रोताकी संख्या दिन पर दिन अधिक बढ़ती हुई देखकर और सर्व्वसाधारणके श्रवणके सुभिता के लिये यहांके राजकीय विद्यालयके सुविस्तृत अंगनेमें आजकी सभा लगी। बड़ी भारी समियाना टंगाकर और प्रसस्त बिछावन बिछाकर अंगनाको सुसोभित की गई थी। आजकी सभा में गयाके रईस, मान्य, उच्चपदवीके प्रसिद्ध भद्र प्राय: कोई महात्मा ही अनुपस्थित न थे। साधारण लोगोंकी संख्या कुछ पुछिये मत, आज बड़ा भारी भीड़ हुआ था, कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न जीने आर्य्य-धर्म्मार्थी, और अन्यान्य साधारण लोगोंका संशय छोड़ानेके अर्थ आज "मूर्त्तिपूजा" इस आशय पर एक बड़ी दीर्घ वक्तृता करी। मधुर औ उत्साहसे पूर्ण वक्तृता में उनने विस्तार करके समझा दिया जो मूर्त्तिके पूजने हारे आर्य्यगण मिट्टी वा धातु वा दारु आदिकी पूजा नहीं करते। वे परमात्मा ही की, जो सूक्ष्म में, क्षुद्र में वा अणुपरमाणु में सर्व्वथा अधिष्ठित है, पूजा किये करते हैं। मूर्त्तिको दर्शन औ पूजन करने पर किस भांति धारा वद्धिक

বা অর্চ্চনায় কিরূপে ধারাবাহিক রীতিতে মন ব্রহ্মাত্ম সোপানে অধিরোহণ করে, তাহা সুস্পষ্ট রূপ প্রমাণীকৃত হইল। মূর্ত্তি গুলির আধ্যাত্মিক ব্যাখ্যা শ্রবণে শ্রোতামাত্রেই অননভূতপূর্ব্ব আনন্দ লাভ করিয়াছিলেন। পরিশেষে অত্যন্ত উৎসাহপূর্ণ বাক্যে বক্তা প্রত্যেক হৃদয়ে আঘাত পূর্ব্বক দেখাইয়া দিলেন যে, যে পর্য্যন্ত জীব ভগবৎ সাধন দ্বারা আত্মাকে প্রাকৃতিক শক্তি সীমা উল্লঙ্ঘন করাইতে না পারে, অর্থাৎ যে পর্য্যন্ত মন, বুদ্ধি চিত্তাদির সাহায্যে জীবকে ঈশ্বরোপাসনা করিতে হয়, সাধক খ্রীষ্টান হউন, মুসলমান হউন, বৌদ্ধ হউন, জৈন হউন, ব্রাহ্ম হউন, দয়ানন্দী হউন অথবা যে কোন ধর্ম্মাবলম্বী হউন তাবৎকাল তিনি মূর্ত্তি উপাসক বলিয়া গণ্য। কেহ রূপ, কেহ গুণ, কেহ শব্দ, কেহ অবস্থা, কেহ ভাব, ইত্যাদি কোন না কোন জড়ের আশ্রয় গ্রহণ পূর্ব্বক নিজ নিজ অভীষ্ট দেবতার উপাসনা করিয়া থাকেন। কেবল সমাধিসিদ্ধ পুরুষই নিরাকার, নির্ব্বিকার, নির্গুণ ব্রহ্মের উপাসক। অদ্যকার বক্তৃতায় বক্তা অন্য দিন অপেক্ষা শ্রোতৃবর্গের অধিকতর হৃদয়াকর্ষণ করিয়াছিলেন। ধন্য তাঁহার বাঙনৈপুণ্য ও উত্তেজনা !!

শনিবার।

অদ্য আমাদিগের বক্তৃবর বন্ধুবৃন্দ সহ বুদ্ধ গয়া দর্শনার্থ গমন করিয়াছিলেন, তথা হইতে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া ধর্ম্মাত্মাগণের সহিত বিবিধ ধর্ম্মার্থ বার্ত্তালাপে সময় অতিবাহিত করিলেন, কোন প্রকাশ্য বক্তৃতা করিবার অবকাশ হয় নাই।

রবিবার। প্রাতঃকাল।

প্রাতর্বেলা ৮ ঘটিকার সময় টিকারীর অন্যতর ভূপতি শ্রীমদ্রাজ্রারণ বাহাদুর সিং মহোদয়ের ভবনে একটী সভা আহূত হয়। সভাতে তথাকার প্রতিষ্ঠিত ব্যক্তি মাত্রেই উপস্থিত হইয়াছিলেন। রজতমণ্ডিত দণ্ড শোভিত সুচারু চিক্কণ চন্দ্রাতপের শীতল ছায়ায় বক্তার আসন সুসজ্জিত হইয়াছিল। তথায় সোৎসাহচিত্ত নির্ভীক হৃদয় বক্তা "ধর্ম্ম সংস্থাপন" বিষয়িণী একটী অতীব সারগর্ভ উপদেশ পূর্ণ বক্তৃতা করেন। ব্যবহারিক ও আভ্যন্তরিক

रीतिसे मन ब्रह्मात्म सोपान पर आरूढ़ होता है सो सुस्पष्ट रूपसे प्रमानीकृत हुआ। मूर्त्ति सबका अध्यात्मिक भाव व्याख्या सुनकर श्रोतामात्र ही अत्यन्त आनन्द प्राप्त किया, जैसा की पूर्व्व में कभी अनुभव न किया। अन्त में अत्यन्त उत्साह पूर्ण वाक्योंसे वक्ता हरएक हृदय में आघातकर देखा दिये जो यावत काल जीव भगवत साधनसे आत्माको प्राकृतिक शक्तिकी सीमा न टपाय सके अर्थात जबतक मन, बुद्धि, चित्त, आदि की सहायतासे जीवको ईश्वरोपासना करने पड़ता है, साधक चाहे ईसाई हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे बौद्ध हो, चाहे जैन हो, चाहे ब्राह्म हो, चाहे दयानन्दी हो, अथवा और कोई धर्म्मवाले हो, तावत काल उनको मूर्त्ति पूजक कहा जागा। किसीने रूप, किसीने गुण, किसीने शब्द, किसीने अवस्था, किसीने भाव, आदि किसी न किसी जड़को आश्रयकर निज निज देवता की पूजा की करती है। केवल वही पुरुष निराकार, निर्विकार निर्गुण ब्रह्मका उपासक हैं जोने समाधीसे सिद्ध हुआ। आजकी वक्तृतासे वक्ताने श्रोताओंके हृदयको अन्यदीनसे अधिक आकर्षण किये थे। धन्य है उनको वाक्पटुता और उत्तेजना !!

शनिवार।

आज हमारे वक्ता महात्माने मित्रगण सहित बौद्ध गया दर्शनार्थ गये। वंहासे लौटकर धर्म्मात्मा सज्जनोंसे सद्वार्त्तालापकर समय व्यतीत किये। किसी प्रकाश्य स्थान में वक्तृता करनेका अवकाश न मिला।

रविवार। प्रातःकाल।

वेला ८ वाजे के समय टीकारीके अन्यतर भूपति श्रीमान् राजा रणबाहादुर सिं महोदयके भवन में एक सभा हुई। सभामें वंहाके प्रतिष्ठित व्यक्तिमात्र ही सुशोभित थे। रजत मण्डित दण्डसे शोभायमान मनोहर चिक्कण सामियानाकी शीतल छाया में वक्ताका आसन सजा हुआ था। वंहा उत्साह पूर्ण चित्त औ निर्भीक हृदय वक्ताने "धर्म्मसंस्थापन" इस आशय पर एक अतीव सारगर्भ उपदेश पूर्ण वक्तृता करी। उनने धर्म्मको व्यवहारिक औ आभ्यान्तरिक इस रीति द्विधा

ভেদে তিনি ধর্ম্মকে দ্বিধা বিভক্ত করিয়া মনুষ্য মাত্রকেই বাহ্য ব্যাপারে সদাচারী ও নির্ম্মল চরিত্র ও অন্তরে ভগবচ্চরণানুরক্ত হইতে উপদেশ করিলেন। যাঁহারা মদ্যপায়ী ও বেশ্যাসক্ত হইয়া বাহিরে হিন্দু ও ভিতরে ম্লেচ্ছ, তাঁহাদিগকে তিনি জনসমাজের বিশেষ অনিষ্টকারী বলিয়া স্থির করিলেন। যিনি বাহ্যাভ্যন্তরে ধর্ম্ম সাধন করিতে পারেন, তিনিই ধর্ম্মাত্মা, যিনি লোক সমাজকে সৎ প্রকৃতিস্থ ও আপনাকে ভগবন্নিষ্ট করিতে পারেন, তিনি ধর্ম্ম সংস্থাপনে সমর্থ। এতাবদ্বিষয় বিস্তার পূর্ব্বক ব্যাখ্যা করিয়া, পরিশেষে পবিত্র গয়াধামে সংস্কৃত শাস্ত্রের বিধিমত আলোচনা ও ধর্ম্মার্থ চর্চ্চার জন্য একটী "আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভা," তৎসহ একটী বৈদিক বিদ্যালয় ও একটি সংস্কৃত পুস্তকাগার প্রতিষ্ঠার আবশ্যকতা প্রদর্শন পূর্ব্বক প্রত্যেক সাধুহৃদয়কে যথোচিত উত্তেজিত করিয়া বক্তৃতার উপসংহার করিলেন। সেই সভামধ্যেই প্রধান প্রধান মহাত্মাগণ তৎক্ষণাৎ এতৎ সাধু প্রস্তাব কার্য্যে পরিণত করিবার নিমিত্ত প্রস্তুত ও অগ্রসর হইলেন। সভামণ্ডপ নির্ম্মাণার্থ ৭০০০৲ টাকা অনুমিত হইল। রাজা রণবাহাদুর মহোদয় তন্মুহূর্ত্তেই নগদ ১০০০৲ টাকা দান করিলেন। অন্যান্য মহাত্মাগণ দানাঙ্গীকার পত্রে যথোচিত সাহায্যার্থ স্বাক্ষর করিলেন। আনন্দ ও উৎসাহপূর্ণ হৃদয়ে সকলে স্ব স্ব স্থানে প্রস্থান করিলেন।

এই সময়ে কোন কোন ব্যক্তির মুখে প্রসিদ্ধ বক্তা শুনিলেন যে ব্রাহ্মগণ তাঁহার শুক্রবারের বক্তৃতার বিপরীত বা বিকৃত ব্যাখ্যা করিয়া জন সাধারণের মনে বিবিধ সংশয় উদ্ভাবন করিয়া দিয়াছেন। তিনিও সমর নিপুণ সতত প্রস্তুত বীরপুরুষের ন্যায় বলিলেন, যে অদ্যই অপরাহ্নে প্রকাশ্য বক্তৃতায় তত্তাবৎ সংশয় নিরসন করিবার যত্ন করিবেন।

রবিবার। অপরাহ্ন।

রাজকীয় বিদ্যালয়ের বিস্তৃত প্রাঙ্গণই বক্তৃতার্থ নিরূপিত হইল। বিজ্ঞাপন পত্র প্রচার করিবার আর অবসর হইল না। কেবল লোক মুখে এতৎ সমাচার বিঘোষিত হইয়া গেল। সভাস্থলে অন্যূন ৮০০।৯০০ লোকের সমাগম হইয়া-

भाग कर यह उपदेश किया कि बाह्यकार्य्य में हर किसी को सदाचारी औ निर्म्मल चरित्र औ अन्तःकरण में भगवानके चरण में अनुरागी होना चाहिये। उन सबको जन समाज के महान अनर्थकारी कर मानलिया। जया जो सब मद्यपायी औ वेश्यासक्तवने भीतर में म्लेच्छ औ बाहर हिन्दु कहलाते हैं। वही धर्म्मात्मा है जोने भीतर औ बाहर में धर्म्मसाधनकर सक्ते हैं, वही धर्म्मसंस्थापन करने में समर्थ हैं। जोने जनसमाजको सत्प्रकृतिस्थ औ अपनेको भगवन्निष्ठकर सकें, इतना आशय पर विस्तारपूर्वक व्याख्यान कर अन्त में यह प्रस्ताव उठाया कि पवित्र गयाधाम में संस्कृत शास्त्रों की विधि पूर्वक आलोचना औ धर्म्मार्थ चर्चाके लिये एक आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा औ उसके साथ एक वैदिक विद्यालय, औ संस्कृत पुस्तकागार प्रतिष्ठा की जाय, इसकी आवश्यकता दिखाकर हरेक साधुहृदयको यथायोग्य उत्तेजित करके वक्तृताका उपसंहार किया। उसही सभा में प्रधान प्रधान महात्मागण उसी क्षण में इस साधु प्रस्तावको कार्य्य में परिणत करणार्थ प्रस्तुत औ आगुआ हुए। सभामण्डप निर्म्माणार्थ ७०००, रूपै व्यय अनुमान किया गया। श्रीमान् राजा रणबाहादुर सिं महोदयने उसी मुहूर्त्त में नगद १०००, रूपये देदिये। अन्यान्य महात्मागण यथायोग्य सहायताकी इच्छासे दानाङ्गीकार पत्र पर स्वाक्षर किये। आनन्द वो उत्साहपूर्ण हृदयसे सबकोइ निज निज गृहको चलें।

इसी समय में किसी किसी व्यक्तिके मुखारविन्दसे प्रसिद्ध वक्ताको यह सुनने में आया कि उनकी शुक्रवारकी वक्तृताका तात्पर्य्य ब्राह्मलोग सर्व्वसाधारण जनों को विपरीत औ विकृत करके समझाकर सबके मन में नानाभांति के संशय उठा दिये हैं। वेभी, जैसा समर निपुण वीरपुरुष तैयार रहते हैं, इस रीति से बोलें कि आजही अपराह्न काल में प्रकाश्य स्थान में एक वक्तृताकर उन सब संशयोंको मिठानेका यत्न करेंगे।

रविवार-दोपहरके उपरांत।

वक्तृका स्थान राजकीय विद्यालयकी आंगने में स्थिर हुआ। विज्ञापन पत्र प्रकाश करनेका अवकाश कुछभी न मिला। केवल मौखिक समाचार प्रचार हो गयी। सभा में अन्यून ८००।९०० श्रोता सुशोभित थे। "अवतार औ बाह्य पूजा"

ছিল। "অবতার ও বাহ্যপূজা" সম্বন্ধে বক্তৃতা হইল। সূক্ষ্মতম শক্তি হইতে কিরূপে স্থূল পদার্থ উৎপন্ন হয়, পার্থিব জগতের উপকারার্থ কিরূপে ঐশী শক্তি উত্তেজিত ও স্থূল জগতের উপযোগী হইয়া অবশ্যম্ভাবী স্থূল ভাব ধারণ করে, পৃথিবী পাপভারাক্রান্ত হইয়া, কিরূপে বিধাতার নিকট রোদন করিলে বিষ্ণু অবতীর্ণ হইয়া, পৃথিবীর ভার মোচন করেন, এতাবৎ বৈজ্ঞানিক যুক্তি ও শাস্ত্রীয় প্রমাণ দ্বারা প্রতিপন্ন করিয়া, বাহ্য ব্যাপার দ্বারা মনের সূক্ষ্মতা সাধনের উপায়, রীতি ও বিষয় বুদ্ধি-বিশিষ্ট ব্যক্তিবর্গের বাহ্য পূজার অবশ্যাবশ্যকতা ভৌতিক ও আধ্যাত্মিক বিজ্ঞানানুমোদিত যুক্তি দ্বারা বুঝাইয়া দিলেন। বক্তৃতা শ্রবণে আর্য্য-ধর্ম্মানুরাগী মহাত্মাগণের চিত্ত প্রেমানন্দে গদ্গদ হইয়া উঠিল। অপরাহ্ন ৩টার পর বক্তৃতারম্ভ হইয়াছিল, লোকের সংশয় রাশি সঙ্গে লইয়া সূর্য্যদেব অস্তাচল চূড়াবলম্বী হইলেন, বক্তৃতাও শেষ হইল।

রবিবার। সন্ধ্যার পর।

বর্ত্তমান শিক্ষা বিভাগের অব্যবস্থা বশতঃ বিদ্যালয়ের পঠনপরায়ণ আর্য্য বালকবর্গ আর্য্যদিগের নীতি ও ধর্ম্মভাব কিছুই শিখিবার অবকাশ পায় না। আর্য্য বালকগণ এই সময় হইতে নিজ নিজ চরিত্র ও আর্য্য প্রকৃতি সংগঠনের উপদেশাদি না পাইলে ভবিষ্যৎ ভারতীয় সমাজ বর্ত্তমানাপেক্ষা আরও উচ্ছৃঙ্খল হইয়া যাইবে, এই আশঙ্কায় দূরদর্শী শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন কয়েক বৎসর হইল, মুঙ্গেরে বালকবর্গের নীতি শিক্ষার্থ "সুনীতি সঞ্চারিণী সভা" সংস্থাপন করিয়াছেন। সেই উদ্দেশ্যে এখানেও তৎসভার নাম ও নিয়মানুসরে একটীসভা সংস্থাপন মানসে মান্যবর শ্রীযুক্ত রায় শ্যামলাল মিত্র মহোদয়ের ভবনে একটী সভা আহুত হইল। এখানে অধিকাংশ বালক ও কিয়দংশ প্রবীণ উপস্থিত ছিলেন। নীতি শিক্ষালাভে বালকদিগের কিরূপ হৃদয়ের প্রশস্ততা, উচ্চ মনস্কতা, ও মনুষ্যত্বের বিকাশ হয় ও তদভাবে কিদৃশী হানি হয়, উত্তেজনাপূর্ণবাক্যে সরলভাবে তত্তাবৎ প্রদর্শন করিয়া, বক্তা বালকবর্গের হৃদয় আকর্ষণ করিলেন; সুবোধ ও উৎসাহিত চিত্ত বালকগণের সভা প্রতিষ্ঠিত

इस आशय पर वक्तृता हुई। सूक्ष्मतम शक्तिसे स्थूलपदार्थ किस रीति से उत्पन्न होता है, पार्थिव जगतके उपकारार्थ ईश्वरकी शक्ति किस रीतिसे उत्तेजित औ स्थूल जगतके उपयोगी बनकर स्थूल भाव, जोकि अवश्यम्भावी है, धारण करती है, पाप भारसे क्लीष्टहोकर धरती किसरीति विधाताके निकट रोनेपर विष्णु अवतार लेके पृथ्वीका भार भुक्त करदेते हैं, इन सबको वैज्ञानिक युक्ति औ शास्त्र के प्रमाण सहित प्रतिपादनकिये औ वाह्य व्यापारोंसे मनकी सूक्ष्मता साधनका उपाय औ रीति औ विषय-बुद्धि-विशिष्टव्यक्तिवर्गके लिये वाह्य पूजा की आवश्यकता, युक्तियोंके द्वारा, जोकि भौतिक औ आध्यात्मिक विज्ञानका अनुमोदित है, समझा दिये। आर्य्यधर्म्मावलम्बियोंके चित्त वक्तृता सुनकर गद्गद हो उठे। लोगोंके संशय राशिको साथ लेते हुए सूर्य्यदेव अस्ताचलको आश्रय किये, व्याख्यानका भी शेष हुआ।

रविवार सन्ध्याके उपरान्त।

वर्त्तमान शिक्षाविभाग की ऐसी बुरी व्यवस्था है, कि इससे विद्यालयके बालकों को इस भान्ति सुविधा न मिलती कि आर्य्य जनोंकी नीति वा धर्म्म भाव सिखें। दुरदर्शी श्रीकृष्णप्रसन्न जी इस आशङ्का करके मुङ्गेर में लड़कोंको नीति शिक्षार्थ एक "सुनीति सञ्चारिणी सभा" स्थापित किये हैं, कि यदि इसी समयसे आर्य्य बालकवर्ग निज निज चरित्र औ आर्य्य प्रकृति संगठनार्थ उपदेशादि न पावें तो भविष्यत् भारतीय समाज वर्त्तमानसे भी अधिक बिगड़ जागी। उसी उद्देश्यसे यहांभी उसी नाम औ उस सभाके नियमोंके अनुसार एक सभा स्थापनार्थ मान्यवर श्रीयुक्त राय श्यामलाल मित्र महोदयके भवन में एक सभा बुलाई गयी। यहां बहुत लड़के औ थोड़ेसे युवा औ वृद्ध पुरुष उपस्थित थे। नीति शिक्षा लाभ करके बालकोंके किस भान्ति हृदय की प्रशस्तता, उच्च मनस्कता औ मनुष्यत्वका विकाश होता हैं, औ बिना इन सबसे कैसी हानि पंहुचती है सो सब वक्ताने उत्तेजनापूर्ण वाक्य करके सरल भावसे देखाकर बालकोंके हृदय आकर्षण किये। सुबोध औ उत्साहितचित्त बालकों की सभा प्रतिष्ठित हुई। आर्य्यधर्म्मके परम अनु-

হইল। আর্য্যধর্ম্মানুরাগী সুযোগ্য মান্যবর শ্রীযুক্ত বাবু ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্ত্তী এম্,এ,বিএল, মহাশয়ের হস্তে সভাধ্যক্ষ ও উপদেষ্টার ভার বিন্যস্ত হইল। এতদবসানে সর্ব্ব সাধারণের প্রতি লক্ষ্য করিয়া, ভগবদ্ভক্তিভাবোদ্দীপনী একটী সুমধুর উপদেশ ব্যাখ্যান করিয়া বিশ্রাম লাভ করিলেন।

* * * এতদ্বক্ত মহোদয়ের বক্তৃতা যেরূপ সারবান ও প্রাঞ্জল, তদ্রূপ হৃদ্য ও সুললিত। তাঁহার বক্তৃতার যথেষ্ট মাধুর্য্য আছে। তিনি অনর্গল ৪।৫ ঘণ্টা বক্তৃতা করিয়াও বিশ্রাম আকাঙ্ক্ষা করেন না,পিপাসার অধীন হন না। শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্নের বক্তৃতা কেবল শান্তি রসোদ্দীপক এমত নহে, তন্মধ্যে অনেকটা বীর ভাবও আছে। তাঁহার বক্তৃতা শ্রবণে লোকের চিত্ত যেরূপ ভক্তিরসে আর্দ্র হয়, বৈরাগ্যের পক্ষপাতী হয়,—তদ্রূপ উৎসাহে পরিপূর্ণ ও উদ্যমে উন্মাদিত হইয়া উঠে। * * তাঁহার লোকচিত্ত আকর্ষণের ক্ষমতা আছে। ধনী, দরিদ্র, মুর্খ, জ্ঞানী, সকলেই তাঁহাকে ভাল বাসিতে ইচ্ছুক। তিনি বালক বৃদ্ধ, যুবা, ত্রিবিধ লোকেরই প্রিয়পাত্র বা সন্নিকট বন্ধু। আর্য্যধর্ম্মবিদ্বেষ্টৃবর্গও তাঁহার সহিত আলাপ করিয়া, তাঁহার বক্তৃতা শুনিয়া, হৃদয়ের সহিত ধন্যবাদ দিয়াছেন ও তাঁহার নিকট ঋণী থাকা স্বীকার করিয়াছেন। ধন্য শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন! আজ তুমি আর্য্যবংশীয়দিগের দুর্দ্দশায় দুঃখিত হইয়া,ধর্ম্মোত্তেজনার জন্য,স্বদেশের পরম কল্যাণসাধনের জন্য, ভারতের দেশে দেশে পর্য্যটন করিতে আরম্ভ করিলে। আজ তুমি স্বধর্ম্মের নিমিত্ত, লোকহিতের নিমিত্ত, আত্মোন্নতির নিমিত্ত, এই ভোগ প্রধান ঊনবিংশ শতাব্দীতে কঠোর চিরকৌমার ব্রত অবলম্বন করিলে। তোমাকে সহস্র সহস্র ধন্যবাদ। ভগবান তোমাকে দীর্ঘজীবী ও কুশলে রক্ষা করিয়া আমাদিগের কল্যাণ বৃদ্ধি করুন।

মনুষ্যের সুখের দিন চিরদিন থাকে না, গয়াবাসীরও অধিক দিন রহিল না। গয়ার আনন্দ রাশি সঙ্গে লইয়া হৃদয়ে বেদনা দান করিয়া কুমার শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন গয়াধাম পরিত্যাগ করিলেন। ২৬এ পৌষ মাস সোমবার মুঙ্গের যাত্রা করিলেন। সদর আলা,ডেপুটী মাজিষ্ট্রেট, উকীল আদি কয়েক জন মহাত্মা রেলওয়ে ষ্টেশন পর্য্যন্ত তাঁহার প্রত্যু·

रागी सुयोग्य मान्यवर श्रीयुक्त बाबू इन्द्रनारायण चक्रवर्त्ती एम्, ए, बिएल महाशयके हातपर सभाध्यक्ष औ उपदेष्टाका भारदिया गया। अन्त में सर्वसाधारणको लक्ष करके भगवत भावके उसकानेवाली एक उपदेश व्याख्यान कर विश्राम किये।

*** इस वक्ता महोदयकी वक्तृता जैसी सारवान औ सरल, तद्रुप हृदयग्राही औ सुललित है। उनकी वक्तृता में यथेष्ठ माधुरी देखपड़ती है। उनने निरन्तर ४।५ घंटे तक वक्तृता करके भी विश्रामकी इच्छा न करती वा पियासके अधीन न होता है। श्रीकृष्ण प्रसन्न जीकी वक्तृता जो केवल शान्तिरसोद्दीपक है, सो नहीं उस में बहुत सा वीर भावभी मिलता है। उनकी वक्तृता श्रवण करके लोगोंके चित्त ज्यों ज्यों भक्तिरससे आर्द्र, वैराग्यका पक्षपाती होता है त्यों त्यों उत्साहसे परिपूर्ण औ उद्यमसे उन्मादित हो उठता है। ** लोक चित्त आकर्षण करनेकी क्षमता उन में विद्यमान है। धनी वा दरिद्र मूर्ख वा ज्ञानी सबकोइ उनको चाहते हैं। उनने बालक, युवा वो वृद्ध इन त्रिविध जनों होके परम प्रियपात्र वो सन्निकट मित्र हैं। आर्य्यधर्म्मके विरोधी वर्गभी उनके संगमिल वो सद्दार्त्तालाप करके, उनकी वक्तृता सुनको उनको हृदयसे धन्यवाद दिये वे। उनके निकट ऋणी रहना अंगीकार किये। धन्यहो श्रीकृष्णप्रसन्नजी! आज आप आर्य्यवंशीयोंकी दुर्दशा से दुःखित हो, धर्म्मको उसकानेके लिये, निज देशके परम कल्याण साधनके अर्थ भरत खण्डके देश देशान्तर में पर्य्यटन करना आरम्भ किये। आज आपने स्वधर्म्मके निमित्त, लोक हितके अर्थ आत्मन्नोतिके हेतु इस भोगप्रधान उनवीस इसाई सन में कठोर चिरकौमारव्रत अवलम्बन किया। आपको सहस्र सहस्र धन्यवाद हैं। भगवान आपको चिरंजीव औ कुशल में रक्षाकर हम सबका कल्याण बढ़ावें।

सुखका दिन मनुष्योंके नित्यकाल नहीं रहता है। गयानिवासियोंका भी अधिककाल न रहा। गयाके आनन्द राशि साथ लिये हुए, हरकिसीके चित्त में वेदना देते हुए कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्नजी गयाधामको छोड़, सोमवारके दिन मुंगेरको चले। उनको सम्मान पूर्वक पहुंचानेके अर्थ रेलवे ष्टेशन तक सदरआला साहब, डिपुटी माजिष्ट्रेट आदि-

দ্গমন করিলেন। তাঁহার অবস্থানকালে পবিত্র গয়াতীর্থ ধর্ম্মোৎসবে আমোদিত ও শান্তির আশ্রয় স্থান হইয়াছিল। আজ তাঁহার বিরহে গয়া ব্যথিত হৃদয়। শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন গয়াধাম ছাড়িলেন সত্য, কিন্তু তিনি যে আর্য্যধর্ম্মের বিজয় পতাকা এস্থানে প্রোথিত করিয়াগেলেন। ইহা শীঘ্র যাই-বার নহে। গয়াবাসীর মানসক্ষেত্রে বহুদিন বিরাজ করিবে। ইতি

শ্রীবিহঙ্গনাথ দাস। গয়া।

মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভার ৬ষ্ঠ বার্ষিকোৎসব।

(প্রাপ্ত)

নিম্নলিখিত রীত্যনুসারে মুঙ্গের আ, ধ, প্র, সভার ৬ষ্ঠ বার্ষিকোৎসব নির্ব্বিঘ্নে সুসম্পন্ন হইয়া গিয়াছে।

১২ই মাঘ শঃ ১৭০৩। প্রাতঃকালে শ্রীশ্রী-শ্রীমন্নারায়ণ শ্রুতি, স্মৃতি, দর্শন, পুরাণাদি সহ ৺সরস্বতী দেবীমূর্ত্তির বিধিবিহিত পূজা হইল, তৎপরে "সুনীতিসঞ্চারিণী সভার" বঙ্গদেশী ও বেহারবাসী বালক সভ্যগণ সমস্বরে স্তোত্র পাঠ-পূর্ব্বক ৺সরস্বতী মূর্ত্তির চরণ কমলে পুষ্পাঞ্জলি অর্পণ করিল। মধ্যাহ্নকালে আমন্ত্রিত ব্রাহ্মণ ভোজন হইল। অপরাহ্ণ বেলা তিনটা হইতে ভগবদ্ভক্ত ভদ্রগণ মৃদঙ্গ, করতাল ও শৃঙ্গরবে গগন-মণ্ডল নিনাদিত ও মধুর ভাবযুক্ত ভগবন্নাম কীর্ত্তন করিতে করিতে নগরের প্রধান প্রধান পথ পরিভ্রমণ পূর্ব্বক পুরবাসীপুঞ্জের কর্ণপুট পবিত্র করিয়া, সন্ধ্যা-কালে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন। সংকীর্ত্তনকারীগণের পুরোভাগে সুনীতিসঞ্চারিণী সভার সভ্য প্রসন্নবদন বালকবৃন্দ "বিদ্যা," "ধর্ম্ম" "দয়া" আদি বিবিধনীতি বাক্যে চিহ্নিত পতাকাবলী বহনপূর্ব্বক শ্রেণীবদ্ধ ভাবে অগ্রসর হওয়ায় একটী অভিনব দৃশ্যের অভি-নয় হইয়াছিল। বোধ হইতেছিল যেন "বিদ্যা" "দয়া" "ক্ষমা" "করুণা" "ব্রত" "সংযম" আদি ধর্ম্মের সেনাদল ঘড়ী, ঘণ্টা, শৃঙ্গ নিনাদে অধর্ম্মরাজ্য বিজয় করিয়া গমন করিতেছে। বাস্তবিক এই দৃশ্যটী সজ্জনগণের অতীব মনোহর ও উৎসাহজনক বোধ হইয়াছিল। যদিও অনেক বেহারবাসী বাঙ্গালা সংকীর্ত্তন বুঝিতে পারিতেছিলেন না, তথাচ স্বধর্ম্মোৎসবে উৎসাহিত হইয়া, অনুগমন করিতে ক্রটী করেন নাই। প্রত্যাবর্ত্তনান্তর সং-কীর্ত্তনকারীগণ ভগবৎ প্রেমোন্মত্তচিত্তে প্রতিমার সম্মুখে অনেকক্ষণ নৃত্য কুন্দন পূর্ব্বক সংকীর্ত্তন করিলেন। অতঃপর আরতী শেষ হইলে, সভ্যগণ বিদায় লইলেন।

कैक महात्मा गये थे। उनकी स्थिति काल में पवित्र गयातीर्थ धर्म्मोत्सवसे प्रफुल्लित औ शांतिका आश्रयभूमि हुई थी। आज उनके विरहसे गयाका हृदय व्यथित हुआ। सत्य है जो श्रीकृष्ण प्रसन्न जी गयाधाम छोड़ें किन्तु वे जो आर्य्यधर्म्मकी विज-यपताका यहां गाढ़ गये वह शीघ्र उखड़नेवाली नहीं! गयावासियोंके चित्तक्षेत्र में बहुदिन विरा-जता रहेगा।

श्रीविहंगनाथ दास। गया

मुङ्गेर आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभाका ६ष्ठ वार्षिकोत्सव।

(प्राप्त)

नीचे लिखी हुई रीतिसे मुङ्गेर आ, ध, प्र, सभाका ६ष्ठ वार्षिकोत्सव निर्विघ्नसे सुसम्पन्न हो गया।

माघसुदी ५ मङ्गलवार प्रातःकाल श्री श्री श्रीमन्नारायण श्रुति, स्मृति, दर्शन, पुराणादि, के सहित श्री सरस्वती देवी की विधिपूर्वक पूजा हुई। तत्पश्चात सुनीति सञ्चारिणी सभाके उभय विभागी (वंगदेशी और विहारदेशीय) बालक सभ्यगण समस्वर से स्तोत्र पढ़ पढ़ श्री सरस्वति देवी के चरणारविन्द में पुष्पांजलि दान किये। मध्याह्न काल निमन्त्रित ब्राह्मणोंको भोजन कराया गया। अपराह्नकाल ३ बजेसे भगवद्भक्तभद्रगण, मृदंग, करताल वो शींघा ध्वनिसे गगणमण्डल निनादित वो मधुरभावयुक्त भगवत नाम संकीर्त्तन करके करते हुए नगर के प्रधान प्रधान मार्ग में भ्रमणके पूरवासीयोंके कर्णपुट पवित्रकर सन्ध्याकाल में लौट आये। उस समय आगे आगे सुनीति सञ्चारिणी सभाके सभ्य बालक वृन्द प्रसन्नवदनसे छोटे छोटे ध्वजा फहराये जाते थे, जब पताकों में पवनका झकोरा लगता था, तो किसी में विद्या, किसीमे धर्म्म, किसी में दया इत्यादि शब्द दृष्टि पड़ती थी, इससे बोध होता था कि, "विद्या" "दया" "क्षमा" "करुणा" "व्रत" "संयम" "तीर्थ" "धैर्य्य" इत्यादि धर्म्मराज की सेना घड़ी, घण्टा, आदि वाद्योंका ध्वनि करते, शींघा टेरते अधर्म्मराजका राजविजय किये जाते हैं। ये सुशोभित रचना सज्जनों के लिये अति ही मनोहर और उत्साह कारक हुई थी, यद्यपि अनेक विहारवासी वङ्गभाषाका संकीर्त्तन नहीं समझ सकते थे, तथापि स्वधर्म्मोत्सव से उत्सा-हित हो अनुगमन किये थे। सन्ध्या काल सभ्यगण संकीर्त्तन करते करते प्रतिमाके सम्मुख आय संकीर्त्तन में उन्मत्त हो नृत्यक करने लगे, अन्त में आरती कर सभ्यगण विदाय लिये।

১৩ই মাঘ, শঃ ১৮০৩। অপরাহ্ণকালে সুনীতিসঞ্চারিণী সভার উভয় (বঙ্গ ও বেহার) বিভাগীয় সুদৃশ্য পতাকাপুঞ্জধারী সভ্যগণ কর্ত্তৃক মণ্ডলাকারে পরিবেষ্টিত হইয়া, বাদ্যোদ্যমসহ ৺ সরস্বতী দেবী মূর্ত্তি নগরের প্রধান প্রধান পথ পর্য্যটন পূর্ব্বক অবশেষে জাহ্নবীজলে বিসর্জ্জিত হইলেন।

১৪ই মাঘ, বৃহস্পতিবার। অপরাহ্ণকালে অন্যূন ৫০০ দীন দরিদ্রকে যথা সাধ্য দান করা হইল।

১৫ই মাঘ, শুক্রবার। সন্ধ্যার পর ৬।০টা হইতে ৮॥০ পর্য্যন্ত "সুনীতিসঞ্চারিণী সভার বার্ষিকাধিবেশন হইল। কার্য্যারম্ভকালে ধর্ম্ম ও নীতি সংগীত গানে সভা আনন্দপূর্ণ হইয়া উঠিল। তদন্তর সভার বঙ্গ বিভাগের কার্য্য সম্পাদক শ্রীমান্ জগবন্ধু রায়, ও বেহার বিভাগের সম্পাদক শ্রীমান্ মনস্বীলাল নিজ নিজ বিভাগের বার্ষিক কার্য্যবিবরণ পাঠ করিলেন। সভাধ্যক্ষের শিক্ষা নৈপুণ্যে ও কার্য্য কুশলতায় সভা দিন দিন আশাতীত উন্নতিলাভ করিতেছে ও বালকগণ যথারীতি সৎপ্রকৃতিস্থ হইতেছে এতাবৎ কার্য্য বিবরণে বিশেষরূপে সূচিত হইল। তৎপরে সভার সভ্য ধীরপ্রকৃতি শ্রীমান্ পূর্ণানন্দ সেন, দৃঢ়ব্রত সাধুহৃদয় শ্রীমান্ হরিলাল সোম, নির্ম্মলচিত্ত শ্রীমান্ শরধারী লাল ও শান্তস্বভাব শ্রীমান্ পরমেশ্বর দয়াল কর্ত্তৃক পর্য্যায়ক্রমে "দুঃখের নিবাস কোথায়?" "বালকগণের সহিত সমাজের সম্বন্ধ কি," পবিত্র চরিত্র হইবার ফল কি?" এবং যথার্থ আপনার কে? এতদ্বিষয়ের লিখিত প্রবন্ধ পঠিত হইল। বিবিধোদাহরণ পূর্ণ ও সুসিদ্ধান্তযুক্ত বালকবর্গের বচন রচনা ও লিপিচাতুর্য্য দর্শনে সভাস্থ মাত্রেই অতীব প্রফুল্ল হইলেন। তদনন্তর মান্যবর শ্রীমদ্বাবু রাখালচন্দ্র সেন মহাশয় কৃপাপূর্ব্বক বালকগণকে একটি নীতিগর্ভ বক্তৃতাচ্ছলে অনেক সদুপদেশ দান করিলেন। অবসানে সভাধ্যক্ষ মান্যবর শ্রীমান কুমার শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন মহাশয় "বালকগণকে নীতিশিক্ষা দান" সম্বন্ধে একটী হৃদয়গ্রাহী ও সুমধুর বক্তৃতা করিলেন। এতাবৎ শ্রবণে কতগুলি নূতন বালক সভ্যশ্রেণীভুক্ত হইতে উদ্যত হইল। তদনন্তর সমস্ত সভ্য একস্বরে ভগবৎ স্তোত্র পাঠ করিলে, সভাস্থ বালক মাত্রকেই মিষ্টান্ন বিতরিত হইল, অবশেষে সংকীর্ত্তনাদি হইয়া আনন্দপূর্ব্বক সভা ভঙ্গ হইল।

ক্রমশঃ।

"ধর্ম্মপ্রচারক" কার্য্যালয়। মুঙ্গের। } শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন। সম্পাদক।

माघ सुदी ६, बुधवार, अपराह्न[illegible] सुनीतिसञ्चारिणी सभाके उभयविभागी सभ्य[illegible] कार बने पताका फहराते, अन्तर्गत [illegible] को वाद्योद्यम सहित लिये जाते अति सुशोभि[illegible] थी। नगर के प्रधान प्रधान मार्ग [illegible] श्री श्री गङ्गाजिके तट जा विसर्ज्जन कि[illegible]

माघ सुदी ७ गुरुवार अपराह्न[illegible] ५०० कङ्गालोंको यथाशक्ति दान दिया [illegible]

माघ सुदी ८ शुक्रवार सन्ध्याके उपरान्त [illegible] बजेसे ८॥ बजेतक सुनीतिसञ्चारिणी सभाका वार्षिक अधिवेशन हुआ, कार्य्यारम्भ में नीति संगीतसे सभा आनन्द पूर्ण हो उठी। तदनन्तर बङ्गविभागके कार्य्यसम्पादक श्री मान्यवर जगबन्धु राय, और बिहारविभागके कार्य्यसम्पादक श्री मान्यवर मनस्वी लालने निज निज विभागका वार्षिक कार्य्य विवरण पढ़े, इससे सूचित हुआ कि सभाध्यक्षकी शिक्षानैपुण्य औ कार्य्य कुशलतासे सभादिन पर दिन उन्नतिलाभ कर रही औ बालकगणकी प्रकृति सुधरती जाती है। सभाके सभ्य धीरप्रकृति श्रीमान् पूर्णानन्द सेन, दृढ़व्रत साधु हृदय श्रीमान् हरिलाल सोम, निर्म्मलचित्त श्रीमान् शरधारीलाल, शान्तस्वभाव श्रीमान् परमेश्वर दयाल पर्य्यायक्रमसे "दुःखका निवास कहां", बालकगणसे समाजका क्या सम्बन्ध है", "पवित्र चरित्रहोनेसे लाभक्या", यथार्थ में "अपना कौन है"। इनसब आशयपर लिखित प्रबन्ध पाठ किया।

अनेक उदाहरण और सिद्धान्त युक्त रचन लिखने की चतुराई देख सभास्थ [illegible] हर्षको प्राप्त हुए। तदनन्तर श्री मान्यवर बाबू राखालचन्द्र सेन महाशय बालकों के नीति उपदेश अर्थ एक वक्तृता किये। तत्पश्चात श्रीकुमार श्रीकृष्णप्रसन्न सेनजीने "बालकोंको नीति शिक्षा" इस आशय पर एक हृदयग्राही वो सुमधुर वक्तृता की। इसे श्रवण करके अन्यान्य बालकगणभी उत्साहितहो सभ्यहोनेको इच्छ[illegible] संकीर्त्तन वो समस्वरसे भगवत [illegible] गया। तदनन्तर प्रत्येक बा[illegible] सभा आनन्दसे विसर्ज्जन हुई।

"धर्म्मप्रचारक" कार्य्यालय। मुङ्गेर। } श्रीश्री[illegible] स[illegible]

Printed by B. M. Chakravorti, At the B. P. M's Press, No. 22, Jhamapooker Lane, C[illegible]

Published by Kumar Srikrishna Prosanna Sen, at Monghyr.